दास्तान ईमान फ़रोशों की

1

अलतमश

दास्तान ईमान फ़रोशों की

पहला हिस्सा

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की हक़ीक़ी कहानियाँ औरतों और मर्दों की मारका आराइयाँ

लेखक

अलतमश

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताबः

दास्तान ईमान फ़रोशों की

पहला हिस्सा

लेखकः **अलतमश**

सफ़हातः 304

पहला एडीशनः जौलाई 2004

पेशकशः
मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Dastan Iman Faroshon ki (Part I)

Author: **Altamash**

Ist Edition: **July 2004**

Pages: 304 Size: 20x30/16

Printed at: **Farid Enterprises, Delhi-6**

कौम के उस बैटे के नाम जिसे
सलाहुद्दीन अय्यूबी बन्ना है।

- ☐ जब ज़कोई सुलतान अय्यूबी के ख़ेमे में गई।
- ☐ सातवीं लड़की
- ☐ सातवीं लड़की जब सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करने आई
- ☐ दूसरी बीवी
- ☐ उम्मे अराराह का इग़वा
- ☐ लड़की जो फ़लस्तीन से आई थी
- ☐ जब ज़हर को ज़हर ने काटा
- ☐ अयोना जब आइशा बनी

आ़लमे इस्लाम के नौजवानों के नाम

आफताबे आलम

लेखक : मौलाना सादिक़ हुसैन सरधवी

सीरते पाक पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नावेल के अंदाज़ में लिखी गयी यह किताब अपनी मिसाल आप है। लेखक ने हुज़ूरे पाक सल्ल० की पैदाइश से ले कर वफ़ात तक के तमाम हालात बिल्कुल आसान जुबान में आफताबे आलम की शक्ल में लिख कर अवाम को एक बेहतरीन तोहफ़ा दिया है।

840 सफ़्हों (पृष्ठों) पर फैली हुई यह किताब 18   2318 साइज़ पर सफ़ेद कागज़ अच्छी, छपाई कपड़े की मज़बूत बाइडिंग और सुन्दर टाइटिल से सजा दी गयी है। कीमत सिर्फ़ 44 आलावा महसूल डाक।

मारका-ए-करबला

लेखक : मौलाना सादि हुसैन सरधन्वी

शाहदातें हुसैन रज़ी० पर लेखक का बेहतरीन तारीखी नाविल जिसे पढ़ना शुरू करने के बाद आपका दिल खतम किये बगैर छोड़ने को ना चाहे।

इस पुस्तक को ज़रूर पढ़िये।

हिन्दी-अरबी टीचर

हिन्दी से अरबी सीखने के लिये एक अच्छी व सरल पुस्तक।

छः बातें

इस पुस्तक में तब्लीगी काम करने के बुन्यादी उसूल ब्यान किये गए हैं।

मसनुन दुआएँ

अल्लाह ताआला के दरबार में पेश करने के लिए प्यारे नबी हजरत मुहम्मद स० की हर मौके पर पढ़ी जाने वाली इस पुस्तक में 150 से   अधिक दुआएं हैं जो जिन्दगी और आखरत में कामयाबी का बेहतरीन जीना है।

तर्कीबे नमाज़

पाँचों वक्त की नमाज और मसाइले नमाज़ पर बहुत ही अच्छी पुस्तक है जो पाकेट साइज में हैं।

तआरुफ़

ऐसे कारिईन की तादाद.कम नहीं जिन्हें यह मसला परेशान किये हुए है कि हमारे यहां ग़लीज़ कहानियों के सिवा रह ही क्या गया है। अगर कुछ है तो वह अफसाने हैं। इन में भी इश्क बाज़ी, फरार और अफसुरदगी होती है। जो नौजवान ज़ेहन के लिये सेहत मन्द नहीं। बताईये हम क्या पढ़ें और बच्चों को क्या पढ़ाऐं, क़ारी कमसिन हो या बूढ़ा, वह ऐसी कहानियां पसन्द करता है जिन में कुछ तफरीही मुवाद हो, संसनी और सस्पेन्स हो और इन में ज़रा सी हंगामा आराई भी हो और जो जज़बात में हल चल बपा कर दें। ये दर असल इनसानी फितरत का मुतालबा है जिसे आसानी से मुसतदर नहीं किया जा सकता है। कारिईन की इसी कमज़ोरी को इसलाम दुशमन अनासिर ने अपने मक़ासिद के लिये इसतेमाल किया है। और दुनिया के ज़र परस्त नाशिर और अदीब इसी से पैसा कमा रहे हैं। यहीं से फहश, उरयां, मार धाड़ और जराएम से भरपूर हद ये कि दुशमन के ग़ैर इसलामी नज़रयात की हामिल कहानियों ने जन्म लिया और हैरान कुन हद तक फरोग़ और मकबूलियत हासिल की। इस में किसी शक की गुन्जाईश नहीं रही कि गैर मुस्लिम और यहूदियों ने हमारी नौजवान नसल की किरदार कुशी के लिये इन अखलाक़ सोज़ कहानियों को ज़रिया बनाया है।

हम "दासतान ईमान फरोशों की" के मुसन्निफ मोहतरम अलतमश के ममनून है जिन्हों ने "हिकायत" में सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की कहानियों का सिलसिला शुरू किया। हम उनकी आठ कहानियां पेश कर रहे हैं। उन में आपको वह तमाम लवाज़मात मिलेंगे जो आप के और नौजवान नसल के मुतालबे की तसकीन करेंगे। साथ ही साथ उस क़ौमी जज़बे को भी ज़िन्दा व बेदार करेंगे जिसे हमारा दुशमन पुर लज़्ज़त कहानियों के ज़रिये ख़तम करने की कोशिशों में मसरूफ़ है।

इन आठ कहानियों के मुतअल्लिक मुखतसरन कुछ अर्ज़ करदेना ज़रूरी है। इसलाम के अज़ीम मुजाहिद और अज़मते इसलाम के पासबान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर में जितनी इसलाम कुश साजिशें हुई हैं इतनी और किसी दौर में नहीं हुई हैं। सलीबियों और यहुदियों ने मुसलामन उमरा और फौजी कमाण्डरों को हाथ में लेकर सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी के खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिये जहां बे दरेग़ दौलत इसतेमाल की वहां अपनी जवान और खूबसूरत लड़कियों को खुसूसी टरेनिंग देकर मुकम्मल बेहयाई से इसतेमाल किया। उन्हों ने देख लिया था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को मैदाने जंग में शिकस्त देना आसान नहीं। सुलतान अय्यूबी का तरीकाए जंग एसा था कि सलीबी जंगी ताक़त की अफरात और बरतरी के बावजूद शिकस्त खा जाते थे। चुनानचे उन्हों ने सलतनते इसलामिया में खुसूसन

मिस्र में जिसकी इमारत और कियादत सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ में थी जासूसी तखरीब कारी और उस वक़्त की नौजवान नसल की किरदार कुशी की मुहिम तेज़ करदी। दौलत, औरत का खूब इस्तेमाल किया और सलाहुद्दीन अय्यूबी की हाई कमान और इनतेज़ामियों में ग़द्दार पैदा कर लिये। यह ईमान फरोशों का गिरोह था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी को एक जंग तो मैदान में लड़नी पड़ी। ये बड़े बड़े मारकों का सिलसिला था जो सलीबी जंगों के नाम से हम तक पहुंचा। मगर उस जंग की कोई तफसील हम तक नहीं पहुंची। जो सुलतान अय्यूबी ने सलीबी जासूसों जिन में हसीन लड़कियां थीं और हसन बिन सब्बाह के पेशे वर कातिल भी थे, के ख़िलाफ़ लड़ी। इन कातिलों को फिदाई भी कहा जाता था। और हशीशीन भी। उन्हों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी पर चार कातिलाना हमले किये। अल्लाह का ये मुजाहिद डरामाई तरीके से और अपनी ज़ोरे बाज़ू से हर बार बच गया। उस ज़मीन दोज़ सलीबी जंग ने उन कहानियों को जन्म दिया जिनमें से आठ पेश की जा रही हैं।

तारीख़ की ये हकीकी दासतान तफसीलात की तवालत की वजह से बाकाईदा तारीख़ में न आ सकीं और इस लिये भी कि मुअर्रिखों की नज़र ज़मीन के नीचे और परदों के पीछे नही जाया करती। ऐसी कहानियां मुतअल्लिक दौर के वकाए निगारों की तहरीरों में महफ़ूज़ होती हैं। या ऐनी शाहिद बयान करते हैं और ये सीना ब सीना नस्ल ब नस्ल सुनी सुनाई जाती और ज़िंदा रहती हैं।

मोहतरम अलतमश तलाशे रोज़गार के लिये मशरिके वुस्ता गये थे। रोज़गार मिला तो उन के अन्दर तारीख़ का जुनुन पैदा हो गया। गुज़शता बारह बरसों में उन्हों ने मुतअद्दिद इस्लाम भी मुमालिक की लाईब्रेरी के स्टोरों में से वह काग़ज़ात ढूंढ निकाले जिन्हें बेकार समझ कर वहां फेंक दिया गया था। इन में से उन्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर के सरकारी और ग़ैर सरकारी वकाये निगारों की लिखी हुई ग़ैर मतबूआ तहरीरें मिल गईं। यही थी सुलतान अय्यूबी के दौर की असल तारीख़। यही होती हैं वह वारदातें जो माज़ी की लग़ज़िशों और गद्दारियों को बेनकाब करती और अगली नस्ल के लिये बाइसे इबरत और मशअले राह बनती हैं।

इन वकाये निगारों के अलावा मोहतरम अलतमश ने जिन मुअर्रिखों की तहरीरों से तफसीली वाकिआत हासिल किये हैं उन में हेयर लेड लेम्ब, लेन पोल, विल्यम आफ टाएर, काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद, मोहम्मद फरीद अबू हदीद, एण्टी वेस्ट, वाकदी, हत्ती, जनरल मो. अकबर खां रन्गरूट, मोइयर, सिराजुद्दीन, असदुल असदी, अलअतहर, सिस्टन, बालडोविन और चन्द एक गुमनाम तारीख़ दान भी शामिल हैं।

1974 के आख़िर में मोहतरम अलतमश पाकिस्तान आए और मुझे मिले। मैं उनका यह एहसान तो क़यामत तक नहीं भूलूंगा कि उन्हों ने यह अनमोल खज़ाना "हिकायत" के कारेईन की नज़र किया। मैंने फरवरी 1975 के शुमारे से इस सिलसिले की इशाअत शुरू कर दी जो अभी तक जारी है। यह कहानियां मुसलसल तारीख़ नहीं। ये मुख़तलिफ औकात की तफसीली और डरामाई वारदातें हैं। जिनमें आपको सलाहुद्दीन अय्यूबी के और सलीबियों के

कगजासूसों, सुरागरसानो, तख़रीब कारों, गोरीलों और कमाण्डो असकरियों के सनसनी खेज़, वलवला अंगेज़ और डरामाई तसादुम, ज़मीन दोज़ तआकुब और फरार मिलें गे। ये दर असल औरत और ईमान की मारका आराईयां हैं। जो आपको चौंकादेगीं और आपके अंदर अगर ईमान का चिराग़ टिमटिमा रहा है तो वह भड़क उठेगा।

उस दौर का दुशमन आज भी आपका दुशमन है और वह अभी तक वही पुर लज़्ज़त हरबे इस्तेमाल कर रहा है। ये कहानियां खुद भी पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाऐं। अगर आप सच्चे दिल से फहश, उरयां और मुखर्रबे अखलाक़ कहानियों से अपने बच्चों को महफूज़ करना चाहते हैं तो यह आठ कहानियों को घर ले जाईये। ये कहानियां पढ़कर आप महसूस करेंगे कि आज फिर तारीख़ अपने आप को दोहरा रही है और सलाहुद्दीन अय्यूबी को पुकार रही है।

जब ज़कोई सुलतान अय्यूबी के खेमे में गई।

"तुम परिंदों से दिल बहलाया करो। सिपाही गिरी उस आदमी के लिये एक ख़तरनाक खेल है जो औरत और शराब का दिलदादा हो।"

यह अलफ़ाज़ 1175 में सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने चचा ज़ाद भाई ख़लीफा अस्सालेह के एक अमीर सैफुद्दीन को लिखे थे। उन दोनों ने सलीबियों को दर परदा मदद और ज़रो जवाहरात का लालच दिया और सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देने की साज़िश की थी। सलीबी यही चाहते थे। उन्हों ने हमला किया। अस्सालेह और सैफुद्दीन ने उन की मदद की। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन सबको शिकसत दी। अमीर सैफुद्दीन अपना माल व मता छोड़ कर भागा। उसके ज़ाती ख़ीमा गाह से रंग बिरंगे परिंदे हसीन और जवान रक़्क़ासायें और गाने वालियों, साज़ और साज़िन्दें और शराब के मटके बरआमद हुये। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने परिंदों को, नाचने गाने वालियों और उनके साज़िंदों को रिहा कर दिया और अमीर सैफुद्दीन को इस मज़मून का ख़त लिखा।

"तुम दोनों ने कुफ्फार की पुश्त पनाही करके उनके हाथें मेरा नाम व निशान मिटाने की कोशिश की मगर ये न सोचा कि तुम्हारी ये साजिश आलमे इस्लाम का भी नाम व निशान मिटा सकती है। तुम मुझ से हसद करते थे तो मुझे क़त्ल करा दिया होता। तुम मुझ पर दो क़ातिलाना हमला करा चुके हो। दोनों नाकाम रहे। अब एक और कोशिश कर देखो। हो सकता है कामयाब हो जाओ। अगर तुम मुझे यह यक़ीन दिला दो कि मेरा सर मेरे तन से जुदा हो जाये तो इसलाम और ज़्यादा सर बुलंदा होगा तो रब्बे काबा की क़सम, तो मैं तुम्हारी तलवार से अपना सर कटवाऊंगा और तुम्हारे क़दमों में रख देने की वसीयत करूंगा। मैं तुम्हें सिर्फ ये बता देना चाहता हूं कि कोई ग़ैर मुसलिम मुसलमान का दोस्त नहीं हो सकता। तारीख़ तुम्हारे सामने है। अपना माज़ी देखो। शाह फरेंड और रिमाण्ड जैसे इसलाम दुशमन सलीबी तुम्हारे दोस्त सिर्फ इस लिये बने कि तुम ने उन्हें मुसलमानों के खिलाफ़ मैदान में उतरने की शह और मदद दी थी। अगर वह कामयाब हो जाते तो उनका अगला शिकार तुम होते और उस के बाद ये ख्वाब भी पूरा हो जाता कि इसलाम सफहे हसती से मिट जाये।

तुम जंगजू क़ौम के फर्द हो। फन्ने सिपह गिरी तुम्हारा पेशा है। हर मुसलमान अल्लाह का सिपाही है मगर इमान और किरदार बुनयादी शर्त है। तुम परिंदे से ही दिल बहलाया करो। सिपाह गिरी उस आदमी के लिये ख़तरनाक खेल है जो औरत और शराब का दिलदादह

हो। मैं तुम से दरखास्त करता हूं कि मेरे साथ तआवुन करो और मेरे साथ जिहाद में शरीक हो जाओ। अगर ये न कर सको तो मेरी मुखालिफत से बाज़ आजाओ। मैं तुम्हें कोई सज़ा नहीं दूंगा। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ करे। आमीन।

सलाहुद्दीन अय्यूबी

एक यूरपी मुअर्रिख लेनपाल लिखता है कि "सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ जो माले गनीमत लगा उसका कोई हिसाब नहीं था। जंगी कैदी भी बे अंदाज़ा थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तमाम तर माले ग़नीमत को तीन हिस्सों में तकसीम किया। एक हिस्सा जंगी कैदियों में तकसीम करा कर उन्हें रिहा कर दिया। दूसरा हिस्सा अपनी सिपाह और ग़रीबों में तकसीम किया। और तीसरा हिस्सा मदरसा निज़ामे मुल्क को देदिया। उसने उसी मदरसे से तालीम हासिल की थी। न खुद कुछ रखा न अपने किसी जरनेल को कुछ दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि जंगी कैदी जिन में बहुत से मुसलमान थे और बाकी गैर मुसलिम, रिहा हो कर सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प में जमा हो गए और उसकी इताअत कुबूल करके अपनी खिदमात उसकी फौज के लिये पेश कर दीं। अय्यूबी की कुशादा ज़रफी दूर दूर तक मशहूर हो गई।

इस से पहले हसन बिन सब्बाह के पुर असरार फिरके, जिन्हें यूरोपी मुअर्रिखों ने क़ातिलों का गिरोह लिखा है, सलाहुद्दीन अय्यूबी पर दोबार क़ातिलाना हमले कर चुके थे लेकिन खुदाए जुलजलाल को अपने इस मर्दे मुजाहिद से बहुत काम लेना था। दोनो बार एक मोअजज़ा हुआ कि इसलाम का ये मुहाफ़िज़ बाल बाल बच गया। इस पर तीसरा क़ातिलाना हमला उस वक़्त हुआ जब वह अपने मुसलमान भाईयों और सलीबियों की साजिश की चट्टान को शमशीर से रेज़ा रेज़ा कर चुका था। अमीर सैफुद्दीन मैदान से भाग गया था। मगर वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ हसद और कीने से बाज़ न आया। उसने हसन बिन सब्बाह के क़ातिल फिरके की मदद हासिल करली। ये फिरका मुद्दत से इसलाम की आसतीन में सांप की तहर पल रहा था। इसका तफसीली तआरुफ़ बहुत ही तवील है। मुखतसर ये कि जिस तरह ज़मीन सूरज से अलग होकर गुनाहों का गहवारा बन गई है उसी तरह हसन बिन सब्बाह नाम के एक आदमी ने इसलाम से अलग होकर नबियों और पैग़म्बरों वाली अज़मत हासिल करने का मनसूबा बनाया था। वह अपने आप को मुसलमान ही कहलाता रहा और ऐसा गिरोह बना लिया जो तिल्समाती तरीकों से लोगों को अपना पैरू कार बनाता था। इस मकसद के लिये इस गिरोह ने निहायत हसीन लड़कियां, नशा आवर जड़ी बुटियां, हपनाटिज़्म और चरब ज़बानी जैसे तरीके इखतियार किये। बहिशत बनाई जिसमें जाकर पत्थर भी मोम हो जाते थे। अपने मुखालिफीन को खत्म करने के लिये क़ातिलों का एक गिरोह तैयार किया। क़त्ल के तरीके खुफिया और पुर असरार होते थे। इस फिरके के अफराद इस कदर चालाक, ज़हीन और निडर थे कि भेस और ज़बान बदल कर बड़े बड़े जरनैलों के बाडी गार्ड तक बन जाते थे और जब कोई पुर असरार तरीके से क़त्ल हो जाता तो क़ातिलों का सुराग़ ही न मिलता था। कुछ अर्से बाद ये फिरका "क़ातिलों का गिरोह" के नाम से मशहूर हो गया ये लोग सियासी क़त्ल के माहिर थे। ज़हर भी इस्तेमाल करते थे जो हसीन लड़कियों के हाथो

शराब में दिया जाता था। बहुत मुद्दत तक ये फिरका इसी मकसद के लिये इस्तेमाल होता रहा। इसके पैरूकार "फिदाई" कहलाते थे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी को न हसीन लड़कियों से धोखा दिया जा सकता था न शराब से। वह इन दोनो से नफ़रत करता था। उसे कत्ल करने का यही एक तरीका था कि इस पर कातिलाना हमलो किया जाए। उनके मुहाफिज़ों की मौजूदगी में उन पर हमला नहीं किया जा सकता था। दो हमले नाकाम हो चुके थे। अब जब कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को ये तवक्को थी कि इसका चचा ज़ाद भाई सालेह और अमीर सैफुद्दीन शिकस्त खाकर तौबा कर चुके होंगे। उन्हों ने इन्तकाम की एक और ज़ेरे ज़मीन कोशिश की। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इस फतह का जश्न मनाने के बजाए हमले जारी रखे और तीन कसबों को कब्ज़े में ले लिया। उन में ग़ाजह का मशहूर कसबा भी था। इसी कसबे के गिरदो नवाह में एक रोज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी, अमीर जावल असदी के खेमें में दोपहर के वक़्त गुनूदगी के आलम में सुसता रहा था उसने वह पगड़ी नहीं उतारी थी जो मैदाने जंग में उसके सर को सेहरा के सूरज और दुशमन की तलवार से महफूज़ रखती थी। खेमें के बाहर उसके मुहाफिज़ों का दस्ता मौजूद और चौकस था।

बाडी गार्डज के उस दस्ते का कमाण्डर ज़रा सी देर के लिये वहां से चला गया था। एक मुहाफ़िज़ ने बाडीगार्ड को देखा। उनमें से तीन चार बाडी गार्डज ने उस की तरफ देखा। मुहाफ़िज़ ने अपनी आंखें बंद करके खोली। तीन चार मुहाफिज़ उठे और बातों में लगा लिया। एक मुहाफ़िज़ खेमे में चला गया। कमर बंद से खंजर निकाला। दबे पांव चला और चीते की तरह सलाहुद्दीन अय्यूबी पर जुस्त लगाई। खंजर वाला हाथ ऊपर उठा। एन उस वक़्त सलाहुद्दीन अय्यूबी ने करवट बदल ली। यह नहीं बताया जा सकता कि मुहाफि खंजर कहां मारना चाहता था। दिल में या सीने में। मगर हुआ यूं कि खंजर सलाहुद्दीन अय्यूबी की पगड़ी के बालाई हिस्से में उतर गया। और सर से बाल बराबर दूर रहा। पगड़ी सर से उतर गई।

सलाहुद्दीन अय्यूबी बिजली की तेज़ी से उठा। और उसे ये समझने में देर न लगी कि ये सब क्या है। उस पर ऐसे दो हमले हो चुके थे। उसने उस पर भी हैरत का इज़हार न किया कि हमला आवर उसके अपने बाडीगार्ड के लिबास में था जिसे उसने खुद अपनी बाडीगार्ड के लिया मुनतखब किया था। उस ने एक सांस जितना अर्सा भी न ज़ाए किया। हमला आवर उस की पगड़ी से खंजर खींच रहा था। अय्यूबी सर से नंगा था। उस ने हमला आवर की ठोड़ी पर ताकत से घूंसा मारा। हड्डी टूटने की आवाज़ सुनाई दी। हमला आवर का जबड़ा टूट गया था। वह पीछे को गिरा और उसके मुंह से एक हैबत नाक आवाज़ निकली। उसका खंजर सलाहुद्दीन अय्यूबी की पगड़ी में रह गया था। अय्यूबी ने अपना खंजर निकाल लिया। इतने में दो और मुहाफिज़ दौड़ते अंदर आए। उनके हाथों में तलवार थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें कहा कि इसे ज़िंदा पकड़ लो मगर ये दोनो मुहाफिज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी पर टूट पड़े। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक खंजर से दो तलवारों का मुकाबला किया। ये मुकाबला एक दो मिनट का था

क्योंकि तमाम बाडीगार्डज अंदर आ गये थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ये देखकर हैरान रह गया कि उसके बाडी गार्डज दो हिस्सों में तकसीम हो कर एक दूसरे को लहु लुहान कर रहे थे। उसे चूंकि मालूम था कि उन में उस का दुशमन कौन और दोस्त कौन है। वह इस मारके में शरीक न हो सका।

कुछ देर बाद बाडीगार्ड में से चंद एक मारे गये, कुछ भाग गये और बाज़ ज़खमी हो कर बे हाल हो गये तो इंक्शाफ़ हुआ कि इस दस्तें में जो सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिफ़ाज़त पर मामूर था। सात मुहाफ़िज़ फिदाई थे जो सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करना चाहते थे। उन्हों ने इस काम के लिये सिर्फ एक फिदाई को खेमें में भेजा था। अंदर सूरते हाल बदल गई थी। चुनानचे बाकी भी अंदर चले गये। असल मुहाफ़िज़ भी अंदर गये। वह सूरते हाल समझ गये और सलाहुद्दीन अय्यूबी बच गया। उसने अपने पहले हमला आवर की शहे रग पर तलवार की नोक रख कर पूछा कि वह कौन है और उसे किसने भेजा? सच बोलने के बदले सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे जान बखशी का वादा दिया। उस ने बता दिया कि वह फिदाई है और उसे केमिशतकन (जिसे बाज़ मुअर्रिखों ने गुमशतगीन लिखा है) ने इस काम के लिये भेजा था। केमिशतकन सालेह के एक किले का गवरनर था।

❖

असल कहानी सुनाने से पहले ये ज़रूरी मालूम होता है कि इन वाकिआत से पहले के दौर को देखा जाये। सलाहुद्दीन अय्यूबी के नाम, उसकी अज़मत और तारीख़ इसलाम में उसके मकाम और कारनामें से कौन वाकिफ नहीं। मिल्लते इसलामिया तो उसे भूल ही नहीं सकती। मसीही दुनिया भी उसे याद रखेगी। लिहाज़ा ये ज़रूरी नहीं मालूम होता कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का शजरॉए नसब तफसील से बयान किया जाए। हम जो कहानी सुनाने लगे हैं वह इस नौईयत की है जिसकी वुसअत के लिये तारीख का दामन तंग होता है। ये तफसीलात वकाए निगारों और कलमकारों की रिकार्ड की हुई होती हैं। कुछ सीना ब सीना अगली नसलों तक पहुंचती हैं। तारीख के दामन में सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिर्फ़ कारनामे महफूज़ किये गये हैं। उन साजिशों का ज़िक बहुत कम आया है जो अपनों ने उन के खिलाफ़ की और उसकी बढ़ती हुई शोहरत और अज़मत को दाग़दार करने के लिये ऐसी लड़कियों के जाल में फांसने की बार बार कोशिश की गई जिन के हुस्न में तिल्समाती असर था।

तारीख इसलाम का ये हकीकी डरामा 23 मार्च 1169 के रोज़ से शुरू होता है जब सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिस्र का वाइसराए और फौज का कमाण्डर इनचीफ बनाया गया। उसे इतना बड़ा रुतबा एक तो इस लिये दिया गया कि वह हुकमरां खानदाम का नौनिहाल था और दूसरे इस लिये कि अवायले उम्र में ही वह फन हर्ब व ज़र्ब का माहिर हो गया था। सिपाह गिरी वरसे में पाई थी। इस के ज़ेहन में हुकमरानी के माना बादशाहत नहीं इसलाम की पासबानी और कौम की अज़मत और फलाह बहबूद थी। उसका जब शाऊर बेदार हुआ तो पहली खलिश यह महसूस की कि मुसलमान हुकमरानों में न सिर्फ ये कि इत्तेहाद नहीं बल्कि एक दूसरे की मदद से गुरेज़ करते थे। वह अय्याश हो गये थे। शराब और औरत ने जहां उनकी

ज़िंदगी रंगीन बना रखी थी वहां आलमे इसलाम और खुदा के इस अज़ीम मज़हब का मुस्तक़बिल तारीक हो गया था। उन के अमीरों, उन के वज़ीरों और मुशीरों के हरम ग़ैरमुस्लिम लड़कियों से भरे हुए थे। ज़्यादा तर लड़कियां यहूदी और ईसाई थीं जिन्हें खास तरबियत दे कर उन हरमों में दाखिल किया गया था। ग़ैर मामूली हुस्न और अदाकारी में कमाल रखने वाली यह लड़कियां मुसलमान हुक्मरानों और सरबराहों के किरदार और क़ौमी जज़्बे को दीमक की तरह खा रही थीं।

इस का नतीजा यह था कि सलीबी जिन में फरनेक (फिरंगी) खास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं, मुसलमानों की सलतनतों के टुकड़े हड़प करते चले जारहे थे और बाज़ मुस्लिम हुकमरान शाह फरेंक को सालाना टेक्स या जिज़्या अदा कर रहे थे जिस की हैसियत गुंडा टेक्स की सी थी। सलीबी अपनी जंगी कुव्वत के रोब से और छोटे मोटे हमलों से हुकमरानों को डराते रहते, कुछ इलाक़े पर कब्ज़ा कर लेते, तावान और टेकस वसूल करते थे। उन का मक़सद यह था कि आहिस्ता आहिस्ता दुन्यिाए इस्लाम को हड़प कर लिया जाए। मुसलमान हुकमरान अपनी रेआया का खून चूस कर टेक्स देते रहते थे। उन का मकसद यह था कि उन्हें ऐश व इशरत में परेशान न किया जाये।

फिरक़ा परसती के बीज भी बो दिये गये थे। उन में सब से ज़्यादा खतरनाक फिरका हसन बिन सब्बाह का था जो सलाहुद्दीन अय्यूबी की जवानी से एक सदी पहले मअरिज़े वजूद में आया था। यह मुफाद परस्तों का फिरक़ा था, बेहद ख़तरनाक और पुरअसरार। यह लोग, अपने आप को "फिदाई" कहलाते थे जो बाद में हशीशीन के नाम से मशहूर हुये क्योंकि वह हशीश नाम की एक नशा आवर शय से दूसरों को अपने जाल में फांसते थे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मदरसा निज़ामुल मुलक में तालीम हासिल की। याद रहे कि निज़ामुल मुलक दुनयाऐ इस्लाम की एक सलतनत के वज़ीर थे। यह मदरसा उन्हों ने क़ायम किया था जिसमें इसलामी तालीम दी जाती थी और बच्चों को इसलामी नज़रयात और तारीख से बहरहवर किया जाता था। एक मुअर्रिख इबनुल अतहर के मुताबिक निज़ामुल मुलक, हसन बिन सब्बाह के फिदाईयों का पहला शिकार हुए थे क्यों कि वह रूमियों की तौसीअ पसंदी की राह में चट्टान बने हुए थे। रूमियों ने 1091 में उन्हें "फिदाईयों" के हाथों कत्ल करा दिया। उन का मदरसा क़ायम रहा। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने वहीं तालीम हासिल की। इसी उम्र में उस ने सिंपाह गिरी की तरबियत अपने बुज़र्गों से ली। नूरुद्दीन ज़ंगी ने उसे जंगी चालें सिखाईं। मुलक के इंतज़ामात के सबक दिये और डिप्लोमेसी महारत दी। इस तालीम व तरबीयत ने उस के अंदर वह जज़्बा पैदा कर दिया जिस ने आगे चल कर उसे सलीबियों के लिये बिजली बना दिया। आवइल जवानी में ही उस ने वह ज़ेहानत और अहलियत हासिल कर ली थी जो एक सालारे आज़म के लिये ज़रूरी होती है।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने फन्ने हर्ब व ज़र्ब में जासूसी (एन्टलीजेंस), कमानडों और गोरीला आपरेशन को खुसूसी अहमियत दी। उसने देख लिया था कि सलीबी जासूसी के मैदान में आगे निकल गये हैं और वह मुसलमानों के नज़रयात पर निहायत कारगर हमले कर रहे हैं।

सलाहुद्दीन अय्यूबी नज़रयात के महाज़ पर लड़ना चाहता था जिस में तलवार इस्तेमाल नहीं होती। इस कहानी में आगे चल कर आप देखें गे कि उस की तलवार का वार तो गहरा होता ही था। उस की मोहब्बत का वार उस से कहीं ज़्यादा मार करता था। उस के लिये तहम्मुल और बुर्दबारी की ज़रूरत होती है जो उस ने अवाइल उम्र में ही अपने आप में पैदा कर ली थी।

उसे जब मिस्र का वाइसराए और कमाण्डर इनचीफ़ बना कर मिस्र भेजा गया तो उन सीनियर अफसरों ने हंगामा बरपा कर दिया जो उस ओहदे की आस लगाए बैठे थे। उन की निगाह में सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी तिफ्ले मक्तब था मगर इस तिफ्ले मक्तब ने जब उन का सामना किया, उस की बातें सुनी तो उन का एहतजाज सर्द पड़ गया। मोअर्रिख़ लेनपोल के मुताबिक़ सलाहुद्दीन अय्यूबी डिस्पलिन का बड़ा ही सख़्त साबित हुआ। उस ने तफरीह, ऐयाशी और आराम को अपने लिये और अपनी अफवाज के लिये हराम क़रार दे दिया। उस ने अपनी दिमाग़ी और जिसमानी कूवतों को सिर्फ इस मक़सद पर मरकूज़ कर दिया कि सलतनते इस्लामिया को मुस्तहकम करना है और सलीबियों को इस सरज़मीन से निकालना है। फिलिस्तीन पर वह हर कीमत पर कब्ज़ा करना चाहता था। उस ने यही मक़ासिद अपनी फौज को दिये। मिस्र का वाइसराए बन कर उस ने कहा– "ख़ुदा ने मुझे मिस्र की सरज़मीन दी है। उस की ज़ाते बारी मुझे फिलिस्तीन भी ज़रूर अता करेगी।" मगर मिस्र पहुंच कर उस पर इंक्शाफ़ हुआ कि उस का मुक़ाबला सिर्फ सलीबियों से नहीं बल्कि अपने मुसलमान भाईयों ने उस की राह में बड़े बड़े हसीन जाल बिछा रखे हैं जो सलीबियों के अज़ाइम और जंगी कूवत से ज़्यादा ख़तरनाक हैं।

❖

मिस्र में सलाहुद्दीन अय्यूबी का इस्तकबाल जिन जोआमा ने किया उन में नाजी नाम का एक सालार ख़ुसूसी अहमियत का हामिल था। अय्यूबी ने सब को सर से पांव तक देखा। उसके बाद होंठों पर मुस्कुराहट और ज़ुबान पर प्यार व मोहब्बत की चाश्नी थी। बाज़ पुराने अफसरों ने उसे ऐसी निगाहों से देखा जिन में तंज़ थी और तमस्ख़ुर भी था। वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिर्फ़ नाम से वाकिफ़ थे या उस के मुतअल्लिक़ यह जानते थे कि नुरूद्दीन ज़ंगी के साथ उस का क्या रिश्ता है। उन की निगाहों में सलाहुद्दीन अय्यूबी की अहमियत बस उस के ख़ानदान की बदौलत थी या इस वजह से उन्होंने उसे अहमियत दी कि वह मिस्र का फ़ौजी वायसराय बन के आया था। उस के सिवा उन्होंने सलाहुद्दीन अय्यूबी को कोई वक़अत न दी। एक बूढ़े अफ़सर ने अपने साथ खड़े अफ़सर के कान में कहा।

"बच्चा है– इसे हम पाल लेंगे।"

मोअर्रिख़ और उस के वक़्त के वकाये निगार यह नहीं बता सकते कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन लोगों की नज़रें भांप ली थीं या नहीं। वह इस्तकबाल करने वाले उस हुजुम में बच्चा लग रहा था। अलबत्ता जब नाजी के सामने मुसाफ़ा के लिए रूका तो अय्यूबी के चेहरे पर तबदिली सी आ गयी थी। वह नाजी से हाथ मिलाना चाहता था लेकिन नाजी जो उस के बाप की उम्र का था। सबसे पहले दरबारी ख़ुशामदियों की तरह झुका। फिर अय्यूबी से

बग़लगीर हो गया। उस ने अय्यूबी की पेशानी चूम का कहा– "मेरे ख़ून का आख़िरी कतरा भी तुम्हारी जान की हिफ़ाज़त के लिस बहे गा। तुम मेरे पास ज़ंगी और शेरकोह की अमानत हो।"

"मेरी जान अज़्मते इसलाम से ज़्यादा क़ीमती नहीं।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाजी का हाथ चुम कर कहा– "मुहतरम! अपने ख़ून का एक एक क़तरा संभाल कर रखिए। सलीबी स्याह घटाओं की मानिन्द छा रहे हैं।"

नाजी जवाब में सिर्फ़ मुस्कुराया जैसे सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कोई लतीफ़ा सुनाया हो। सलाहुद्दीन अय्यूबी उस तजुर्बाकार सलार की मुस्कुराहट को ग़लिबन नहीं समझ सका। नाजी फातमी ख़िलाफ़त का परवुरदा सालार था। वह मिस्र में बाडी गार्ड का कमाण्डर था जिस की नफ़री पचास हज़ार थी और सारी की सारी नफ़री सुडानी थी। यह फ़ौज उस दौर के जदीद हथियारों से मुसल्लह थी और यह फ़ौज नाजी का हथियार बन गयी थी जिस के ज़ोर पर वह बेताज बादशाह बना बैठा था। वह साज़िशों और फ़साद परस्ती का दौर था। इसलामी दुनिया की मरकज़ियत ख़त्म हो चुकी थी। सलीबियों की निहायत दिलकश तख़रीबकारियां शुरू हो चुकी थीं। ज़र परस्ती और ताईश का दौर दौरा था। जिस के पास ज़रा सी भी ताकत थी, उसे वह अपने इकतेदार के तहफ़्फ़ुज़ के लिए और दौलत समेटने के लिए इस्तेमाल करता था।

सुडानी बॉडीगार्डज़ फौज का कमाण्डर नाजी मिस्र में हुकमरानों और दीगर सर बराहों के लिए दहशत बना हुआ था। ख़ुदा ने उसे साज़िश साज दिमाग़ दिया था। उसे उस दौर का बादशाह साज़ कहा जाता था। बनाने और बिगाड़ने में ख़ुसूसी महारत रखता था। उस ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को देखा तो उसके चेहरे पर बिल्कुल उसी तरह मुस्कुराहट आ गयी जिस तरह कमज़ोर सी भेड़ को देखकर भेड़िये के दांत निकल आते हैं। अय्यूबी उस जहर ख़न्द को न समझ सका। उसके लिए सब से ज़्यादा अहम आदमी नाजी ही था क्योंकि वह पचास हज़ार बॉडीगार्ड्ज़ का कमाण्डर था और सलाहुद्दीन को उस फ़ौज की ज़रूरत थी।

सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहा गया कि हुज़ूर बड़ी लम्बी मुसाफ़त से तशरीफ लाये हैं पहले आराम कर लें उसने कहा– " मेरे सर पर जो दस्तार रख दी गयी है मैं उस के अहल न था। उस दस्तार ने मेरा आराम और मेरी नींद ख़त्म करदी है। क्या आप हज़रात मुझे उस छत के नीचे नहीं ले चलेंगे जहां मेरे फ़रायज़ मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं?"

"क्या हुज़ूर काम से पहले तआम पसन्द नहीं फरमायेंगें?" उसके नायब ने पूछा–

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कुछ सोंचा और उन के साथ चल पड़ा। लम्बे तड़ंगे, क़वी हेकल बॉडीगार्ड्ज़ उस इमारत के सामने दो रवैया खड़े थे जिसमें खाने का इन्तज़ाम किया गया था। अय्यूबी ने उन गार्ड्ज़ के क़द बुत और हथियार देखे तो उसके चेहरे पर रौनक़ आ गयी मगर यह रौनक दरवाज़े में कदम रखते ही ग़ायब हो गयी। वहां चार नौजवान लड़कियां जिन के जिस्मों में ज़ुहद शिकन लचक और शानों पर बिखरे हुए रेशमी बालों में कुदरत का हुस्न समोया हुआ था, हाथों में फूलों की पत्तियों से भरी हुई ख़ुशनमा टोकरियां उठाये खड़ी

थीं। उन्होंने ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के रास्ते में पत्तियां बिखेरने शुरू कर दीं और उसके साथ दफ की ताल पर ताऊस व रबाब और शहनाइयों का मसहूर कुन नग़मा उभरा। अय्यूबी ने रास्ते में फूलों की पत्तियां देख कर क़दम पीछे कर लिया। नाजी और उसके नायब उस के दायें बायें थें। वह दोनों झुक गये और उसे आगे चलने की दावत दी। यह सब अन्दाज़ था जिसे मुग़ल बादशाहों ने हिन्दुस्तान में राइज किया था।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी फूलों की पत्तियां मसलने नहीं आया।" अय्यूबी ने ऐसी मुस्कुराहट से कहा जो उन लोगों ने पहले कम ही कभी किसी के होठों पर देखी थी।

"हम हुज़ूर के रास्ते में आसमान से तारे भी नोच कर बिछा सकते हैं।" नाजी ने कहा।

"अगर मेरी राह में कुछ बिछाना चाहते हो तो वह एक ही चीज़ है जो मेरे दिल को भाती है।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा।

"आप हुक्म दें।" नायब ने कहा– "वह कौन सी चीज़ है जो हुज़ूर के दिल को भाती है।"

"सलीबियों की लाशें।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुस्कुराकर कहा मगर फौरन ही उस की मुस्कुराहट ग़ायब हो गयी। उसकी आंखों से शोले निकलने लगे। इस ने धीमी आवाज में जिस में कहर और इताब छुपा हुआ था, कहा– "मुसलमानों की ज़िन्दगी फूलों की सेज नहीं। जानते नहीं हो सलीबी सल्तनते इसलामियां को चूहों की तरह खा रहे हैं? और जानते हो कि वह क्यों कामायाब हो रहे हैं? सिर्फ़ इस लिए कि हम ने फूलों कि पत्तों पर चलना शुरू कर दिया है। हम ने अपनी बच्चियों को नंगा करके उनकी अज़्मते रौंद डाली हैं। मेरी नज़रें फिलिस्तिन पर लगी हुई हैं। तुम मेरी राह में फूल बिछा कर मिस्र से भी इस्लाम का परचम उतरवा देना चाहते हो?.... उस ने सब को एक नज़र देखा और दबदबे से कहा– "उठा लो यह फूल मेरे रास्ते से। मैं ने उन पर क़दम रखा तो मेरी रूह कांटों से छलनी हो जायेगी। हटादो लड़कियों को मेरे रास्ते से। कहीं ऐसा न हो कि मेरी तलवार उन के इतने दिलकश सुनहरे बालों में उलझ कर बेकार हो जाए।"

"हुज़ूर की जाह हशमत...."

"मुझे हुज़ूर न कहो।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बोलने वाले को यूं टोक दिया जैसे तलवार से किसी काफिर की गर्दन काट दी हो। उस ने कहा– "हुज़ूर वह थे जिन का तुम कलमा पढ़ते हो और जिन का मैं गुलामे बे दाम हूं। मेरी जान फिदा हो उस हुज़ूर सल्ल० पर जिन के मकसदे पैग़ाम को मैंने सीने पर कुन्दा कर रखा है। मैं यही पैग़ाम ले के मिस्र में आया हूं। सलीबी मुझसे ये पैग़ाम छीन कर बहिराए रोम में डूबो देना चाहते हैं। शराब में ग़र्क कर देना चाहते हैं। मैं बादशाह बन के नहीं आया।"

लड़कियां किसी के इशारे पर फूलों की पत्तियां समेट कर वहां से हट गयी थीं सलाहुद्दीन अय्यूबी तेज़ी से दरवाज़े के अन्दर चला गया। एक वसीअ कमरा था। उस में एक लम्बी मेज़ रखी थी जिस पर रंगा रंग फूल बिखरे हुए थे और उन के दर्मियान रोस्ट किये हुए बकरों के बड़े बड़े टुकड़े, सालम मुर्ग़ और जाने कैसे कैसे खाने सजे हुए थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी रुक गया और अपने नायब से पूछा– "क्या मिस्र का हर एक बाशिन्दा इसी किस्म का खाना खाता

है?"

"नहीं हुज़ूर" नायब ने जवाब दिया– " ग़रीब लोग तो ऐसे खाने के ख़्वाब भी नहीं देख सकते।"

"तुम सब किस कौम के फ़र्द हो?" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा– " क्या उन लोगों की कौम अलग है जो ऐसे खानों के ख़्वाब भी नहीं देख सकते?" किसी तरफ से कोई जवाब न पाकर उस ने कहा– "इस जगह जिस कदर मुलाज़िम हैं और यहां जितने सिपाही डियूटी पर हैं उन सब को अन्दर बुलाओ। यह खाना उन्हें खिला दो।" उस ने लपक कर एक रोटी उठायी। उसपर दो तीन बोटियां रखीं और खड़े खड़े खाने लगा। निहायत तेज़ी से पूरी रोटी खाकर पानी पिया और बॉडीगार्ड्ज़ के कमाण्डर नाजी को साथ लेकर उस कमरे में चला गया जो वायसराय का दफ़्तर था।

दो घंटे बाद नाजी बाहर निकला। दौड़ कर अपने घोड़े पर सवार हुआ। ऐड़ लगायी और नज़रों से ओझल हो गया।

रात नाजी के ख़ास कमरे में उसके दो कमाण्डर जो उस के मोअतमिद और हमराज़ थे उस के पास बैठे शराब पी रहे थे नाजी ने कहा– "जवानी का जोश है– थोड़े से दिनों में ठंडा कर दूंगा। कमबख़्त जो भी बात करता है कहता है रब्बे काबा की कसम सलीबियों को सल्तनते इस्लामियां से बाहर निकाल कर दम लूंगा।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी।" एक कमाण्डर ने तंज़िया कहा– "इतना भी नहीं जानता कि सल्तनते इस्लामियां का दम निकल चुका है। अब सुडानी हुकूमत करेंगे।"

"क्या आप ने उसे बताया नहीं कि यह पचास हज़ार का लशकर सुडानी है?" दूसरे कमाण्डर ने नाजी से पूछा– " और यह लशकर जिसे वह अपनी फौज समझता है, सलीबियों के ख़िलाफ़ नहीं लड़ेगी?"

"तुम्हारा दिमाग़ ठिकाने है औरोश?"– नाजी ने कहा– " मैं उसे यह यकीन दिला आया हूं कि यह पचास हज़ार सुडानी शेर उसके इशारे पर सलीबियों के प्रख़चे उड़ा देंगे। लेकिन. .... "नाजी चुप होकर सोच में पड़ गया।

"लेकिन क्या?"

"उस ने मुझे हुक्म दिया है कि मिस्र के बाशिन्दों की एक फौज तैय्यार करो।" नाजीने कहा– "उसने कहा है कि एक मुल्क की फौज मुनासिब नहीं होती। वह मिस्र के लोगों को भर्ती करके हमारी फौज़ में शामिल करना चाहता है।"

"तो आप ने क्या जवाब दिया?"

"मैं ने कहा कि आप के हुक्म की तामील होगी।" नाजी ने जवाब दिया– "मगर मैं ऐसे हुक्म की तामील नहीं करूंगा।"

"मिज़ाज का कैसा है?" औरोश ने पूछा।

"ज़िद का पक्का मालूम होता है।" नाजी ने जवाब दिया।

"आप की दानिशमन्दी और तजुर्बे के सामने तो वह कुछ भी नहीं लगता।" दूसरे कमाण्डर

ने कहा– "नया नया अमीरे मिस्र बन के आया है। कुछ रोज़ यह नशा तारी रहेगा।"

"मैं यह नशा उतरने नहीं दूंगा।" नाजी ने कहा– " उसे उसी नशे में बदमस्त करके मारूंगा।"

बहुत देर तक यह तीनों सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ बातें करते रहे और इस मसले पर ग़ौर करते रहे कि अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाजी के बे ताज बादशाही के लिए ख़तरा पैदा कर दिया तो वह क्या कार्रवाई करेंगे। उधर सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने नायबीन को सामने बिठाये यह ज़ेहन नशीन करा रहा था कि वह हुकूमत करने नहीं आया और न किसी को हुकूमत करने देगा। उस ने उन्हें कहा कि उसे जंगी ताक़त की ज़रूरत है और उस ने यह भी कहा कि उसे यहां का फ़ौजी ढांचा बिल्कुल पसन्द नहीं। पचास हज़ार बॉडीगार्ड्ज़ सूडानी है। हमें हर ख़ित्ते के बाशिन्दों को यह हक़ देना है कि वह हमारी फ़ौज में आयें। अपने जौहर दिखाएं और माले ग़नीमत में से अपना हिस्सा वसूल करें। यहां के अवाम का मिआर जिन्दगी इस तरह बुलन्द हो सकता है। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें बताया– " मैं ने नाजी से कह दिया है कि वह आम भरती शुरू करदे।"

"क्या आप को यक़ीन है कि वह आप के हुक्म की तामील करेगा?" एक नाज़िम ने उस से पूछा।

"क्या वह हुक्म की तामीलसे गुरेज़ करेगा?"

"वह गुरेज़ कर सकता है।" नाज़िम ने जवाब दिया। "फौजी उमूर उसी के सुपुर्द हैं। वह किसी से हुक्म लिया नहीं करता। अपनी मनवाया करता है।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ामोश रहा जैसे उस पर कुछ असर ही न हुआ हो। उस ने सब को रूख़सत कर दिया और सिर्फ़ अली बिन सुफ़ियान को अपने साथ रखा। अली बिन सुफ़ियान जासूसी और जवाबी जासूसी का माहिर था। उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी बग़दाद से अपने साथ लाया था। वह अधेड़ उम्र आदमी था। अदाकारी, चरबजबानी और भेस बदलने में महारत रखता था। जंगों में उस ने जासूसी की भी थी और जासूसों को पकड़ा भी था। उस का अपना गिरोह था जो आसमान से तारे भी तोड़ लाता था। सलाहुद्दीन अय्यूबी को जासूसी की अहमियत से वाक़फियत थी। फन्नी महारत के अलावा अली में वही जज़्बा था जो सलाहुद्दीन अय्यूबी में था।

"तुम ने सुना अली।" सलाहुद्दीन ने कहा– "यह लोग कह गये हैं कि नाजी किसी से हुक्म लिया नहीं करता। अपनी मनवाया करता है।"

"हां।" अली ने जवाब दिया। "मैंने सुन लिया है। अगर मैं चेहरे पहचानने में ग़लती नहीं करता तो मेरी राय में बॉडीगार्ड्ज़ का यह कमाण्डर जिस का नाम नाजी है, नापाक ज़ेहनियत का इन्सान है। उस के मुतअल्लिक़ मैं पहले से भी कुछ जानता हूं। यह फौज जो हमारे ख़ज़ाने से तन्ख़्वाह लेती है, दरअसल नाजी की ज़ाती फौज है। उस ने हुकूमती हलकों में ऐसी ऐसी साज़िशें की हैं जिन्होंने इन्तज़ामी ढांचे को बेहद कमज़ोर कर दिया है। आप का यह फैसला बिल्कुल बजा है कि फ़ौज में यहां के हर ख़ित्ते के सिपाही होने चाहिए।"

मैं आप को तफ़सीली मालूमात फ़राहम करूंगा। मुझे शक है कि सूडानी फौज नाजी की वफादार है, हमारी नहीं। आप को उस फ़ौज की तरतीब और तन्ज़ीम बदलनी पड़ेगी या नाजी को सुबकदोश करना पड़ेगा।"

"मैं अपनी सफ़ों में ही अपने दुश्मन पैदा नहीं करना चाहता।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "नाजी घर का भेदी है उसे सुबकदोश करके अपना दुश्मन बना लेना दानिश्मन्दी नहीं हमारी तलवार गैरों के लिए है, अपनों का खून बहाने के लिए नहीं। मैं नाजी की ज़ेहनियत को प्यार और मोहब्बत से बदल सकता हूं। तुम उस फ़ौज की ज़ेहनियत मालूम करने की कोशिश करो मुझे सही इत्तिला दो कि फ़ौज कहां तक हमारी वफादार है।"

मगर नाजी इतना कच्चा आदमी नहीं था। उसकी ज़ेहनियत प्यार और मोहब्बत के बखेड़ों से आज़ाद थी। उसे अगर प्यार था तो अपने इक़्तेदार और शैतानियत के साथ था। इस लिहाज़ से वह पत्थर था मगर जिसे अपने जाल में फांसना चाहता उसके सामने मोम हो जाता था। उस ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ यही रवैया अख़्तियार किया। उस के सामने वह बैठता नहीं था। हां में हां मिलाता जाता था। उसने मिस्र के मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों से अय्यूबी के हुक्म के मुताबिक फौज के लिए भरती शुरू कर दी थी, हालांकि यह काम उस की मर्जी के ख़िलाफ था। दिन गुज़रते जा रहे थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी उसे कुछ कुछ पसन्द करने लगा था। नाजी ने उसे यकीन दिलाया था कि सुडानी बॉडीगार्ड्ज़ फौज हुक्म की मुन्तज़िर है और यह कौम की तवक़्क़ुआत पर पूरी उतरेगी। नाजी सलाहुद्दीन अय्यूबी को दो तीन मर्तबा कह चुका था कि वह बॉडीगार्ड्ज़ की तरफ़ से दावत देना चाहता है और फौज उसके एज़ाज़ में जश्न मनाने के लिए बेताब है लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी मसरूफियत के वजह से यह दावत क़ुबूल नहीं कर सका था।

❖

रात का वक्त था नाजी अपने कमरे में अपने दो मोअतमद जुनियर कमाण्डर के साथ बैठा शराब पी रहा था। दो नाचने वालियां साज़ों की हल्की हल्की मौसीक़ी पर मस्ती में आयी हुई नागिनों की तरह मस्हूरकुन अदाओं से रक़्स कर रही थीं। उन के पांव में घूंघरू नहीं थे उन के जिस्मों पर कपड़े सिर्फ़ इसी क़दर थे कि उन के सतर ढके हुए थे। उस रक़्स में खुमार का तास्सुर था।

दरबान अन्दर आया और नाजी के कान में कुछ कहा– "नाजी जब शराब और रक़्स मे महव होता था तो कोई मुख़िल होने की जुर्रत नहीं कर सकता था। सिर्फ़ दरबान को मालूम था कि वह कौन सा ज़रूरी काम है जिस की ख़ातिर नाजी ऐश व तरब की महफ़िल से उठा करता है वर्ना वह अन्दर आने की जुर्रअत न करता। उस की बात सुनते ही नाजी बाहर निकल गया और दरबान उसे दूसरे कमरे में ले गया। वहां सूडानी लिबास में मलबूस एक अधेड़ उम्र आदमी बैठा था। उस के साथ एक जवान लड़की थी। नाजी को देखकर वह उठी। नाजी उसके चेहरे और क़द काठ की दिलकशी देखकर ठिठक गया। वह औरतों का शिकारी था। उसे औरतें सिर्फ़ अपनी अय्याशी के लिए दरकार नहीं होती थीं। उन से वह और भी कई काम

लिया करता था जिनमें एक यह था कि वह निहायत खूबसूरत और अय्यार लड़कियों के ज़रिए बड़े बेड़े अफसरों को अपनी मुट्ठी में रखता था और एक काम यह भी लेता था कि वह उन्हें अमीरों व वज़ीरों को ब्लैक मैल करने के लिए इस्तेमाल करता था और उन से वह जासूसी भी कराता था। जिस तरह कस्साब जानवर को देखकर बता देता है कि उस का गोश्त कितना है, उसी तरह नाजी लड़की को देखकर अन्दाज़ा कर लिया करता था कि यह किस काम के लिए मौज़ूं हैं। लड़कियों के व्यापारी और बुर्दा फरोश अकसर नाजी के पास माल, लाते रहते थे।

यह आदमी भी ऐसे ही व्यापरियों मे से लगता था। लड़की के मुतअल्लिक उस ने बताया कि तजुर्बाकार है। नाच भी सकती है और पत्थर को ज़ुबान के मीठे ज़हर से पानी में तबदील कर सकती है। नाजी ने उस का तफसीली इन्ट्रव्यु लिया। वह उस फन का माहिर था। उस के मुताबिक उस ने लड़की का इम्तेहान लिया और उसने यह राय कायम की कि जिस काम के लिए वह एक लड़की को तैय्यार कर रहा था उसके लिए यह लड़की थोड़ी सी ट्रेंनिंग के बाद मौज़ूं हो सकती है। सौदा तय हो गया। व्यापारी कीमत वसूल कर के चला गया। नाजी लड़की को उस कमरे में ले गया। जहां उसके दो साथी रक्स और शराब से दिल बहला रहे थे। उस ने लड़की को नाचने के लिए कहा। लड़की ने जब चुग़ा उतार कर जिस्म को दो ही बल दिये तो नाजी और उसके साथी तड़प उठे। पहली दोनों नाचने वालियों के रंग पीले पड़ गये। इस नयी लड़की के सामने उन की कद्र व किमत कम हो गयी थी।

नाजी ने उसी वक़्त महफिल बर्ख़ास्त कर दी और उस लड़की को अपने पास बिठा कर सब को बाहर निकाल दिया। लड़की से नाम पूछा तो उसने ज़कोई बताया। नाजी ने उसे कहा— " ज़कोई! तुम्हे यहां लाने वाले ने बताया था कि तुम पत्थर को पानी में तबदील कर सकती हो। मैं तुम्हारा यह कमाल देखना चाहता हूं।"

"नया अमीरे मिस्र" नाजी ने जवाब दिया— "वह सलारे आज़म भी है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी।" ज़कोई ने पूछा।

"हां— सलाहुद्दीन अय्यूबी।" नाजी ने कहा। " अगर तुम उसे पानी में तबदील कर दो तो उस के वज़न जितना सोना तुम्हारे कदमों में रख दूंगा।"

"वह शराब तो पीता होगा?"

"नहीं" नाजी ने जवाब दिया—"शराब,औरत, नाच, गाने और तफरीह से वह इतनी ही नफ्रत करता है जितनी हर मुसलमान ख़िन्जीर से करता है।"

"मैं ने सुना था कि आप के पास लड़कियों का ऐसा तिलिस्म है जो नील की रवानी को रोक लेता है।" ज़कोई ने कहा— "क्या वह तिलिस्म बेकार हो गया है?"

"मैं ने अभी आज़माया नहीं है।" नाजी ने कहा—" यह काम तुम कर सकती हो। मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी की आदतों के मुतअल्लिक तुम्हें बहुत कुछ बताऊंगा।"

"क्या आप उसे ज़हर देना चाहते हैं?" ज़कोई ने पूछा।

"अभी नहीं" नाजी ने जवाब दिया। " मेरी उस के साथ कोई दुश्मनी नहीं। मैं सिर्फ़ यह

चाहता हूं कि वह एक बार किसी तुम जैसी लड़की के जाल में फंस जाये। फिर मैं उसे अपने पास बिठाकर शराब पिलाऊंगा। अगर उसे कत्ल करना मकसूद होता तो मैं यह काम हशीशीन से निहायत आसानी से करा सकता था।"

"यानी आप उसके साथ दुश्मनी नही दोस्ती करना चाहते हैं।" ज़कोई ने कहा।

इतना बरजस्ता जुमला सुन कर नाजी चन्द लम्हे लड़की को देखता रहा। वह उस की तवक्को से ज़्यादा ज़हीन थी।

"हां ज़कुई।" नाजी ने उस के मुलायम हाथों पर हाथ फिराकर कहा।" मैं उसके साथ दोस्ती करना चाहता हूं। ऐसी दोस्ती कि वह मेरा! हम नवाला और हम प्याला बन जाये। आगे मैं जानता हूं कि मुझे उससे क्या काम लेना है।" नाजी ने कहा और ज़रा सोंच कर बोला– " लेकिन मैं तुम्हे यह भी बता देना ज़रूरी समझता हूं कि एक जादू सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ में भी है। अगर तुम्हारे हुस्न और नाज़ व अन्दाज़ पर उसका जादू चल गया तो मैं तुम्हे ज़िन्दा नहीं रहने दूंगा। अगर तुम ने मुझे धोखा दिया तो तुम एक दिन से ज्यादा ज़िन्दा नहीं रह सकोगी, सलाहुद्दीन अय्यूबी तुम्हे मौत से बचा नहीं सकेगा। तुम्हारी ज़िन्दगी और मौत मेरे हाथ में है। तुम मुझे धोखा नही दे सकोगी, इसी लिए मैं ने तुम्हारे साथ खुल कर बातें की हैं। वर्ना मेरे रूत्बे और हैसियत का आदमी एक पेशावर लड़की के साथ पहली मुलाकात में ऐसी बातें कभी नहीं करता।"

"यह आप को आने वाला वक़्त ही बतायेगा कि कौन किस को धोखा देता है।" ज़कोई ने कहा " मुझे यह बताइये कि सलाहुद्दीन अय्यूबी तक मेरी रसाई किस तरह होगी।"

"मैं उसे एक जश्न में बुला रहा हूं।" नाजी ने कहा– " उसे रात अपने यहां रखूंगा और तुम्हे उसके ख्वाबगाह में दाखिल करूंगा। मैं ने तुम्हे इसी मक़सद के लिए बुलाया है।"

"आगे मैं संभाल लूंगा।"

❖

वह रात गुज़र गयी। फिर और कई रातें गुज़र गयीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी इन्तेज़ामी कामों और जंगी फौज तैय्यार करने में इतना मसरूफ़ रहा कि नाजी की दावत कबूल करने का वक़्त न निकाल सका। अली बिन सुफियान ने उसे नाजी के मुतअल्लिक़ जो रिपोर्ट दी उस से वह परीशान हो गया। उसने अली से कहा– " तो इसका मतलब यह है कि यह शख़्स सलीबियों से ज़्यादं ख़तरनाक है।

"यह एक सांप है जिसे मिस्र की इमारत आसतीन में पाल रही है।" अली बिन सुफियान ने नाजी की तख़रीब कारी की तफ़सील सुनाई कि उसने किस तरह किस किस बड़े आदमी को अपने हाथ में लिया और इन्तज़ामियां में मन मानी करता रहा। फिर कहा और जिस सूडानी सिपाह का वह सालार है वह हमारी बजाये उसकी वफ़ादार है। क्या आप उसका कोई इलाज सोंच सकते हैं?"

"सिर्फ़ सोंच ही नही सकता।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जवाब दिया–" इलाज शुरू कर चुका हूं। मिस्र की जो सिपाह भरती की जा रही है, उसे मैं सूडानी मुहाफ़िज़ों में गडमड कर

दूंगा। फिर यह फौज़ सुडानी होगी न मिस्री। नाजी की यह ताकत बिखर कर हमारी फौज में जज़्ब हो जायेगी। नाजी को मैं उस के सही ठिकाने पर ले आऊंगा।"

"और मैं यह भी वसूक से कह सकता हूं कि उसने सलीबियों के साथ भी गठजोड़ कर रखा है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "आप सल्तनते इसलामिया को एक मज़बूत मरकज़ पर लाकर इस्लाम को वुसअत देना चाहते हैं मगर नाजी आपके ख़्वाब को दीवाने का ख़्वाब बना रहा है।"

"तुम इस सिलसिले में क्या कर रहे हो?"

"यह मुझ पर छोड़ दें।" अली बिल सुफ़ियान ने जवाब दिया– " मैं जो कुछ करूंगा वह आप को साथ–साथ बताता रहूंगा। आप मुत्मईन रहें। मैं ने उसके गिर्द जासूसों की ऐसी दीवार चुन दी है जिस की आंखें भी हैं, कान भी हैं और यह दिवार मुतहर्रिक है। यूं समझ लें कि मैंने उसे अपने जासूसी के किले में कैद कर लिया है।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी को अली बिल सुफ़ियान पर इस कदर एतमाद था कि उस से उस की दरपर्दा कार्रवाई की तफ़सील न पूछी। अली ने उस से पूछा– "मालूम हुआ है कि वह आप को जश्न पर मदउ कर रहा है। अगर यह बात सही है तो उस की दावत उस वक़्त कुबूल कीजिएगा जब मैं आप को बताऊंगा।"

अय्यूबी उठा और हाथ पीठ पीछे रख कर टहलने लगा। उस की आह निकल गयी। वह रूक गया और बोला– "बिन सुफ़ियान! ज़िन्दगी और मौत अल्लाह के हाथ में है। बे मकसद ज़िन्दगी से क्या यह बेहतर नहीं कि इन्सान पैदा होते ही मर जाये? कभी कभी यह सोंच दिमाग़ में आजाती है कि वह लोग शायद ख़ूश नसीब हैं जिन की कौमी हिस मुर्दा होती है और जिन का कोई किरदार नहीं होता। बड़े मज़े से जीते और अपनी आई पर मर जाते हैं।"

"वह बदनसीब हैं अमीरे मोहतरम!" अली ने कहा।

"हां बिन सुफियान!" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– " मैं जब उन्हें ख़ुश नसीब कहता हूं तो यही बात मालूम नहीं कौन मेरे कान मे कह देता है जो तुम ने कही है। मगर सोंचता हूं कि हम ने तारीख़ का धारा उस मोड़ पर न बदला तो मिल्लते इस्लामिया बिखर कर वादियों, जंगलों और सेहराओं में खो जायेगी। मिल्लत की ख़िलाफत तीन हिस्सों में बंट गयी है। अमीर मनमानी कर रहे हैं और सलीबियों के आलाकार बनते जा रहे हैं। मुझे यह डर भी महसूस होने लगा है कि मुसलमान अगर ज़िन्दा रहे तो वह हमेशा सलीबियों के ग़ुलाम और आलाकरा रहेंगे। वह इसी पे ख़ुश रहेंगे कि ज़िन्दा हैं मगर कौम की हैसियत से वह मुर्दा होंगे। ज़रा नक्शा देखो अली! आधी सदी में देखो हमारी सल्तनत का नक्शा कितना सिकुड़ गया है।" वह ख़ामोश हो गया। सर झुका कर टहलने लगा। फिर रुक गया और सर को झटक कर अली बिन सुफ़ियान को देखा कहने लगा– " जब तबाही अपने अन्दर से उठे तो उसे रोकना मुहाल हो जाता है। अगर हमारी ख़िलाफत और इमारतों का यही हाल रहा तो सलीबियों को हम पर हमले करने की ज़रूरत पेश नहीं आयेगी। वह आग जिस में हम अपना ईमान, अपना किरदार और अपनी कौमियत जला रहे हैं उस में सलीबी आहिस्ता आहिस्ता

तेल डालते रहेंगे। उनकी साज़िशें हमें आपस में लड़ाती रहेंगी....शायद अपना अज़्म पूरा न कर सकूं।

मैं शायद सलीबियों से शिकस्त भी खा जाउंगा लेकिन मैं क़ौम के नाम एक वसीयत छोड़ना चाहता हूं। वह यह है कि ग़ैर मुस्लिम पर कभी भरोसा न करना। उन के खिलाफ़ लड़ना है तो लड़ कर मर जाना, किसी ग़ैर मुस्लिम के साथ कभी समझौता और कोई मुआहदा न करना।"

"मायूस नहीं।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "जज़्बाती.... अली! मेरा एक हुक्म मुतअल्लिक़ा शोबे तक पहुंचा दो। भरती तेज़ कर दो और कोशिश करो कि फ़ौज के लिए ज़्यादा से ज़्यादा ऐसे आदमी रखो जो जंग का तजुर्बा हासिल कर चुके हों। हमारे पास इतनी लम्बी तरबियत का वक़्त नहीं। भरती होने वालों का मुसलमान होना लाज़मी क़रार दे दो और तुम अपने लिए ज़ेहन नशीन कर लो कि ऐसे जासूसों का एक दस्ता तैय्यार करो जो दुश्मन के इलाक़े में जा कर जासूसी भी करें और शबख़ून भी मारें। यह जांबाज़ों का दस्ता होगा। उन्हे ख़ुसूसी तरबीयत दो। उन में यह सिफ़ात पैदा करो कि ऊंट की तरह ज़्यादा से ज़्यादा अर्सा प्यास बर्दाश्त कर सकें। उनकी नज़रें ओक़ाब की तरह तेज़ हों। उनमें सेहराई लोमड़ी की मक्कारी हो और वह दुश्मन पर चीते की तरह झपटने की महारत, दिलेरी और ताक़त के मालिक हों। उन में शराब, हशीश वग़ैरह की आदत न हो और औरत के लिए वह बर्फ़ की तरह ठंडे हों.... भरती तेज़ कर दो बिन सुफ़ियान। और याद रखो मैं हुजूम का क़ाइल नहीं मुझे लड़ने वालों की ज़रूरत है ख़्वाह तादाद थोड़ी हो। उन में कौमी जज़्बा हो और वह मेरे अज़्म को समझते हों। किसी के दिल में यह शुबहा न हो कि उसे क्यों लड़ाया जा रहा है।

❖

अगले दस दिनों में हज़ारहा तरबीयत याफ़्ता सिपाही इमारते मिस्र की फौज में आ गये और उन दस दिनों में नाजी ने ज़कोई को ट्रेनिंग दे दी। कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी को कौन कौन से तरीक़े से अपने हुस्न के जाल में फांस कर उसकी शख़्सियत और उसके किरदार को कमज़ोर कर सकती है। नाजी के हमराज़ दोस्तों ने ज़कोई को देखा तो उन्होंने बिला ख़ौफ़े तरदीद कहा कि इस लड़की को मिस्र के फिरऔन देख लेते तो ख़ुदाई के दावे से दस्तबरदार हो जाते। नाजी का जासूसी का अपना निज़ाम था, बहुत तेज़ और दिलेर। वह मालूम कर चुका था कि अली बिन सुफियान सलाहुद्दीन अय्यूबी का ख़ुसूसी मुशीर है और अरब का माना हुआ सुराग़रसां। उसने अली के पीछे अपने जासूस छोड़ दिये थे और उसने अली को क़त्ल करा देने का मन्सूबा भी बना लिया था।

ज़कोई को नाजी ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपने दाम में फांसने के लिए तैय्यार किया थास लेकिन वह महसूस न कर सका कि मराकिश की रहने वाली यह लड़की उसके अपने असाब पर सवार हो गयी है। वह सिर्फ़ शक्ल व सूरत की ही दिलकश नहीं थी, उसकी बातों में ऐसा जादू था कि नाजी उसे पास बिठाकर उसके साथ बातें ही करता रहता था। उस ने उन दो नाचने गाने वाली लड़कियों से निगाहें फेर ली थीं जो उसकी मन्ज़ूरे नज़र थीं। तीन

चार रातों से उस ने उन लड़कियों को अपने कमरे में नहीं बुलाया था। नाजी सोने के अंडे देने वाली मुर्गी थी जो उन के कब्ज़े से निकल कर ज़कोई की आग़ोश में अंडे देने लगी थी। उन्होंने ज़कोई को रास्ते से हटाने की तरकीबें सोंचनी शुरू कर दीं। वह आख़िर इस नतीजे पर पहुंची कि उसे क़त्ल करा दिया जाये मगर उसे क़त्ल कराना मुमकिन नज़र नहीं आता था। क्योंकि नाजी ने उसे जो कमरा दे रखा था उस पर दो मुहाफ़िज़ों का पहरा रहता था। उस के अलावा यह दोनों लड़कियां उस मकान से बिला इजाज़त बाहर नहीं जा सकती थीं जो नाजी ने उन्हें दे रखा था। उन्होंने हरम की ख़ादिमा औरतों में से एक को एतमाद में लेना शुरू कर दिया। वह उसके हाथों ज़कोई को ज़हर देना चाहती थीं।

अली बिल सुफ़ियान ने सलाहुद्दीन अय्यूबी का मुहाफ़िज़ दस्ता बदल दिया। यह सब अमीरे मिस्र (वायसराय) के पुराने बॉडीगार्ड थे। उनकी जगह उसने उन सिपाहियों में से बॉडीगार्ड्ज़ का दस्ता तैय्यार कर दिया जो नयी भरती में आये थे। यह जांबाज़ों का मुन्तख़ब दस्ता था जो सिपाहगरी में भी ताक था और जज़्बे के लिहाज़ से उसका हर सिपाही मर्दे हुर था।

नाजी को यह तबदीली बिल्कुल पसन्द नहीं थी लेकिन उस ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के सामने तबदीली की बेहद तारीफें की और उसके साथ ही दरख़्वास्त की कि सलाहुद्दीन अय्यूबी उसकी दावत कुबूल कर ले। अय्यूबी ने उसे जवाब दिया कि वह एक आध दिन में उसे बतायेगा कि वह कब दावत कुबूल कर सकेगा। उस के जाने के बाद सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफ़ियान से मश्वरा लिया कि वह दावत पर कब जाये। अली ने उसे मश्वरा दिया कि अब वह किसी भी रोज़ दावत कुबूल करले।

दूसरे दिन सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाजी को बताया कि वह किसी भी रात दावत पर आ सकता है। नाजी ने तीन रोज़ बाद दावत दी और बताया कि यह दावत कम और जश्न ज़्यादा होगा और यह जश्न शहर से दूर सेहरा में मशालों की रौशनी में मनाया जायेगा। नाच गाने का इन्तज़ाम होगा। बॉडीगार्ड्ज़ के घोड़ा सवार अपने करतब दिखायेंगे। शमशिरज़नी और बग़ैर हथियारों की लड़ाई के मुकाबले होंगे और सलाहुद्दीन अय्यूबी को रात वहीं कयाम कराया जायेगा।

रिहाइश के लिए ख़ेमे नस्ब होंगे.... सलाहुद्दीन अय्यूबी प्रोग्राम की तफ़सील सुनता रहा। उसने नाच गाने पर भी एतराज नहीं किया। नाजी ने डरते झिझकते कहा– " फौज के बेश्तर सिपाही जो मुसलमान नहीं या जो अभी नीम मुसलमान हैं कभी कभी शराब पीते हैं। वह शराब के आदी नहीं। वह इजाज़त चाहते हैं कि जश्न में उन्हें शराब पीने की इजाज़ दीजाये।"

"आप उन के कमाण्डर हैं।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– " आप चाहें तो उन्हे इजाज़त दे दें। न देना चाहें तो मैं आप पर अपना हुक्म नहीं चलाऊंगा।"

"अमीरे मिस्र का इक़बाल बुलन्द हो।" नाजी ने गुलामों की तरह कहा– " मैं कौन होता हूं इस काम की इजाज़त देने वाला कि जश्न की रात हंगामा अराई और बदकारी के सिवा

सब कुछ कर सकते हैं।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" अगर शराब पी कर किसी ने हल्ला गुल्ला किया तो उसे सख़्त सज़ा दी जायेगी।"

यह ख़बर जब सलाहुद्दीन अय्यूबी के स्टाफ तक पहुंची कि नाजी सलाहुद्दीन अय्यूबी के एज़ाज़ में जो जश्न मुनअकिद कर रहा है उस में नाच गाना होगा और शराब भी पी जायेगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस जश्न की दावत इन खुराफ़ात के बावजूद कुबूल कर ली है, तो सब हैरत से एक दूसरे का मुंह देखने लगे। किसी ने कहा कि नाजी झूठ बोलता है वह दूसरों पर अपना रोब डालना चाहता है और किसी ने यह राय दी की नाजी का जादू सलाहुद्दीन अय्यूबी पर भी चल गया है। यह राय उन सरबराहों को पसन्द आई जो नाजी के हमनवाला और हम प्याला थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने चार्ज लेते ही उन के लिए ऐश व इशरत, शराब नोशी और बदकारी जुर्म करार दे दी थी। उसने ऐसा सख़्त निज़ाम रायज कर दिया था कि किसी को पहले की तरह फराइज़ से कोताही की जुर्रअत नहीं होती थी। वह उस पर ख़ुश थे कि आज नये अमीरे मिस्र ने किसी दावत में शराब और रक़्स की इजाज़त दे दी है तो कल परसो वह ख़ुद भी उन रंगिनियों का रसिया हो जायेगा।

सिर्फ़ अली बिन सुफ़ियान था जिसे मालूम था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने खुराफ़ात की इजाज़त क्यों दी है।

❖

जश्न की शाम आ गयी। एक तो चांदनी रात थी। सेहरा की चांदनी इतनी शफ़ाफ़ होती है कि रेत के ज़र्रे भी नज़र आ जाते हैं। दूसरे हज़ारहा मश्अलों ने वहां सेहरा की रात को दिन बना दिया था। बॉडीगार्ड्ज़ का हुजुम था जो एक वसीअ मैदान के गिर्द दिवारों की तरह खड़ा था। एक तरफ सलाहुद्दीन अय्यूबी के बैठने के लिए जो मसनद रखी गयी थी वह किसी बहुत बड़े बादशाह का तख़्त मालूम होती थी।

उसके दायें बांये बड़े रुत्बों के मेहमानों के लिए निहायत ख़ूबसूरत ख़ेमे नस्ब थे। उन से हट कर एक बड़ा ख़ेमा सलाहुद्दीन अय्यूबी के लिए नस्ब किया गया था जहां उसे रात बसर करनी थी। अली बिन सुफ़ियान ने सूरज ग़ुरूब होने से पहले वहां जाकर खेमे के इर्द गिर्द मुहाफ़िज़ ख़ड़े कर दिये थे।

जब अली बिन सुफ़ियान वहां मुहाफ़िज खड़े कर रहा था, नाजी, ज़कोई को आख़िरी हिदायत दे रहा थ। उस शाम ज़कोई का हुस्न कुछ ज़्याद ही निखर आया था। उस के जिस्म से ऐसे अतर की भीनी–भीनी बू उठ रही थी जिस में सेहर का तास्सुर था। उसने बाल उरियां कंधों पर फैला दिय थे। सपीद कंधों पर सियाही माइल भूरे बाल ज़ाहिदों की नज़रों को गिरफ़तार करते थे। उस का लिबास इस क़दर बारीक था कि उस के जिस्म के तमाम नशीब व फ़राज़ साफ़ नज़र आते थे। उसके होठों पर कुदरती तबस्सुम अध खिली कली की मानिन्द था।

नाजी ने उसे सर से पांव तक देखा और कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी पर तुम्हारे जिस्मानी हुस्न का शायद असर न हो। अपनी जुबान इस्तेमाल करना। वह सबक़ भूलना नहीं जो मैं

इतने दिनों से तुम्हें पढ़ा रहा हूं और यह भी न भूलना कि उसके पास जाकर उस की लौंडी न बन जाना। इन्जीर का वह फूल बन जाना जो दरख़्त की चोटी पर नज़र आता है मगर दरख़्त पर चढ़ कर देखो तो ग़ायब हो जाता है। उसे अपने क़दमों में बिठा लेना।

मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूं कि तुम उस पत्थर को पानी में तबदील कर लोगी। इसी सरज़मीन में क़लू पतरा ने सिज़र जैसे मर्दे आहन को अपने हुस्न व जवानी से पिघलाकर मिस्र की रेत में बहा दिया था। क़लूपतरा तुम से ज़्याद ख़ूबसूरत नहीं थी। मैंने तुम्हे जो सबक़ दिये हैं वह क़लूपतरा की चालें थीं। औरत की यह चालें कभी नाकाम नहीं हो सकती।"

ज़कोई मुस्कुरा रही थी और बड़े ग़ौर से सुन रही थी। मिस्र की रेत ने एक और क़लूपतरा को हसीन नागिन की तरह जन्म दिया था। मिस्र की तारीख़ अपने आप को दुहराने वाली थी।

सूरज गुरूब हो गया तो मशालें जल उठीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी घोड़े पर सवार आ गया। उसके दायें बांये, आगे पीछे उसके उन मुहाफ़िज़ों के घोड़े थे जो अली बिल सुफ़ियान ने मुन्तख़ब किये थे। उसी दस्ते में से उसने दस मुहाफ़िज़ शाम से पहले ही यहां लाकर सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे के गिर्द ख़ड़े कर दिये थे।

साज़ों ने दफ़ की आवाज़ पर इस्तक़बालिया धुन बजाई और सेहरा "अमीर मिस्र ससलाहुद्दीन अय्यूबी ज़िन्दाबाद" के नारों से गुंजने लगा। नाजी ने आगे बढ़कर इस्तक़बाल किया और कहा– " आप के जांनिसार, अज़मते इस्लाम के पासबां आप को बसरो व चश्म खुश आमीदीद कहते हैं। उनकी बे ताबियां और बेक़रारियां देखिए। आप के इशारे पर कट मरेंगे।" और खुशामद के लिए उसे जितने अलफ़ाज याद आये उसने कह डाले।

ज्योंहि सलाहुद्दीन अय्यूबी अपनी शाहाना नशिस्त पर बैठा, सरपट दौड़ते घोड़े की टापों की आवाज़े सुनाई दीं। घोड़े जब मशालों की रोशनी में आये तो सब ने देखा कि चार घोड़े दायें से और चार बायें से दौड़े आ रहे थे। हर एक पर एक एक सवार था। उन के पास हथियार नहीं थे। वह एक दूसरे के आमने सामने आ रहे थे। साफ़ ज़ाहिर था कि वह टकरा जायेंगे। किसी को मालूम नहीं था कि वह क्या करेंगे। वह एक दूसरे के क़रीब आये तो दोनों फ़रीक़ों के सवार रकाबों में पांव जमा कर खड़े हो गये। फिर उन्होंने लगामें एक एक हाथ में कर लीं और दूसरे बाज़ू फैला दिये। दोनों इतराफ़ के घोड़े बिल्कुल आमने सामने आ गये और सवारों की दोनों पार्टियां एक दूसरी से उलझ गयीं। सवरों ने एक दूसरे को पकड़ने और घोड़े से गिराने की कोशिश की। जब घोड़े आगे निकल गये तो दो सवार जो घोड़ों से गिर पड़े थे। रेत पर कलाबाज़ियां खा रहे थे। एक तरफ के एक सवार ने दूसरी तरफ़ के एक सवार को एक बाज़ू में जकड़ कर उसे घोड़े से उठा लिया था और उसे अपने घोड़े पर डाल कर ले जा रहा था। हुजूम ने इस क़दर शोर बपा किया कि अपनी आवाज़ अपने आप को भी नहीं सुनाई देती थी।

यह सवार अंधेरे में ग़ायब हुये तो दोनों तरफ़ से चार–चार और घोड़े आये और उसी तरह मुक़ाबिला हुआ। इस तरह आठ मुक़ाबिले हुए और उस के बाद शुतर सवार आये। फिर घोड़ा

सवारों और शुतर सवारों ने सवारी के मुतअदिद करतब दिखाये। उस के बाद तेग़ज़नी और बेग़ैर हथियारों की लड़ाई के मुज़ाहिरे हुए जिन में कई एक सिपाही जख़्मी हो गये। सलाहुद्दीन अय्यूबी शुजाअत और बेख़ौफ़ी के इन मुज़ाहिरों और मुकाबिलों में जज़्ब होके रह गया था। उसे ऐसी ही बहादुर फौज की ज़रूरत थी। उस ने अली बिन सुफ़ियान के कान में कहा– "अगर इस फौज में इस्लामी जज़्बा भी हो तो मैं सिर्फ़ इसी फौज से सलीबियों को घुटनों बिठा सकता हूं।"

अली बिन सुफियान ने वही मश्वरा दिया जो वह पहले भी दे चुका था। उस ने कहा– "अगर नाजी से कमान लेली जाये तो जज़्बा भी पैदा हो जायेगा।" मगर सलाहुद्दीन अय्यूबी नाजी जेसे ज़हीन और तजुर्बाकार सालार को सुबुकदोश करने की बजाये सुधार कर राहे हक़ पर लाना चाहता था। वह उस जश्न में अपनी आंखों यही देखने आया था कि यह फौज किरदार के लिहाज़ से कैसी है। उसे नाजी की उस दरख्वास्त से ही मायूसी हो गयी थी कि उस के सिपाही और कमाण्डर शराब पीना चाहते हैं और नाच गाना भी होगा। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस की दरख्वास्त इस वजह से मन्ज़ूर की थी कि वह देखना चाहता था कि यह लश्कर किस हद तक ऐश व इशरत में डूबा हुआ है।

बहादुरी, शाहसवारी और तेग़ज़नी वग़ैरह के मुज़ाहिरों और मुकाबिलों में तो यह फौज अस्करी और जंगी मियार पर पूरी उतरती थी मगर खाने का वक़्त आया तो यह फौज बदतमीज़, बला नोशों और हंगामा परवर लोगों का बे काबू हुजूम बन गयी। खाने का इन्तज़ाम वसीअ व अरीज़ मैदान में किया गया था। एक तरफ फौज के कम वे बेश दो हज़ार आदमियों के लिए खाना चुना गया था और उन से ज़रा दूर सलाहुद्दीन अय्यूबी और दिगर बड़े मेहमानों के खाने का इन्तज़ाम था। सैकड़ों सालिम दुंबे और बकरे, ऊंटों की सालिम रानें और हज़ारों मुर्ग़ रोस्ट किये गये थे। दिगर लवाज़ुमात का कोई शुमार न था और सिपाहियों के सामने शराब के छोटे छोटे मश्किज़े और सुराहियां रख दी गयी थीं। सिपाही खाने और शराब पर टूट पड़े। फटाफट शराब चढ़ाने लगे और मार्का आराई होने लगी। सलाहुद्दीन अय्यूबी यह मंज़र देख रहा था और ख़ामोश था। उस के चेहरे पर कोई ऐसा तास्सुर नहीं था जो यह ज़ाहिर करता कि वह क्या सोंच रहा है। उस ने नाजी से सिर्फ़ इतना पूछा– "पचास हज़ार फौज में से आप ने यह सिपाही दावत के लिए किस तरह मुंतख़ब किये थे? क्या यह आप के बदतरीन सिपाही हैं?"

"नहीं अमीरे मिस्र!" नाजी ने ग़ुलामाना लहजे में जवाब दिया– "यह दो हज़ार असकरी मेरे बेहतरीन आदमी हैं। आप ने उन के मुज़ाहिरे देखे हैं। उन की बहादुरी देखी है। मैदाने जंग में यह जिस जांबाजी का मुज़ाहिरा करेंगे वह आप को हैरान कर देगा। आप उन की बदतमीज़ी को न देखें। यह आप के इशारे पर जानें क़ुरबान करदेंगे। मैं उन्हे कभी कभी खुली छुट्टी दे दिया करता हूं ताकि मरने से पहले दुनियाये रंग व बू से पूरा पूरा लुत्फ़ उठालें।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इस इस्तदलाल के जवाब में कुछ भी न कहा। नाजी जब दूसरे मेहमानों की तरफ मुतवज्जा हुआ तो सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिल सुफ़ियान से कहा–

" मैं जो देखना चाहता था, वह देख लिया है। यह सूडानी असकरी शराब और हंगामा आराई के आदी हैं। तुम कहते हो कि उन मे जज़्बा नहीं। मैं देख रहा हूं कि उन में किरदार भी नहीं। इस फौज को अगर तुम मैदाने जंग में ले गये तो यह लड़ने की बजाये अपनी जान बचाने की फिक्र करेगी और माले ग़नीमत लूटेगी और मफ़तूह की औरतों के साथ वहशियाना सलूक करेगी।"

"इस का इलाज यह है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– " कि आप ने मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों से जो फौज़ तैय्यार की है, उन्हें नाजी के इस पचास हज़ार सुडानी लशकर में मुदग़म कर दिया जाये बुरे सिपाही अच्छे सिपाहियों के साथ मिल जुल कर अपनी आदतें बदल दिया करते हैं।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी मुस्कुराया और अली से कहा– " तुम यक़ीनन मेरे दिल का राज़ जानते हो। मेरा मन्सूबा यही है जो मैं अभी तुम्हे नहीं बताना चाहता था। किसी से इस का ज़िक्र न करना।"

अली बिन सुफ़ियान में यही वस्फ़ था कि दूसरों के दिलों के राज़ जान लेता था और ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन था। वह कुछ और कहने ही लगा था कि उनके सामने कई और मशालें हो गयीं। ज़मीन पर बेश क़ीमत कालीन बिछे हुए थे। शहनाइयों और सारंग का ऐसा मिठा और पुरसोज़ नग़मा उभरा कि मेहमानों पर सन्नाटा तारी हो गया। एक तरफ से नाचने वालियों की कतारें नमुदार हुई। बीस लड़कियां ऐसे बारीक और नफ़ीस लिबास में मलबूस चली आ रही थीं जिसमें उन के जिस्मों के अंग–अंग नज़र आ रहे थे। हर एक का लिबास निहायत बारीक चुग़ा सा था जो शानूं से टख़्नों तक लम्बा था। उन के बाल खुले हुए थे और उसी रेशम का हिस्सा नजर आते थे जिस का उन्होंने लिबास पहन रखा था। सेहरा की हल्की–हल्की हवा से और लड़कियों की चाल से यह ढिला ढाला लिबास हिलता था तो यूं लगता था जैसे फूलदार पौधों की डालियां फिज़ा में तैरती आ रही हों। हर एक के लिबास का रंग जुदा था। हर एक की शकल व सूरत एक दूसरी से मुख़्तलिफ़ थी लेकिन हुस्न और जिस्म की लचक में सब एक जैसी थीं। उन के मरमरीं बाज़ू उरियां थे। वह चलती आ रही थीं लेकिन क़दम उठते नजर नहीं आते थे। वह हवा की लहरों की मानिन्द आ रही थीं।

वह नीम दायरे में हो कर रूक गयीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ मुंह करके ताज़ीम के लिए झुकीं। सब के बाल सरक कर शानू पर आ गये। साज़ों ने उन रेशमी बालों और जिस्मों के जादू में तिलिस्म पैदा कर दिया। दो स्याह फ़ाम, दैव हैकल हब्शी जिन की कमर के गिर्द चीतों की खालें थी। एक बड़ा सा टोकरा उठाये तेज़ तेज़ कदम चलते नज़र आये और लड़कियों के नीम दायरे के सामने रख दिया। साज़ सपेरों की बीन की धुन बजाने लगे। हब्शी मस्त सांडों की तरह फुफकारते गायब हो गये। टोकरे में से एक बहुत बड़ी कली ऊपर को उठी और फूल की तरह खिल गयी। उन फूलों में से एक लड़की का चेहरा नमुदार हुआ और फिर वह उपर को उठने लगी। यूं लगता था कि जैसे सुर्ख़ बादलों में से चांद निकल रहा हो। यह लड़की इस दुनिया की मालूम नही होती थी। उस की मुस्कुराहट भी अरज़ी नहीं थी।

उस के बालों की चमक भी मिस्र की किसी लड़की की चमक नहीं लगती थी और जब लड़की ने फूल की चौड़ी पत्तियों में से बाहर क़दम रखा तो उसके जिस्म की लचक ने तमाशाइयों को मसहूर कर लिया।

अली बिन सुफ़ियान ने सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ़ देखा। उसके होठों पर मुस्कुराहट थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुस्कुराकर उस के कान में कहा– "मुझे तवक्क़ो नहीं थी कि यह इतनी ख़ूबसूरत होगी।"

नाजी ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास आकर कहा– "अमीरे मिस्र का इक़बाल बुलन्द हो। इस लड़की का नाम ज़कोई है। इसे मैं ने आप की ख़ातिर सिकन्दरिया से बुलाया है।

यह पेशावर रक़्क़ासा नहीं और यह इस्मत फ़रोश भी नहीं। रक़्स से इसे प्यार है। शौक़िया नाचती है। किसी महफ़िल में नहीं जाती। मैं इसके बाप को जानता हूं। साहिल पर मछलियों का कारोबार करता था। यह लड़की आप की अक़ीदत मंद है। आप को पैगम्बर मानती है। मैं इत्तफ़ाक़ से इस के घर इस के बाप से मिलने गया तो इस लड़की ने इस्तदआ की कि सुना है सलाहुद्दीन अय्यूबी अमीरे मिस्र बन के आये हैं। ख़ुदा के नाम पर मुझे उन से मिलवा दो। मेरे पास अपनी जान और रक़्स के सिवा कुछ भी नहीं जो मैं उस अज़ीम हस्ती के क़दमों में पेश करूं... क़ाबिले सद एहतराम अमीर! मैं ने आप से रक़्स सुरूद की इजाज़त इसी लिए मांगी थी कि इस लड़की को मैं आप के हुज़ूर पेश करना चाहता था।"

"आप ने उसे बताया था कि मैं अपने सामने किसी लड़की को रक़्स और उरयानी की हालत में नहीं देख सकता?" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "यह लड़कियां जिन्हें आप मलबूस लाये हैं बिल्कुल नंगी हैं।"

"आली मुक़ाम!" नाजी ने खिसियाना होके जवाब दिया।" मैं ने बताया था कि अमीरे मिस्र रक़्स को नापन्द फ़रमाते हैं लेकिन यह कहती थी कि वह मेरा रक़्स पसन्द करेंगें क्योंकि मेरे रक़्स में दावते गुनाह नहीं। यह एक बाइस्मत लड़की का रक़्स होगा। मैं अय्यूबी के हुज़ूर अपना जिस्म नहीं। अपना फ़न पेश करूंगी! अगर मैं मर्द होती तो अय्यूबी की जान की हिफ़ाज़त के लिए उसके मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो जाती।"

"आप कहना क्या चाहते हैं?" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा– "इस लड़की को अपने पास बुला कर उसे ख़िराजे तहसीन पेश करूं कि तुम अपने जिस्म को हज़ारों मर्दों के सामने उरियां करके बहुत अच्छा नाचती हो? उसे उस पर शाबाश कहूं कि उस ने मर्दों के जिन्सी जज़्बात भड़काने में ख़ूब महारत हासिल की है?"

"नहीं अमीरे मिस्र!" नाजी ने कहा– "मैं उसे इस वादे पर यहां लाया हूं कि आप उसे शर्फ़े बारयाबी बख़्शेंगे। यह बड़ी दूर से इसी उम्मीद पर आयी है। ज़रा देखिए इसे। इसके रक़्स में पेशा वराना तास्सुर नहीं, ख़ुद सुपुर्दगी है। देखिए, वह आप को कैसी नज़रों से देख रही है। बेशक इबादत सिर्फ़ अल्लाह की की जाती है लेकिन यह रक़्स की अदाओं से, अक़ीदत से, मख़्मूर निगाहों से आप की इबादत कर रही है। आप उसे अपने ख़ेमे में आने की इजाज़त दे दें। थोड़ी सी देर के लिए। उसे मुस्तकबिल की वह मां समझें जिसकी कोख से इस्लाम की

पासबानी के लिए जांबाज़ जन्म लेंगे। यह अपने बच्चों को बड़े फ़ख्र से बताया करेगी कि मैं ने सलाहुद्दीन अय्यूबी से तन्हाई में बातें करेने का शर्फ़ हासिल किया था।"

नाजी ने निहायत पुर असर अल्फ़ाज़ और जज़्बाती लब व लहजे में सलाहुद्दीन अय्यूबी से मनवा लिया कि यह लड़की जिसे उसने एक बुरदा फ़रोश से ख़रीदा था, शरीफ़ बाप की बा इस्मत बेटी है। उस ने सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहलवा लिया कि " अच्छा, उसे मेरे ख़ेमे में भेज देना।"

ज़कोई निहायत आहिस्ता आहिस्ता जिस्म को बल देती और बार–बार सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ़ देख कर मुस्कुराती थी। बाकी लड़कियां उस के गिर्द तितलियों की तरह जैसे उड़ रही हों। यह उछल कूद वाला रक़्स नहीं था। मशालों की रोशनी मे कभी तो यूं लगता था जैसे हल्के नीले शफ़ाफ़ पानी में जल परियां तैर रही हों। चांदनी का अपना एक तास्सुर था। सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक कोई नहीं बता सकता कि वह गुम सुम बैठा क्या सोंच रहा था। नाजी के सिपाही जो शराब पी कर हंगामा कर रहे थे वह भी जैसे मर गये थे। ज़मीन और आसमान पर वज्द तारी था। नाजी अपनी कामयाबी पर बेहद मसरूर था और रात गुज़रती जा रही थी।

निस्फ़ शब के बाद सलाहुद्दीन अय्यूबी उस ख़ुशनुमा ख़ेमे में दाख़िल हुआ जो नाजी ने उसके लिए नस्ब कराया था। उस ने कालीन बिछा दिये थे। पलंग पर चीते की खाल की मानिन्द पलंग पोश था। फ़ानूस जो रखवाया था, उस की हलकी नीली रौशनी सेहरा की शफ़ाफ़ चांदनी की मानिन्द थी और अन्दर की फ़िज़ा इतर बेज़ थी, ख़ेमे के अन्दर रेशमी पर्दे आवीजां थे। नाजी सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ ख़ेमे में गया और पूछा– " उसे ज़रा सी देर के लिए भेज दूं? मैं वादा ख़िलाफ़ी से बहुत डरता हूं।"

"भेज दो" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा और नाजी हिरन की तरह चौकड़ियां भरता ख़ेमे से निकल गया।

थोड़ा ही वक़्त गुज़रा होगा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुहाफ़िज़ों ने एक रक़ासा को उसके ख़ेमे की तरफ आते देखा। ख़ेमे के हर तरफ़ मशालें रौशन थीं। रौशनी का यह इन्तज़ाम अली बिन सुफ़ियान ने कराया था कि रात के वक़्त मुहाफ़िज़ गिर्द व पेश को अच्छी तरह देख सकें। रक़ासा क़रीब आई तो उन्होंने उसे पहचान लिया। उन्होंने उसे रक़्स में देखा था। यह वही लड़की थी जो टोकरे में से निकली थी। वह ज़कोई थी। वह रक़्स के लिबास में थी। यह लिबास तौबा शिकन था। उस मे वह उरियां थी। मुहाफ़िज़ों के कमाण्डर ने उसे रोक लिया। ज़कोई ने उसे बताया उसे अमीरे मिस्र सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बुलाया है। कमाण्डर ने उसे बताया कि यह उन अमीरों में से नहीं जो तुम जैसी फ़ाहशा लड़कियों के साथ रातें गुज़ारते हैं।

"आप उनसे पूछ लें।" ज़कोई ने कहा– " मैं बिन बुलाये आने की जुर्रत नहीं कर सकती।"

"उनका बुलावा तुम्हे किस तरह मिला था?" कमाण्डर ने पूछा।

सालार नाजी ने कहा है कि तुम्हे अमीरे मिस्र बुलाते हैं।" ज़कोई ने कहा। "आप कहते हैं तो मैं वापस चली जाती हूं। अमीर ने जवाब तलबी की तो ख़ुद भुगत लेना।" कमाण्डर तस्लीम नहीं कर सकता था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी ख़्वाबगाह में एक रक़ासा को बुलाया है। वह अय्यूबी के किरदार से वाकिफ़ था। उस के उस हुक्म से भी वाकिफ़ था कि नाचने गाने वालियों से तअल्लुक़ रखने वाले को एक सौ दुर्रे लगाये जायेंगे। कमाण्डर शिश व पंज में पड़ गया। सोंच–सोंच कर उसने जुर्रत की और सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे में चला गया। अय्यूबी अन्दर टहल रहा था। कमाण्डर ने डरते–डरते कहा कि बाहर एक रक़ासा ख़ड़ी है। कहती है हुज़ूर ने उसे बुलाया है। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "उसे अन्दर भेज दो।"

कमाण्डर बाहर निकला और ज़कोई को अन्दर भेज दिया। मुहाफ़िज़ों को तवक्को थी कि उनका अमीर और सालारे आज़म उस लड़की को बाहर निकाल देगा। वह सब उस की गरजदार आवाज़ सुनने के लिए तैय्यार हो गये। मगर उन्हें ऐसी कोई आवाज़ न सुनाई दी। रात गुज़रती जा रही थी। अन्दर से धीमी–धीमी बातों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। मुहाफ़िज़ दस्ते का कमाण्डर बेक़रारी के आलम में इधर–उधर टहलने लगा। एक मुहाफ़िज़ ने उसे कहा– "क्या यह हुक्म सिर्फ़ हमारे लिए है कि किसी फ़ाहिशा के साथ तअल्लुक़ रखना जुर्म है।"

"हां!" उसने जवाब दिया। " हुक्म सिर्फ़ मातेहतों के लिए और क़ानून सिर्फ़ रिआया के लिए होते हैं।"

अमीरे मिस्र को दुर्रे नहीं लगाये जा सकते।"

"बादशाहों का कोई किरदार नहीं होता।" कमाण्डर ने जल कर कहा– " सलाहुद्दीन अय्यूबी शराब भी पीता होगा। हम पर झूठी परसाई का रोब जमाया जाता है।"

उनकी निगाहों में सलाहुद्दीन अय्यूबी का जो बुत था वह टूट फूट गया। उस बुत में से एक अरबी शहज़ादा निकला जो अय्याश और बदकार था। पारसाई के लिए पर्दे में गुनाह का मुर्तकिब हो रहा था।

नाजी बहुत ख़ुश था। सलाहुद्दीन अय्यूबी की ख़ुशनूदी के लिए उस ने शराब सूंघी भी नहीं थी। वह ख़ेमें में बैठा मुसर्रत से झूम रहा था। उसके सामने उसका नायब सालार औरोश बैठा था। उस ने नाजी से कहा– " उसे गये बहुत वक़्त गुज़र गया है। मालूम होता है हमारा तीर सलाहुद्दीन अय्यूबी के दिल में उतर गया है।"

"मेरा तीर ख़ता कब गया था?" नाजी ने कहकहा लगाकर कहा–" अगर यह तीर ख़ता जाता तो फौरन यहीं टूट के हमारे पास आ जाता।"

"तुम ठीक कहते थे।" औरोशने कहा– " ज़कोई इन्सान के रूप में तिलिस्म है। मालूम होता है कि यह लड़की हशिशीन के साथ रही है वरना सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसा बुत कभी न तोड़ सकती। मैंने उसे जो सबक़ दिये हैं वह हशिशीन के वहम व गुमान में भी न आये होंगे।" नाजी ने कहा– " अब सलाहुद्दीन अय्यूबी के हल्क़ से शराब उतारनी रह गयी है।" नाजी को

बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। वह दौड़ कर बाहर गया। वह ज़कोई नहीं थी। कोई सिपाही जा रहा था। नाजी ने दूर से सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे की तरफ़ देखा। पर्दे गिरे हुए थे और बाहर मुहाफ़िज़ खड़े थे। उस ने अन्दर जाकर औरोश से कहा– " अब मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूं कि मेरी ज़कोई ने बुत तोड़ डाला है।"

❖

रात का आख़िरी पहर था जब ज़कोई सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे से निकली। नाजी के ख़ेमे में जाने की बजाये वह दूसरी तरफ़ चली गयी। रास्ते में एक आदमी खड़ा था, जिसका जिस्म सर से पांव तक एक ही लिबादे में ढका हुआ था। उसने धीमी सी आवाज़ में ज़कोई को पुकारा। वह उस आदमी के पास चली गयी। वह आदमी उसे एक ख़ेमे में ले गया। बहुत देर बाद वह उस ख़ेमे से निकली और नाजी के ख़ेमे का रुख़ कर लिया। नाजी उस वक़्त तक जाग रहा था और कई बार बाहर निकल कर सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे को देख चुका था कि ज़कोई ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को फांस लिया है और उसे आसमान की बुलंदियों से घसीट कर नाजी की ही ज़ेहनियत की पस्तियों में ले आई है।

"औरोश!" उसने कहा– " रात तो गुज़र गयी है। वह अभी तक नहीं आयी।"

"वह अब आयेगी भी नहीं।" औरोश ने कहा– " अमीरे मिस्र उसे अपने साथ ले जायेगा। ऐसे हीरे कोई शहज़ादा वापस नहीं करता... तुम ने इस पर भी ग़ौर किया है?"

"नहीं।" नाजी ने कहा– "मैंने अपनी चाल का यह पहलू तो सोंचा ही नहीं था।"

"क्या यह नहीं हो सकता था कि अमीरे मिस्र ज़कोई के साथ बाक़ायदा शादी करे।" औरोश ने कहा– " उस सूरत में यह ख़तरा है कि लड़की हमारे काम की नहीं रहेगी।"

"वह है तो होशियार" नाजी ने कहा– " मगर रक़ासा का क्या भरोसा? वह रक़ासा की बेटी है और तजुर्बाकार पेशावर है। धोखा दे सकती है।"

वह गहरी सोंच में खोया हुआ था कि ज़कोई उस के ख़ेमे में दाख़िल हुई। उसने हंस कर कहा– " अपने अमीर के जिस्म का वजन करो और लाओ उतना सोना। आप ने मेरा यह इनाम मुक़र्रर किया था ना?"

"पहले बताओ हुआ क्या?" नाजी ने बेताबी से पूछा।

"जो आप चाहते थे।" ज़कोई ने जवाब दिया। "आपको यह किसने बताया था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी पत्थर है, फ़ौलाद है और वह मुसलमानों के अल्लाह का साया है?" उसने ज़मीन पर पांव का ठूंठ मार कर कहा– " वह उस रेत से ज़्यादा बे बस है जिसे हवा के हल्के हल्के झोंके उड़ाते फिरते हैं।"

" तुम्हारे हुस्न के जादू और ज़ुबान के तिलिस्म ने उसे रेत बनाया है।" औरोश ने कहा– " वरना यह कम्बख़्त चट्टान था।"

"हां, चट्टान था।" ज़कोई ने कहा– "अब रेतीला टीला भी नहीं।"

"मेरे मुतअल्लिक़ कोई बात हुई थी?" नाजी ने पूछा।

"हां।" ज़कोई ने जवाब दिया। " पूछता था नाजी कैसा आदमी है। मैंने जवाब दिया कि

मिस्र मे अगर किसी पर आप को एतमाद चाहिए तो वह सिर्फ नाजी है। उसने पूछा कि तुम किस तरह उसे जानती हो। मैंने कहा वह मेरे बाप के गहरे दोस्त हैं। हमारे घर गये थे और मेरे बाप से कहते थे कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी का ग़ुलाम हूं। मुझे समन्दर में कुदने का हुक्म देंगे तो कूद जाऊंगा.... फिर उसने मुझ से पूछा कि तुम बाइस्मत लड़की हो। मैंने कहा कि मैं आपकी लौंडी हूं। आप का हर हुक्म सर आंखों पर। कहने लगा कुछ देर मेरे पास बैठो। मैं उसके पास बैठ गयी। फिर वह अगर पत्थर था तो मोम हो गया और मैने मोम को अपने सांचे में डाल लिया। उससे रुख़्सत होने लगी तो उसने मुझसे माफी मांगी। कहने लगा मैंने जिन्दगी में पहला गुनाह किया है। मैंने कहा, यह गुनाह नहीं। आप ने मेरे साथ धोखा नहीं किया, जबरदस्ती नहीं। मुझे बादशाहों की तरह हुक्म देकर नहीं बुलाया। मैं खुद आई थी। फिर भी आऊंगी।''

लड़की ने हर एक बात इस तरह खुलकर सुनाई जिस तरह उस का जिस्म उरिया था। नाजी ने जोशे मुसर्रत से उसे अपने बाज़ूओं में ले लिया। औरोश ज़कोई को ख़िराजे तहसीन और नाजी को मुबारकबाद पेश करके ख़ेमे से निकल गया।

❖

सेहरा की उस पुर असरार रात की कोख से जिस सुबह ने जन्म लिया वह किसी भी सेहराई सुबह से मुख़्तलिफ नहीं थी मगर उस सुबह के उजाले ने अपने तारीक सीने में एक राज़ छुपा लिया था जिस की क़ीमत उस सल्तनते इस्लामियां जितनी थी जिसके क़याम और इस्तेहकाम का ख़्वाब सलाहुद्दीन अय्यूबी ने देखा और उसकी ताबीर का अज़्म लेकर जवान हुआ था।

गुज़िश्ता रात उस सेहरा में जो वाक़िआ हुआ उस के दो पहलू थे। एक पहलू से सिर्फ नाजी और औरोश वाक़िफ थे। दूसरे पहलू से सलाहुद्दीन अय्यूबी का मुहाफ़िज़ दस्ता वाक़िफ था और सलाहुद्दीन अय्यूबी, उसका सुराग़रसां और जासूस अली बिन सुफ़ियान और ज़कोई, तीन ऐसे अफ़राद थे जो उस वाक़िआ के दोनों पहलूंओ से वाक़िफ थे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी और उस के स्टाफ को नाजी ने निहायत शान व शौकत और अक़ीदत मन्दी से रुख़्सत किया। सूडानी फौज दो रवैया खड़ी ''सलाहुद्दीन अय्यूबी ज़िन्दाबाद'' के नारे लगा रही थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नारों के जवाब में बाज़ू लहराने, मुस्कुराने और दीगर तकल्लुफ़ात की परवा न की। नाजी से हाथ मिलाया। अपने घोड़े को ऐड़ लगादी। उसके पीछे उसके मुहाफ़िज़ों और दीगर स्टाफ को भी घोड़े दौड़ाने पड़े। अपने मरकज़ी दफ़्तर में पहुंच कर वह अली बिन सुफ़ियान और अपने एक नायब को अन्दर ले गया और दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया। वह सारा दिन कमरे में बन्द रहे। सूरज ग़रूब हुआ। रात तारीक हो गयी। कमरे के अन्दर खाना तो दरकिनार पानी भी नहीं गया। रात ख़ासी गुज़र चुकी थी जब तीनों बाहर निकले और अपने घरों को रवाना हुए।

अली बिन सुफ़ियान उन से अलग हुआ तो मुहाफ़िज़ों के दस्ते के कमाण्डर नेउसे रोक लिया और कहा– ''मोहतरम हमारा फर्ज़ है कि हुक्म मानें और जुबानें बन्द रखें लेकिन मेरे

दस्ते में एक मायूसी और बे इत्मीनानी पैदा हो गयी है। ख़ुद मैं उसका शिकार हो रहा हूं।"

"कैसी मायूसी?"

"मुहाफ़िज़ कहते हैं कि एक फौज को शराब पीने की इजाज़ है तो हमें उस से क्यों मना किया गया है?" कमाण्डर ने कहा– "अगर आप मेरी शिकायत को गुस्ताख़ी समझें तो सज़ा दे दें लेकिन मेरी शिकायत सुन लें। हम अपने अमीर को ख़ुदा का बरगुज़ीदा इन्सान समझते थे और उस पर दिल व जान से फ़िदा थे मगर रात........।"

"उस के ख़ेमे में एक रक़ासा गयी थी।" अली बिन सुफ़ियान ने उस की बात पूरी करते हुए कहा– "तुम ने कोई गुस्ताख़ी नहीं की। गुनाह अमीर करे या गुलाम सज़ा में कोई फ़र्क नहीं, गुनाह बहरहाल गुनाह है। मैं तुम्हे यक़ीन दिलाता हूं कि रक़ासा और अमीरे मिस्र की ख़ुफ़िया मुलाकात के साथ गुनाह का कोई तअल्लुक नहीं था। यह क्या था? अभी नहीं बताऊंगा। आहिस्ता–आहिस्ता वक़्त गुज़रने के साथ–साथ तुम्हे सब कुछ मालूम हो जायेगा कि रात क्या हुआ था।" उसने कमाण्डर के कंधे पर हाथ रख कर कहा– "मेरी बात ग़ौर से सुनो आमिर बिन सालेह! तुम पुराने अस्करी हो। अच्छी तरह जानते हो कि फ़ौज और फ़ौज के सरबराहों के कुछ राज़ होते हैं जिन की हिफ़ाज़त हम सब का फ़र्ज़ है। रक़ासा का अमीरे मिस्र के ख़ेमे में जाना भी एक राज़ है। अपने जांबाज़ों को किसी शक में न पड़ने दो और किसी से ज़िक्र तक न हो कि रात क्या हुआ था।"

अली बिन सुफ़ियान की क़ाबिलयत और कारनामों से यह कमाण्डर आगाह था। मुत्मईन हो गया और उसने अपने दस्ते के शकूक को रफ़ा कर दिए।

अगले रोज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी दोपहर का खाना खा रहा था कि उसे इत्तला दी गयी कि नाजी मिलने आया है। सलाहुद्दीन अय्यूबी खाने से फ़ारिग़ होकर नाजी से मिला। नाजी का चेहरा बता रहा था कि घबराया हुआ है और गुस्से में भी है। उसने हकलाने के लहजे में कहा–"क़ाबिले सद एहतराम अमीर! क्या यह हुक्म आप ने जारी किया है कि सूडानी मुहाफ़िज़ फौज पचास हज़ार नफ़री मिस्र की उस फौज में मुदग़म कर दी जाये जो हाल ही में तैय्यार हुई है?"

"हां नाजी।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तहम्मुल से जवाब दिया। "मैं ने कल सारा दिन और रात का कुछ हिस्सा सर्फ़ करके और बड़ी गहरी सोंच व विचार के बाद यह फ़ैसला तहरीर किया है कि जिस फौज के तुम सालार हो उसे मिस्र की फौज में इस तरह मुदग़म कर दिया जाये कि हर दस्ते में सूडानियों की नफ़री सिर्फ़ दस फिसद हो और तुम्हें यह हुक्म भी मिल चुका होगा कि तुम अब उस फ़ौज के सालार नहीं होगे तुम फौज के मरकज़ी दफतर में आ जाओगे।"

"आली मुक़ाम!" नाजी ने कहा– "मुझे किस जुर्म की सज़ा दी जा रही है?"

"अगर तुम्हे यह फैसला पसन्द नहीं तो फौज से अलग हो जाओ।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा।

"मालूम होता है मेरे ख़िलाफ साज़िश की गयी है।" नाजी ने कहा– "आप के बुलन्द

दिमाग़ और गहरी नज़र को छान बीन कर लेनी चाहिए। मरकज़ में मेरे बहुत से दुश्मन हैं।"

"मेरे दोस्त!" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "मैंने यह फैसला इसलिए किया है कि इन्तज़ामियां और फौज से साज़िशों का ख़तरा हमेशा के लिए निकल जाये और मैंने यह फैसला इस लिए किया है कि फौज में किसी का ओहदा कितना ही ऊंचा क्यों न हो और कोई कितना ही अदना क्यों न हो वह शराब न पिये, हुल्लड बाज़ी न करे और फौजी जश्नों में नाच गाने न हों।"

"लेकिन आली जाह!" नाजी ने कहा– "मैंने हुज़ूर से इजाज़त ले ली थी।"

"और मैंने शराब और नाच गाने की इजाज़त सिर्फ़ इसलिए दी थी कि उस फौज को उस की असल हालत में देख सकूं जिसे तुम मिल्लते इस्लामियां की फौज कहते हो। मैं पचास हज़ार नफ़री को बर्फ़ नहीं कर सकता। मिस्री फौज में उसे मुदग़म करके उस के किरदार को सुधार दूंगा और यह भी सुन लो कि हम में कोई मिस्री, सूडानी, शामी और अज्मी नहीं है। हम मुसलमान हैं। हमारा झंडा एक और मज़हब एक है।"

"अमीर आली मर्तबत ने ये तो सोंचा होता कि मेरी हैसियत क्या रह जायेगी?"

"जिस के तुम अहल हो।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "अपने माज़ी पर खुद ही निगाह डालो। ज़रूरी नहीं कि अपनी कारस्तानियों की दास्तान मुझ से सुनो..... फौरन वापस जाओ। अपनी फौज की नफरी, सामान, जानवरों, सामाने खुर्द व नोश वग़ैरह के काग़ज़ात तैय्यार करके मेरे नायब के हवाले कर दो। सात दिन के अन्दर मेरे हुक्म की तामील मुकम्मल हो जाये।"

नाजी ने कुछ कहना चाहा लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी मुलाकात के कमरे से निकल गया।

❖

यह बात नाजी के खुफ़िया हरम में भी पहुंच गयी थी ज़कोई को अमीरे मिस्र ने रात भर शर्फ़े बारयाबी बख़्शा है। ज़कोई के ख़िलाफ़ हसद की आग पहले ही फैली हुई थी। उसे आये अभी बहुत थोड़ा अर्सा गुज़रा था लेकिन नाजी पहले रोज़ से ही उसे अपने साथ रखने लगा था। उसे ज़रा सी देर के लिए भी अपने उस हरम में नहीं जाने दिया था जहां उस की दिलपसन्द नाचने वाली जवान लड़कियां रहती थीं। ज़कोई को उस ने अलग कमरा दिया था। उन्हें यह तो मालूम न था कि नाजी उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी को मोम करने की ट्रेनिंग दे रहा है और वह किसी बहुत बड़े तख़रीबी मंसूबे पर काम कर रहा है। यह रक़ासायें यह देख कर जल भुन गयी थीं कि ज़कोई ने नाजी पर कब्ज़ा कर लिया है और उस के दिल में उन के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा कर दी है। हरम की दो लड़कियां ज़कोई को ठिकाने लगाने का सोंचती रहती थीं। अब उन्होंने देखा कि ज़कोई को अमीरे मिस्र ने भी इतना पसन्द किया है कि उसे रात भर अपने ख़ेमे में रखा है तो वह पागल सी हो गयीं उसे ठिकाने लगाने का वाहिद तरीका क़त्ल था। क़त्ल के दो ही तरीके हो सकते थे। ज़हर या किराये का कातिल जो उसे सोते में क़त्ल कर दे। दोनों तरीके मुम्किन नहीं थे क्यों कि ज़कोई बाहर नहीं निकलती थी और

ज़हर देने के लिए उस तक रसाई नहीं हो सकती थी।

उन दोनों ने हरम की सबसे ज़्यादा चालाक मुलाज़िमा को एतमाद में ले रखा था। उसे ईनाम व इकराम देती रहती थीं। जब हसद की इन्तेहा ने उन की आंखों मं ख़ून उतार दिया तो उन्होंने उस मुलाज़िमा को मुंह मांगे ईनाम का लालच देकर अपना मुद्दुआ बयान कर दिया। यह मुलाज़िमा बड़ी ख़ुरांट और मन्झीं हुई औरत थी। उस ने कहा सालार की रिहाईशगाह में जाकर ज़कोई को ज़हर देना मुम्किन नहीं। मौका महल देखकर उसे ख़ंजर से क़त्ल किया जा सकता है। उस के लिए वक़्त चाहिए। उसने वादा किया कि वह ज़कोई की नक़ल व हरकत पर नज़र रखेगी। हो सकता है कोई मौका जल्दी निकल आये। उस जराईम पेशा औरत ने यह भी कहा कि अगर कोई मौका न निकला तो हशिशीन की मदद हासिल की जायेगी मगर वह मुआविज़ा बहुत ज़्यादा लेते हैं। दोनों लड़कियों ने उसे यकीन दिलाया कि वह ज़्यादा से ज़्यादा मुआविज़ा देने को तैय्यार हैं।

❖

नाजी बेहद ग़ुस्से के आलम में अपने कमरे में टहल रहा था। ज़कोई उसे ठंडा करने की बहुत कोशिश कर चुकी थी लेकिन उस का ग़ुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

"आप मुझे उसके पास जाने दें।" ज़कोई ने चौथी बार कहा– "मैं उसे शीशे में उतार लूंगी।"

"बेकार है।" नाजी ने गरज कर कहा– "वह कम्बख़्त हुक्मनामा जारी कर चुका है जिस पर अमल भी शुरू हो चुका है। मुझे उसने कहीं का नहीं रहने दिया। उस पर तुम्हारा जादू नहीं चल सका मुझे मालूम है कि मेरे ख़िलाफ़ साज़िश करने वाले कौन लोग हैं। वह मेरी उभरती हुई हैसियत से हसद करते हैं। मैं अमीरे मिस्र बनने वाला था। मैंने यहां के हुक्मरानों पर हुकूमत की है हालांकि मैं मामूली सा सालार था। अब मैं सालार भी नहीं रहा।" उस ने दरबान को अन्दर बुलाकर कहा कि औरोश को बुला लाये।

उसका हमराज़ और नायब औराश आया तो नाजी ने उसके साथ भी उसी मौज़ू पर बात की। उसे वह कोई नयी ख़बर नहीं सुना रहा था। औरोश के साथ वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के नये हुक्म नामें पर तफ़सीली तबादला ख़्यालात कर चुका था मगर दोनों उस के ख़िलाफ कोई कार्रवाई सोंच नहीं सके थे। अब उस के दिमाग़ में एक कार्रवाई आ गयी थी। उसने औरोश से कहा– " मैं ने जवाबी कार्रवाई सोंच ली है।"

"क्या।"

"बग़ावत।" नाजी ने कहा। औरोश चुप चाप उसे देखता रहा। नाजी ने कहा– "तुम हैरान हो गये? क्या तुम्हें शक है कि यह पचास हज़ार सूडानी फौज हमारी वफ़ादार नहीं? क्या यह सलाहुद्दीन अय्यूबी की निस्बत मुझे और तुम्हे अपना हाकिम और बही ख़्वाह नहीं समझती? क्या तुम अपनी फौज को यह कह कर बग़ावत पर आमादा नहीं कर सकते कि तुम्हे मिस्रियों का ग़ुलाम बनाया जा रहा है और मिस्र तुम्हारा है?"

औरोश ने गहरी सांस लेकर कहा– "मैंने इस इक़दाम पर ग़ौर नहीं किया था। बग़ावत

का इन्तज़ाम एक इशारे पर हो सकता है लेकिन मिस्र की नयी फौज बग़ावत को दबा सकती है और उस फौज को कमक भी मिल सकती है। हुकूमत से टक्कर लेने से पहले हमें हर पहलू पर ग़ौर कर लेना चाहिए।"

"मैं ग़ौर कर चुका हूं।" नाजी ने जवाब दिया— " मैं ईसाई बादशाहों को मदद के लिए बुला रहा हूं । तुम दो प्याम्बर तैयार करो। उन्हें बहुत दूर जाना है। आओ मेरी बातें ग़ौर से सुन लो। ज़कोई! तुम अपने कमरे में चली जाओ।"

ज़कोई अपने कमरे में चली गयी और वह दोनों सारी रात अपने कमरे में बैठे रहे।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दोनों फौजों को मुदग़म करने का वक़्त सात रोज़ मुकर्रर किया था। काग़ज़ी कार्रवाई होती रही। नाजी पूरी तरह मदद करता रहा। चार रोज़ गुज़र चुके थे। उस दौरान नाजी एक बार फिर सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिला लेकिन उसने कोई शिकायत न की। तफ़सीली रिपोर्ट दे कर सलाहुद्दीन अय्यूबी को मुत्मईन कर दिया कि सातवें रोज़ दोनों फौजे एक हो जायेंगी। सलाहुद्दीन अय्यूबी के नायबीन ने भीउसे यक़ीन दिलाया कि नाजी दयानतदारी से मदद कर रहा है, मगर अली बिन सुफ़ियान की रिपोर्ट किसी हद तक परीशान कुन थी। उसकी इंटेलिजेंस सर्विस ने रिपोर्ट दी थी कि सूडानी फौज के सिपाहियों में बेइत्मीनानी और अबतरी सी पाई जाती है।वह मिस्री फौज में मुदग़म होने पर ख़ुश नहीं। उन के दर्मियान यह अफवाहें फैलाई जा रही थीं कि मिस्री फौज में मिलकर उनकी हैसियत गुलामों जैसी हो जायेगी। उन्हें माले ग़नीमत भी नहीं मिलेगा और उन से बार बरदारी का काम लिया जायेगा और सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें शराब नोशी की इजाज़त नहीं होगी। अली बिन सुफ़ियपन ने यह रिपोर्ट सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंचा दीं। अय्यूबी ने उसे कहा कि यह लोग तवील मुद्दत से ऐश कर रहे हैं। उन्हें नई तबदीली यक़ीनन पसन्द नहीं आयेगी। मुझे उम्मीद है कि वह नये हालात और माहौल के आदी हो जायेंगे।

"उस लड़की से मुलाक़ात हुई या नहीं?" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा।

"नहीं।" अली ने जवाब दिया— " उस से मुलाक़ात मुम्किन नज़र नहीं आती। मेरे आदमी नाकाम हो चुके हैं। नाजी ने उसे क़ैद कर रखा हैं।"

उससे अगली रात का वक़िआ है। रात अभी अभी तारीक हुई थी। ज़कोई अपने कमरे में थी। नाजी औरोश के साथ अपने कमरे में था। उसे घोड़ों के क़दमों की आवाज़ें सुनाई दीं। उसने पर्दा हटा कर देखा बाहर के चिराग़ों की रोशनी में उसे दो घोड़ा सवार घोड़े से उतरते दिखाई दिये। लिबास से वह ताजिर मालूम होते थे। लेकिन वह घोड़ों से उतर कर नाजी के कमरे की तरफ चले तो उनकी चाल बताती थी कि वह ताजिर नहीं। इतने में औरोश बाहर निकला। दोनों सवार उसे देख कर रुक गये और औरोश को सिपहियों के अन्दाज़ से सलाम किया। औरोश ने उन के गिर्द घूम कर उनके लिबास का जायज़ा लिया। फिर उन्हें कहा हथियार दिखाओ। दोनों ने फुर्ती से चोगे खोले और हथियार दिखाये। उनके पास छोटी तलवारें और एक एक ख़ंजर था। औरोश उन्हें अन्दर ले गया। दरबान एक तरफ़ खड़ा था।

ज़कोई गहरी सोंच में खो गयी। वह कमरे से निकली और नाजी के कमरे का रुख़ किया मगर दरबान ने आते ही उसे दरवाज़े पर रोक लिया और कहा कि उसे हुक्म मिला है कि किसी को अन्दर न जाने दो। ज़कोई को वहां ऐसी हैसियत हासिल हो गयी थी कि वह कमाण्डरों पर भी हुक्म चलाने लगी थी। दरबान के रोकने से वह समझ गयी कि कोई ख़ास बात है। उसे याद आया कि दो रातें पहले नाजी ने उसकी मौजूदगी में औरोश से कहा था– " मैं ईसाई बादशाहों को मदद के लिए बुला रहा हूं। तुम दो पयाम्बर तैय्यार कर दो। उन्हें बहुत दूर जाना है।" और फिर ज़कोई को अपने कमरे में चले जाने को कहा था और उस ने बग़ावत की बातें भी की थीं।

यह सब कुछ सोंच कर वह अपने कमरे में वापस चली गयी। उसके और नाजी के ख़ास कमरे के दर्मियान एक दरवाज़ा था जो दूसरी तरफ से बन्द था। उसने उस दरवाज़े के साथ कान लगा दिये। उधर की आवाज़ें धीमी थीं। उसे कोई बात समझ न आई। कुछ देर बाद उसे नाजी की बड़ी साफ आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा– "आबादियों से दूर रहना। अगर कोई शक में पकड़ने की कोशिश करे तो सबसे पहले यह पैग़ाम ग़ायब करना। जान पर खेल जाना। जो भी रास्ते में हाइल हो उसे ख़त्म कर देना। तुम्हारा सफ़र चार दिनों का है। तीन दिनों में पहुंचने की कोशिश करना। सिम्त याद कर लो। शुमाल मश्रीक़।"

दोनों आदमी बाहर निकले। ज़कोई भी बाहर आ गयी। उसने देखा कि वह दोनों घोड़ों पर सवार हो रहे थे। नाजी और औरोश भी बाहर खड़े थे। सवारों को अलविदा कहने निकले होंगे। सवार बहुत तेज़ी से रवाना हो गये। नाजी ने ज़कोई को देखा तो उसे बुला कर कहा– "मैं बाहर जा रहा हूं। काम बहुत है। तुम आराम करो। अगर अकेले दिल न लगे तो हरम में घूम फिर आना।"

"हां।" ज़कोई ने कहा–" जबसे आई हूं बाहर नहीं निकली।"

नाजी और औरोश चले गये ज़कोई ने चुग़ा पहना। कमर बन्द में ख़ंजर छुपाया और हरम की तरफ़ चल पड़ी। वह जगह चन्द सौ गज़ दूर थी। वह नाजी पर यह ज़ाहिर करना चाहती थी कि वह हरम में गयी थी। दरबान को भी उसने यही बताया। हरम में दाख़िल हुई तो वहां की रहने वालियों ने उसे हैरान होके देखा। वह पहली बार वहां गयी थी। सबने उसका इस्तक़बाल एहतराम और प्यार से किया। उन दो लड़कियों ने भी उसे ख़ुश आमदीद कहा जो उसे क़त्ल कराना चाहती थीं। ज़कोई सबसे मिली। हर एक के साथ बातें कीं और वापस चल पड़ी। वह ख़ुरांट मुलाज़िमा भी वहीं थी जिसे उसके क़त्ल के लिए कहा गया था। उसने ज़कोई को बड़ी ग़ौर से देखा। ज़कोई बाहर निकल गई।

हरम वाले मकान और नाजी की रिहाईशगाह का दर्मियानी इलाक़ा ऊंचा नीचा था और वीरान। ज़कोई हरम से निकली तो नाजी के रिहाईश गाह की तरफ जाने की बजाये बहुत तेज़ तेज़ दूसरी सिम्त चल पड़ी। उधर एक पगडंडी भी थी लेकिन ज़कोई उससे ज़रा दूर हट कर जा रही थी। उससे पन्द्रह बीस क़दम पीछे एक स्याह काला साया चला जा रहा था। वह कोई इन्सान ही हो सकता था मगर सर से पांव तक एक लिबादे में लिपटा होने की वजह से

स्याह भूत लगता था। ज़कोई की रफ़्तार तेज़ हुई तो उस भूत ने अपनी रफ़्तार उससे भी तेज़ कर दी। आगे घनी झाड़ियां थीं। ज़कोई उन में रूपोश हो गयी। स्याह भूत भी झाड़ियों में ग़ायब हो गया। वहां से कोई ढाई तीन सौ गज़ आगे सलाहुद्दीन अय्यूबी की रिहाईशगाह थी जिस के इर्द गिर्द फौज के आला रूत्बों के अफराद रहते थे।

ज़कोई का रूख़ उधर ही था। झाड़ियों में से निकली ही थी कि बायें तरफ़ से स्याह भूत उठा। चांदनी बड़ी साफ थी। फिर भी उसका चेहरा नज़र नहीं आता था। उसके पांव की आहट भी नहीं थी। भूत का हाथ उपर था। चान्दनी में ख़ंजर चमका और बिजली की तेज़ी से ख़ंजर ज़कोई के बायें कंधे और गर्दन के दर्मियान उतर गया। ज़कोई की चीख़ निकली। ख़ंजर उसके कंधे से निकल गया। ज़कोई ने इतना गहरा ज़ख़्म खाकर भी निहायत तेज़ी से अपने कमर बन्द से ख़ंजर निकाला। भूत ने उस पर दूसरा वार किया तो ज़कोई ने उस ख़ंजर वाले बाजू को अपने बाज़ू से रोक कर अपना ख़ंजर भूत के सीने में घोंप दिया। उसे चीख़ सुनाई दी तो किसी औरत की थी। ज़कोई ने अपना ख़ंजर खींच कर दूसरा वार किया जो भूत के पेट में उतर गया। उसके साथ ही उसके अपने पहलू में ख़ंजर लगा लेकिन ज़्यादा गहरा नहीं उतरा। भूत चकरा कर गिरा।

ज़कोई ने यह नहीं देखा कि उस पर हमला करने वाला कौन था। वह दौड़ पड़ी। उसके जिस्म से ख़ून बहुत तेज़ी से बह रहा था। सलाहुद्दीन अय्यूबी का मकान उसे चांदनी में नज़र आने लगा। आधा फासिला तय करके उसे चक्कर आने लगे। उसकी रफ़्तार सुस्त होने लगी। उसने चिल्लाना शुरू कर दिया– "अली–अय्यूबी–अली अय्यूबी।" उसके कपड़े लाल हो गये थे और वह बड़ी मुश्किल से क़दम घसीट रही थी। उसकी मंज़िल थोड़ी ही दूर रह गयी थी जहां तक पहुंचाना उसके लिए मुम्किन नज़र नहीं आता था। वह मुसलसल सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान को पुकारे जा रही थी। क़रीब कहीं एक गश्ती संतरी फिर रहा था। उसे उसकी आवाज़ें सुनाई दीं तो वह दौड़ कर पहुंचा। ज़कोई उस पर गिर पड़ी और कहा– "मुझे अमीरे मिस्र तक पहुंचा दो। बहुत जल्दी–बहुत जल्दी।" संतरी ने उसका ख़ून देखा तो उसे पीठ पर लाद कर दौड़ पड़ा।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने कमरे में बैठा अली बिन सफ़ियान से रिपोर्ट ले रहा था। उसके दो नायब भी मौजूद थे। रिपोर्टें कुछ अच्छी नहीं थीं। अली बिन सुफ़ियान ने बग़ावत के ख़दशे का इज़हार किया था जिस पर ग़ौर हो रहा था। दरबान घबराहट के आलम में अन्दर आया और बताया कि एक सिपाही एक ज़ख़्मी लड़की को उठाये बाहर खड़ा है। कहता है कि यह लड़की अमीरे मिस्र से मिलना चाहती है। यह सुनते ही अली बिन सुफ़ियान कमान से निकले हुए तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गया। उसके पीछे सलाहुद्दीन अय्यूबी दौड़ा। इतने में लड़की की को अन्दर ले आये। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "तबीब और जर्राह को जल्दी बुलाओ।"

लड़की को सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने पलंग पर लिटा दिया। ज़रा सी देर में पलंग

पोश खून से लाल होने लगा।

"किसी को न बुलाओ।" लड़की ने नहीफ़ आवाज़ में कहा- "मैं अपना फ़र्ज़ अदा कर चुकी हूं।"

"तुम्हे ज़ख़्मी किसने किया ज़कोई" अली बिन सुफ़ियान पूछा।

"पहले ज़रूरी बातें सुनलो" ज़कोई ने कहा- "शुमाल मशरिक़ की तरफ सवार दौड़ा दो। दो सवार जातें नज़र आयेंगे। दोनों के चोगे़ बादमी रंग के हैं। एक का घोड़ा बादमी और दूसरे का स्याह है। वह ताजिर लगते हैं। उनके पास सालार नाजी का तहरीरी पैग़ाम है जो ईसाई बादशाह फ्रेंक को भेजा गया है। नाजी की यह सूडानी फौज बग़ावत करेगी। मुझे और कुछ भी मालूम नहीं। तुम्हारी सल्तनत सख़्त ख़तरे में है। उन दो सवारों को रास्ते में पकड़ लो। तफ़सील उनके पास है।" बोलते बोलते ज़कोई को ग़शी आने लगी।

दो तबीब आ गये। उन्होंने ज़कोई का ख़ून बन्द करने की कोशिशें शुरू कर दीं। उसके मुंह में दवाइयां डालीं जिन के असर से वह बोलने के क़ाबिल हो गयी। वह ज़रूरी पैग़ाम दे चुकी थी। उस के बाद उसने दूसरी सारी बातें सुनाई। मसलन नाजी ने औरोश के साथ क्या बातें की थीं। उसे किस तरह अपने कमरे में भेज दिया गया था। नाजी का ग़ुस्सा और भाग दौड़। दो सवारों का आना। वग़ैरह। फिर उसने बताया कि उसे कुछ इल्म नहीं कि उस पर हम्ला करने वाला कौन था। वह मौक़ा देखकर इधर ही रिपोर्ट देने के लिए आ रही थी कि पीछे से किसी ने उसे ख़ंजर घोंप दिया।

उसने अपना ख़ंजर निकाल कर हमलावर पर हमला किया। हमलावर की चीख़ बताती है कि वह औरत है। उसने हम्ले की जगह बताई। उसी वक़्त उस जगह आदमी दौड़ा दिये गये। ज़कोई ने कहा था कि वह जिन्दा नहीं हो सकती। उसका ख़ंजर उसके सीने और पेट में लगे थे।

ख़ून रूक नहीं रहा था ज़्यादा तर ख़ून तो पहले ही बह गया था। ज़कोई ने सलाहुद्दीन अय्यूबी का हाथ पकड़ा और चूम कर कहा- "अल्लाह आप को और आप की सल्तनत को सलामत रखे। आप शिकस्त नहीं खा सकते। मुझ से ज़्यादा कोई नहीं बता सकता कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का ईमान कितना पुख़्ता है।" फिर उसने अली बिन सुफ़ियान से कहा- "मैंने कोताही नहीं की? आप ने जो फ़र्ज़ हमें सौंपा था वह मैंने पूरा कर दिया है।"

"तुम ने उससे ज़्यादा पूरा किया है।" अली बिन सुफ़ियान ने उसे कहा- "मेरे वहम व गुमान में भी न था कि नाजी इस हद तक ख़तर्नाक कार्रवाई करेगा और तुम्हें जान की कुर्बानी देनी पड़ेगी। मैंने तुम्हे सिर्फ़ मुख़बिरी के लिए वहां भेजा था।"

"काश! मैं मुसलमान होती।" ज़कोई ने कहा- " उस के आंसू निकल आयें। उसने कहा- "मेरे इस काम का जो भी मुआविज़ा देना है वह मेरे अंधे बाप और सदा बिमार मां को दे देना। उन की माज़ूरियों ने मुझे बारह साल की उम्र में रक़ासा बना दिया था।"

ज़कोई का सर एक तरफ़ लुढ़क गया। आंखें आधी खुली रहीं और होंठ इस तरह नीम वा जैसे मुस्कुरा रही हो। तबीब ने नब्ज़ पर हाथ रखा और सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ़

देखकर कर सर हिलाया।" ज़कोई की रूह उसके ज़ख़्मी जिस्म से आज़ाद हो गयी थी।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– " यह किसी भी मज़हब की थी इसे पूरे एजाज़ के साथ दफ़न करो। इसने इस्लाम के लिए जान कुर्बान की है। यह हमें धोखा भी दे सकती थी।"

दरबान ने बताया कि बाहर एक औरत की लाश आई है। जाकर देखा। वह एक अधेड़ उम्र औरत की लाश थी। जाये वक़्आ से दो ख़ंजर मिले थे। उस औरत को कोई नहीं पहचानता था। यह नाजी के हरम की मुलाज़िमा थी जिसने ईनाम की लालच में ज़कोई पर कातिलाना हम्ला किया था। रात को ही ज़कोई को एजाज़ के साथ दफ़न कर दिया गया और मुलाज़िमा की लाश गढ्ढा खोद कर दफ़ना दी गयी। दोनों को खुफ़िया तरीके से दफ़नाया गया। उन्हें जब दफ़नाया जा रहा था, सलाहुद्दीन अय्यूबी ने निहायत आला नस्ल के आठ जवान घोड़े मंगवाये और आठ सवार मुन्तख़ब करके उन्हें अली बिन सुफ़ियान की कमान में नाजी के उन दो आदमियों के पीछे दौड़ा दिया जो नाजी का पैग़ाम ले कर जा रहे थे।

ज़कोई कौन थी?

वह मराकिश की एक रक़्क़ासा थी। किसी को भी मालूम नहीं कि उसका मज़हब क्या था। वह मुसलमान नहीं थी, ईसाई भी नहीं थी। जैसा कि कहा जा चुका है कि अली बिन सुफ़ियान सलाहुद्दीन अय्यूबी की इन्टेलीजेन्स (जासूसी और सुराग़रसानी) का सरबराह था। उसे दूसरों के राज़ मालूम करने के लिए कई ढंग अख़्तियार करने पड़ते थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी उसे अपने साथ मिस्र लाया था। यहां आकर मालूम हुआ कि सूडानी फौज का सालार नाजी, साज़िशी और शैतान है। उसके अन्दरूने ख़ाना हालात मालूम करने के लिए अली बिन सुफ़ियान ने जासूसी का जाल बिछा दिया था। उसे राज़ की एक बात यह मालूम हुई कि नाजी हसन बिन सबाह के 'फिदाइयों' की तरह मुख़ालेफ़िन को हसीन लड़कियों और हशीश से फांसता, अपना गुरविदा बनाता या मरवा देता है। अली बिन सुफ़ियान ने तलाशे बिसीयार के बाद किसी विसातित से ज़कोई को मराकिश से हासिल किया और खुद बुरदा फ़रोश का बहरूप धार कर उसे नाजी के हाथ बेच दिया। उस लड़की में ऐसा जादू था कि नाजी उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी को फांसने के लिए इस्तेमाल करना चाहता था मगर खुद ही उस लड़की के दाम में फ़स गया। फंसा भी ऐसा कि उसके सामने वह अपने नायब सालार के साथ राज़ की बाते करता रहा।

उसने ज़कोई को जश्न की रात सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे में भेज दिया और अपनी इस फ़तह पर बेहद खुश था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का उसने बुत तोड़ दिया है।

अब वह लड़की के हाथों उसे शराब भी पिला सकेगा और फिर उसे अपना मुरीद बना लेगा, मगर उसके फरिश्तों को भी मालूम न हो सका कि ज़कोई सलाहुद्दीन अय्यूबी की ही जासूसा थी। वह उसे ख़ेमे में रिपोर्ट देती रही और सलाहुद्दीन अय्यूबी से हिदायत लेती रही थी। उसके ख़ेमे से निकल कर ज़कोई दूसरी तरफ़ चली गयी थी जहां उसे मुंह सर लपेटे एक आदमी मिला था। वह आदमी अली बिन सुफ़ियान था जिस ने उसे कुछ और हिदायत दी थीं। उसके बाद ज़कोई नाजी के घर से बाहर न निकल सकी इस लिए वह अली

बिन सुफ़ियान को कोई रिपोर्ट न दे सकी। आख़िर उसे मौका मिल गया और वह ऐसी ख़बर लेकर वहां से निकली जो ख़ुदा के सिवा किसी और को मालूम न थी।

यह ज़कोई की बदनसीबी थी कि हरम में उसके ख़िलाफ इसलिए साज़िश हो रही थी कि उसने नाजी पर कब्जा कर लिया है। यह साज़िश कामयाब हो गयी और ज़कोई कत्ल हो गयी। लेकिन वह इत्तेला पहुंचाने तक जिन्दा रही।

उसके मरने के कुछ अर्से बाद वह मुआविज़ा जो अली बिन सुफ़ियान ने उसके साथ तय किया था, सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ़ से ईनाम और वह रकम जो अली बिन सुफ़ियान ने नाजी से बुरदा फरोश के भेस मे ज़कोई के कीमत के तौर पर वसूल की थी, मराकिश में ज़कोई के माज़ुर वालिदैन को अदा कर दी।

❖

मौत की उस रात सितारे टूट गये और सुबह तुलूअ हुई तो अली बिन सुफ़ियान आठ सवारों के साथ इन्तेहाई रफ़तार से शुमाल मश्रिक की तरफ़ जा रहा था। आबादियां दूर पीछे रह गयी थीं। उसे मालूम था कि फ्रेंन्क के हेड क्वार्टर तक पहुंचने का रास्ता कौन सा है। रात उन्होंने घोड़ों को थोड़ी देर आराम दिया था। यह अरबी घोड़े थके हुए भी ताज़ा दम लगते थे। दूर उफ़क पर खजूर के चन्द दरख़्तों में अली को दो घोड़ें जाते नज़र आये। उसने अपनी पार्टी को रास्ता बदलने और ओट में होने के लिए टीलों के साथ--साथ हो जाने को कहा। वह सेहरा का राज़दां था। भटकने का अंदेशा न था। उसने रफ़तार और तेज़ कर दी। अगले दो सवारों और उसकी पार्टी में कम व बेश चार मील का फ़ासिला था। यह फ़ासिला तय हो गया मगर घोड़े थक गये। वह जब खजूरों के दरख़्तों तक पहुंचे तो दो सवार कोई दो मील दूर मिट्टी की एक पहाड़ी के साथ--साथ जा रहे थे। उनके घोड़े भी शायद थक गये थे। दोनों सवार उतरे और नज़रों से ओझल हो गये।

"वह पहाड़ी की ओट में बैठ गये हैं।" अली बिन सुफ़ियान नेकहा और रास्ता बदल दिया।

फ़ासिला कम होता गया और जब फ़ासिला चन्द सौ गज़ रह गया तो दोनों सवार ओट से सामने आये। उन्होंने घोड़ों के सरपट दौड़ने का शोर सुन लिया था। वह दौड़ कर ग़ायब हो गये। अली बिन सुफ़ियान ने घोड़े को ऐड़ लगायी। थके हुए घोड़े ने वफ़ादारी का सबूत दिया और रफ़तार तेज़ कर दी। बाकी घोड़े भी तेज़ हो गये। पहाड़ी के अन्दर गये तो दोनों सवार वहां से जा चुके थे मगर दूर नहीं गये थे। वह शायद घबरा भी गये थे। आगे रेतीली चट्टाने थीं। उन्हें रास्ता नहीं मिल रहा था। कभी दायें तो कभी बायें। अली बिन सुफ़ियान ने अपने घोड़े एक सफ़ में फ़ैला दिए और भागने वालों से एक सौ गज़ दूर जा पहुंचा। एक तीर अंदाज़ ने दौड़ते घोड़े से तीर चलाया जो एक घोड़े की अगली टांग में लगा। घोड़ा बेकाबू हो गया। थोड़ी सी और भाग दौड़के बाद वह दोनों घेरे में आ गये और उन्होंने हथियार डाल दिये।

उन्होंने झूठ बोला अपने आपको ताजिर कहा लेकिन तलाशी ली तो पैग़ाम मिल गया जो नाजी ने उन्हें दिया था। दोनो को हिरासत में ले लिया गया। घोड़ों को आराम का वक़्त दिया

गया और यह पार्टी वापस हुई।

सलाहुद्दीन अय्यूबी बेताबी से इन्तज़ार कर रहा था। दिन गुज़र गया। रात भी गुज़रती जा रही थी। आधीर रात गुज़र गयी। अय्यूबी लेट गया औरउसकी आंख लग गयी।

सेहर के वक़्त दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक से उसकी आंख खुल गयी। दौड़ कर दरवाज़ा खोला। अली बिन सुफ़ियान खड़ा था। उसके पीछे उसके आठ सवार और दो क़ैदी खड़े थे। अली और क़ैदियों को सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सोने के कमरे में ही बुला लिया और अली से नाजी का पैग़ाम लेकर पढ़ने लगा। पहले तो उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया फिर जैसे ख़ून जोश मारकर उसके चेहरे से आंखों में चढ़ गया।

नाजी का पैग़ाम ख़ासा तवील था। उसने सलीबियों के एक बादशाह, फ्रेंन्क को लिखा था कि वह फ़लां दिन और फ़लां वक़्त यूनानियों, रोमियों और दिगर सलीबियों की बहरिया से बहिराये रूम की तरफ से मिस्र में फौजें उतार कर हमला कर दे। हमले की इत्तलाअ मिलते ही पचास हज़ार सूडानी फौज अमीरे मिस्र के ख़िलाफ बग़ावत कर देगी।

मिस्र की नयी फौज हमले और बग़ावत का बऐक वक़्त मुक़ाबिला करने के क़ाबिल नहीं. ... उसके एवज़ नाजी ने तमाम तर मिस्र या मिस्र के बड़े हिस्से की हुक्मरानी की शर्त पेश की थी।

ससलाहुद्दीन अय्यूबी ने पैग़ाम ले जाने वाले दोनों सवारों को तहख़ाने की क़ैद में डाल दिया और उसी वक़्त अपनी नई फौज का दस्ता भेज कर नाजी और उस के तीन नायबीन को उनके मकानों में नज़रबन्द करके पहरा लगा दिया। नाजी के हरम की तमाम की तमाम औरतें आज़ाद कर दी गयीं। उसके ज़ाती ख़ज़ाने को सरकारी ख़ज़ाने में डाल दिया गया और सारी कार्रवाई खुफ़िया रखी गयी। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफ़ियान की मदद से नाज़ी के उस ख़त में जो पकड़ लिया गया था, हमले की तारीख को मिटा कर ग़ल्त तारीख लिख दी। दो ज़हीन आदमियों को यह पैग़ाम देकर शाह फ्रेंन्क की तरफ़ रवाना कर दिया गया। उन आदमियों को यह ज़ाहिर करना था कि वह नाजी के प्याम्बर हैं। उन्हें रवाना करके उस सूडानी फौज को मिस्री फौज में मुदगम करने का हुक्म रोक लिया।

आठवें रोज़ प्याम्बर वापस आ गये। वह नाजी को पैग़ाम दे आये और फ्रेंन्क का जवाब (नाज़ी के नाम) ले आये थे। फ्रेंन्क ने लिखा था कि हमले की तारीख से दो दिन पहले सूडानी फौज बग़ावत करदे ताकि सलाहुद्दीन अय्यूबी को सलीबियों का हमला रोकने का होश ही न रहे। अली बिन सुफ़ियान ने सलाहुद्दीन अय्यूबी की इजाज़त से उन दो प्याम्बरों को नज़र बन्द कर दिया। यह बा इज्ज़त नज़र बन्दी थी जिस में उनदोनों के आराम और बेहतरीन ख़ूराक वग़ैरह का ख़ूसूसी इन्तज़ाम किया गया था। यह एक एतियाती तदबीर थी ताकि यह राज़ फाश न हो जाये।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बहिराये रोम की साहिल पर उन मुक़ामात पर अपनी फौज को छुपा दिया जहां सलीबियों की बहरिया को लंगर अन्दाज़ होना और फौजें उतारनी थीं। उस ने उन मुक़ामात से दूर अपनी बहरिया भी छुपा दी। हमले में अभी कुछ दिन बाक़ी थे। एक

मोअर्रिख़ सिराजुद्दीन ने लिखा है कि सूडानी फौज ने सलीबियों के हमले से पहले ही बग़ावत कर दी जो सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ताक़त से नहीं बल्कि डिप्लोमेसीसे और हुस्न सलूक से दबा ली। बग़ावत की नाकामी की एक वजह यह थी कि बाग़ियों को अपना सालार नाजी कहीं नज़र नहीं आया था और उसका कोई नायब भी सामने न आया। वह सब कै़द में थे। मगर एक और मोअर्रिख़ हिताची ने लिखा है कि सूडानी फौज ने हमले के बहुत बाद बग़ावत की थी। ताहम यह दोनों मोअर्रिख़ बाक़ी वाकिआत पर मुतफिक नज़र आते हैं। दोनों ने लिखा है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाजी और उसके नायबीन को कै़द सजाये मौत देकर रात के वक़्त गुमनाम क़ब्रों में दफ्न करा दिया था।

उन दोनों मोअर्रिख़ों ने और तीसरे मोअर्रिख़ लीनपोल ने भी सलीबियों की बहरिया के अदाद व शुमार एक ही जैसे लिखे हैं। वह लिखते हैं कि ख़त में दी हुई तारीख़ के ऐन मुताबिक सलीबियों की बहरिया जिस में फ्रेंन्क की, यूनान की, रोमियों की और सिसली की बहरिया शामिल थी, मुत्तहिदा कमान में बहिराये रोम में नमूदार हुई। मोअर्रिख़ों के आदाद व शुमार के मुताबिक़ जंगी जहाजों की तादाद एक सौ पचास थी। उसके अलावा बारह जंगी जहाज बहुत बड़े थे।उन में मिस्र में उतारने के लिए फौज थी।

उस फौज का सलीबी कमाण्डर एलमर्क था। जिन बादबानी कश्तियों में रसद थी उन की तादाद का सही अंदाज़ा नहीं किया जा सका। जहाज दो क़तारों में आ रहे थे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दिफ़ा की कमान अपने पास रखी। उसने सलीबियों की बहरिया को साहिल के क़रीब आने दिया। सबसे पहले बड़े जहाज लंगर अंदाज़ हुए। अचानक उन पर आग बरसने लगी। यह मिन्जनीक़ों से फेंकी हुई मशाले थीं और आग के गोले और ऐसे तीर भी थे जिनके पिछले हिस्से जलती हुई मशालों की मानिन्द थे। मुसलमानो की बरसायी हुई उस आग ने जहाजों और कश्तियों के बादबानो को आग लगा दी। जहाज लकड़ी के बने हुए थे। फौरन जल उठे। उधर से मुसलमानों के छुपे हुए जहाज आ गये। उन्होंने भी आग बरसायी यूं मालूम होता था जैसे बहिराये रोम जल रहा हो। सलीबियों के जहाज रूख़ मोड़ कर एक दूसरे से टकराने और एक दूसरे को जलाने लगे। उनमें सलीबी फौज समन्दर में कूद गयी। उनमें से जो सिपाही साहिल की तरफ आये। वह सुल्तान अय्यूबी के तीर अन्दाज़ों का निशाना बने।

उधर नूरूद्दीन ज़ंगी ने शाह फ्रेंन्क की सल्तनत पर हमला कर दिया। फ्रेंन्क ने अपनी फौज को मिस्र में दाख़िल करने के लिए ख़ुश्की के ज़रिए रवाना कर दिया था। फ्रेन्क सलीबियों की बहरिया के साथ था। उसे अपने मुल्क पर हमेले की इत्तला मिली तो बड़ी मुश्किल से जान बचाकर अपने मुल्क में पहुंचा। मगर वहां की दुनिया ही बदल गयी थी।

बहीरय रोम में सलीबियों का मुत्तहदा बेड़ा नज़रे आतिश हो गया और फौज जल कर और डूब कर ख़त्म हो गयी। सलीबियों का एक कमाण्डर एलमर्क बच गया। उसने हथियार डाल कर सुलह की दरख़्वास्त की जो बहुत बड़ी रकम के एवज़ मन्जूर कर ली गयी। यूनानियों और सिसली वालों के कुछ जहाज बच गये थे। अय्यूबी ने उन्हें अपने जहाज वापस ले जाने की इजाज़त दे दी मगर

रास्ते में ऐसा तूफ़ान आया की तमाम तर बचे कुचे जहाज ग़रक़ हो गये।

19 दिसम्बर 1169 के रोज़ सलीबियों ने अपनी शिकस्त पर दस्तख़त किये और सलाहुद्दीन अय्यूबी को तावान अदा किया।

बेशतर मोअर्रिख़ीन और माहिरीने हरब व ज़रब ने सलाहुद्दीन अय्यूबी की इस फ़तह का सेहरा इन्टेलीजेन्स सर्विस के सर बांधा है। रक़ासा ज़कोई का ज़िक्र उस दौर के एक मराकशी वक़ाअ निगार असदुल असदी ने किया है और अली बिन सुफ़ियान का तआरूफ़ भी उसी वक़ाअ निगार की तहरीर से हुआ है।

यह तो इब्तेदा थी सलाहुद्दीन अय्यूबी की ज़िन्दगी पहले से ज़्यादा ख़तरों में घिर गयी।

सातवीं लड़की

सलीबियों के बहरी बेड़े और अफवाज को बहिराये रोम में ग़र्क़ करके सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी मिस्र के सहिली इलाक़े में ही मौजूद था। सात दिन गुज़र गये थे। सलीबियों से तावान वसूल किया जा चुका था, मगर बहिराये रोम अभी तक बचे खुचे बहरी जहाज़ों को, कश्तियों को निगल और इन्सानों को उगल रहा था। सलीबी मल्लाह और सिपाह जलते जहाज़ों से समुन्दर में कूद गयी थी। दूर समुन्दर के वस्त में सात रोज़ बाद भी चन्द एक जहाज़ों के बादबान फड़फड़ाते नज़र आये थे। उन में कोई इन्सान नहीं था। फटे हुए बादबानों ने जहाज़ों को समन्दर के रहमों करम पर छोड़ दिया था। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उनकी तलाशी के लिए कश्तियां रवाना कर दी थीं और हिदायत दी थी कि अगर कोई जहाज़ या किश्ती काम की होतो वह रस्सों से घसीट लायें और जो इस क़ाबिल न हों उन में से समान और काम की दिगर चीज़े निकाल लायें। कश्तियां चली गयीं थी और जहजाों से सामान लाया जा रहा था। उन में ज़्यादा तर इसलहा और खाने पीने का सामान था या लाशें।

समुन्दर में लाशों का यह आलम था कि लहरें उन्हें उठा उठा कर साहिल पर पटक रही थीं। उन में कुछ तो जली हुई थीं और कुछ मछलियों की खाई हुई। बहुत सी ऐसी थीं जिन में तीर पेवस्त था। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीबियों के तीरों, नेज़ों, तलवारों और दिगर अस्लहा का मुआईना बड़ी ग़ौर से किया था और उन्हें अपने अस्लहा के साथ रख कर मज़बूती और मार का मुक़ाबिला किया था।

ज़िन्दा लोग भी तख़्तों और टूटी हुई कश्तियों पर तैरते अभी तक समन्दर से बाहर आ रहे थे। उन भूखे, प्यासे, थके और हारे हुए लोगों को लहरे जहां कहीं साहिल पर ला फेंकती थीं वह वहीं निढाल हो कर गिर पड़ते और मुसलमान उन्हें पकड़ लाते थे।

साहिल की मीलों लम्बाई में यही आलम था। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी सिपाह को मिस्र के सारे सहिल पर फैला दिया था और इन्तज़ाम किया था कि जहां भी कोई क़ैदी समुन्दर से निकले, उसे वहीं ख़ुश्क कपड़े और ख़ुराक दी जाये और जो ज़ख़्मी हों उनकी मरहम पट्टी भी वहीं पर हो जाये। इस इहतमाम के बाद क़ैदियों को एक जगह जमा किया जा रहा था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी घोड़े पर सवार सहिली इलाके में घूम फिर रहा था। वह अपने ख़ेमे से कोई दो मील दूर निकल गया था। आगे चट्टानी इलाक़ा आ गया। चट्टानों की एक सिम्त समन्दर और उक़्ब में सेहरा था। यह सर सब्ज़ सेहरा था जहां खजूर के अलावा दूसरी इक़साम के सेहराई दरख़्त और झाड़िया थीं। सुल्तान अय्यूबी घोड़े से उतरा और पैदल चट्टानों के दामन में चल पड़ा। मुहाफ़िज़ दस्ते के चार सवार उसके साथ थे। उसने अपना

घोड़ा मुहाफ़िज़ों के हवाले किया और उन्हें वहीं ठहरने को कहा। उस के साथ तीन सालार थे।

उनमे उस का रफ़ीके ख़ास बहाउद्दीन शद्दाद भी था। वह उस मार्के से एक ही रोज़ पहले अरब से उसके पास आया था। उन्होंने भी घोड़े मुहाफ़िज़ो के हवाले किये और सुल्तान के साथ साथ चलने लगे। मौसम सर्द था। समन्दर में तलातुम नहीं था। लहरें आती थीं और चट्टानों से दूर ही चली जाती थीं। अय्यूबी टहलते टहलते दूर निकल गया और मुहाफ़िज़ दस्ते की नज़रों से ओझल हो गया। उसके आगे, पीछे और बायें तरफ ऊंची-नीची चट्टाने और दायें तरफ साहिल की रेत थी। वह एक चट्टान पर खड़ा हो गया जिस की बुलन्दी दो ढाई गज़ थी। उसने बहीराये रोम की तरफ देखा। यूं मालूम होता था जैसे समन्दर की निलाहट सुलतान अय्यूबी की आंखो में उतर आई हो। उसके चेहरे पर फतह व नुस्रत की मुसर्रत थी और उसकी गर्दन कुछ ज़्यादा ही तन गयी थी।

उसने नाक सीकोड़ कर कपड़ा नाक पर रख लिया। बोला– "किस क़दर तअफ्फुन है।" उसकी और सलारों की नज़रें साहिल पर घूमने लगीं। फड़फड़ाने की आवाज़े सुनाई दीं। फिर हल्की हल्की चीखें और सीटियां सी सुनाई दीं। ऊपर से तीन चार गिद्ध पर फैलाये उतरते दिखाई दिये और चट्टान की ओट में जिधर साहिल था उतर गये। अय्यूबी ने कहा– "लाशें हैं।" उधर गया तो पन्द्रह बीस गज़ दूर गिद्ध तीन लाशों को खा रहे थे, एक गिद्ध एक इन्सानी खोपड़ी पंजों में दबोच कर उड़ा और जब फ़िज़ा में चक्कर काटा तो खोपड़ी उसके पंजों से छुट गयी और सलाहुद्दीन अय्यूबी के सामने आ गयी। खोपड़ी की आखें खुली हुई थीं जैसे सलाहुद्दीन अय्यूबी को देख रही हो। चेहरे और बालों से साफ पता चलता था कि किसी सलीबी की खोपड़ी है। अय्यूबी कुछ देर खोपड़ी को देखता रहा। फिर उसने अपने सालारों की तरफ देखा और कहा– "इन लोगों की खोपड़ियां मुसलमानों की खोपड़ियों से बेहतर हैं। यह इन खोपड़ियों का कमाल है कि हमारी ख़िलाफ़त औरत और शराब की नज़र होती जा रही है।"

"सलीबी चूहों की तरह सल्तनत इस्लामियां को हड़प करते चलले जा रहे हैं।" एक सालार ने कहा–

"और हमारे बादशाह उन्हें जज़्बा दे रहे हैं।" – शद्दाद ने कहा– " फिलिस्तीन पर सलीबी काबिज़ हैं। सुल्तान! क्या हम उमीद रख सकते हैं कि हम फिलिस्तीन से उन्हें निकाल सकेंगे।"

ख़ुदा की ज़ात से मायूस न हो शद्दाद।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–

"हम अपने भाइयों की ज़ात से मायूस हो चूके हैं।"एक और सालार बोला।

"तुम ठीक कहते हो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–" हमला जो बाहर से होता है उसे हम रोक सकते हैं। क्या तुम में से कोई सोंच भी सकता था कि कुफ़्फार के इतने बड़े बहरी बेड़े को तुम इतनी थोड़ी ताकत से नज़रे आतिश करके डूबो सकोगे? तुम ने शायद अन्दाज़ा नहीं किया कि उस बेड़े में जो लशकर आ रहा था वह सारे मिस्र पर मख़्खियों की तरह छा जाता।

अल्लाह ने हमें हिम्मत दी और हमने खुले मैदान में नहीं बल्कि सिर्फ़ घात लगाकर उस लशकर को समन्दर की तह मे गुम कर दिया। मगर मेरे दोस्तों! हमला जो अन्दर से होता है उसे तुम इतनी आसानी से नहीं रोक सकते। जब तुम्हारा अपना भाई तुम पर वार करेगा तो तुम पहले यह सोंचोगे कि क्या तुम पर वाकई भाई ने वार किया है? तुम्हारे बाज़ू में उसके ख़िलाफ़ तलवार उठाने की ताकत नहीं होगी। अगर तलवार उठाओगे और अपने भाई से तेग़ आज़माई करोगे तो दुश्मन मौका ग़नीमत जान कर दोनों को ख़त्म कर देगा।"

वह आहिस्ता आहिस्ता साहिल पर चट्टान के साथ साथ जा रहा था। चलते-चलते रुक गया। सलीब थी जो स्याह लकड़ी की बनी हुई थी। उसके साथ एक मज़बूत धागा था।

उसने उन लाशों के बिखरे हुए अज़ा को देखा जिन्हें गिद्ध खा रहे थे। फिर खोपड़ी को देखा जो गिद्ध के पंजों से उसके सामने गिरी थी। वह तेज़-तेज़ कदम उठाता खोपड़ी तक गया। तीन गिद्ध खोपड़ी की मिल्कीयत पर लड़ रहे थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी को देख कर परे चले गये। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीब खोपड़ी पर रख दी और दौड़ कर अपने सालारों से जा मिला। कहने लगा- "मैं ने सलीबियों के एक कैदी अफ़सर से बातें की थीं। उसके गले में जो सलीब थी। उसने बताया कि सलीबी लशकर में जो भर्ती होता है उससे सलीब पर हाथ रख कर हलफ़ लिया जाता है कि वह सलीब के नाम पर जान की बाज़ी लगा डालेगा और रूये ज़मीन से आख़िरी मुसलमान को भी ख़त्म करके दम लेगा। इस हलफ़ के बाद हर लश्करी के गले में सलीब लटका दी जाती है। यह सलीब मुझे रेत से मिली है। मालूम नहीं किस की थी। मैंने उसे खोपड़ी पर रख दी है ताकि उसकी रूह सलीब के बग़ैर न रहे। उसने सलीब की ख़ातिर जान दी है। सिपाही को सिपाही के हलफ़ का एहतराम करना चाहिए।"

"सुल्तान!"- शद्दाद ने कहा- " यह तो आपको मालूम है कि सलीबी योरूशलम के मुसलमान बाशिन्दों का कितना कुछ एहतराम कर रहे हैं।" वहां से मुसलमान बीवी बच्चों को साथ लेकर भाग रहे हैं। हमारी बेटियों की आबरू लूटी जा रही है। हमारे कैदियों को उन्होंने अभी तक नहीं छोड़ा। मुसलमान जानवरो की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। क्या हम उन इसाईयों से इन्तकाम नहीं लेंगे?"

"इन्तकाम नहीं" - सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा- "हम फिलिस्तीन लेंगे मगर फिलिस्तीन के रास्ते में हमारे अपने हुक्मरान हाइल हैं।" वह चलते चलते रुक गया और बोला- "कुफ़्फ़ार ने सलीब पर हाथ रख कर सल्तनते इस्लामिया के ख़ात्मे का हलफ उठाया है। मैंने अपने अल्लाह के हुजूर खड़े होकर और हाथ अपने सीने पर रखकर कसम खाई है कि फिलिस्तीन ज़रूर लूंगा और सल्तनते इस्लामिया की सरहदें उफक तक ले जाउंगा मगर मेरे रफीकों! मुझे अपनी तारीख़ का मुस्तकबिल कुछ रौशन नजर नहीं आता। एक वक़्त था कि इसाई बादशाह थे और हम जंगजू। अब हमारे बुज़ुर्ग बादशाह बनते जा रहे हैं और इसाई जंगजू दोनों कौमों का रूजहान देख कर मैं कह रहा हूं कि एक वक़्त आयेगा जब मुसलमान बादशाह बन जायेंगे। मगर इसाई उन पर हुकूमत करेंगे। मुसलमान इसी में बदमस्त रहेंगे कि हम बादशाह हैं,आज़ाद हैं मगर वह आज़ाद नहीं होंगे। मैं फिलिस्तीन ले लूंगा मगर मुसलमानों

का रुजहान बता रहा है कि वह फिलिस्तीन गंवा बैठेंगे। इसाईयों की खोपड़ी बड़ी तेज़ है... पचास हज़ार सूडानी लशकर को कौन पाल रहा था? हमारी ख़िलाफ़त अपनी आस्तीन में नाजी नाम का सांप पालती रही है। मैं पहला अमीर मिश्र हूं जिस ने देखा है कि ये लश्कर हमारे लिए न सिर्फ़ बेकार है बल्कि ख़तरनाक भी है। अगर नाजी का ख़त पकड़ा न जाता तो आज हम सब लश्कर के हाथों मारे जा चुके होते या उसके कैद में होते...."

अचानक हल्का सा झन्नाटा सुनाई दिया और एक तीर सलाहुद्दीन अय्यूबी के दोनों पांव के दर्मियान रेत में लगा। जिधर से तीर आया था उस तरफ सुल्तान अय्यूबी की पीठ थी. ... सालारों में से कोई भी उधर नहीं देख रहा था। सब ने बिदक कर उस तरफ देखा जिधर से तीर आया था। उधर नुकीली चट्टाने थीं। तीनों सालार और सलाहुद्दीन अय्यूबी दौड़ कर एक ऐसी चट्टान की ओट में हो गये जो दिवार के तरह उभूरीं थी। उन्हें तवक्को थी कि और भी तीर आयेंगे। तीरों के सामने मैदान में खड़े रहना कोई बहादुरी नहीं थी।

शद्दाद ने मुंह में उंगलियां रख कर ज़ोर से सीटी बजाई। मुहाफ़िज़ दस्ता पा बर्काब था। उन के घोड़ें के सरपट टापें सुनाई दिये। उसके साथ ही तीनों सालार उस तरफ दौ पड़ जिस तरफ से तीर आया था। वह बिखर कर चट्टानो पर चढ़ गये। चट्टानें ज़्यादा ऊंची नहीं थीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी भी उन के पीछे गया। एक सालार ने उसे देख लिया और कहा– "सुल्तान आप सामने न आयें।" मगर सुल्तान अय्यूबी रुका नहीं।

मुहाफ़िज़ पहुंच गये। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "हमारे घोड़े यहीं छोड़ दो और चट्टानों के पीछे जाओ। उधर से एक तीर आया है। जो कोई नज़र आये उसे पकड़ लाओ।"

सुल्तान अय्यूबी चट्टान के ऊपर गया तो उसे ऊंची–नीची चट्टाने दूर दूर तक फैली हुई नज़र आई। वह अपने सालारों को साथ लिए पिछली तरफ उतर गया और हर तरफ घूम फिर कर और चट्टानों पर चढ़ कर देखा। किसी इन्सान का निशान तक नहीं नज़र आया। मुहाफ़िज़ चट्टानी इलाके के अन्दर, ऊपर और इधर उधर घोड़े दौड़ा रहे थे।

सलाहुद्दीन अय्यूबी नीचे उतर के वहां गया जहां रेत में तीर गड़ा हुआ था। उसने अपने रफ़ीकों को बुलाया और तीर पर हाथ मारा। तीर गिर पड़ा। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "दूर से आया है इसलिए पांव में लगा है, वरना गर्दन या पीठ में लगता। रेत में भी ज्यादा नहीं उतरा।" उसने तीर उठाकर देखा और कहा– "सलीबियों का है, हशीशीन का नहीं।"

"सुल्तान की जान ख़तरे में है।" एक सालार ने कहा।

"और हमेशा ख़तरे में रहेगी।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हंस कर कहा– "मैं बहीराये रोम में कुफ़्फ़ार की वह कश्तियां देखने निकला था जो मल्लाहों के बग़ैर डोल रही हैं मगर मेरे अज़ीज़ दोस्तों! कभी न समझना कि सलीबियों की कश्ती डोल रही है। वह फिर आयेंगे। घटाओं की तरह गरजते आयेंगे और बरसेंगे भी। लेकिन वह ज़मीन के नीचे से और पीठ के पीछे से भी वार करेंगे। हमें अब सलीबियों से ऐसी जंग लड़नी है जो सिर्फ फ़ौज नहीं लड़ेगी। मैं जंगी तरबियत में एक इज़ाफ़ा कर रहा हूं। यह फ़न्ने हरब वह ज़रब का नया बाब है। उसे जासूसों की जंग कहते हैं।"

सुल्तान अय्यूबी तीर हाथ में लिए घोड़े पर सवार हो गया और अपने कैम्प की तरफ चल पड़ा। उसके सालार भी घोड़ों पर सवार हो गये। उन में एक ने सुल्तान के दायें तरफ अपना घोड़ा कर लिया, एक ने बायें को और एक ने अपना घोड़ा उसके बिल्कुल पीछे और करीब रखा ताकि किसी तरफ से तीर आये तो सलाहुद्दीन अय्यूबी तक न पहुंच सके।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस तीर पर ज़रासी भी परेशानी का इज़हार नहीं किया जोकिसी ने उसे कत्ल करने के लिए चलायाथा। अपने रफ़ीक सालारों को अपने ख़ेमे में बिठाये हुए वह बता रहा था कि जासूस और शबख़ून मारने वाले दस्ते किस कदर नुकसान करते है। वह कह रहा था– "मैं अली बिन सुफ़ियान को एक हिदायत दे चुका हूं लेकिन उस पर अमल दरआमद नहीं हो सका क्योंकि फौरन ही मुझे इस हमले की ख़बर मिली और अमल दर आमद धरा रह गया। तुम सब फ़ौरी तौर पर यूं करो कि अपने सिपाहियों और उनके ओहदेदारों में से ऐसे अफ़राद मुन्तख़ब करो जो दिमाग़ी और जिस्मानी लिहाज़ से मज़बूत और सेहत मंद हों। बारीक बीन, दूर अन्देश, कुव्वत फैसला रखने वाले जांबाज़ क़िस्म के आदमी चुनो। मैंने अली को ऐसे आदमियों की जो सिफ़ात बताई थीं वह सब सुन लो। उनमें ऊंट की मानिन्द ज़्यादा से ज़्यादा भूख और प्यास बर्दाश्त करने की ताक़त हो। चीते की तरह झपटना जानते हों, ओक़ाब की तरह उसकी नज़रें तेज़ हों, ख़रगोश और हिरन की तरह दौड़ सकते हों। मुसल्लह दुश्मन से हथियार के बेग़ैर भी लड़ सकें। उनमें शराब और किसी दूसरी नशा आवर चीज़ की आदत न हो।

किसी लालच में न आयें। औरत कितनी ही हसीन मिल जाये और ज़र व जवाहरात के अम्बार उनके क़दमों में लगा दिये जायें, वह नज़रे अपने फ़र्ज़ पर रखें...।

"अपने दोस्तों और उन के कमाण्डरों को ख़ास तौर पर ज़ेहन नशीन करादें कि इसाई बड़ी ही ख़ूबसूरत और जवान लड़कियों को जासूसी के लिए और फौजों में बे इत्मीनानी फैलाने के लिए और अस्करियों को जज़्बे के लिहाज़ से बेकार करने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। मैंने मुसलमानों में यह कमज़ोरी देखी है कि औरत के आगे हथियार डाल देते हैं। मैं मुसलमान औरत को उन मकासिद के लिए दुश्मन के इलाके में कभी नहीं भेजूंगा।

हम इस्मतों के मुहाफ़िज़ हैं इस्मत को हथियार नहीं बनायेंगे। अली बिन सुफ़ियान ने चन्द एक लड़कियां रखी हुई हैं लेकिन वह मुसलमान नहीं और वैह इसाई भी नहीं, मगर मैं औरत का क़ाइल नहीं।"

मुहाफ़िज़ दस्ते का कमाण्डर ख़ेमे में आया और इत्तलाअ दी कि मुहाफिज़ कुछ लड़कियों और आदमियों को साथ लायें हैं। सुल्तान अय्यूबी बाहर निकला। उसके तीनों सालार भी साथ थे। बाहर पांच आदमी खड़े थे जिनके लम्बे चूगे, दस्तारें और डील डौल बता रही थी कि ताजिर हैं और सफर में हैं। उनके साथ लड़कियां थीं। सातों जवान थीं और एक से एक बढ़ कर ख़ूबसूरत। उन मुहाफ़िज़ों में से एक ने जो सुल्तान पर तीर चलाने की तलाश में गये थे बताया कि उन्होंने तमाम इलाका छान मारा, उन्हें कोई आदमी नज़र नहीं आया। दूर पीछे

गया तो यह लोग तीन ऊंटों के साथ डेरा डाले बैठे हुए थे।

"क्या इनकी तलाशी ली है?" एक सालार ने पूछा।

"ली है"– मुहाफ़िज़ ने जवाब दिया। "यह कहते हैं कि ताजिर हैं। उनका सारा सामान खुलवाकर देखा है, जामा तलाशी भी ली है। उनके पास इन ख़ंजरों के सिवा और कोई हथियार नहीं।" उसने पांच ख़ंजर सुल्तान अय्यूबी के क़दमों में रख दिये।

"हम मराक़िश के ताजिर हैं।" एक ताजिर ने कहा – "सिकन्दरिया तक जायेंगे। दो रोज़ गुज़रे हमारा क़याम यहां से दस कोस पीछे था। परसो शाम यह लड़कियां हमारे पास आयीं। इनके कपड़े भींगे हुए थे। इन्होंने बताया कि यह सिसली की रहने वाली हैं। इन्हें इसाई फ़ौज का एक कमाण्डर घरों से पकड़ के साथ ले आया और एक बहरी जहाज़ में जा सवार किया। उनके मां बाप ग़रीब हैं। यह कहती हैं कि बेशुमार जहाज़ और कश्तियां चल पड़ीं। लड़कियों वाले जहाज़ में चन्द और कमाण्डर किस्म के आदमी थे और उन की फ़ौज भी थी। वह सब इन लड़कियों के साथ शराब पीकर ऐश व इशरत करते रहे। इस साहिल के क़रीब आ . तो जहाज़ों पर आग के गोले गिरने लगे। तमाम लोग जहाज़ों से समन्दर में कूदने लगे। इन लड़कियों को उन्होने ऐ कश्ती में बिठाकर जहाज़ से समन्दर में उतार दिया। यह बताती हैं कि इन्हें कश्ती चलानी नहीं आती थी। कश्ती समन्द में डोलती और भटकती रही। फिर एक रोज़ ख़ुद ही साहिल से आ लगी। हमारा क़याम साहिल के साथ था। यह हमारे पास आ गयीं। बहुत ही बुरी हालत में थीं। हमने उन्हें पनाह में ले लिया। इन्हें हम धुतकार तो नहीं सकते थे। हमें कुछ समझ में नहीं आ रही थी कि इन का क्या करें। पिछले पड़ाव से यहां तक इन्हें साथ लाये हैं। यह सवार आ गये और हमारे सामान की तलाशी लेने लगे। हमने इनसे तलाशी की वजह पूछी तो इन्होंने बताया कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अमीरे मिस्र का हुक्म है। हमने उनकी मिन्नत समाजत की कि हमें अपने सुल्तान के हुज़ूर ले चलो। हम अर्ज़ करेंगे कि इन लड़कियों को अपनी पनाह में लेलें। हम सफ़र में हैं। इन्हें कहां कहां लिए फिरेंगे।"

लड़कियों से पूछा गया तो वह सिसली की ज़ुबान बोल रही थीं। वह डरी–डरी सी लगती थीं। उनमें से दो तीन इकठ्ठी ही बोलने लगीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ताजिरों से पूछा कि उनकी ज़ुबान कौन समझता है? एक ने बताया कि सिर्फ़ मैं समझता हूं। यह इल्तजा कर रही हैं कि सुल्तान उन्हें पनाह में ले ले। कहती हैं कि हम ताजिरों के क़ाफ़िलों के साथ नहीं जायेंगी, कहीं ऐसा न हो कि रास्ते मे डाकू हमें उठाकर ले जाएं। इधर जंग भी हो रही है। हर तरफ़ इसाईयों और मुसलमानों के सिपाही भागते दौड़ते फिर रहे हैं। हमें सिपाहियों से बहुत डर आता है। हमें जब घरों से उठाया गया था तो हम कुंवारी थीं। उन फौजियों ने बहरी जहाज़ में हमें तवायफ़ें बनाये रखा है।

एक लड़की ने कुछ कहा तो उसकी ज़ुबान जानने वाले ताजिर ने सुल्तान अय्यूबी से कहा– "यह कहती है कि हमें मुसलमानों के बादशाह तक पहुंचा दो। हो सकता है उसके दिल में रहम आ जाये।"

एक और लड़की बोल पड़ी। उसकी आवाज़ रूंधाई हुई थी। ताजिर ने कहा– " यह

कहती है कि हमें इसाई सिपहियों के हवाले न किया जाये। मैं मुसलमान हो जाऊंगी बशर्ते कि कोई अच्छी हैसियत वाला मुसलमान मेरे साथ शादी कर ले।"

दो तीन लड़कियां पीछे खड़ी मुंह छुपाने की कोशिश कर रही थीं। उनके चेहरों पर घबराहट थी। बात करते शर्माती या डरती थीं।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ताजिर से कहा– " उन्हें कहो कि यह इसाईयो के पास नहीं जाना चाहतीं। हम उन्हें इस्लाम कबूल करने पर मज़बूर नहीं कर सकते। यह लड़की जो कह रही है कि मुसलमान हो जायेगी बशर्ते कि कोई मुसमान उसके साथ शादी कर ले, उसे कहो कि मैं उसकी पेशकश कबूल नही कर सकता क्योंकि यह ख़ौफ़ और मजबूरी के आलम में इस्लाम कबूल करना चाहती है। इन्हें बताओ कि उन्हें मुझ पर एतमाद है तो मैं उन्हें इस्लाम की बेटियों की तरह पनाह में लेता हूं। अपने दारूलहुकूमत में जाकर यह इन्तज़ाम कर दूंगा कि उन्हें इसाई राहिबों या किसी पादरी के पास भेजवा दूंगा। पादरी येरूशलम में होंगे।

दूसरी सूरत यह है कि जब इसाई कैदियों को आज़ाद किया जायेगा तो मैं कोशिश करूंगा कि उनकी शादियां काबिल एतमाद और अच्छी हैसियत के कैदियों के साथ कर दूं। उन्हें यह भी बतादो कि किसी मुसलमान को उनसे मिलने की इजाज़त नहीं होगी और न उन्हें इजाज़त होगी कि किसी मुसलमान से मिलें। उन की ज़रूरियात और इज़्ज़त का ख़्याल रखा जायेगा।"

ताजिर ने लड़कियों को उनकी ज़ुबान में सुल्तान अय्यूबी की सारी बातें बतायीं तो उनके चहेरों पर रौनक आ गयी। वह उन शर्तों पर रज़ामन्द हो गयीं। ताजिर शुक्रिया अदा करके चले गये। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने लड़कियों के लिए अलग ख़ेमा लगाने और ख़ेमे के बाहर हर वक़्त एक संतरी मौजूद रहने का हुक्म दिया। वह ख़ेमे की जगह बताने ही लगा था कि छः सलीबी कैदी सुल्तान अय्यूबी के सामने लाये गये। वह बहुत ही बुरी हालत में थे। उनके कपड़े भींगे हुए थे। कपड़ों पर ख़ून भी था रेते भी। उन के चेहरे लाशों के मानिन्द थे। उनके मुतअल्लिक बताया गया कि ढेड दो मील दूर साहिल पर बेसुद्ध पड़े मिले थे। वह टूटी हुई कश्ती पर तैर रहे थे।

एक दिन कश्ती पानी भर जाने से डूब गयी। यह सब तैर कर साहिल तक पहुंचे। कश्ती में बाइस आदमी सवार हुए थे। सिर्फ़ छः जिन्दा बचे। उन से चला नहीं जाता था। यह सलीबी लश्कर के सिपाही थे। यह सब धड़ाम से बैठ गये। उनमें से एक चेहरे मुहरे से लगता था कि मामूली सिपाही नहीं है। वह कराह रहा था। उसके कपड़ों पर ख़ून का एक धब्बा भी न था मगर ज़ख़्मियों से ज़्यादा तकलीफ़ में मालूम होता था। उसने सातों लड़कियों को ग़ौर से देखा और फिर कराहने लगा।

यह सलाहुद्दीन अय्यूबी का हुक्म था कि हर एक कैदी उसे दिखाया जाये। चूंकि कैदी अभी तक समन्दर से बच बच कर निकल रहे थे, इसलिए हर कैदी सुल्ताल अय्यूबी के सामने लाया जाता था। उसने उन कैदियों को भी देखा। किसी से कोई बात न की। अलबत्ता उस कैदी को जो सबसे ज़्याद कराह रहा था और जिसके जिस्म पर कोई ज़ख़्म न था, सुल्तान ने

ग़ौर से देखा और आहिस्ता से सालार से कहा– "अली बिन सुफ़ियान अभी तक नहीं आया। इन तमाम क़ैदियों से जो अब तक हमारे पास आ चुके हैं, बहुत कुछ पूछना है। उन से मालूमात लेनी हैं।" – उसने उस क़ैदी की तरफ़ देख कर कहा– "यह आदमी कमाण्डर मालूम होता है। उसे नज़र में रखा करो जब अली बिन सुफ़ियान आये तो उसे कहना कि उससे तफ़सीली पूछ ताछ करे। मालूम होता है उसे अन्दर की चोटें आई हैं। शायद पस्लियां टूटी हुई हैं.... उन्हें फ़ौरन ज़ख़्मी क़ैदियों के ख़ेमे में पहुंचा दो। उन्हें खिलाओ पिलाओ और उनकी मरहम पट्टी करो"

क़ैदियों को उस तरफ़ ले जाया गया जिस तरफ़ ज़ख़्मी क़ैदियों के ख़ेमे थे। लड़कियां उन्हें जाता देखती रहीं। फिर उन लड़कियों को भी ले गये।

❖

फ़ौज के ख़ेमों से थोड़ी दूर लड़कियों के लिए ख़ेमा नस्ब किया जा रहा था, वहां से कोई सौ क़दम दूर ज़ख़्मी क़ैदियों के ख़ेमे थे। वहां भी एक ख़ेमा गाड़ा जा रहा था और छ नये ज़ख़्मी क़ैदी ज़मीन पर लेटे हुए थे। लड़कियां उनकी तरफ़ देख रही थीं।

दोनों ख़ेमे खड़े हो गये। लड़कियां अपने ख़ेमे में चली गयीं और ज़ख़्मियों को उनके अपने ख़ेमे में ले गये। एक संतरी लड़कियों के ख़ेमे के बाहर खड़ा हो गया।

लड़कियों के लिए खाना आ गया जो उन्हों ने खा लिया। फिर एक लड़की ख़ेमे से निकल कर उस ख़ेमे की तरफ़ देखने लगी जिस में नये छः ज़ख़्मी क़ैदियों को ले गये थे।

उसके चेहरे पर घबराहट और ख़ौफ़ का कोई तास्सुर नहीं था। संतरी ने उसे देखा और उसने संतरी को देखा। लड़की ने मुस्कुराकर इशारा किया कि वह ज़ख़्मियों के ख़ेमे की तरफ़ जाना चाहती है। संतरी ने सर हिला कर उसे रोक दिया। लड़कियों को ख़ेमे से दूर जाने या किसी से मिलने की इजाज़त नहीं थी। लड़कियों और छः ज़ख़्मियों के ख़ेमो के दर्मियान बहुत से दरख़्त थे। बायें तरफ़ मिट्टी का एक टीला था जिस पर झाड़िया थीं।

सूरज ग़ुरूब हो गय था। फिर रात तारीक होने लगी। कैम्प के गुल ग़पाड़े पर नींद ग़ालिब आने लगी और फिर ज़ख़्मियों के कराहने की आवाज़ें रात के सकूत में कुछ ज़्याद ही साफ़ सुनाई देने लगीं। दूर परे बहीराये रोम का शोर दबी–दबी मुसलसल गूंज की तरह सुनाई दे रहा था। सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस जंगी कैम्प में जागने वालो में चन्द एक संतरी थे या वह ज़ख़्मी क़ैदी जिन्हें ज़ख़्म सोने नहीं देते थे या सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ेमे के अन्दर दिन का समा था। वहां किसी को नींद नहीं आयी थी। सुल्तान अय्यूबी के तीन सालार उसके पास बैठे थे और बाहर मुहाफ़िज़ दस्ता बेदार था।

सुल्तान अय्यूबी ने एक बार फिर कहा– "अली बिन सुफ़ियान अभी तक नहीं अया।" उसके लहजे में तश्वीश थी। उसने कहा– " उसका क़ासिद भी नहीं आया।"

"अगर कोई गड़बड़ होती तो इत्तला आ चुकी होती।" एक सालार ने कहा– " मालूम होता है वहां सब ठीक है।"

"उम्मीद तो यही रखनी चाहिए।" – सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" लेकिन पचास

हज़ार के लश्कर ने बग़ावत करदी तो संभालना मुश्किल हो जायेगा। वहां हमारी नफ़री डेढ़ हजार सवार और दो हजार सात सौ प्यादा है। उनके मुक़ाबिले में सूडानी बेहतर और तजुर्बाकार असकरी हैं और तादाद में बहुत ज़्यादा।"

"नाजी और उसके साज़िशी टोली के ख़ातमे के बाद बग़ावत मुम्किन नज़र नहीं आती।" एक और सालार ने कहा– "कयादत के बग़ैर सिपही बग़ावत नहीं करेंगे।"

"पेश बन्दी ज़रूरी है।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "लेकिन अली आ जाये तो पता चलेगा कि पेश बन्दी किस किस्म की कीजाये।"

सलीबियों के रोकने के लिए तो सुल्तान अय्यूबी ख़ुद आया था लेकिन दारूलहुकूमत में सूडानी फ़ौज की बग़ावत का ख़तरा था। अली बिन सुफ़ियान को सुल्तान अय्यूबी ने वहीं छोड़ दिया था ताकि वह सूडानी लश्कर पर नज़र रखे और बग़ावत को अपने ख़ुसूसी फ़न से दबाने की कोशिश करे। उसे अब तक सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास आकर वहां के अहवाल व कवाइफ़ को बताने थे मगर वह नहीं आया था जिस से सुल्तान अय्यूबी बेचैन हुआ जा रहा था।

वह जब अपने सालारों के साथ क़ाहिरा की सूरते हाल के मुतअल्लिक़ बातें कर रहा था उस का तमाम कैम्प गहरी नींद सो चुका था मगर वह सातों लड़कियां जाग रही थीं, जिन्हें सुल्तान अय्यूबी ने पनाह में ले लिया था। एक बार संतरी ने ख़ेमे का पर्दा उठाकर देखा अन्दर दीया जल रहा था। पर्दा हटते ही लड़कियां खर्राटे लेने लगीं। संतरी ने देखा कि वह पूरी सात हैं और सो रही हैं तो उसने पर्दा गिरा दिया और ख़ेमे के साथ लग कर बैठ गया। ख़ेमे के पर्दे के साथ जो लड़की थी उसने नीचे से पर्दा ज़रा ऊपर उठाया।

पर्दा आहिस्ता से छोड़ कर उसने साथ वाली लड़की के कान में कहा– "बैठ गया है।" साथ वाली ने अगली लड़की के कान में कहा– "बैठ गया है"– और इस तरह कानों कानों यह इत्तलाअ सातों लड़कियों तक पहुंच गयी कि संतरी बैठ गया है। एक लड़की जो ख़ेमे के दूसरे दरवाज़े के साथ थी आहिस्ता से उठ बैठी और बिस्तर से निकल गयी। बिस्तर ज़मीन पर बिछे थे। उसने ऊपर लेने वाले कम्बल इस तरह बिस्तर पर डाल दिये जैसे उनके नीचे लड़की लेटी हुई है।

वह पांव पर सरकती ख़ेमे के दरवाज़े तक गयी। पर्दा हटाया और बाहर निकल गयी। बाक़ी छः लड़कियों ने आहिस्ता आहिस्ता ख़र्राटे लेने शुरू कर दिये। संतरी को मालूम था कि यह समन्दर से बच कर निकली हुई पनाह गुज़ीन लड़कियां हैं,कोई ख़तरनाक क़ैदी तो नहीं। वह बैठ कर उंघता रहा। लड़की दबे पांव ऐसे रूख़ से टीले की तरफ़ चलती गयी जिस रूख़ से उसके और संतरी के दर्मियान ख़ेमा हाइल था। टीले के पास पहुंच कर उसने उस ख़ेमे का रूख़ कर लिया जिसमें छः क़ैदी रखे गये थे। रात तारीक थी। वहां कुछ दरख़्त थे। संतरी अब उधर देखता भी तो उसे लड़की नज़र नहीं आती। लड़की बैठ गयी और पावं पर सरक सरक कर आगे बढ़ने लगी। आगे रेत की ढेरियां थीं वह उनकी ओट में सरकती हुई ख़ेमे के क़रीब पहुंच गयी मगर वहां एक संतरी टहल रहा था। लड़की एक ढेर के पास लेट गयी।

संतरी उसे स्याह साये की तरह नज़र आ रहा था। अब वह दो संतरियों के दर्मियान थी। एक उसके अपने ख़ेमे का और दूसरा ज़ख़्मियों के खेमे का, डर यह था कि ज़ख़्मियों का संतरी उसकी तरफ़ आ गया तो वह पकड़ी जायेगी।

बहुत देर इन्तज़तार के बाद संतरी दूसरे ज़ख़्मियों की तरफ़ चला गया। लड़की हाथों और घूटनों के बल चलती ख़ेमे तक पहुंच गयी और पर्दा उठाकर अन्दर चली गयी। अन्दर अंधेरा था। वह तीन ज़ख़्मी आहिस्ता-आहिस्ता कराह रहे थे। शायद उनमें से किसी ने ख़ेमे का पर्दा उठता देख लिया था। उसने नहीफ़ आवाज़ में पूछा– "कौन है?" लड़की ने मुंह से "शी" की लम्बी आवज़ निकाली और सरगोशी में पूछा– "राबन कहां है?" उसे जवाब मिला– "उधर से तीसरा"– लड़की ने तीसरे आदमी के पांव हिलाये तो आवाज़ आई कौन है?" – लड़की ने जवाब दिया– "मूबी"।

राबन उठ बैठा। हाथ लम्बा करके लड़की को बाज़ू से पकड़ा और अपने बिस्तर में घसीट लिया। उसे अपने पास लिटा कर ऊपर कम्बल डाल दिया। बोला– " संतरी न आ जाये, मेरे साथ लगी रहो।" उसने लड़की को अपने साथ लगा लिया और कहा– "मैं इस इत्तफ़ाक़ पर हैरान हो रहा हूं कि हमारी मुलाकात हो गयी है। यह एक मुअज्ज़ा है जिस से ज़ाहिर होता है कि ख़ुदाये यूसू मसीह को हमारी कामयाबी मंजूर है। हम ने बहुत बुरी शिकस्त खाई है लेकिन यह सब धोखा था।" यह वही ज़ख़्मी कैदी था जो दूसरों से अलग थलग और चेहरे मुहरे और जिस्म से मामूली सिपाही नहीं बल्कि आला रुत्बे का लगता था। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने भी कहा था कि यह कोई मामूली सिपही नहीं, उस पर नज़र रखना, अली बिन सुफ़ियान उससे तफ़तीश और तहकीकात करेगा।

"तुम कितने कुछ ज़ख़्मी हो?" लड़की ने उससे पूछा– " कोई हड्डी तो नहीं टूटी?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं।" राबन ने जवाब दिया–"ख़राश तक नहीं आयी। उन्हें बताया है कि अन्दर की चोटें आई हैं और सीने के अन्दर शदीद दर्द है लेकिन मैं बिल्कुल तन्दरुस्त हूं।

"फिर यहां क्यों आ गये?" लड़की ने पूछा–

"मैं ने बहुत कोशिश की कि मिस्र में दाख़िल हो जाऊं और सूडानी लश्कर तक पहुंच सकूं लेकिन हर तरफ़ इस्लामी फ़ौज फैली हुई है। कोई रास्ता नहीं मिला। इन पांच ज़ख़्मियों को इकट्ठा किया और इनके साथ ज़ख़्मी बनकर यहां आ गया। अब फ़रार की कोशिश करूंगा जो अभी मुम्किन नज़र नहीं आती।" उसने ज़रा ग़ुस्से से कहा– "मुझे दो सवालों का जवाब दो। अय्यूबी को मैंने ज़िन्दा देखा है। क्यों? क्या तीर ख़ता हो गये थे या वह हराम ख़ोर बुजदिल हो गये हैं? और दूसरा सवाल यह है कि तुम सात की सात लड़कियां मुसलमानों की कैद में क्यों आ गयीं? क्या वह पांचो मर गये हैं या भाग गयें हैं?"

"वह जिन्दा हैं राबन!" मूबी ने कहा– 'तुम कहते हो कि ख़ुदाये यसूअ मसीह को हमारी कामयाबी मन्जूर है लेकिन मैं कहती हूं कि हमारा ख़ुदा हमें किसी गुनाह की सज़ा दे रहा है। सलाहुद्दीन इसलिए जिन्दा है कि तीर उसके पांव के दर्मियान रेत में लगा था।"

"क्या तीर किसी लड़की ने चलाया था?" राबन ने पूछा– 'क्रिस्टोफर कहां था?"

"उसी ने चलाया था मगर...."

क्रिस्टोफर का तीर ख़ता गया?" राबन ने हैरत से तड़प कर पूछा– "वह क्रिस्टोफर जिसकी तीर अन्दाज़ी ने शाह आगस्टस को हैरान कर दिया और उसकी ज़ाती तलवार इनाम में ली थी यहां आकर उसका निशाना इतना चूक गया कि छः फिट लम्बा और तीन फिट चौड़ा सलाहुद्दीन उसके तीर से बच गया? बदबख़्त के हाथ डर से कांप गये होंगे।"

"फ़ासिला ज़्यादा था।" मूबी ने कहा– "और क्रिस्टोफर कहता था कि तीर कमान से निकलने ही लगा था कि खुली आंख में मच्छर पड़ गया। उसी हालत में उसका तीर निकल गया।"

"फिर क्या हुआ?"

" जो होना चाहिए था।" मूबी ने कहा– सलाहुद्दीन साहिल पर गया था तो उसके साथ तीन कामण्डर थे और चार मुहाफ़िज़ों का दस्ता था। वह हर तरफ़ फैल गये। यह तो हमारी ख़ुश क़िस्मती थी कि इलाक़ा चट्टानी था, क्रिस्टोफर बच के निकल आया और फिर हमें इतना वक़्त मिल गया कि तरकश और कमान रेत में दबा कर ऊपर ऊंट बिठा दिया। सिपाही आ गये तो क्रिस्टोफर ने उन्हें बताया कि वह पांचों मराकश के ताजिर हैं और यह लड़कियां समन्दर से निकल कर हमारी पनाह में आयीं हैं। मुसलमान सिपाहियों ने हमारे सामान की तलाशी ली। उन्हें तिजारती समान के सिवा कुछ न मिला। वह हम सब को सुल्तान अय्यूबी के सामने ले गये। हम ने यह ज़ाहिर किया कि हम सिसली की ज़ुबान के सिवा और कोई ज़ुबान नहीं जानती, क्रिस्टोफर ने अय्यूबी से कहा कि वह हमारी ज़ुबान जानता है। हम सातों लड़कियों ने चेहरों पर घबराहट और ख़ौफ़ पैदा कर लिया।"

मूबी ने राबन को वह सारी बातें सुनाई जो सुल्तान अय्यूबी के साथ हुई थीं। यह सात लड़कियां और पांच आदमी जो मराकशी ताजिरों के भेस में थे हमले से दो रोज़ पहले साहिल पर उतारे गये थे। पांचों आदमी सलीबियों के तजुर्बाकार जासूस और कमाण्डर थे और लड़कियां भी जासूस थीं। जासूसी के अलावा उन के ज़िम्मे यह काम भी था कि मुसलमान सालारों को अपने जाल में फांसे। वह ख़ूबसूरत तो थीं ही, उन्हें जासूसी और ज़ेहनों की तख़रीबकारी की ख़ास ट्रेनिंग दी गयी थी। उस ट्रेनिंग में अदाकारी ख़ास तौर पर शामिल था। पांच मर्दों का यह मिशन था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को ख़त्म करना और नाजी के साथ राबता क़ायम रखना। यह लड़कियां मिस्र की ज़ुबान रवानी से बोल सकती थीं। लेकिन उन्होंने ज़ाहिर नहीं होने दिया। राबन उस शोबे का सरबराह था। उसे नाजी तक पहुंचना था। मगर सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान की चाल ने यहां के हालात का रूख़ उल्टा कर दिया।

"क्या तुम सलाहुद्दीन को जाल में नहीं फांस सकतीं?" राबन ने पूछा। "अभी तो यहां पहली रात है" मूबी ने कहा– "उसने हमारे मुतअल्लिक़ जो फ़ैसला दिया है अगर वह सच्चे दिल से दिया है तो उसका मतलब यह है कि वह मर्द नहीं पत्थर है। अगर उसे हमारे साथ कोई दिलचस्पी होती तो किसी एक लड़की को अपने ख़ेमे में बुला लेता.....उसे क़त्ल करना

भी आसान नहीं। वह एक ही बार साहिल पर आया था मगर तीर खाली गया। वह सालारों और मुहाफ़िज़ों के नरग़े में रहता है। इधर एक संतरी हमारे सर पर खड़ा रहता है और मुहाफ़िज़ों के पूरे दस्ते ने सलाहुद्दीन के ख़ेमे को घेर रखा है।"

"वह पांचो कहां हैं?" राबन ने पूछा।

"थोड़ी दूर हैं।" मूबी ने जवाब दिया— "वह अभी यहीं रहेंगे।"

"सुनो मूबी!" राबन ने कहा— " इस शिकस्त ने मुझे पागल कर दिया है। मेरे ज़मीर पर इतना बोझ आ पड़ा है जैसे इस शिकस्त की जिम्मेदारी मुझ पर आयद होती है। सलीब पर हाथ रखकर हलफ़ तो सब से लिया गया है लेकिन एक सिपाही के हलफ़ मेरे हलफ में ज़मीन और आसमान जितना फर्क है। मेरे रूत्बे को सामने रखो। मेरे फ़राइज़ को देखो। आधी जंग मुझे ज़मीन के नीचे से और पीठ के पीछे से वार करके जितनी थी मगर मैं और तुम सात वह पांच अपना फर्ज़ अदा नहीं कर सके। मुझ से यह सलीब जवाब मांग रही है।" उसने गले में डाली हुई सलीग हाथ में लेकर कहा। "मैं इसे अपने सीने से जुदा नहीं कर सकता।" उसने मूबी के सीने पर हाथ फेर कर उसकी सलीब हाथ में ले ली और कहा—"तुम अपने मां बाप को धोखा दे सकती हो, इस सलीब से आंखे नहीं चुरा सकती। उसने जो फर्ज़ तुम्हे सौंपा है वह पूरा करो। ख़ुदा ने तुम्हे जो हुस्न दिया है वह चट्टानों को फाड़ कर तुम्हें रास्ता दे दे गा। मैं तुम्हे फिर कहता हूं कि हमारी अचानक और ग़ैर मोतवक्क़ा मुलाक़ात इस बात का सबूत है कि हम कामयाब होंगे। हमारी लश्कर बहीराय रोम के उस पार इकठ्ठे हो रही हैं। जो मर गये सो मर गये। जो ज़िन्दा हैं वह जानते हैं कि यह शिकस्त नहीं धोखा था। तुम अपने ख़ेमे में वापस जाओ और उन लड़कियों से कहो कि ख़ेमे में न पडी रहें। बार—बार सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिलें। उसके सालारों से मिलें। बे तकल्लफ़ी पैदा करें। मुसलमान हो जाने का झांसा दें। आगे वह जानती हैं कि उन्हें क्या करना है।"

"सबसे पहले तो यह मालूम करना है कि यह हुआ क्या?" मूबी ने कहा— "क्या सूडानियों ने हमें धोखा दिया है?"

"मैं यक़ीन के साथ कुछ नहीं कह सकता।" राबन ने कहा— "मैं ने हमले से बहुत पहले मिस्र में फैलाये हुए अपने जासूसों से जो मालूमात हासिल की थीं वह यह हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को सूडानियों के पचास हज़ार मुहफ़िज़ लशकर पर भरोसा नहीं हालांकि यह मुसलमानों के वायसराय मिस्र की अपनी फौज़ है। अय्यूबी ने आकर मिस्र की फौज तैय्यार कर ली है। सूडानी इस में शामिल नहीं होना चाहते। उनके कामाण्डर नाजी ने हम से मदद तलब की थी। मैंने उसका ख़त देखा और मैंने तस्दीक़ की थी कि यह ख़त नाजी का ही है और उस में कोई धोखा नहीं मगर हमारे साथ हमारी तारीख़ का सबसे बड़ा धोखा हुआ है। मुझे यह मालूम करना है यह कैसे हुआ? किस ने किया? मैं छान बीन किये बग़ैर वापस नहीं जा सकता। शाह आगस्टस ने बड़े फ़ख्र से कहा था कि मैं मुसलमानों के घरों के अन्दर के भेद मालूम करके उनकी बुनियादें हिला दूंगा। अब तसव्वुर करो मूबी! शहनशह के दिल पर क्या गुज़र रही होगी। वह मुझे सज़ाए मौत से कम क्या इज़ा देगा! सलीब का कहर मुझ पर अलग नाज़िल

होगा।

"मैं सब जानती हूं।" मूबी ने कहा– "जज़्बाती बातें न करो। अमल की बात करो। मुझे बताओ मैं क्या करूं।"

राबन के एअसाब पर अपना फ़र्ज़ और शिकस्त का एहसास इस हद तक ग़ालिब था कि उसे यह भी एहसास नहीं था कि मूबी जैसी दिलकश लड़की जिस के एक–एक नक़्श और जिस्म के अंग अंग में शराब का तिलिस्म भरा हुआ था, उसके सीने से लगी हुई है और उसके रेशम जैसे मुलायब लम्बे बाल उसके आधे चेहरे को ढांपे हुए हैं। राबन ने उस बालों के लमस को ज़रा सा महसूस किया और कहा– "मूबी! तुम्हारे यह बाल ऐसी मज़बूत ज़ंन्जीरें हैं जो सलाहुद्दीन अय्यूबी के गिरद लिपट गयीं तो वह तुम्हारा गुलाम हो जायेगा लेकिन तुम्हे जो सबसे पहला काम करना है वह यह है कि क्रिस्टोफर और उसके साथियों से कहो कि वह ताजिरों के भेस में नाजी के पास पहुंचे और मालूम करें कि उसके लश्कर ने बग़ावत क्यों नहीं की और यह राज़ फ़ाश किस तरह हुआ कि उससे फ़ायदा उठा कर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने गिनती के चन्द एक दस्ते घात में बिठा कर हमारी तीन फौजों का बेड़ा ग़र्क कर दिया और उन्हें यह भी कहो कि मालूम करें नाजी सलाहुद्दीन अय्यूबी से ही तो नहीं मिल गया? और उस ने हमारा यही हश्र कराने के लिए ही तो ख़त नहीं लिखा था? अगर ऐसा ही हुआ है तो हमें अपने जंगी मनसूबों में फेरबदल करना होगा। मुझे यह यक़ीन हो गया है कि इस्लामियों की तादाद कितनी ही थोड़ी क्यों न हो उन्हें हम आसानी से शिकस्त नहीं दे सकते। ज़रूरी हो गया है कि उनके हुक्मरानों का अस्करी क़यादत का जज़्बा ख़त्म किया जाये। हम ने तुम जैसी लड़कियां अरबों के हरमों में दाख़िल कर दी हैं।"

"तुम ने बात फिर लम्बी कर दी है।" मूबी ने उसे टोकते हुए कहा– "हम अपने घर में एक बिस्तर पर नहीं लेटे हुए कि बड़े मज़े से एक दूसरे को कहानियां सुनाते रहें। हम दुश्मन के कैम्प में क़ैद और पाबन्द हैं। बाहर संतरी फिर रहे हैं रात गुज़रती जा रही है। हमारे पास लम्बी बातों का वक़्त नहीं। हमारा मिशन तबाह हो चुका है। अब बताओ कि इन हालात में हमारा मिशन क्या होना चाहिए। हम सात लड़कियां और छः मर्द हैं। हम क्या करें। एक यह कि नाजी के पास जायें और उसके धोखे की छान बीन करें। फिर किसे इत्तलाअ दें? तुम कहां मिलोगे?"

"मैं यहां से फ़रार हो जाऊंगा।" राबन ने कहा– "लेकिन फ़रार से पहले इस कैम्प की नफ़री और अय्यूबी के आइन्दा अज़ाइम के मुतअल्लिक मालूम करूंगा। उस शख़्स के मुतअल्लिक हमें बहुत चौकन्ना रहना होगा। इस वक़्त इस्लामी क़ौम में यह वाहिद शख़्स है जो सलीब के लिए ख़तरा है वरना इस्लामी ख़िलाफ़त हमारे जाल में आती चली जा रही है। शाह इमेलर्क कहता था कि मुसलमान इतने कमज़ोर हो गये हैं कि अब उन को हमेशा के लिए अपने पांव में बिठाने के लिए सिर्फ़ एक हल्ले की ज़रूरत है मगर उसका यह अज़्म ख़ुश फ़हमी साबित हुआ। मुझे यहां रह कर अय्यूबी की कमज़ोर रगें देखनी हैं और तुम्हें पांच आदमियों के साथ मिल कर सूडानी लश्कर को भड़काना और बग़ावत करानी है। निहायत

ज़रूरी यह है कि अय्यूबी जिन्दा न रहे। अगर वह ज़िन्दा रहे तो हमारे उस कैद ख़ाने में ज़िन्दा रहे जहां वह उम्र की आख़िरी घड़ी तक सूरज न देख सके और रात को आसमान काउसे एक भी तारा नज़र न आये.....तुम पहले अपने ख़ेमे में जाओ और अपनी छः लड़कियों को उनका काम समझा दो। उन्हें ख़ास तौर पर ज़ेहन नशीन करा दो कि उस आदमी का नाम अली बिन सुफ़ियान है जिसे इन रेशमी बालों, शरबती आंखो और इतने दिलकश जिस्मों से ऐसा बेकार करना है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के काम का न रहे और अगर हो सके तो उसके और सलाहुद्दीन अय्यूबी के दर्मियान ऐसी ग़लत फ़हमी पैदा करनी है कि वह एक दूसरे के दुश्मन हो जायें। तुम सब अच्छी तरह जानती हो कि दो मर्दों में ग़लतफ़हमी और दुश्मनी किस तरह पैदा की जाती है... जाओ और लड़कियों को मुकम्मल हिदायत देकर क्रिस्टोफर के पास पहुंचो। उसे मेरा सलाम कहना और यह भी कहना कि तेरे तीर को अय्यूबी पर आकर ही ख़ता होना था? अब उस गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करो और जो काम तुम्हे सौंपा गया है वह सौ फ़िसद पूरा करो।"

राबन ने मूबी के बालो को चुम कर कहा– "तुम्हे सलीब पर अपनी इज़्ज़त भी कुर्बान करना पड़ेगी लेकिन ख़ुदाये युसूअ मसीह की नज़रों में तुम मरीयम की तरह कुंवारी होगी। इस्लाम को जड़ से उखाड़ना है। हम ने योरूशलम ले लिया है। मिस्र भी हमारा होगा।"

❖

मूबी राबन के बिस्तर से निकली और ख़ेमे के पर्दे के पास जाकर पर्दा उठाया, बाहर झांका। अंधेरे में उसे कुछ भी नज़र नहीं आया। वह बाहर निकल गयी और ख़ेमे की ओट से देखा कि संतरी कहां है। उसे दूर किसी के गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी। यह संतरी हो सकता था। मूबी चल पड़ी। दो दरख़्तों से गुज़रती क़दम–क़दम पर पीछे देखती वह टीले तक पहुंच गयी और अपने ख़ेमे का रूख़ कर लिया। निस्फ़ रास्ता तय किया होगा कि उसे दो आदमियों की दबी–दबी बातों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। यह आवाज़े उस के ख़ेमे के क़रीब मालूम होती थीं। उसे यह ख़तरा नज़र आने लगा कि संतरी ने मालूम कर लिया है कि एक लड़की ग़ायब है और वह किसी दूसरे संतरी को या अपने कमाण्डर को बुला लाया है। उसने सोंचा कि ख़ेमे में जाने की बजाये अपने उन पांच साथियों के पास चली जाये जो मराक़शी ताजिरों के भेस में कोई ढेड़ एक मील दूर ख़ेमाज़न थे मगर उसे यह ख़्याल भी आ गया कि उसकी गुमशुदगी से बाक़ी लड़कियों पर मुसीबत आ जायेगी। वह थीं तो पूरी चालाक, फिर भी उन पर पाबन्दियां सख़्त होने का ख़तरा था और कोई चारा कार भी न था। मूबी ज़रा और आगे चली गयी ताकि उन दो आदमियों की बाते सुन सके। उनकी ज़ुबान वह समझती थी। यह तो उसने धोखा दिया था कि वह सिसली की ज़ुबान के सिवा और कोई ज़ुबान नहीं समझती।

वह आदमी ख़ामोश हो गये। मूबी दबे पांव आगे बढ़ी। उसे बायें तरफ़ क़दमों की आहट सुनाई दी। उसने चौंक कर देखा। दरख़्तों के दर्मियान उसे एक साया जो किसी इन्सान का था जाता नज़र आया। उसने रूख़ बदल लिया और टीले की तरफ़ आने लगा। मूबी कोई

ख़तरा मोल नहीं लेना चाहती थी। वह टीले पर चढ़ने लगी। टीला ऊंचा नहीं था। फौरन ही ऊपर चली गयी। वह थी तो बहुत होशियार लेकिन हर इंसान हर क़दम पर पूरी एहतयात नहीं कर सकता। वह टीले की चोटी पर खड़ी हो गयी। उसके पसे मंज़र में सितारों से भरा हुआ आसमान था। समन्दर और सेहरा की फ़िज़ा रात को आइने की तरह शफ़ाफ़ होती है। दरख़्तों में जाते हुए आदमी ने टीले की चोटी पर टन्ट मुन्ड दरख़्त के तने की तरह एक साया देखा। मूबी ने पहलू उस आदमी की तरफ कर दिया। उसके बाल खुले हुए थे जिन्हें उसने हाथ से पीछे किया। उसकी नाक, सीने का उभार और लम्बा लबादा तारीकी में भी राज़ फ़ाश करने लगा। यह आदमी रात के संतरियों का कमाण्डर था। वह आधी रात के वक़्त कैम्प की गश्त पर निकला और संतरियों को देखता फिर रहा था। यह संतरियों की तबदीली का वक़्त था। कमाण्डर इस लिए ज़्यादा चौकस था कि सुल्तान अय्यूबी तीन सालारों के साथ कैम्प में मौजूद था। सुल्तान डिसीप्लीन का बड़ा ही सख़्त था। हर किसी को हर लम्हा कोई ख़तरा लगा रहता था कि सुल्तान रात को उठ कर गश्त पर आ जायेगा।

कमाण्डर समझ गया कि टीले पर कोई लड़की खड़ी है। उसी शाम कमाण्डरों को खबरदार किया गया था कि सलैबियों ने जासूसी और तख़रीबकारी के लिए लड़कियों को इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। यह लड़कियां सेहराई ख़ाना बदोश के बहरूप में भी हो सकती हैं और ऐसी ग़रीब लड़कियों के भेस में भी जो फौजी कैम्पों में खाने की भीख मांगने आती हैं और यह लड़कियां अपने आप को मग्विया और मज़लूम ज़ाहिर करके पनाह भी मांग सकती हैं। कमाण्डरों को बताया गया था कि आज सात लड़कियां सुल्तान की पनाह में आयीं हैं जिन्हे बज़ाहिर रहम करके मगर उन्हें मुश्तबाह समझ कर पनाह में ले लिया गया है। उस कमाण्डर ने यह एहकाम सुन कर अपने एक साथी से कहा था– "अल्लाह करे ऐसी कोई लड़की मुझसे पनाह मांगे।" और दोनों हंस पड़े थे।

अब आधी रात के वक़्त जब सारा कैम्प सो रहा था उसे टीले पर एक लड़की का हुलिया नज़र आ रहा था। पहले तो वह डरा कि यह चुड़ैल या जिन्न हो सकता है। उसने नये संतरी को लड़कियों के ख़ेमे पर खड़ा करके उसे बताया था कि अन्दर सात लड़कियां हैं। उसने पर्दा उठाकर देखा तो दीये की पीली रौशनी में उसे सात बिस्तर नज़र आये थे। हर लड़की ने मुंह कम्बलों में ढांप रखा था। सर्दी ज़्यादा थी। उसने अन्दर जाकर यह नहीं देखा था कि सातवां बिस्तर खाली है और उस पर कम्बल इस तरह रखे गये हैं जैस इनके नीचे लड़की सोई हुई हो। उसे मालूम नहीं था कि सातवीं लड़की टीले पर उसके सामने खड़ी है। वह कुछ देर सोंचता रहा कि उसे आवाज़ दे या उस तक ख़ुद जाये या अगर वह जिन्न चुड़ैल है तो उसके ग़ायब होने का इन्तज़ार करे।

थोड़ी सी देर के इन्तज़ार के बाद भी लड़की ग़ायब न हुई बल्कि वह दो तीन क़दम आगे चली और फिर पीछे को चल पड़ी और फिर रूक गयी। कमाण्डर जिसका नाम फ़ख़रूलमिस्री था। आहिस्ता–आहिस्ता टीले तक गया और कहा– "कौन हो तुम? नीचे आओ।"

लड़की ने हिरन की तरह चौकड़ी भरी और टीले की दूसरी तरफ़ उतर गयी। फ़ख़्र को

यक़ीन आ गया कि कोई इन्सान है जिन्न चुड़ैल नहीं। वह तनू मन्द मर्द था। टीला ऊंचा नहीं था। वह लम्बे लम्बे डग भरता टीले पर चढ़ गया। उधर भी अंधेरा था। रात की ख़ामोशी में उसे लड़की के क़दमों की आहट सुनाई दी। वह टीले से दौड़ता उतरा और लड़की के पीछे गया। लड़की और तेज़ दौड़ पड़ी। फ़ासिला बहुत था लेकिन फख़ मर्द था, फौजी था, चीते की रफ़्तार से दौड़ रहा था। टीले के पीछे ऊंची नीची ज़मीन, खुश्क झाड़ियां और कहीं कहीं कोई दरख़्त था। बहुत सा दौड़ कर फख़ मिस्री ने महसूस किया कि उसके आगे तो कोई भी नहीं। उसने रूक कर इधर उधर देखा। उसे अपने पीछे और बहुत सा बायें लड़की के क़दम की आहट सुनाई दी। वह तरबियत याफ़्ता लड़की थी। जहां उसे हुस्न और शबाब के इस्तेमाल की तरबियत दी गयी थी वहां उसे फौजी ट्रेनिंग भी दी गयी और ख़ंजर ज़नी के दांव पेंच भी सिखाये गये थे। वह एक दरख़्त के ओट में छुप गयी थी। फ़ख़ आगे गया तो वह दूसरी तरफ़ दौड़ पड़ी।

यह तआकुब आंख मिचोली की मानिन्द था। फ़ख़ को अंधेरा परीशान कर रहा था। मूबी के क़दम ख़ामोश हो जाते तो वह रुक जाता था। क़दमों की आवाज़ सुनाई देती तो वह दौड़ पड़ता।

गुस्से से वह बावला हुआ जा रहा था। उसने यह जान लिया कि यह कोई जवान लड़की है अगर बड़ी उम्र की होती तो इतनी तेज़ और इतना ज़्यादा न भाग सकती। तआकुब में फ़ख़ दो मील फ़ासिला तय कर गया। मूबी ने झाड़ियों और ऊंची नीची ज़मीन से बहुत फ़ायदा उठाया। उसके मर्द आदमियों का डेरा क़रीब आ गया था। वह दौड़ती हुई वहां तक जा पहुंची। उसने अपने आदमियों को आवाज़े दीं। वह घबरा कर जागे और ख़ेमे से बाहर आये। एक ने मशाल जलाली। यह डंडे के सिरे पर लिपटे हुए कपड़े थे। उनकी आग की रोशनी बहुत ज़्यादा थी। फख़ ने तलवार सूंत ली और हांफता कांपता हुआ उनके सामने जा खड़ा हुआ। उसने देखा कि यह पांच आदमी जो लिबास से सफ़री मालूम होते हैं ताजिर नज़र आते हैं और मुसलमान लगते हैं। लड़की उन में से एक की टांगों को दोनों बाज़ूओं में मज़बूती से पकड़े बैठी हुई थी। मशाल के नाचते शोले में उसके चेहरे पर घबराहट और ख़ौफ़ नज़र आ रहा था। उसका सीना उभर और बैठ रहा था उसकी सांसे बुरी तरह उखड़ी हुई थीं।

"यह लड़की मेरे हवाले कर दो।" फ़ख़रूलमिस्री ने हुक्म के लहजे में कहा–

"यह एक नहीं।" एक आदमी ने इल्तजा के लहजे में जवाब दिया –" हमने तो सात लड़कियां अपके सुलतान के हवाले की हैं। आप इसे ले जा सकते हैं।"

"नहीं" मौबी ने उसकी टांगों को और मज़बूती से पकड़ते हुए, रोते हुए और खौफ ज़दा लहजे में कहा–" मै। इसके साथ नहीं ज़ाऊंगी। यह लोग ईसाईयों से ज़्यादा वहशी हैं। इनका सुलतान इन्सान नहीं सांड है। दरिंदा है। उस ने मेरी हड्डीयां भी तौड़ दी हैं। मै। उस से भाग कर आई हूं।"

" कौन सुलतान? फख़र ने हैरान सा होकर पूछा।

" वही जिसे तुम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी कहते हो।" मौबी ने जवाब दिया। वह

मिस्र की अरबी बोल रही थी।

"ये लड़की झूठ बोल रही है।" फख़र ने कहा और पूछा –" यह है कौन? तुम्हारी किया लगती है।"

"अन्दर आ जाओ दोस्त! बाहर सर्दी है।" एक आदमी ने फख़र से कहा। –" तलवार मियान में डाल लो। हम ताजिर हैं। हमसे आपको किया खतारा। आओ इस लड़की की बातें सुन लो।" उस ने आह भर कर कहा–" मैं आपके सुलतान को मर्द मोमिन समझता था मगर एक खूबसूरत लड़की को देख कर वह ईमान से हाथ धो बैठा। वह बाकी छे लड़कियों का भी यही हाल करेगा।"

"उनका यह हशर दूसरे सालारों ने किया है।" मौबी ने कहा– " शाम को उन बेचारियों को अपने खेमें ले गये थे और उन्हें बे आबरू करके खेमें में डाल दिया। वह ख़ेमें में बेहोश पड़ी हैं।"

फख़रूल मिस्री तलवार डाल कर उन के साथ ख़ेमें में चला गया। अन्दर जाकर तो एक आदमी ने आग जलाकर कहवा(चाय) के लिये पानी रखा और उस में जाने क्या कुछ डालता रहा। दूसरे आदमी ने फख़र से पूछा कि उस का रूतबा क्या है। उसने ने बताया कि कमाण्डर और ओहदे दार है। उन्हों ने उसके साथ बहुत सी बातें कीं जिन से उन्हों ने अन्दाज़ा कर लिया कि यह शख्स आम किस्म का सिपाही नहीं और ज़िम्मेदार फ़र्द है। ज़हीन और दिलेर भी है। उन लोगों में से एक ने (जो किस्टोफर था) फख़र को सात लड़कियों की बिलकुल वही कहानी सुनाई जो इन्होंने सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुनाई थी। इन्होनें फख़र को यह भी बताई कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उनके मुतअल्लिक क्या कहा था। इन लड़कियों ने सुलतान को ये पेशकश भी थी कि वह अपने घरों को तो वापस नहीं जा सकतीं और ईसाईयों के पास भी नहीं जाना चाहती इस लिये वह मुसलमान होने को तैय्यार हे। बशर्ते कि कोई अच्छे रूतबे वाला असकरी उनके साथ शादी कर ले। हमने सूना था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी किरदार के लिहाज़ से पत्थर है। हम हर रोज़ सफर पर रहने वाले ताजिर हैं। इन्हें कहां कहां साथ लिये लिये फिरते। इन्हें सुलतान के हवाले कर दिया मगर सुलतान ने इस लड़की के साथ जो सुलूक किया वह इसकी ज़बानी सुन लो।

फख़रूल मिस्री ने लड़की की तरफ देखा तो लड़की ने कहा–" हम बहुत खुश थीं कि खुदा ने हमें एक फरिशते की पनाह दी है। सूरज गुरूब होने के बाद सुलतान का एक मुहाफिज़ आया और मुझे कहा कि सुलतान बुला रहें हैं। मैं बाकी छे लड़कियों की निस्बत ज़रा ज़्यादा ही खूबसूरत हूं। मुझे तवक्को नहीं थी कि तुम्हारे सलाहुद्दीन अय्यूबी मुझे बूरी नियत से बुला रहें हैं। मैं चली गई। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शराब की सुराही खोली। एक पियाला अपने आगे रखा और एक मुझे दिया। मैं ईसाई हूं। शराब सौ बार पी है। बहरी जाहज़ में ईसाईयों ने मेरे जिस्म को खिलौना बनाए रखा है। सलाहुद्दीन अय्यूबी भी मेरे जिस्म के साथ खेलना चाहता था। शराब और मर्द मेरे लिये कोई नई चीज़ नहीं थी लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी को फरिश्ता समझती थी। मैं उस के जिस्म को अपने नापाक जिस्म से

दूर रखना चाहती थी मगर वह उन ईसाईयों से बदतर निकला जो मुझे बहरी जहाज़ में लाए थे और जब उनका जहाज़ डूबने लगा तो उन्हों ने हमें एक कश्ती में डाल कर समुन्द्र में उतार दिया।

इनमें से किसी ने हमारा साथ नही दिया। हमारे जिस्म निचोड़े हुए और हमारी हड्डीयां चटखी हुई थीं।

" खुदा ने हमें बचा लिया और आदमी की पनाह में फैंक दिया जो फरिश्ते के रूप में दरिंदा है। मुझे सुलतान ने ही बताया था कि मेरे साथ की बाकी छे लड़कियां उसके सालारों के खेमें में है। मैं ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पावं पकड़ कर कहा। मेर साथ शादी कर लो। उस ने कहा कि अगर तुम मुझे पसंद करती हों तो शादी के बगै़र मैं अपने हरम में रख लुगां........ उसने मेरे साथ वहशियों का बर्ताव किया। ज्योंही उसकी आंख लगी। मैं वहां से भाग आई। अगर मेरी बात का एतबार न हो तो उस के मुहाफिजों से पूछ लो।"

इस दौरान एक आदमी ने फख़र को कहवा पिलाया। ज़रा सी देर के बाद फख़र का मिज़ाज बदलने लगा। उस ने नफरत से कहकहा लगाया और कहा—"हमें हुक्म देते हैं औरत और शराब से दूर रहो और खुद शराब पी कर रातें औरतों के साथ गुज़ारते हैं। " फख़र महसूस ही नही कर सका कि लड़की की कहानी महज़ बे बुनयाद है और न ही वह यह महसूस कर सका कि उस का मिज़ाज कियों बदल गया है। उसे हशीश पिलादी गई थीं। उस पर ऐसा नशा तारी हो चुका था जिसे वह नशा नहीं समझता था। वह अब अपने तसव्वुर में बादशाह बन गया था। लड़की के चेहरे पर मशाल के शोले की रोशनी नाच रही थी। उस के बिख़रे हुए सियाही माइल भूरे बाल चमक रहे थे। वह फ़ख़र को पहले से भी ज़्यादा हसीन नज़र आने लगी। उस ने बेताब होकर कहा—" तुम अगर चाहो तो मैं तुम्हें अपनी पनाह में लेता हूं।"

"नहीं" लड़की डर कर पीछे हट गई और बोली—" तुम भी मेरे साथ अपने सुलतान जैसा सुलूक करोगे। तुम मुझे अपने खेमें में ले जाओगे और एक बार फिर तुम्हारे सुलतान के कबज़ें में आ जाऊंगी।"

हम अब दूसरी छे लड़कियों को भी बचाने की सोंच रहे हैं।" एक ताजिर ने कहा—" हम उनकी इज़्ज़त बचाना चाहते थे मगर हम से भूल हो गई।"

फख़रूल मिस्री की निगाह लड़की पर जमी हुई थी। उस ने इतनी जवान और खूबसूरत लड़की कभी नही देखी थी। खेमें में खामोशी तारी हो गई जिसे किसटोफर ने तोड़ी। उस ने कहा— "तुम अरब से आए हो या मिस्री हो?"

"मिस्री" फख़र ने कहा —"मैं दो जंगे लड़ चुका हूं । इसी लिये मुझे यह ओहदा दिया गया है।"

"सूडानी फौज कहां है जिसका सालार नाजी है?" किसटोफर ने पूछा।

"उस फौज का एक सिपाही भी हमारे साथ नहीं आया। "फख़र ने जवाब दिया।

"जानते हो ऐसा क्यों हुआ है? "किसटोफर ने कहा—"सूडानियों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी

की इमारत और कमान को तसलीम नहीं किया। वह फौज अपने आप को आज़ाद समझती है। नाजी ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बता दिया था कि वह मिस्र से चले जायें क्योंकि वह ग़ैर मुलकी है। इसी लिये सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मिस्र की फौज बनाई और लड़ाने के लिये यहां ले आया। उस ने तुम लोगों को शराफत और नेकी का झांसा दिया और खुद एश कर रहा है। क्या तुम्हें माले ग़नीमत मिला है?........ अगर तुम्हें मिला भी तो सोने चांदी के दो दो टुकड़े मिल जाएंगे। सलीबीयों के जहाज़ों से बेहिसाब खज़ाना सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ आया है। वह सब रात के अंधेरे में सैकड़ों ऊंट पर लाद कर क़ाहिरा रवाना कर दिया है जहां से दमिशक और बग़दाद चला जायेगा सूडानी लशकर को सुलतान निहत्थ्या करेके गुलामों में तक्सीम कर के बदल देना चाहता है। फिर अरब से फौज आ जाएगी और तुम मिस्री भी गुलाम हो जायेगा।

❖

इस ईसाई की हर एक बात फख़रूल मिस्री के दिल में उतरती जा रही थी। असर बातों का नहीं बल्कि मौबी का हुस्न और हशीशों का था। ईसाईयों ने यह हरबा हसन बिन सबाह के हशीशीन से सीखा था। मौबी को बिलकुल तवक्को नही थी कि यह सूरतें हाल पैदा हो जाएगी कि एक मिस्री उस के ताआकुब में उसके दाम मे आ जायगा। उन्हें मालूम हुआ कि फख़रूल मिस्री अरबी ज़बान के सिवा और कोई ज़बान नहीं जानता था। मौबी ने अपने पाचों साथियों को सुनाना शुरू कर दिया कि रॉबिन ज़ख़्मी होने का बहाना कर के ज़ख़्मियों के ख़ेमें में पड़ा है और उस ने कहा है कि नाजी से मिल कर मालूम करो कि उस ने बग़ावत क्यों नही की या उस ने अकब से सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हमला क्यों नही किया और यह भी मालूम करो कि उस ने हमें धोखा तो नहीं दिया?

वह बातें कर रही थी तो फख़र ने पूछा –"यह क्या कह रही है?" यह कह रही है।

एक ने जवाब दिया–"अगर यह शख़्स यानी तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में न होते तो यह तुम्हारे साथ शादी कर लेती। यह मुसलमान होने को भी तैय्यार है। लेकिन कहती है कि उसे अब मुसलमानों पर भरोसा नही रहा।"

फख़र ने बेताबी से लपक कर लड़की को बाज़ू से पकड़ा और अपने तरफ घसीट कर कहा अगर में बादशाह होता तो तुम्हारी क़सम तख़्त और ताज कुर्बान कर देता। अगर शर्त यही है कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी की दी हुई तलवार फेंक दूं तो यह लो।" उस ने कमर बन्द से तलवार खोली और नियाम समेत लड़की के कदमों में रख दी। कहा–" मै। अब से सलाहुद्दीन अय्यूबी का सिपाही और कमाण्डर नहीं हूं।"

"मगर एक शर्त और भी है" लड़की ने कहा–" मैं अपना मज़हब तुम्हारी खातिर तर्क कर देती हूं लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी से इन्तेक़ाम जरूर लूंगी।"

"क्या उसे मेरे हाथ से कत्ल करवाना चाहती हो?" फख़र ने पूछा।

"लड़की ने अपने आदमीयों की तरफ देखा सब ने एक दूसरे की तरफ देखा। आख़िर किसटोफर ने कहा–"एक सलाहुद्दीन अय्यूबी न रहा तो क्या फर्क पड़ेगा? एक और सुल्तान

आजाएगा। वह भी एसा ही होगा। मिस्रीयो को आखिर गुलाम ही होना पड़ेगा ।तुम एक काम करो। सूडानियों के सालार नाजी के पास पहुंचो और यह लड़की उस के सामने करके उसे बताओ कि सलाहुद्दीन अय्यूबी असल में किया है और उसके इरादे क्या हैं।"

उन लोगों को यह तो इल्म था कि नाजी का सलीबीयों के साथ राबता है और मौबी उस के साथ बात करेगी। लेकिन उन्हें यह इल्म नही था कि नाजी और उस के मातेहत सालार खुफिया तरीके से मरावाए जा चुके हैं। उस तक लड़की को ही जाना था। उस का अकले जाना मुमकिन नही था। इत्तेफाक से उनहें फखरुल मिस्री मिल गया। लिहाजा उसी को इस्तेमाल करने का फैसला हो गया। यह आदमी चूंकी सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के नज़र में आ गये थे इस लिये उसकी नज़र मे रहना चाहते थे। इस के अलावा उन्होंने मौबी से सुन लिया था कि उनके शोबा का जासूस और तखरीब कारी का सरबराह रॉबिन इसी खेमे में है और फरार होगा इस लिये वह उसे मदद देने के लिये भी वहां मौजूद रहना चाहते थे। उनके इरादे मालूम नही क्या थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी पर चलाया हुआ उनका तीर खता खाया तो उन्हें सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के सामने ले जाया गया था। इनका बहरूप और डरामा कामयाब रहा लेकिन इनका मिशन तबाह हो गया था। लिहाज़ा अब वह बदली हुई सूरते हाल और इत्तेफाक से फाइदा उठाने की कोशिश कर रहे थे। फखरूल मिस्री हुस्न और हशीश के जाल में आगया था। उस ने वापस केम्प में न जाने का फैसला कर लिया था।

उसे यह मशवरा दिया गया कि वह लड़की को ले कर रवाना हो जाये। उन लोगों ने उसे अपना एक ऊंट दे दिया और थेली में खाने का बहुत सारा सामान डाल दिया । इन खानो में कुछ खाने ऐसे थे जिन में हशीश मिली हुई थीं। मौबी को उनका इल्म था। फख़र को एक लम्बा चौगा और ताजिरों वाला दस्तार पहना दी गई। लड़की ऊंट पर सवार हुई। उसके पीछे फख़र सवार हो गया था और ऊंट चल पड़ा। फख़र गिर्दो पेश से बेखबर था। और वह अपनी माज़ी से भी बे ख़बर हो गया था। सिर्फ यह एहसास उस पर गा़लिब था कि सुलतान को ठुकरा कर उसे पसन्द किया है। फख़र ने मौबी को दोनो बाजू में लेकर उसकी पीठ अपने सीने से लगा ली।

मौबी ने कहा –" तुम ईसाई कमाण्डरों और अपने सुलतान की तरह वहशी तो नहीं बनोगे? मैं तुम्हारी मिलकियत हूँ। जो चाहो करो मगर मै फिर तुम से नफरत करुंगी।"

" कहो तो मैं ऊंट से उतर जाता हूं। " फख़र ने उसे अपने बाजूंओ से निकाल कर कहा–" मुझे सिर्फ ये बात बता दो कि तुम मुझे दिल से चाहती हो या महज़ मजबूरी के आलम मे मेरी पनाह ली है?"

" पनाह तो मै उन ताजिरों की भी ले सकती थी।" मौबी ने जवाब दिया –" लेकिन तुम मुझे इतने अच्छे लगे कि तुम्हारी खातिर मज़हब तक छोड़ने का फैसला कर लिया।" उस ने जज़बाती बाते कर के फख़र के आसाब पर कबज़ा कर लिया और रात गुज़रती चली गई।

सफर कमोबेश पांच दिनो का था लेकिन फख़रुल मिस्री आम रासतों से हट कर जा रहा था कियोंकि वह भगोड़ा फौजी था। मौबी को नींद आने लगी। उस ने सर पीछे फख़र के

सीने पर रख दिया और गहरी नींद सो गई। ऊंट चलता रहा। फख़र चलता रहा।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी सुबह की नमाज़ पढ़ कर फारिग़ हुआ ही था कि दरबान ने इत्तेला दी कि अली बिन सुफियान आया है सुलतान दौड़ कर बाहर निकला। उस के मुंह से अली बिन सुफियान के सलाम के जवाब से पहले यही अल्फाज़ निकले । "उधर की किया ख़बर है"

"अभी तक खैरियत से है।" अली बिन सुफियान ने जवाब दिया–" मगर सूडानी लशकर में बेइतमिनानी बढ़ती जा रही है। मैं ने लशकर मे अपने जो मुहाफिज़ छोड़े थे। उनकी इत्तेलाओं से पता चलता है कि उनके किसी एक कमाण्डरों ने भी कियादत संभाल ली तो बग़ावत शुरू हो जाये गी।

सलाहुद्दीन अय्यूबी उसे अपने खेमें मे ले गया । अली बिन सुफियान कह हरहा था।" नाजी और उसके सरकरदा सालारो को तो हमने खतम कर दिया है लेकिन वह मिस्री फौज के खिलाफ सूडानियों मे नफरत का जो जहर फैला गये थे उस का असर ज़र्रा भर कम नही हुआ। उनकी बे इतमिनानी की दूसरी वजह उनके सालारों की गुमशुदगी है। मैं ने अपने मुहाफिजों की जुबानी यह खबर मशहूर कर दी है कि उनके सालार बहीराये रोम के मुहाज़ पर गये हुए हैं। मगर अमीरे मिस्र ! मुझे शक होता है कि सूडानियों मे शकूक और शुबहात पाई जाती है। जैसे उन्हें इल्म हो गया है कि उनके सालारों को कैद कर लिया गया है और मार भी दिया गया है।"

"अगर बग़ावत होगी तो मिस्र में हमारे जो दस्ते हैं वह उसे दबा सकेंगे?' सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा –"मैं इसका बन्दो बस्त कर आया हूं। मैं ने आली मुकाम नूरूद्दीन जंगी की तरफ दो तेज़ रफतार कासिद भेज दिये है। मैं ने पैग़ाम भेजा है कि मिस्र में बग़ावत की फिज़ा पैदा हो रही है और हमने जो फौज तैय्यार की है वह थोड़ी हे और उसमें से आधी फ़ौज मुहाज़ पर है। ऐन वक्त पर बग़ावत को दबाने के लिये हमें कमक भेजी जाये।"

"मुझे उधर से कमक की उम्मीद कम है " सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" परसों एक कासिद यह खबर लाया था कि ज़ंगी ने फरेंक पर हमला कर दिया था। यह हमला उन्होंने हमारी मदद के लिये किया था। फरेंक के उमरा और फौजी कायदीन बहीराये रोम में सलीबीयों के इत्तिहादी बैड़े में थे और फरेंक की कुछ फौज मिस्र में दाखिल हो कर अकब से हमला करने और हमारी सूडानी लशकर की पुश्त पनाही के लिये मिस्र की सरहदों पर आई थी। मोहतरम ज़ंगी ने उनके मुल्क पर हमला करके उन के सारे मंसूबे को एक ही वार में बर्बाद कर दिया है और शाह फरेंक के बहुत से इलाके पर कब्ज़ा कर लिया है। उन्होंने सलीबीयों से कुछ रक़म भी वसूल की है।" सलाहुद्दीन अय्यूबी खेमें के अन्दर टहलने लगा। जज़बाती लहजे में बोला–" सुलतान ज़ंगी के कासिद की ज़बानी वहां के कुछ ऐसे हालात मालूम हुये हैं जिन्होंने मुझे परेशान कर रखा है।"

" क्या अब सलीबी उधर यलग़ार करेंगे?" अली बिन सुफियान ने पूछा।

" मुझे सलीबीयों की यलग़ार का ज़र्रा भर भी परवाह नही।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जवाब दिया–" परेशानी यह है कि कुफ्फार की यलग़ार को रोकने वाले शराब के मटकों में डूब गये हैं। औरत की ज़ुल्फों ने उन्हें पाबा जंजीर कर दिया है। अली! चचा असदुद्दीन शेर कोह को इसलाम की तारीख़ कभी फरामोश नही कर सकेगी। काश वह आज ज़िंदा होते। मैदाने जंग में मुझे वही लाये थे। हमने बड़े ही मुश्किल वक़्त देखे हैं अली! मैं ने चचा शेर कोह की फौज के हरावल दस्ते की कमान की है। मैं उनके साथ सलीबीयों के मुहासरे में तीन माह रहा हूं। मुझे शेर कोह हमेंशा सबक़ दिया करते थे कि घबराहट और खौफ से बचना। ताईदे इज़्दी और रज़ाये ईलाही ही का क़ायल रहना और मुश्तरक फौज के खिलाफ भी लड़ा हूं। मैं सिकंदरिया के मुहासरे में रहा हूं। शिकस्त मेर सिर पर आ गई थी। मेरी मुट्ठी भर असकरी बद दिल होते जा रहे थे। मैं ने किस तरह उनके हौसले और जज़्बे तरो ताज़ा रखे यह मेरा खुदा ही जानता है। और फिर चचा शेर कोह ने हमलावर होकर मुहासरा तोड़ा. ..... तुम यह कहानी अच्छी तरह जानते हो। इमान फरोशें ने कुफ्फार के साथ मिल कर हमारे लिये कैसे कैसे तूफान खड़े किये मगर मैं घबराया नही। दिल नही छोड़ा।"

" मुझे सब कुछ याद है सुलतान!" अली बिन सुफियान ने कहा–" इस क़द्र मारके आराईसयों और कत्ल व ग़ारत के बाद तवक्कों थी कि मिस्री राहे रास्त पर आ जायेंगे मगर एक गद्दार मरता है तो एक और उस की जगह ले लेता है। मेरा मशवरा यह है कि ग़द्दार कमज़ोर खिलाफत की पैदावार होती है। अगर फातमी खिलाफत हरम में गुम न हो जाती तो आज आप सलीबीयों से यूरोप में लड़ रहे होते मगर हमारे गद्दार भाई उन्हें सलतनते इसलामिया से बाहर नही जाने दे रहे हैं। जब बादशाह एश व इशरत में पड़ जाये तो रिआया में से भी कुछ लोग बादशाही के ख्वाब देखने लगते हैं। वह कुफ्फार से ताक़त और मदद हासिल करते है। ईमान फरोशी में वह इस कदर अंधे हो जाते हैं। कि कुफ्फार के अज़ायम और अपनी बेटियों की इज्ज़त तक को भूला देते हैं।"

" मुझे हमेशा इन्हीं लोगो से डर आता रहा है।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" अल्लाह न करे, इसलाम का नाम जब भी डूबा मुसलमानों के हाथों से डूबेगा। हमारी तारीख गद्दारों की तारीख बनती जा रही है। यह रूझान इतना बढ़ रहा है कि एक रोज़ मुसलमान तो बराये नाम होंगे अपनी सर ज़मीन कुफ्फार के हवाले कर देंगें। अगर इसलाम कहीं जिंदा रहा तो वहां मस्जिदें कम और कहबा खाने ज़्यादा होंगे। हमारी बेटियां सलीबयो की तरह बाल खुले छोड़ कर बेहया हो जायेंगी। कुफ्फार इन्हें इसी रास्ते पर डाल रहे है। बल्कि डाल चुके हैं... ..... अब मिस्र से फिर वही तुफान उठ रहा है अली! तुम अपने मुहकमे को और मज़बूत और वसीअ कर लो। मैं ने अपने रफीक़ों से कह दिया है कि दुश्मन के इलाकों में जा कर शबखून मारने और खबरें लाने के लिये अच्छे जवानो का इन्तेज़ाम करो। सलीबी इस मुहाज़ को मज़बूत और पुर असर बना रहे हैं। तुम फौरी तौर पर जासूसी जंग की तैय्यारी करो......., फौरी तौर पर करने वाला काम यह है कि समुन्द्र से कई एक सलीबी बचकर निकले हैं। उनमे ज़्यादा तर ज़ख्मी हैं और जो ज़ख्मी नहीं वह कई–कई दिन समुन्द्र में डूबने और तैरने की

वजह से ज़ख्मियों से बदतर है। इन सबका इलाज मुआलजा हो रहा है। मैं ने सबको देखा है। तुम भी उन्हें देख लों और अपनी जरूरत के मुताबिक उन से मालूमात हासिल करो।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दरबान को बुलाकर नाश्ते कि लिये कहा और अली बिन सुफियान से कहा—"कल कुछ ज़ख़मी और अच्छी भली लड़कियां मेरे पास लाई गई थीं। छे तो समुन्द्र से निकले हुए कैदी हैं। उनमें से एक पर मुझे शक है कि वह सिपाही नही। रूतबे और ओहदे वाला आदमी है। सब से पहले उससे मिलो। पांच ताजिर सात लड़कियों को साथ लेकर आये थे।"उस ने अली बिन सुफियान को लड़कियों के मुतअल्लिक वही कुछ बताया जो ताजिरों ने बताया था। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा—" मैं ने लड़कियों को दर असल हिरासत में लिया है लेकिन उन्हें बताया है कि मै उन्हें पनाह में ले रहा हूं लड़कियों का ये कहना है कि वह ग़रीब घरों की लड़कियां है और फिर उनके यह बयान हैं कि उन्हें एक जलते हुए जहाज़ मे से कश्ती मे बैठा कर समुन्द्र में उतारा गया है और कश्ती उन्हे साहिल पर ले आई मुझे शक में डाल रहा है। मैं ने उन्हें अलग खेमें में रखा है और सन्तरी खड़ा कर दिया है। तुम नाश्ते के फौरन बाद इस कैदी और उन लड़कियों को देखो।"

आखिर में सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुसकुरा कर कहा—" कल दिन के वक़्त साहिल पर टहलते हुये मुझ पर एक तीर चलाया गया है जो मेरे दोनों पाव के रासते में लगा।" उस ने तीर अली बिन सुफियान को देकर कहा—" इलाका चट्टानी था। मुहाफिज़ तलाश और तआकुब के लिये बहुत दौड़े मगर उन्हें कोई तीर अन्दाज़ नज़र नहीं आया। उस इलाके से उन्हें पांच ताजिर मिले जिन्हें मुहाफिज़ मेरे पास ले आये। उन्होंने यह सात लड़कियां भी मेरे हवाले की और चले गये।"

"और वह चले गये" अली बिन सुफियान ने हैरत से कहा—" आप ने उन्हें जाने की इज़ाजत दे दी?"

"मुहाफिज़ों ने उन के सामान की तलाशी ली थी।" सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा—" उन से ऐसी कोई चीज़ बरआमद नही हुई जिस से उन पर शक होता।"

❖

अली बिन सुफियान तीर को ग़ौर से देखता रहा। और बोला—" सुलतान और सुराग़रसां की नज़र में बड़ा फर्क होता है। मैं सब से पहले उन ताजिरों को पकड़ने की कोशिश करूंगा।"

अली बिन सुफियान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खेमें से बाहर निकला तो दरबान ने उस से कहा—" यह कमाण्डर इत्तेला लाया है कि कल सात ईसाई लड़कियां कैद में आई थीं। उनमें से एक लापता है। क्या सुलतान को यह इत्तेला देना जरूरी है? यह कोई अहम वाकिया नही की सुलतान को परेशान किया जाए।"

अली बिन सुफियान गहरी सोंच में पड़ गया। कमाण्डर जो इत्तेला देने आया था उस ने अली बिन सुफियान के करीब आकर आहिस्ता से कहा—"एक ईसाई लड़की का लापता हो जाना तो इतना अहम वाकिया नही मगर अहम ये है कि फख़रूल मिस्री नाम का कमाण्डर भी रात से लपता है। रात के संतरियों ने बताया कि वह लड़कियों के खेमें तक गया था। वहां से ज़खमियों के खेमें की

तरफ गया और फिर कहीं नज़र नही आया। रात वह गश्त पर निकला था।"

अली बिन सुफियान ने ज़रा सोच कर कहा–" यह इत्तेला सुलतान तक अभी न जाए। रात के उस वक्त के तमाम संतरियों को इकट्ठा करो जब फखर गश्त पर निकला था।" उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुहाफिज़ दस्ते के कमाण्डर से कहा कि कल सुलतान के सथ जो मुहाफिज़ साहिल तक गये थे उन्हें लाओ। वह वहीं थे। चारो सामने आ गये तो अली बिन सुफियान ने उन्हें कहा–" कि जहां तुम ने ताजिरों और लड़कियों को देखा वहां फौरन पहुंचो। अगर वह ताजिर अभी तक वहीं है तो उन्हें हिरासत में ले लो और वहीं मेरा इन्तेज़ार करो अगर जा चुके हों तो फौरन वापस आओ।"

मुहाफिज़ रवाना हो गये तो अली बिन सुफियान लड़कियों के खेमें तक गया। छ लड़कियां बाहर बैठी थीं और संतरी खड़ा थां अली बिन सुफियान ने लड़कियों को अपने सामने खड़ा करके अरबी ज़बान में पूछा–" सातवीं लड़की कहा हैं?"

लड़कियों ने एक दूसरे को देखा और सिर हिलाये। अली बिन सुफियान ने कहा–" तुम सब हमारी ज़बान समझती हो।"

लड़कियां उसे हैरान होकर देखती रहीं। अली बिन सुफियान उनके चेहरों और डील डोल से शक में पड़ गया था। वह लड़कियों के पीछे जा खड़ा हुआ और अरबी ज़बान मे कहा–" इन लड़कियों के कपड़े उतार कर नंगा कर दो। और बारह वहशी किसम के सीपाही बुलाओ।"

तमाम लड़कियां बिदक कर पीछे की तरफ मुड़ी। दो तीन ने बे वक्त बोलना शुरू कर दिया। वह अरबी ज़बान बोल रही थीं।" लड़कियों के साथ तुम ऐसा सुलूक नही कर सकते।" एक ने कहा–' " हम तुम्हारे खिलाफ नही लड़े।"

अली बिन सुफियान की हंसी निकल गई। उस ने कहा–" मैं तुम्हारे साथ बहुत अच्छा सुलूक करूंगा। तुम ने जिस तरह एक ही धमकी से अरबी बोलना शुरू कर दी है अब बग़ैर किसी धमकी के यह बता दो कि सातवीं लड़की कहां है।" सब ने ला इल्मी का इज़हार किया। अली ने कहा–" मैं इस सवाल का जवाब लेकर रहुंगा। तुम ने सलाहुद्दीन अय्यूबी पर ज़ाहिर किया है कि तुम हमारी ज़बान नहीं जानती, अब तुम हमारी ज़बान हमारी तरह बोल रही हो। क्या मैं तुम्हें छोड़ दुगां?" उस ने संतरी से कहा–" इन्हें खेमें के अन्दर बिठा दो।"

रात के संतरी आ गये थे। फख़रूल मिस्री की गश्त के वक़्त के संतरियों से अली बिन सुफियान ने पूछ गछ की। आख़िर लड़कियों के खेमें वाले संतरी ने बताया कि फख़र रात उसे यहां खड़ा कर के ज़खमियों के खेमें की तरफ गया था। थोड़ी देर बाद उसे उसकी आवाज़ सुनाई दी। " कौन हो तुम? नीचे आओ। " संतरी ने उधर देखा तो अंधेरे में उसे कुछ भी नज़र न आया। सामने मिट्टी के टीले पर उसे एक आदमी का साया सा नज़र आया वह साया वहीं गायब हो गया।

अली बिन सुफियान फौरन वहां गया। यह टीला साहिल के करीब था। उस की मिट्टी रेतीली थी। एक जगह से साफ पता चल रहा था कि वहां कोई ऊपर गया है। वहां ज़मीन पर

दो किस्म के पावं के निशान थे। एक निशान तो मर्द का था जिसने फौजी वाला जूता पहन रखा था। दूसरा निशान चौड़े जूते का था और ज़नाना लगता था। ज़मीन कच्ची और रेतीली थी। ज़मीन में निशान जिधर से आया था अली बिन सुफियान उधर ही चल पड़ा। यह निशान उसे उस ख़ेमें तक ले गये जहां मौबी रॉबिन से मिली थी। उसने खेमें का पर्दा उठाया और अन्दर चला गया।

उसकी चेहरे शनास निगाहों ने ज़ख्मी कैदियों को देखा। सब के चेहरे भापें। रॉबिन बैठा हुआ था। उसने अली बिन सुफियान को देखा और फौरन ही कराहने लगा जैसे उसे दर्द का अचानक दौरा पड़ा हो। अली ने उसे कन्धे से पकड़ कर उठा लिया और खेमे से बाहर ले गया। उस से पूछा–"रात को एक कैदी लड़की इस खेमें मे आई थी। कौन आई थी?" रॉबिन उसे ऐसी नज़रो से देखने लगा जिनमें हैरत थी और ऐसा तास्सुर भी जैसे वह कुछ समझा ही न हो। अली बिन सुफियान ने उसे आहिस्ता से कहा–" तुम मेरी ज़बान समझते हो दोस्त! मैं तुम्हारी ज़बान समझता हूं। बोल सकता हूं लेकिन तुम्हें मेरी ज़बान में जवाब देना होगा।" रॉबिन उस का मुंह देखता रहा। अली ने संतरी से कहा–"इसे खेमें से बाहर रखो।

अली बिन सुफियान खेमें के अन्दर चला गया और कैदियों से उनके ज़बान में पूछा–" रात को लड़की इस खेमें मे कितनी देर रही थी? अपने आपको अज़ियत में न डालो।"

सब चुप रहे मगर एक और धमकी से एक ज़खमी ने बता दिया कि लड़की खेमें में आई थी और रॉबिन के पास बैठी या लेटी रही थी। यह ज़ख़मी समुन्द्र मे जलते जहाज़ से कूदा था उस ने आग का भी और पानी का भी कहर देखा था। वह इतना ज़खमी नही था जितना खौफ ज़दा था। वह किसी और मुसीबत में पड़ने के लिये तैय्यार नही था। उसने बताया कि उसे यह मालूम नही कि रॉबिन और लड़की के दरमियान क्या बातें हुई और लड़की कौन थी। उसे यह भी मालूम नही था कि रॉबिन का ओहदा क्या है। वह उसके सिर्फ नाम से वाकिफ था। उस ने यह भी बता दिया कि रॉबिन इस कैम्प मे आने तक बिलकुल तंदुरूस्त था। यहां आकर वह इस तरह कराहने लगा जैसे उसे अचानक किसी बीमारी का दौरा पड़ गया हो।

अली बिन सुफियान एक मुहाफिज़ की रहनुमाई मे उन पांच आदमियों को देखने चला गया जो ताजिर के भेस में कुछ दूर खेमें ज़न थे। मुहाफिज़ ने उन्हें अलग बैठा रखा था। अली को उन्होंने पहले इत्तेला दी कि उनके पास कल दो ऊंट थे मगर आज एक ही है। यही इशारा काफी था। वह इस सवाल का कोई तसल्ली बख्श जवाब न दे सके की दूसरा ऊंट कहां है। दूसरे ऊंट के पावं के निशान मिल गये। अली बिन सुफियान ने उन्हें कहा–" तुम्हारा जुर्म मामूली चोरी चकारी नही है। तुम एक पूरी सलतन और उसके तमाम तर आबादी के लिये खतरा हो। इस लिये मैं तुम पर ज़र्रा भर रहम नहीं करूंगा। क्या तुम ताजिर हो?"

"हाँ" सब ने सिर हिला कर कहा–" हम ताजिर हैं जनाब! हम बे गुनाह हैं।"

अली बिन सुफियान ने कहा–" अपने हाथों की उल्टी तरफ मेरे सामने करो।" पाचों ने हाथ उठा कर के आगे कर दिये। अली ने सब के बायें हाथ के अंगूठे और शहादत की उंगली के दरमियानी जगह को देखा और एक आदमी को कलाई से पकड़ लिया। उसे कहा–"

कमान और तरकश कहां छुपा रखा है?"

उस आदमी ने मासूम बनने की बहुत कोशिश की। अली ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक मुहाफिज़ को अपने पास बुला कर उसके बायें हाथ की उल्टी तरफ उसे दिखाई। उसके अगूंठे के उल्टी तरफ उस जगह जहां अगूंठा हथैली के साथ मिलता है यानी जहां जोड़ होता है वहां एक निशान था। एसा ही निशान उस आदमी के अंगूठे के जोड़ पर था। अली ने उसे अपने मुहाफिज़ के मुतअल्लिक बताया –" यह सुलतान का बेहतरीन तीर अंदाज़ है और यह निशान इसका सबूत है कि यह तीर अंदाज़ है।"

उस के अंगूठे की उल्टी तरफ एक मधम सा निशान था जैसे वहां बार बार कोई चीज़ रगड़ी जाती रही हो। यह तीरों के रगड़ के निशान थे। तीर दायें हाथ से पकड़ा जाता है कमान बायें हाथ से पकड़ा जाता है। तीर का अगला हिस्सा बायें हाथ के अंगूठे पर होता है और जब तीर कमान से निकलता है तो अंगूठे पर रगड़ खा जाता है। ऐसा निशान हर एक तीर अन्दाज़ के हाथ पर होता है। अली बिन सुफियान ने उस से कहा–" इन पांच में तुम अकेले तीर अंदाज़ हो। कमान और तरकश कहां है? पांचों चुप रहे। अली ने उन पांचों मे से एक को पकड़ कर मुहफिज़ से कहा–" इसको उस दरख्त के साथ बांध दो।"

उसे खजूर के दरख्त के साथ खड़ा कर के बांध दिया गया। अली ने अपने तीर अन्दाजों के कानों में कुछ कहा। तीर अन्दाज़ ने कंधे से कमान उतार कर उस मे तीर रखा और दरख्त से बंधे हुए आदमी का निशाना ले कर तीर छोड़ा। तीर उस आदमी की दांयी आंख मे उतर गया। वह तड़पने लगा। अली ने बाकी चार से कहा–"तुम में कितने है। जो सलीब की ख़ातिर इस तरह तड़प तड़प कर जान देने को तैय्यार है? उन्हों ने उसकी तरफ देखा। वह आदमी चीख रहा था तड़प रहा था उसकी आंख से खून बुरी तरह बह रहा था।

"मैं तुम से वादा करता हूं" अली बिन सुफियान ने कहा–" कि बाइज्ज़त तरीके से तुम सब को समुन्द्र पार भेज दूंगा......... दूसरे ऊंट पर कोन गया है? कहां गया है?"

" तुम्हारा अपना एक कमाण्डर हमारा एक ऊंट हमसे छीन कर ले गया है।" एक आदमी ने कहा।

"और एक लड़की भी।" अली बिन सुफियान ने कहा।

थोड़े ही देर बाद अली बिन सुफियान के फन ने उन से एतराफ करवा लिया की वह कौन है। और किया हैं, लेकिन उन्होंने यह झूठ बोला कि लड़की रात में खेमे से भाग आई थी और उस ने बताया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने रात उसे अपने खेमें में रखा था, उस ने शराब भी पी रखी थी और लड़की को भी पीलाई थी और लड़की घबराई हुई और खौफ़ के आलम में आई थी। उसको ढूंढ़ता हुआ फख़र नाम का एक कमाण्डर आया और उसने जब लड़की की बातें सुनी तो उसे हमारे ऊंट पर बिठा कर ज़बर्दस्ती ले गया। उन्होंने वह तमाम इल्ज़ाम अली बिन सुफियान को सुनाई जो लड़की ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर लगाय थे।

अली बिन सुफियान ने कहा–" तुम पांचों तरबियत याफता असकरी और तीर अन्दाज़ और एक आदमी तुम से लड़की भी ले गया और ऊंट भी।" उस ने इन्हीं की निशान देही पर

ज़मीन में दबाई हुई कमान और तरकश भी निकलवाली। इन चारों को खेमों में भिजवा दिया गया। पांचवा आदमी तड़प तड़प कर मर चुका था।

ऊंट के पावं के निशान साफ साफ नज़र आ रहे थे। अली बिन सुफियान ने निहायत सुरअत से दस सवार बुलवाये और उन्हे अपने कमान में ले कर उस तरफ रवाना हो गया जिधर ऊंट गया था, मगर ऊंट की रवानगी और उस के तआकुब में अली बिन सुफयान की रवानगी में चौदह पन्द्रह घंटों का फर्क था। ऊंट तेज़ था और उसे आराम की भी ज़्यादा ज़रूरत नही थी। ऊंट पानी और खूराक के बेग़ैर छे सात दिन तक तरो ताज़ह रह सकता है। इसके मुकाबले में घोड़ों का रास्ते में कई बार आराम, पानी और खूराक की ज़रूरत थी। इन वजहों ने तआकुब नाकाम बना दिया ऊंट ने चौदह पन्द्रह घंटों का फर्क पूरा न होने दिया। फखरुल मिस्री ने तआकुब के पेशे नज़र कयाम बहुत कम किया।

अली बिन सुफियान को रास्ते में सिर्फ एक चीज़ मिली थी। यह एक थैला था। उस ने रुक कर थैला उठाया। खोल कर देखा। उस में खाने पीने की चीज़ें थीं। अली बिन सुफियान के सुघंने की तेज़ हिस ने उसे बता दिया कि इन चीज़ों में हशीश मीली ई हैं। रास्ते में उसे दो जगह आसार मिले थे जिस से पता चलता है कि यहां ऊंट रूका है और सवार यहां बैठे हैं। खजूर की गुठलियां, फलों की बीज और छिलके भी बिखरे हुए थे। थैले ने उसे शक मे डाल दिया । उस के ज़ेहन मे यह शक न आया कि फख़रूल मिस्री को हशीश के नशे में लड़की अपने मुहाफिज़ के तौर पर साथ ले जा रही है। ताहम उस ने थैला अपने पास रख लिया मगर थैले की तलाशी और कयाम ने वक़्त जाये कर दिया था।

फख़रूल मिस्री और मौबी मंज़िल पर न भी पहुंचते और रास्ते में पकड़े भी जाते तो कोई फर्क नहीं पड़ता। सूडानी लशकर में नाजी, औरोश और उनके साथी जो ज़हर पिला चुके थे वह असर कर गया था। फातमी ख़िलाफत के वह फौजी सरबराह जो बराये नाम जनरल और दर असल हाकिम बने हुए थे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को एक नाकाम अमीरे मिस्र और बेकार हाकिम साबित करना चाहते थे। मुसलमान हुकुमरान हरम में उन लड़कियों के असीर हो गये थे। जिन मे बेशतर ईसाई और यहूदी थीं। इनके नाम इसलामी थे। हुकूमत का कारोबार खुद अफ़ॅसर चला रहे थे। मन मानी और एश व इशरत कर रहे थे वह नही चाहते थे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसा कोई मज़हब पसंद और कौम परस्त इन्सान कौम को जगा दे और हुकमरानो और सलतनत को हरम की जन्नत से बाहर लाकर हकाईक की दुनिया मे ले आये। सलाहुद्दीन अय्यूबी के पहले माअरकों से जो उस ने अपने चचा शेर कोह की कयादत में लड़े थे, यह लोग जान चुके थे कि अगर यह शख़्स इक़्तदार में आ गया तो इसलामी सलतनत को मजहब और अखलाकियात की पाबन्दियों मे जकड़ लेगा लिहाजा उन्होने हर वह दाव खेला जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को चारों शानों चित गिरा सकता था। उन्होंने दरपर्दा सलीबीयों से तआवुन लिया और उनके जासूसों और तखरीब कारों के लिये ज़मीन हमवार की और उसके रासते में चट्टान खड़ी कीं। अगर नुरूद्दीन ज़ंगी न होता तो आज न सलाहुद्दीन अय्यूबी का तारीख़ मे नाम होता न आज नक्शे पर इनसे ज़्यादा

इसलामी मुल्क नज़र आते।

नूरूद्दीन ज़ंगी ने ज़रा से इशारे पर भी सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कुमक और मदद भेजी। सलीबी ने मिस्री फौज के सूडानियों के बुलावे पर बहरे रोम से हमला किया तो नूरूद्दीन ज़ंगी ने इत्तेला मिलते ही खुशकी पर सलीबीयों की एक ममलिकत पर हमला करके उनके उस लशकर को मफ्लूज करदिया जो मिस्र पर हमला करने के लिये आया था। यह तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का निज़ामे जासूसी ऐसा था कि उसने सलीबीयों का बेड़ा ग़र्क कर दिया। अब अली बिन सुफ़ियान ने ज़ंगी की तरफ बरक रफ्तार कासिद वह खबर देने के लिये दौड़ा दिये थे कि सूडानियों की बग़ावत का खतरा है और हमारी फौज कम भी है, दो हिस्सों में बंट भी गयी है। कासिद पहुंच गये थे और नुरूद्दीन ज़ंगी ने ख़ासी फौज को मिस्र की तरफ कूच का हुक्म दे दिया था। बाज़ मोअरिखों ने इस फौज की तादाद दो हजार सवार और प्यादा लिखी है और कुछ इससे ज़्यादा बताते हैं। बहरहाल ज़ंगी ने अपनी मुश्किलात और ज़रूरियात की परवाह न करते हुये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मुश्किलों और ज़रूरियात को अहमियत और अव्वलियत दी मगर उस की फौज को पहुंचाने के लिये बहुत दिन दरकार थे।

मुसलमान नाम निहाद फौजी और दिगर सरकारी शख्सियतों ने देखा कि मिस्र में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ बे इतमिनानी और बग़ावत फैल रही है। तो उन्हों ने उसे हवा दी। दरपर्दा सूडानियों को उकसाया और अपने मुखबिरों के ज़रिये यह भी मालूम कर लिया कि सूडानियों के सालारों को मरवा कर खुफिया तरीके से दफन कर दिया गया है। सूडानी लश्कर के कम रूतबे वाले कमाण्डर सालार बन गये और सलाहुद्दीन अय्यूबी की इस कलील फौज पर हमला करने के मंसूबे बनाने लगे जो मिस्र में मुकीम थी। वह सलाहुद्दीन अय्यूबी की आधी फौज और सलाहुद्दीन अय्यूबी की दारूल हुकुमत से ग़ैर हाज़िरी से फायदा उठाना चाहते थे। मनसुबा ऐसा था जिसके तहत पचास हज़ार सूडानी फौज सियाह घटा की तरह मिस्र के आसमान से इसलाम के चांद को रूपोश करने वाली थी।

अली बिन सुफियान काहिरा पंहुच गया। वह जिन के तआकुब में गया था। उन का उस से आगे कोई सुराग़ नहीं मिल रहा था उसने अपने उन जासूसों को बुलाया जो उस ने सूडानी हैडक्वार्टर और फौज में छोड़ रखे थे। उन में से एक ने बताया कि गुज़श्ता रात एक ऊंट आया था। अंधेरे में जो कुछ नज़र आ सका वह दो सवार थे एक औरत और एक मर्द। जासूस ने यह भी बताया कि वह कौन सी ईमारत में दाखिल हुये थे। अली बिन सुफियान को यह इख़्तियार हासिल था कि वह वहां छापा मारता। सूडानी फौज सलतनते इसलमिया की फौज थी, कोई आज़ाद फौज नही थी मगर अली बिन सुफियान ने इस खदशे के पेशे नज़र छापा न मारा कि यह जलती पर तेल का काम करेगा। उसका मकसद सिर्फ यह नही था कि मौबी और फख़रूल मिस्री को गिरफतार करना है बल्कि असल मकसद यह था कि सूडानी कयादत के अज़ायम और आईनदा मनसूबे मालूम किये जायें ताकि पेश बन्दी की जा सके। उस ने अपने जासूसो को नई हिदायत जारी कीं। जासूसों में ग़ैर मुस्लिम लड़की भी थीं जो ईसाई या यहूदी नही थी। यह कहबा खानों की बड़ी ज़हीन और तेज़ तर्रार लड़कियां थीं

मगर अली बिन सुफियान ने उन पर कभी सौ फिसद भरोसा नही किया था क्योंकि वह दोग़ला खेल भी खेल सकती थीं। उन लड़कियों से भी उस लड़की (मौबी) का सुराग़ न मिल सका जिसके तआकुब में अली आया था।

❖

चार रोज़ अली बिन सुफियान दारुल हुकूमत से बाहर मारा मारा फिरता रहा। उसका दाईराएकार सूडानी फौजी कयादत के इर्द गिर्द का इलाका था। पांचवी रात वह बाहर खुले आसमान तले बैठा अपने दो जासूसों से रिपोर्ट ले रहा था। उस के तमाम आदमियों को मालूम होता था कि किस वक़्त वह कहां होता है। उस के गिरोह काएक आदमी एक आदमी को साथ लिये उसके पास आया और कहा--"यह अपना नाम फखरुल मिस्री बताता है। झाड़ियों में डगमगाता गिरता और उठता था। मैने इस से बात की तो कहने लगा कि मुझे मिस्री फौज तक पहुंचा दो। इस से अच्छी तरह बोला भी नही जाता।" इस दौरान फखरुल मिस्री बैठ गया।

" तुम वही कमाण्डर हो जो मुहाज़ से एक लड़की साथ लेकर भागे हो?" अली बिन सुफियान ने पूछा।

"मैं सुलतान की फौज का भगोड़ा हूं।" फख़र ने हकलाती लड़खड़ी ज़बान मे कहा--" सज़ाये मौत का हकदार हूं लेकिन मेरी बात सुन लो वरना तुम सबको सज़ाये मौत मिलेगी।"

अली बिन सुफियान उस के लब व लहजे से समझ गया कि यह शख्स नशे में है या नशे की तलब ने इस का ये हाल कर दिया है। वह उसे अपने दफ्तर में ले गया और उसे वह थैली दिखाया जो उसे रास्ते में पड़ी मिली थीं पूछा --"यह थैली तुम्हारी है? और तुम इस से यह चीज़ें खाते रहे हो?"

"हाँ" फख़रूल मिस्री ने जवाब दिया --"वह मुझे इसी से खिलाती थी।" उसके सामने वह थैली भी पड़ी थी जो थैले के अन्दर से निकली थी। अली ने उस मे से चीजें निकाल कर सामने रख ली थीं। फख़र ने यह चीज़ें देखीं तो झपट कर मिठाई की किस्म का एक टुकड़ा उठा लिया। अली ने झपट कर उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया। फख़र ने बेताबी से कहा--" खुदा के लिये मुझे यह खाने दो। मेरी जान और रूह इसी में है। "मगर अली ने उस से वह टुकड़ा छीन लिया और उसे कहा--"मुझे सारी वारदात सुनाओ फिर यह सारी चीज़ें उठा लेना।"

फख़रूल मिस्री निढाल और बेजान हुआ जा रहा था। अली बिन सुफियान ने उसे एक सफूफ खिला दिया जो हशीश का तौड़ा था। फख्र ने उसे तमाम तर वाकियात सुना दिया कि वह कैम्प से लड़की के तआकुब में किस तरह गया था। ताजिरों ने उसे कहवा पिलाया था जिस के असर से वह किसी और ही दुनिया में जा पहुंचा था। ताजिरों (सलीबी जासूसों) ने उस से जो बाते की थीं वह भी उस ने बताई और फिर लड़की के साथ उसने ऊंट पर जो सफर किया वह इस तरह सुनाया कि वह मुसलसल चलता रहा। ऊंट ने बड़ी अच्छी तरह साथ दिया। रात को वह थोड़ी देर कयाम करते थे। लड़की उसे खाने को दुसरे थैले मे से

चीज़ें देती थी। वह अपने आप को बादशाह समझता था। लड़की ने उसे अपनी मुहब्बत का यक़ीन दिलाया और शादी का वादा किया था और शर्त यह रखी थी कि वह उसे सूडानी कमाण्डरों के पास पहुंचा दे। वह रास्ते में ही लड़की को शादी के बग़ैर बीवी बनाने की कोशिश करता रहा लेकिन लड़की उसे अपनी बाहों में लेकर प्यार और मुहब्बत से ऐसे इरादे और ख्वाहिश को मार देती थी। फख़रूल मिस्री ने महसूस तक न किया कि लड़की उसे हशीश और अपने हुस्न व शबाब के कब्ज़ेमें लिये हुये है। तीसरे पड़ाव मे जब उन्होंने खाने पीने के लिये ऊंट रोका तो थैला गायब पाया जो ऊंट के दौड़ने से कहीं गिर पड़ा था। लड़की ने उस से कहा कि वापस चल कर थैला ढूंढ़ लेते है। लेकिन फख़रूल मिस्री ने कहा कि वह भगौड़ा फौजी है अन्देशा है कि उस की खोज हो रही होगी। लड़की ज़िद करने लगी कि थैला ज़रूर ढूढ़ेगे। फख़र ने उसे यक़ीन दिलाया कि भूखे मरने का कोई खतरा नही रास्ते में किसी आबादी से कुछ ले लेंगे। मगर लड़की आबादी के करीब जाना नहीं चाहती थी और कहती थी कि वापस चलो।

फख़रूल मिस्री ने उसे ज़बर्दस्ती ऊंट पर बिठा लिया और उस के पीछे बैठ कर ऊंट को उठाया और दौड़ा दिया। वह सफर की तीसरी रात थी। अगली शाम वह शहर से बाहर सूडसनियों के एक कमाण्डर के यहां पहूंच गये मगर फ़ख़रूल मिस्री अपने सिर के अन्दर ऐसी बेचैनी महसूस करने लगा जैसे खोपड़ी में कीड़े रेंग रहे हों। आहिस्ता आहिस्ता वह हक़ीक़ी दुनिया में आगया। वह समझ गया कि यह हशीश न मिलने का असर है। उसकी तसव्वुराती बादशाही और ज़ेहन में बसाई हुई जन्नत थैले में कहीं रेगज़ार में गिर गई थी। लड़की ने उस के सामने कमाण्डर को सलीबीयों का पैग़ाम दिया और उसे बग़ावत पर उकसाया। फख़र पास बैठा था सुनता रहा और उस के ज़ेहन में कीड़े बड़े होकर रेंगने लगे। नशा उतर चुका था उसे याद आने लगा कि वह मुहाज़ से भाग आया है। लड़की (मौबी) को यही खुशफहमी हो गई कि फख़र पर नशा तारी है। चुनाचे बेखौफ व खतर कमाण्डर से यह भी कह दिया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफियान के दर्मियान यह ग़लत फहमी पैदा करनी है कि वह ज़ाहिरी तौर पर नेक बने फ़िरते हैं मगर औरत और शराब के दिलदादह हैं।

उनकी इस तवील गुफ़तगू में बग़ावत की बातें भी हुईं। उस वक्त तक फख़रूल मिस्री पूरी तरह बेदार हो चुका था। लेकिन सिर के अन्दर की बेचेनी उसे बहुत परेशान कर रही थी लड़की ने कमाण्डर से कहा कि अगर बग़ावत करनी है तो वक्त ज़ाया न करें। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मुहाज़ पर है और उलझा हुआ है। लड़की ने यह झूठ बोला कि सलीबी तीन चार दिन बाद दूसरा हमला करने वाले हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को यहां से भी फ़ौज मुहाज़ पर बुलानी पड़ेगी। कमाण्डर ने लड़की को बताया कि छे सात दिनों तक सूडानी लशकर यहां की फौज पर हमला कर देगा।

फख़रू यह सारी गुफ्तगू सुनता रहा। आधी रात के बाद उसे अलग कमरे में भेज दिया गया जहां उसके सोने का इन्तेज़ाम था। लड़की और कमान्डर दूसरे कमरे में रहे। दरमियान में दरवाज़ा था जो बन्द कर दिया गया। उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने दरवाज़े के साथ

कान लगाये तो उसे हंसी की आवाज़ सुनाई दी। फिर लड़की के यह अल्फाज़ सुनाई दिये। "उसे हशीश के ज़ोर पर यहां लाई हूं और उसकी महबूबा बनी रही हूं। मुझे एक मुहाफिज़ की जरूरत थी। हशीश का थैला रास्ते में गिर पड़ा है अगर सुबह उसे एक खुराक न मिली तो यह परेशान करेगा।" इसके बाद फख़र ने दूसरे कमरे से जो आवाजें सुनी वह उसे साफ बता रही थीं कि शराब पी जार ही है और बदकारी हो रही है। बहुत बाद उसे कमान्डर की आवाज़ सुनाई दी। "यह आदमी अब हमारे लिए बेकार है। इसे कैद में डाल देते हैं या खत्म कर देते हैं।" लड़की ने इस की ताईद की।

फख़र मिस्री पूरी तरह बेदार होगया और वहां से निकल कर भागने की सोंचने लगा रात का पिछला पहर था। वह उस कमरे से निकला। उसका दिमाग साथ नहीं दे रहा था। कभी तो दिमाग साफ हो जाता मगर ज़्यादा देर नहीं रहता। सुबह की रोशनी फैलने तक वह ख़तरे से दूर निकल गया था। उसे अब दोहरे तआकुब का खतरा था। दोनों तरफ उसे मौत नज़र आ रही थी। अपनी फौज के हाथों गिरफ्तार होता तो भी मुजरिम था और सुडानी पकड़ लेते तो फौरन कत्ल कर देते। वह दिन भर फिरऔनों के खन्डरों में छुपा रहा। हशीश की तलब, खौफ और गुस्सा उसके जिस्म और दिमाग को बेकार कर रहा था। रात तक वह चलने से भी माजूर हुआ जा रहा था। फिर उसे यह भी अहसास न रहा कि दिन है या रात और वह कहां है। उसके दिमाग में यह इरादा भी आया कि उस ईसाई लड़की को जाकर कत्ल कर दे। यह सोंच भी आई कि ऊंट या घोड़ा मिल जाए और वह मुहाज पर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कदमों में जा गिरे मगर जो भी सोंच आती थी उस पर अन्धेरा छा जाता था जो उसकी आंखों के सामने आकर हर चीज़ तारीक कर देता था। इसी हालत में उसे यह आदमी मिला। वह चूंकि जासूस था इस लिय तरबियत के मुताबिक उसने फख़रुल मिस्री के साथ दोस्ती और हमदर्दी की बातें कीं और उसे अली बिन सुफियानर के पास ले आया।

तस्दीक हो गई कि सूडानी लशकर हमला और बग़ावत करेगा और यह किसी भी लम्हे हो सकता है। अली बिन सुफियान सोंच रहा था कि मुकामी कमान्डरों को फौरन चौकन्ना करे और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इत्तला दे मगर वक्त ज़ाये होने का खतरा था। इतने में उसे पैगाम मिला कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बुला रहे हैं। वह हैरान हो कर चल पड़ा कि सुल्तान को तो वह मुहाज़ पर छोड़ आया था।

वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिला तो सुल्तान ने बताया– "मुझे इत्तला मिल गई थी कि साहिल पर सलीबी जासूसों का एक गिरोह मौजूद है और उन में से कुछ इधर भी आये होंगे। मुहाज पर मेरा कोई काम नही रह गया था। मैं कमान अपने रफीकों को देकर आ गया। दिलइस कदर बेचैन था कि मैं यहां बहुत बड़ा ख़तरा महसूस कर रहा था। यहां की क्या ख़बर है?"

अली बिन सुफियान ने उसे सारी खबर सुनादी और कहा– "अगर आप चाहें तो मैं ज़बान का हथियार इस्तेमाल कर के बग़ावत को रोकने की कोशिश करूं या सुल्तान ज़ंगी की मदद आने तक मुल्तवी करा दूं। मैं जासूस कोही इस्तेमाल कर सकता हूं। हमारी फौज बहुत कम

है। हमले को नहीं रोक सकेगी।"

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी टहलने लगा। उसका सिर झुका हुआ था। वह गहरी सोंच में खो गया था और अली बिन सुफियान उसे देख रहा था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने रुक कर कहा– "हां अली! तुम अपनी ज़बान और अपने जासूस इस्तेमाल करो लेकिन हमले को रोकने के लिए नहीं बल्कि हमले के हक़ में। सुडानियों को हमला करना चाहिये मगर रात के वक़्त जब हमारी फौज खेमे में सोई हुई होगी।" अली बिन सुफियान ने हैरत से सुल्तान को देखा। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफियान को यह हिदायत बड़ी सख्ती से दी। "सब को यह बता देना कि मेरे मुताअल्लिक उनके सिवा किसी और को मालूम न हो सके कि मैं मुहाज़ से यहां आ गया हूं सूडानियों से मेरी यहां मौजूदगी को पोशीदा रखना बेहद जरूरी है, मैं बड़ी ऐहतियात से खुफिया तरीके से आया हूं।"

तीन रातें बाद--

काहिरा तारीक रात की आग़ोश में गहरी नींद सोया हुआ था। एक रोज़ पहले काहिरा के लोगों ने देखा था कि उनकी फौज जो मिस्र से तैय्यार की गई थी शहर से बाहर जा रही है। उन्हें बताया गया कि फौज जंगी मश्क़ के लिये शहर से बाहर गई है। नील के किनारे जहां रेतीली चट्टान और टीलें हैं वहां, दरिया और टीलों के दर्मियान फौज ने जा कर खेमें गाड़ दिये थे। फौज पैदल भी थी, सवार भी....... रात का पहला निस्फ गुज़र रहा था कि काहिरा के सोये हुये बाशिन्दों को दूर क़यामत का शोर सुनाई दिया। घोड़ों के सर्पट भागने की आवाज़ भी सुनाई दी? सोये हुये लोग जाग उठे, वह समझे के फौज जंगी मश्क़ कर रही है। मगर शौर करीब आता और बुलन्द होता गया। लोगों ने छतों पर चढ़ कर देखा। आसमान लाल सुर्ख हो रहा था बाज़ ने देखा कि दूर दरिया .ए. नील से आग के शोले उठते और तारीक रात का सीना चाक करके खुश्की पर कहीं गिरते थे फिर शहर में सैंकड़ों सर्पट दौड़तें घोड़ों की टाप सुनाई दीं। शहर वालों को अभी मालूम नही था कि यह जंगी मश्क़ नही। बाकायदा जंग है और जो आग लगी हुई है उसमे सूडानी लशकर का खासा हिस्सा जिन्दा जल रहा है।

यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की एक बेमिसाल चाल थी। उसने दारूल हुकूमत में मुक़ीम कलील फौज को दरिया.ए.नील और रेतीले टीलों के दरमियान वसीअ मैदान में ख़ेमा ज़न कर दिया था। अली बिन सुफियान ने अपने फन का मुज़ाहिरा किया था। उस ने सूडानी लश्कर में अपने आदमी भेज कर बग़ावत की आग भड़का दी थी और उसके कमाण्डरों से यह फ़ैसला करवा लिया था कि रात को जब सुलातान की फौज गहरी नींद सोई हुई होगी, उस पर सूडानी फौज हमला कर देगी और सुबह तक एक एक सिपाही का सफाया करके दारूल हुकूमत पर बे खौफ व ख़तर काबिज़ हो जायेगी और सूडानी फौज का दूसरा हिस्सा बहरे रोम के साहिल पर मुकीम फौज पर हमला करने के लिये रवाना कर दिया जायेगा। इस फैसले और मन्सुबे के मुताबिक़ सूडानी फौज का एक हिस्सा निहायत खुफिया तरीके से रात को बहरे रोम के मुहाज़ की तरफ रवाना कर दिया गया और दूसरा हिस्सा दरया .ए.नील के

किनारे खेमा ज़न फौज पर टूट पड़ा।

इस फौज ने सैलाब की तरह एक मील वुसअत में फैली हुई खेमेंगाह पर हल्ला बोल दिया और बहुत ही तेजी से इस इलाके में फैल गई। अचानक खेमें पर आग के तीर और तेल में भीगे हुये कपड़ों के जलते गौले बरसने लगे। नील भी आग बरसाने लगी। खेमों को आग लग गई और शोले आसमान तक पहुंचने लगे। सूडानी फौज को खेमें में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज का न कोई सिपाही मिला न घोड़ा न कोई सवार। इस फौज को वहां तमाम खाली खेमें मिले। कोई मुक़ाबले के लिये न उठा और अचानक आग ही आग फैल गई। उन्हें मालूम न था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने रात के पहले पहर खेमें से अपनी फौज को निकाल कर रेतीले टीलों के पीछे छिपा दिया था और खेमें में खुश्क घास के ढ़ेर लगवा दिये थे। खेमें पर और अन्दर भी तेल छिड़क दिया था। उस ने कश्तियों मे छोटी मिन्जनिकें रखवा कर शाम के बाद ज़रूरत की जगह भिजवा दी थी।

जैसे ही सूडानी फौज खेमेंगाह में आई सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की छिपी हुई फौज ने आग वाले तीर और नील से कश्तियों में रखी हुई मिन्जनीकों ने आग के गोले फेंकने शुरू कर दिये। खेमें को आग लगी तो घास और तेल ने वहां दोज़ख़ का मन्ज़र बना दिया। सूडानीयों के घोड़े अपने प्यादा सिपाहीयों को रोंदने लगे। सिपाहीयों के लिये आग से निकलना नामुमकिन हो गया। चुनांचे चीखों ने आसमान का जिगर चाक कर दिया। इस कदर आग ने रात को दिन बना दिया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मुट्ठी भर फौज ने आग में जलती सूडानीयों की फौज को घेरे में ले लिया। जो आग से बच कर निकलता था वह तीरों का निशाना बन जाता था। जो फौज बच गई वह भाग निकली।

उधर सूडानीयों की जो फौज मुहाज़ की तरफ सुलतान की फौज पर हमला करने जा रही थी उस का भी सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इन्तेज़ाम कर रखा था। चन्द एक दस्ते घात लगाये बैठे थे। इन दस्तों ने उस फौज के पीछले हिस्से पर हमला करके सारी फौज में भगदड़ मचा दी। यह दस्ते जो एक हमले में नुकसान कर सकते थे कर के अंधेरे में गायब हो गये। सूडानी फौज संभल कर चली तो पिछले हिस्से पर तीन हमले हुये। सूडानी सिपाही इस से बद दिल हो गये। उन्हें मुक़ाबला करने का तो मौक़ा ही नही मिला था। दिन के वक़्त कमाण्डरों ने बड़ी मुश्किल से फौज का होसला बहाल किया मगर रात के दौरान उनका फिर वही हश्र हुआ। दूसरी रात तारीकी में उन पर तीर भी बरसे। उन्हें अंधेरे में घोड़े दौड़ने की आवाज़ सुनाई देती थी जो उनकी फौज के अक़ब में कुश्त व खून करती दौड़ी चली जा रही थी।

तीन चार यूरोपी मोअर्रिखों ने जिन में लेन पोल और विलयम खास तौर पर काबिले जिक्र हैं लिखा है कि दुश्मन की कसीर नफरी पर रात के वक़्त चन्द एक सवारों से अकबी हिस्से पर शबखून मारना और गायब हो जाना सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की ऐसी जंगी चाल थी जिस ने आगे चल कर सलीबीयों को बहुत नुकसान पहुचाया। इस तरह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी दुश्मन की पैश क़दमी की रफतार को बहुत सुस्त कर देता था और दुश्मन को मजबूर कर देता था कि वह उसकी पसन्द के मैदान में लड़े जहां सुलतान ने जंग का पांसा पलटने

का इन्तेज़ाम कर रखा होता था। इन मोअर्रिखों ने सुलतान के इन जांबाज़ सवारों की जुर्रत और बर्क़ रफतारी की बहुत तारीफ की है। आज के जंगी मुबस्सिर जिनकी नज़र जंगों की तारीख़ पर है राये देते है। कि आज के कमाण्डों और गौरीला ऑपरेशन का मोजिद सुलतान है वह इस तरीक़ाये जंग से दुश्मन के मनसूबे दरहम बरहम कर दिया करता था।

सूडानीयों पर उस ने यही तरीक़ा अपनाया और सिर्फ दो रातों के बार बार के शबखून से उस ने सूडानी सिपाहियों का लड़ने का जज़्बा खतम कर दिया। उनकी कियादत में कोई दाग़ न था। यह कयादत फौज को संभाल न सकी। इस फौज में अली बिन सुफियान के भी आदमी सूडानी सिपाहियों के भेस में मौजूद थे। उन्होंने यह अफवाह फैला दी कि अरब से एक और लश्कर आया है जो उन्हें काट कर रख देगा। उन्होंने बददिली और फरारी का रुझान पैदा करने में पूरी कामयाबी हासिल की। फौज ग़ैर मुनज्ज़म हो कर बिखर गई। नील के किनारे इस फौज का जो हश्र हुआ वह हैबत नाक था...... यह अफवाह ग़लत साबित न हुई कि अरब से फौज आ रही है। नूरूद्दीन ज़ंगी की फौज आ गई जिसकी नफरी बहुत ज़्यादा नही थी। बाज़ मोअर्रिखों ने दो हज़ार सवार और दो हज़ार पियादा लिखी है। बाज़ के आदाद व शुमार इस से कुछ ज़्यादा है। ताहम यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सहारा मिल गया और उस ने फौरन इस कुमक की कयादात संभाल ली। इस कैफियत में जब के सुडानीयों का पचास हज़ार लश्कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के आग के फन्दे में और उधर सहरा में शबखूनों की वजह से बदनज़मी का शिकार हो गया था। यह थोड़ी सी कमक भी काफी थी।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उस कमक से और अपनी फौज से सुडानीयों का कत्ले आम कर सकता था लेकिन उस ने डिप्लोमेसी से काम लिया। सूडानी कमान के कमाण्डर को पकड़ा और उन्हें ज़ेहन नशीन करा दिया कि उन के लिये तबाही के सिवा कुछ नही रहा, लेकिन वह उन्हें तबाह नही करेगा। कमाण्डरों ने अपना हश्र देख लिया था। वह अब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के अताब और सज़ा से खौफ ज़दा थे लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें बख्श दिया और सज़ा देने की बजाये सूडानीयों की बची खूची फौज को सिपाहियों से काश्तकार में बदल दिया। उन्हें ज़मीने दीं और खेती बाढ़ी में उन्हें सरकारी तौर पर मदद दी और फिर उन्हें यह इजाज़त भी दी कि इन में से जो लोग फौज में भरती होना चाहते हैं हो सकते है।

सूडानीयों को यूं दानिशमंदी से ठिकाने लगा कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नुरूद्दीन ज़ंगी की भेजी फौज और अपनी फौज को यकजा कर के उसमे वफा दार सुडानीयों को भी शामिल कर के एक फौज बनाई और सलीबीयों पर हमले का मन्सूबा बनाने लगा। उस ने अली बिन सुफियान से कहा कि वह अपने जासूसों और शबखून मारने वाले जांबाजों के दस्ते फौरन तैय्यार करे। उधर सलीबीयों ने भी जासूसी और तखरीबी को इन्तेजाम मुस्तहकम करना शुरू कर दिया।

सातवीं लड़की जब सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करने आई

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर के वाकि़या निगारों की तहरीरों मे एक शख़्स सैफुल्लाह का ज़िक्र इन अलफाज़ मे आता है कि अगर किसी इन्सान ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की इबादत की है तो वह सैफुल्लाह था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के गहरे दोस्त और दस्ते रास्त बहाउद्दीन शद्दाद की इस डायरी में जो आज भी अरबी ज़बान में महफूज़ है सैफुल्लाह का ज़िक्र तफसील से मिलता है। यह शख़्स जिस का नाम किसी बाक़ायदा तारीख में नही मिलता, सुलततान सलाहुद्दीन अय्यूबी की वफात के बाद सतरह साल जिन्दा रहा। वाकि़या निगार लिखते हैं कि उस ने उम्र के आखरी सतरह साल सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की क़ब्र की मुजावरी में गुजारे थे। उस ने वसियत की थी कि वह मर जाये तो उसे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ दफन किया जाये मगर सैफुल्लाह की कोई हैसियत नही थी। वह एक गुमनाम इन्सान था जिसे आम क़ब्र में दफन किया गया और वह वक़्त जल्दी ही आ गया कि उस कब्रिस्तान का नाम व निशान मिटा डाला।

तारीख़ी लिहाज़ से सैफुल्लाह की ऐहमियत यही थी कि वह समुन्द्र पार से सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करने आया था। उस वक़्त उस का नाम मैगना मारयूस था। उस ने इसलाम का सिर्फ नाम सुना था। उसे कुछ इल्म नही था कि इसलाम कैसा मज़हब है। सलीबीयों के परोपेगंडे के मुताल्लिक़ उसे यक़ीन था कि इसलाम एक काबिले नफरत मज़हब और मुसलमान एक काबिले नफरत फिरका है जो औरतों का शैदाई और इन्सानी गौश्त खाने का आदी है। लिहाज़ा मैगना मारयूस जब कभी मुसलमान का लफ्ज़ सुनता था तो वह नफरत से थूक दिया करता था। वह बेमिसाल जुर्रत का मुज़ाहिरा करते हुए जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंचा तो मैगना मारयूस क़त्ल हो गया और उसके मुर्दा वजूद से सैफुल्लाह ने जन्म लिया।

तारीख़ में ऐसे हुकूमरान की कमी नही जिन्हें कत्ल किया गया या जिन पर क़ातिलाना हमला हुआ लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तारीख़ कीउन मादूदे चन्द शख़्सों मे से है जिसे क़त्ल करने की कोशिश दुशमन ने भी की और अपनो ने भी। बल्कि अपनो ने उसे क़त्ल करने की गैर से ज़्यादा साज़िश की। येह अमर अफसोस नाक है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की दास्ताने. ए. ईमान अफरोज़ के साथ साथ ईमान फरोशों की कहानी भी चलती है। इस लिये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बारहा कहा था –" तारीख़.ए.इसलाम वह वक़्त

जल्द देखेगी, जब मुसलमान रहेंगे तो मुसलमान ही लेकिन अपना ईमान बेच डालेंगे और सलीबी उन पर हुकूमत करेंगे।"

आज हम वह वक़्त देख रहें हैं।

सैफुल्लाह की कहानी उस वक़्त शुरू होती है जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीबीयों का मुत्तहिदा बेड़ा बहरे रोम में नज़रे आतिश किया था। उन के कुछ बहरी जहाज़ बच कर निकल गये थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहरे रोम के साहिल पर अपनी फौज के साथ मौजूद रहा और समुन्द्र मे से ज़िन्दा निकलने वाले सलीबीयों को गिरफतार करता रहा। उनमें सात लड़कियां भी थीं जिनका तफसीली ज़िक्र आप पढ़ चूके हैं। मिस्र में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की सूडानी सीपाह ने बग़ावत कर दी जिसे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबीने दबा लिया। उसे सुलतान ज़ंगी की भेजी हुई कमक भी मिल गई वह अब सलीबीयों के आज़ाईम को खत्म करने के मन्सूबे बनाने लगा।

बहरे रोम के पार श्हार के मज़ाफात मे सलीबी सरबराहों की कॉनफरेंस हो रही थी। उन्हमें शाह आगस्टस था, शाह रीमांडर और शहनशाह लोई हफतुम का भाई रॉबर्ट भी। इस कॉनफरेंस में सब से ज़्यादा कहर व ग़ज़ब में आया हुआ एक शख्स था जिस का नाम इमलरक था। वह सलीबीयों के इस मुत्तहिदे बेड़े का कमाण्डर था जो मिस्र पर फौज कशी के लिये गया था मगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उन पर नागहानी आफत की तरह टूट पड़ा और इस बेड़े के एक भी सिपाही को मिस्र के साहिल पर क़दम न रखने दिया। मिस्र के साहिल पर जो सलीबी पहुंचे वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ में ज़ंगी कैदी थे। सलीबीयों की कॉनफरेंस में इमलरक के होंठ कांप रहे थे। उसका बेड़ा ग़र्क हुये पन्द्रह दिन गुज़र गये थे। वह पन्द्रहवें दिन इटली की साहिल पर पहुंचा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के आतिशीं तीर अन्दाज़ों ने उसके जहाज़ के बादबान और मस्तूल जला डाले थे। यह तो उसकी खुश किस्मती थी कि उसके मल्लाह और सिपाहियों ने आग पर काबू पा लिया था और वह जाहज़ को बचा ले गये थे मगर बाद बानो के बग़ैर जहाज़ समुन्द्र पर डौलता रहा। फिर तूफान आ गया। उस के बचने की कोई सूरत नही रही थी। बहुत से बचे खुचे जहाज़ और कश्तियां इस तूफान में ग़र्क हो गई थीं। यह एक मोअजज़ा था कि इमलरक का जहाज़ डौलता, भटकता डूब डूब कर उभरता इटली के साहिल से जा लगा था। उस मे उस के मल्लाहों का भी कमाल था। उन्होंने चपुओं के ज़ोर पर जहाज़ को काबू में रखा था।

साहिल पर पहुंचते ही उसने तमाम मल्लाहों और सिपाहियों को बेहद इनाम दिये। सलीबी सरबराह उस के वहीं मुन्तज़िर थे। वह इस पर ग़ौर करना चाहते थे कि उन्हें धोखा किसने दिया है। ज़ाहिर हे कि शक सूडानी सालार नाजी पर ही हो सकता था। उसी के ख़त के मुताबिक उन्होंने हमले के लिये बैड़ा रवाना किया था मगर उनके साथ नाजी का तहरीरी राबता पहले भी मौजूद था। उन्होंने नाजी के इस ख़त की तहरीर पहले दो खतों से मिलाई तो उन्हें शक हुआ कि यह कोई गड़बड़ है। उन्हों ने काहिरा में जासूस भेज रखे थे मगर उनकी तरफ से भी कोई इत्तेला नही मिली थी। उन्हें यह बताने वाला कोई न था कि सुलतान

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाजी और उस के साज़िशी सालारों को खुफिया तरीके से मरवा दिया और रात की तारीकी में गुमनाम कब्रों में दफना दिया और सलीबी सरबराहों और बादशाहों के वहम व गुमान में भी यह बात नही आ सकती थी कि जिस ख़त पर उन्हों ने बेड़ा रवाना किया था वह ख़त नाजी का ही था। मगर हमले की तारीख़ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तबदील करके लिखी थी। जासूसों को ऐसी मालूमात कहीं से भी नहीं मिल सकती थीं।

यह कॉनफरेंस किसी नतीजे पर न पहुंच सकी। इमलरक के मुंह से बात तक नहीं निकली थी। वह शिकस्त ख़ोरदा था। गुस्से में भी था और थका हुआ भी था। कॉनफरेंस अगले रोज़ के लिये मुलतवी कर दी गई...... रात के वक़्त यह तमाम सरबराह शिकस्त का ग़म शराब में डूबो रहे थे। एक आदमी इस महफिल में आया। उसे सिर्फ रैमान्ड जानता था। वह रैमान्ड का काबिले एतमाद जासूस था। वह हमले की शाम मिस्र के साहिल पर उतरा था। उस से थोड़ी ही देर बाद सलीबीयों का बेड़ा आया और उस की आंखों के सामने यह बेड़ा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की क़लील फौज के हाथों तबाह हुआ था।

यह जासूस मिस्र के साहिल पर रहा और उस ने बहुत सी मालूमात मुहय्या कर ली थीं। रैमान्ड ने उसका तआररूफ कराया तो सब उस के इर्द गिर्द जमा हो गये। उस जासूस को मालूम था कि सलीबी सराबराहो ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कराने के लिये रॉबिन नाम का एक माहिर जासूस समुन्द्र पार भेजा था और उसकी मदद के लिये पांच आदमी और सात जवान और खूबसूरत लड़कियां भेजी थीं।

इस जासूस ने बताया कि रॉबिन ज़ख़्मियों के साथ ज़ख़मी होने का बहाना करके सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प में पहुंच गया था। उस के पांच आदमी ताजिर के भेस में थे। उन्में क्रिस्टोफर नाम के एक आदमी ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर तीर चलाया मगर तीर ख़ता खा गया। पाचों आदमी पकड़े गये। और सातें लड़कियां भी पकड़ी गई। उन्होंने कहानी तो अच्छी गढ़ ली थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने लड़कियों को पनाह मे ले लिया और पांचो आदमियों को छोड़ दिया था मगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का एक माहिर सुराग़रसां जिस का नाम अली बिन सुफियान है, अचानक आ गया। उस ने सब को गिरफतार कर लिया और पांचों मे से एक आदमी को सब के सामने क़त्ल करा के दूसरों से इकबाले जुर्म करवा लिया। जासूस ने कहा– "मैं ने अपने मुतअल्लिक बता दिया था कि मैं डाक्टर हूँ इस लिये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुझे ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी की डियूटी दे दी। वहीं मुझे ये इत्तेला मिली कि सुडानियों ने बग़ावत की थी जो दबा ली गई है और सूडानी अफसरों और लीडरों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने गिरफतार कर लिया है। रॉबिन चार आदमी और छे लड़कियां सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की क़ैद में हैं लेकिन अभी तक साहिलपर हैं। सातवीं लड़की जो सब से ज़्यादा होशियार है लापता है। उस का नाम मौबी अरतलास है मौबी कहलाती है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी भी कैम्प में नहीं है और उसका सुराग़रसां अली बिन सुफियान भी वहां नही है। मैं बड़ी मुश्किल से निकल कर

आया हूं कि रॉबिन, उसके आदमी और लड़कियां मौत के खतरे में हैं। मर्दों की हमें फिक्र नही करना चाहिये। लड़कियों का बचाना लाज़मी है। आप जानते हैं कि सब जवान हैं और चुनी हुई खूबसूरत हैं। मुसलमान इनका जो हाल कर रहे होंगे उस का तसव्वुर आप कर सकते हैं।"

" हमें यह कुर्बानी देनी पड़ेगी।" शाह आगस्टस ने कहा।

" अगर मुझे यक़ीन दिलाया जाये कि लड़कियों को जान से मार दिया जायेगा तो मैं यह कुर्बानी देने के लिये तैय्यार हुं। " रेमान्ड ने कहा–" मगर ऐसा नही होगा मुसलमान उनके साथ वहशियों जैसा सुलूक कर रहें होंगे। लड़कियां हम पर लानत भेज रही होंगी। मैं उन्हें बचाने की कोशिश करूंगा।"

"यह भी हो सकता है।" रॉबर्ट ने कहा–" कि मुसलमान इन लड़कियों के साथ अच्छा सुलूक करके हमारे खिलाफ जासूसी के लिये इसतेमाल करने लगें। बहर हाल हमारा यह फर्ज़ है कि उन्हें कैद से आज़ाद कराएं। मैं इस के लिये अपना आधा ख़ज़ाना ख़र्च करने के लिये तैय्यार हूं।

"यह लड़कियां सिर्फ इस लिये कीमती नही कि यह लड़कियां हैं।" जासूस ने कहा–" वह दर असल तरबियत याफता हैं। इतेन खतरनाक काम के लिये ऐसी लड़कियां मिलती ही कहां है। आप किसी जवान लड़की को ऐसे काम के लिये तैय्यार नही कर सकते कि वह दुश्मन के पास जाकर अपने आप को दुशमन के हवाल करदे । इस काम मे इज्ज़त तो सब से पहले देनी पड़ती है और यह खतरा तो हर वक़्त लगा रहता है कि ज्योंही दुश्मन को पता चल गया कि यह लड़की जासूस है तो उसे तकलीफें दी जाएगी फिरउसे जान से मार दिया जायगा........ इन लड़कियों को हम ने ज़रे कसीर सर्फ कर के हासिल किया फिर ट्रेनिंग दी थी और उन्हें बड़ी मेहनत से मिस्र और अरब की ज़बान सिखाई थी । एक ही बार सात तजुर्बेकार लड़कियों को ज़ाये करना अक़्ल मन्दी नही ।"

"क्या तुम एतमाद सेकह सकते हो कि लड़कियों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प से निकाला जा सकता है?" आगस्टस ने पूछा।

"जी हाँ!" जासूस ने कहा–" निकाला जा सकता है इस के लिये ग़ैर मामूली तौर पर दिलेर और पुखता कार आदमियों की ज़रूरत है मगर यह भी हो सकता है कि वे एक दो दिन तक रॉबिन, उसके चारों आदमियों और लड़कियों को काहिरा ले जायें। वहां से निकालना बहुत ही मुश्किल होगा। अगर हम वक़्त ज़ाया न करें तो हम इन्हें कैम्प में ही जालेंगे। आप मुझे बीस आदमी दे दें। मैं इनकी रहनुमाई करूंगा लेकिन अदमी ऐसे हों जो जान पर खेलना जानते हो"

"हमें हर कीमत पर इन लड़कियों को वापस लाना है।" इमलरक ने गर्ज कर कहा। उस पर बहरे रोम में जो बीती थी उस का वह इन्तेक़ाम लेने को पागल हुआ जा रहा था। वह सलीबीयों के मुत्तहिदा बेड़े में सवार लश्कर का सुप्रिम कमाण्डर बन कर हइस उम्मीद पर गया था कि मिस्र की फतह का सेहरा उस के सिर बंधेगा मगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी

ने उसे मिस्र के साहिल के करीब भी न जाने दिया। वह जलते हुए जहाज़ में जिन्दा जल जाने से बचा तो तूफान ने घेर लिया । अब बात करते उस के होंठ कांपते थे और वह ज़्यादा तर बातें मेज़ पर मुक्के मार मार कर या अपनी रानों पर ज़ोर ज़ोर से हाथ मार मार कर अपने जज़बात का इज़हार करता था। उस ने कहा–" मैं लड़कियों को भी लाऊंगा और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल भी करूंगा। मैं उन्हीं लड़कियों को मुसलमानो के सलतनत की जड़ें खोखली करने के लिये इस्तेमाल करूंगा।"

"मैं सच्चे दिल से आप की ताईद कर ता हूं शाह इमलरक।" रेमान्ड ने कहा–" हमें तरबियत याफता लड़कियों को इतनी आसानी से ज़ाये नही करना चाहिये न हम करेंगे। आप सब को अच्छी तरह मालूम है कि शाम के हरमों में हम कितनी लड़कियां दाखिल कर चुके हैं। कई मुसलमान गर्वनर और अमीर इन लड़कियों के हाथों में खेल रहे हैं। बग़दाद में यह लड़कियां उमरा के हाथों ऐसे मुतअदिद अफराद को कत्ल कर चुकी हैं जो सलीब के खिलाफ नराह लेकर उठे थे। मुसलमानों की खिलाफत को हमने औरत और शराब से तीन हिस्सों में तकसीम कर दिया है। इनमें इत्तेहाद नही रहा। वह ऐश व इशरत में ग़र्क होते जा रहे हैं। सिर्फ दो आदमी हैं जो अगर जिन्दा रहे तो हमारे लिये मुस्तकिल खतरा बने रहेंगे। एक नूरूद्दीन ज़ंगी और दूसरा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी। अगर इन दोनों में से एक भी ज़्यादा देर तक ज़िन्दा रहा तो हमारे लिये इस्लाम का ख़त्म करना आसान नही होगा। अगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सुडानीयों की बग़ावत दबा दी है तो इसका मतलब ये है कि ये शख़्स उस हद से ज़्यादा ख़तरनाक है जिस हद तक हम उसे समझते रहें हैं। हमें मैदाने जंग से हट कर तखरीबकारी का मुहाज़ भी खोलना पड़ेगा। मुसलमानों में तफरीक और बे इतमीनानी फैलाने के लिये हमे इन लड़कियों की ज़रूरत है।"

"हमें अपने कामयाब तजर्बो से फायादा उठाना चाहिये।" लोई हफतुम के भाई रॉबर्ट ने कहा–"अरब में हम मुसलमानो की कमज़ोरियों से फायदा उठा चुके हैं। मुसलमान औरत, शराब और दौलत से अंधा हो जाता है। मुसलमान को मारने का बेहतरीन तरीका यह है कि उसे मुसलमान के हाथों मरवाओ । मुसलमान को ज़ेहनी अय्याशी का सामान मुहय्या कर दो तो वह अपने दीन और ईमान से दस्त बरदार हो जाता है। तुम मुसलमान का ईमान आसानी से खरीद सकते हो।" उस ने अरब के कई अमीरों वा वज़ीरों की मिसालें दीं जिन्हें सलीबीयों ने औरत, शराब और दौलत से खरीद लिया था और उन्हें अपना दरपर्दा दोस्त बना लिया था।

कुछ देर मुसलमानों की कमज़ोरियों के मुतअल्लिक बातें हुई फिर लड़कियों को आज़ाद काराने के अमली पहलूओं पर ग़ौर हुआ। आखिर यह तय पाय कि बीस बहुत दिलेर आदमी इस काम के लिये रवाना किय जायें। उसी वक्त चार पांच कमाण्डरों को बुलाया गया। उन्हें असल मकसद और मुहिम बता कर कहा गया कि बीस आदमी मुन्तख़ब करें । कमाण्डरो ने थोड़ी देर इस मुहिम के खतरों के मुतअल्लिक बहस की। एक कमाण्डर ने कहा–" हमें पहले हीएक ऐसी फोर्स तैय्यार कर रहे हैं जो मुसलमानों के कैंम्पो पर शबखून करती रहेगी। इस फौर्स के लिये हमने चन्द एक आदमी मुन्तखब किये हैं।

"लेकिन यह आदमी सौफिसद काबिले एतमाद होने चाहिये।" आगस्टस ने कहा-" वह हमारी तुम्हारी नज़रों से औझल होकर यह काम करेंगे। यह भी हो सकता है कि वह कुछ भी न करें और वापस आकर कहें कि वह बहुत कुछ करके आये हैं।"

"आप यह सून कर हैरान होंगे।" एक कमाण्डर ने कहा-" कि हमारी फौज में ऐसे सिपाही भी हैं जिन्हें हमने जेल खानों से हासिल किया है। यह डाकू, चोर और रहज़न थे। इन्हें बड़ी बड़ी लम्बी सज़ायें दी गई थीं। इन्हें जैल खाने में मरना ही था। हमने इन से बात की तो वह जोश व खरोश से फौज में आये। आप को शायद यह मालूम करके भी हैरत हो कि नाकाम हमले में इन सज़ा याफता मुजरिमों ने बड़ी बहादुरी से कई जहाज़ बचाये हैं...... मैं लड़कियों को मुसलमानों से आज़ाद कराने की मुहीम में ऐसे तीन आदमी भेजूंगा।"

मौअर्रिखों ने लिखा है कि मुसलमानो मे ऐश व इशरत का रूझान बढ़ गया और इत्तेहाद खत्म हो गया था। ईसाईयों ने मुसलमानों का अखलाक तबाही तक पहुंचाने मे ज़ेहनी अय्याशी का हर सामान मुहय्या किया...... अब उन्हें यह तवक्को थी कि मुसलमानों को एक ही हमले में खत्म करे देगें। चुनांचे उनके खिलाफ ईसाई दुनिया में नफरत की तूफानी मुहीम चलाई गई और हर किसी को इसलाम के खिलाफ जंग में शरीक होने की दावत दी गई। इसके जवाब में मुआशरें के हर शोबे के लोग सलीबी लशकर में शामिल होने लगे। इनमें पादरी भी शमिल हुये और मुजरिम भी गुनाहों से तोबा करके मुसलमानों के खिलाफ एक हो गये। बाज़ मुल्कों के जैल खानों में जो मुजरिम लम्बी कैद की सज़ायें भूगत रहे थे वह भी फौज में भर्ती हो गये। इन मुजरिमों के मुतअल्लिक ईसाईयों का तजुर्बा गालिबन अच्छा था जिसके पेशे नज़र एक कमाण्डर ने लड़कियों को आज़ाद कराने और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करने के लिये कैदी मुजरिमों का इन्तेखाब किया था।

सुबह तक बीस इन्तेहाई दिलेर और ज़हीन आदमी चून लिये गये। इन्में मैगनामारयूस भी था जिसे रोम के जैलखाने से लाया गया था। उस जासूस को जो डाक्टर के भेस में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प में रहा और फरार हो गया था उस कमान्डों पार्टी का कमाण्डर और गाईड मुकर्रर किया गया। इस पार्टी को यह मिशन दिया गया कि लड़कियों को कैद से निकालना है। अगर रॉबिन और उस के चार साथियों को भी आज़ाद कराया जा सके तो करा लेना वरना उनके लिये कोई खतरा मौल लेने की ज़रूरत नही। दूसरा मिशन था सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का कत्ल। इस पार्टी को कई अमली ट्रेनिंग दी गई। सिर्फ ज़बानी हिदायतें और ज़रूरी हथियार दे कर उसी रोज़ एक बादबानी कश्ती में माहीगीरों के भेस मे रवाना कर दिया गया।

❖

जिस वक्त यह कश्ती इटली के साहिल से रवाना हुई सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी सूडानीयों की बगावत को मुकम्मल तौर पर दबा चुका था। सुडानीयों के बहुत से कमाण्डर मारे गये या ज़खमी हो गये थे। और बहुत से सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दफतर के सामने खड़े थे। उन्होंने हथियार डाल कर शिकस्त और सुलतान की इताअत कुबूल कर ली थी। वे सुलतान

सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुकुम के मुन्तज़िर थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने सालारों वग़ैरा को अहकाम दे रहा था। अली बिन सुफियान भी मौजूद था। इस फतह में उसका बहुत अमल व दखल था। सलीबीयों को शिकस्त देने में भी उस के निज़ामे जासूसी ने बहुत काम किया था बल्कि ये दोनों कमयबियां जासूसी के निज़ाम की कामयाबियां थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को जैसे अचानक कुछ याद आ गया हो। उस ने अली बिन सुफियान से कहा–" अली! हमें उन जासूस लड़कियों और उन के साथियों के मुतअल्लिक सोंचने का वक़्त ही नही मिला। वे अभी तक साहिल पर कैदी कैम्प में हैं। उन सबको फौरन यहां लाने का बन्दोबस्त करो और क़ैद खानें में डाल दो।"

"मैं अभी पैग़ाम भिजवा देता हूँ।" अली बिन सुफियान ने कहा–"उन सबको यहां पर बुलवा लेता हूं......... सुलतान! आप शायद सातवीं लड़की को भूल गये हैं। वह सुडानीयों के एक कमाण्डर के पास थी। इसी लड़की से जासूसों और बग़ावत का इन्कशाफ हुआ था। मैं देख रहा हूँ कि बालियान इन कमाण्डरो में नहीं है जो बाहर मौजूद हैं और वह ज़ख्मियों में भी नही है और जो मरे हुये हैं उनमे भी नहीं है। मुझे शक है कि सातावीं लड़की जिस का नाम फख़रूल मिस्री ने मौबी बताया था। बालियान के साथ कहीं रूपोश हो गई है।"

"अपना शक रफा करो अली।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–"यहां मुझे अब तुम्हारी ज़रूरात नही है। बलियान लापता है तो वह बहरे रोम की तरफ़ निकल गया होगा। सलीबीयों के सिवा और कौन पनाह दे सकताहै। बहर हाल इन जासूसो को तहख़ाना में डालो और अपने जासूस फौरन तैय्यार करके समुन्द्र पार भेज दो।"

"ज़्यादा ज़रूरी तो यह है कि अपने जसूस अपने ही मुल्क में फैला दिये जायें।" यह मश्वरा देने वाला सुलतान ज़ंगी की भेजी हुई फौज का सालार था। उस ने कहा–" हमें सलीबीयों की तरफ से इतना ख़तरा नही जितना अपने मुसलमान अमीरों से है। अपने जासूस इनके हरमों में दाखिल कर दिये जायें तो बहुत सी साज़िशें बेनक़ाब होंगी।" उस ने तफसील से बताया कि यह खुद साख्ता हुकुमरान किस तरह सलीबीयों के हाथों में खेल रहे हैं। सुलतान ज़ंगी अकसर परेशान रहते हैं कि बाहर के हमलों को रोंकें या अपने घरों को अपने ही चिराग़ से जलने से बचायें।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह बात ग़ौर से सुनी और कहा–" अगर तुम लोग जिनके पास हथियार हैं दयानतदार और अपने मज़हब से मुखलिस रहे तो बाहर के हमले और अन्दर के साज़िशीन कौम का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम अपनी नज़र सरहद से दूर आगे ले जाओ। सलतनत इसलामिया की कोई सरहद नही। तुम ने जिस रोज़ अपने आपको और खुदा के इस अज़ीम मज़हब इसलाम को सरहदों में पाबन्द कर लिया उस रोज़ से यों समझो कि तुम अपने ही क़ैद खाने में क़ैद हो जाओगे। फिर तुम्हारी सरहदें सिकुड़ने लगेंगी। अपनी नज़रें बहरे रोम से आगे ले जाओ। समुन्द्र तुम्हारा रास्ता नही रोक सकते। घर के चिराग़ों से न डरो। यह तो एक फूंक से गुल हो जायेंगे। इनकी जगह हम ईमान के चिराग़ रौशन करेंगे।"

"हमें उम्मीद है कि हम ईमान फरोशों को रोक लेंगे। सुलताने मोहतरम!" सालार ने कहा—"हम मायूस नहीं।"

"सिर्फ दो लानतों से बचो मेरे अज़ीज़ रफीको!" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी न कहा—" मायुसी और ज़ेहनी अय्याशी । इनसान पहले मायूस होता है फिर ज़ेहनी अय्याशी के ज़रिये राह फरार इख़तियार करता है।"

उस रोज़ अली बिन सुफियान जा चूका था। उस ने फौरन एक कासिद बहरे रोम के कैम्प की तरफ इस पैग़ाम के साथ रवाना कर दिया कि रॉबिन, उसके चारों साथियों और लड़कियों को घोड़ों पर सवार करके बीस मुहाफिज़ के पहरे में दारूल हुकुमत को भेज दो.......... कासिद को रवाना कर के उस ने अपने साथ छ सात सिपाही लिये और कमाण्डर बालियान की तलाश में निकल गया। उसने इन सुडानी कमाण्डरों से जो बाहर बैठे थे बलियान के मुतअल्लिक पूछ लिया था। सब ने कहा था कि उसे लड़ाई में कहीं भी नहीं देखा गया था और न ही वह इस फौज के सथ गया था जो बहरे रोम की तरफ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज पर हमला करने के लिये भेजी गई थी। अली बिन सुफियान बालियान के घर गया तो वहां उस की दो बूढ़ी खादमाओं के सिवा और कोई न था। उन्होंने बताया कि बालियान के घर में पांच लड़कियां थीं। इनमे जिसकी उम्र ज़रा ज़्यादा हो जाती थी उसे वह गायब कर देता और उसकी जगह जवान लड़की ले आता था। इन खादिमाओ ने बताया कि बग़ावत से पहले उस के पास एक फिरंगी लड़की आई थी जो ग़ैर मामूली तौर पर खूबसूरत और होशियार थी। बालियान उस का गुलाम हो गया था। बग़ावत के एक रोज़ बाद जब सूडानियों ने हथियार डाल दिये तो बालियान रात के वक़्त घोड़े पर सवार हुआ, दूसरे घोड़े पर उस फिरंगी लड़की को सवार किया और मालूम नही दोनों कहां रवाना हो गये। उनके साथ सात घुड़ सवार थे। हरम की लड़कियों के मुतअल्लिक बूढ़ियों ने बताया कि वे घर में जो हाथ लगा उठा कर चली गई।

अली बिन सुफियान वहां से वापस हुआ तो एक घोड़ा सरपट दौड़ता आया और अली बिन सुफियान के सामने रुका। उस पर फख़रूल मिस्री सवार था। कूद कर घोड़े से उतरा और हांफती कांपती आवाज़ में बोला—"मैं आपके पीछे आया हूं। मैं भी उसी बदबख्त बालियान और उस काफिर लड़की को ढूंढ रहा था। मैं उन से इन्तेकाम लुगां। जब तक उन दोनो को अपने हाथों कैद नही कर लुंगा। मुझे चैन नही आयेगा। मैं जानता हूँ वह किधर गये हैं। मै ने उनका पीछा किया है लेकिन उनके साथ सात मुसल्लह मुहाफिज़ है। "उस ने अली बिन सुफियान के घोड़े पर हाथ रख कर कहा—"खुदा के लिये मुझे सिर्फ चार सिपाही दे दें। मैं उनके तआकुअब में जाऊंगा उन्हें खत्म कर के आऊंगा।"

अली बिन सुफियान ने उसे इस वादे से ठन्डा किया कि वह उसे चार की बजाये बीस सवार देगा। वह साहिल से आगे इतनी जल्दी नही जा सकते। मेरे साथ रहो। अली बिन सुफियान मुतमईन हो गया कि यह तो पता चल गया है कि वह किस तरफ गये है।

❖

उस वक़्त बालियान उस सलीबी लड़की के साथ जिसका नाम मौबी था। साहिल के तरफ जाने वाले आम रास्ते से हट कर दूर जा चुका था। इन इलाकों से वह अच्छी तरह वाकिफ था। उसे मालूम नहीं था की सुडानी फौज और उसके कमांडरों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने माफी दे दी है। एक तो वह सुलतान के अताब से भाग रहा था और दूसरे यह कि वह मौबी जैसी हसीन लड़की को नहीं छोड़ना चाहता था। वह समझता था कि दुनियां की हसीन लड़कियां सिर्फ मिस्र और सूडान में ही हैं मगर इटली की इस लड़की के हुस्न और दिल कशी ने उसे अन्धा कर दिया था उसकी खातिर वह अपना रूतबा अपना मज़हब और अपना मुल्क ही छोड़ रहा था लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि मौबी उस से जान छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। वह जिस मकसद के लिये आई थी वह खत्म हो चुका था। सारा मकसद तबाह हो गया था ताहम मौबी अपना काम कर चुकी थी। उस के लिये उसने अपने हुस्न और अपनी इज्ज़त की कुर्बानी दे दी थी। वह अभी तक अपनी उम्र से दुगुनी उम्र के आदमी की अय्याशी का ज़र्या बनी हुई थी।

बालियान इस खुशफहमी में मुबतला था कि मौबी उसे बुरी तरह चाहती है मगर मौबी उस से नफरत करती थी। वह इस मकसद के लिये बालियान को साथ लिये हुये थी कि उसे अपनी हिफ़ाज़त की जरूरत थी उसे बहरे रोम पार करना था या रॉबिन तक पहुंचना था। उसे मालुम नही था कि रॉबिन और उसके साथ जो ताजिर के भेस में थे पकड़े जा चुके हैं। इस मजबूरी के तेहत वह बालियान के हाथ में खिलोना बनी हुई थी। वह कई बार उसे कह चुकी थी कि तेज़ चलो और पड़ाव कम करो वरना पकड़े जायेंगे लेकिन बालियान जहां अच्छी सायादार जगह देखता रूक जाता। उस ने शराब ज़खीरा अपने साथ रख लिया था।

एक रात मौबी ने एक तरकीब सोंची। उस ने बालियान को इतनी ज़्यादा पीला दी कि वह बेसूद हो गया। उनके साथ जो मुहफिज़ थे वह कुछ परे सो गये थे। मौबी ने देखा था कि उनमें एक ऐसा है जो जवान है और सब पर छाया रहता है। बालियान ज़्यादा तर इसी के साथ हर बात किया करता था। मौबी ने उसे जगाया और थोड़ी दूर ले गई उस से कहा–"तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कौन हूं कहां से आई हूं और यहां क्यों आई थी। मैं तुम लोगों के लिये मदद लाई थी ताकि तुम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसे गैर मुल्कियों से आज़ाद हो सको। तुम्हारा यह कमाण्डर बालियान इस क़दर अय्याश आदमी है कि उस ने शराब पीकर बदमस्त होकर मेरे जिस्म के साथ खेलना शुरू कर दिया। बजाये इसके कि वह अक़लमन्दी से बग़ावत का मंसूकबा बनाता और फ़तह हासिल करता उस ने मुझे अपने हरम की लौंडी बना लिया और अन्धा धुन्द फौज को दो हिस्सों में तक़सीम करके ऐसी लापरवाही से हमला करवाया कि एक ही राउन्ड में तुम्हारी इतनी बड़ी फौज ख़त्म हो गई.....

"तुम्हारी शिकस्त का ज़िम्मेदार यह शख़्स है। अब यह मेरे साथ सिर्फ अय्याशी के लिये जा रहा है और मुझे कहता है कि मैं उसे समुन्द्र पार ले चलूं, इसे अपनी फौज में रूतबा दिलवाऊं और इस के साथ शादी करूं मगर मुझे इस शख़्स से नफरत है। मैं ने फैसला किया है कि अगर मुझे शादी ही करनी है और अपने मुल्क में ले जाकर उसे फौज में रूतबा दिलवाना

है तो मुझे एसे आदमी का इन्तेखाब करना चाहिये जो मेरे दिल को अच्छा लगे। वह आदमी तुम हो। तुम नौजवान हो दिलेर हो अक्लमन्द हो, मैंने जब से तुम्हें देखा है तुम्हें चाह रही हूं। मुझे इस बूढ़े से बचाओ मैं तुम्हारी हूं, समुंद्र पार चलो। फौज का रूतबा और माल व दौलत तुम्हारे कदमों में होगा मगर इस आदमी को यहीं खत्म करो। वह सोया हुआ है उसे कत्ल करो और आओ निकल चलें।"

उसने मुहाफिज़ के गले में बाहं डाल दीं। मुहाफिज़ उस के हुस्न में गिरफ्तार हो गया। उसने दीवानावार लड़की को अपने बाजूओं मे जकड़ लिया। मौबी इस जादूगरी की माहिर थी वह ज़रा परे हट गई। मुहाफिज़ उसकी तरफ बढ़ा तो अकब से एक बरछी उसकी पीठ में उतर गई उसके मुहं से हॉय निकली और वह पहलू के बल लुढ़क गया। बरछी उसकी पीठ से निकली और उसे आवाज़ सुनाई दी। "नमकहराम को ज़िन्दा रहने का हक नही।" लड़की की चीख़ निकल गई वह उठी और इतना ही कहने पाई थी कि तुम ने उसे कत्ल कर दिया है कि पीछे से एक हाथ ने उसके बाजू को जकड़ लिया और झटका दे कर अपने साथ ले गया। उसे बालियान के पास फेंक कर कहा–"हम इस शख़्स के पाले हुये दोस्त हैं हमारी ज़िन्दगी इसी के साथ है तुम हममें से किसी को इसके खिलाफ गुमराह नहीं कर सकती। जो गुमराह हुआ उस ने सज़ा पाई है।" बालियान शराब के नशे में बेहोस पड़ा था।

"तुम लोगों ने यह भी सोंचा है कि तुम कहां जा रहे हो?" मौबी ने पूछा।

"समुन्द्र में डूबने।" एक ने जवाब दिदा–"तुम्हारे साथ हमारा कोई ताल्लुक नही है। जहां तक बालियान जायेगा हम वहीं तक जायेंगे।" और वह दोनो जाकर लेट गये।

दूसरे दिन बालियान जागा तो उसे रात का वाकिआ सुनाया गया। मौबी ने कहा कि मुझे जान से मारने की धमकी देकर अपने साथ ले गया था। बालियान ने अपने मुहाफिज़ों को शाबाशी दी मगर उनकी यह बात सुनीं अनसुनी करदी कि लड़की उसे गुमराह करके ले गई थी और उन्होंने उसकी बात सुनी थी। वह मौबी के हुस्न और शराब में मदहोश होकर सब कुछ भूल गया। मौबी ने उसे एक बार फिर कहा कि तेज़ चलना चाहिये मगर बालियान ने परवाह न की। वह अपने आप में नहीं था मौबी अब आज़ाद नहीं हो सकती थी। उसने देख लिया था कि यह लोग अपने दोस्तों का कत्ल करने से भी गुरेज़ नहीं करते।

अली बिन सुफियान ने न जाने क्या सोंच कर इनका तआकुब न किया। बग़ावत के बाद के हालात को मामूल पर लाने के लिये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ बहुत मसरूफ हो गया था।

❖

साहिल के कैम्प से रॉबिन उस के चारों साथियों और छ लड़कियों को पन्द्रह मुहाफिज़ों की गिरोह में काहिरा के लिये रवाना कर दिया गया। कासिद उन से पहले रवाना हो चुका था। कैदी ऊंट पर थे और गार्ड घोड़ों पर। वह मामूल की रफतार पर जा रहे थे और मामूल के मुताबिक पड़ाव कर रहे थे। वह बे खौफ व खतर के जा रहे थे। वहां किसी दुश्मन के हमले का डर नही था। कैदी निहत्ते थे और उनमें छे जवान लड़कियां थीं। किसी के भागने का डर

नही था। मगर वह यह भूल रहे थे कि यह कैदी तरबियत याफता जासूस हैं बल्कि यह लड़ाई के जासूस थे। इनमें जो ताजिरों के भेस में पकड़े गये थे। वह चुने हुये तीर अन्दाज़ और तेग़ज़न थे और लड़कियां मामूली लड़कियां नही थी जिन्हें वह कमज़ोर औरत ज़ात समझ रहे थें इन लड़कियों की जिसमानी दिलकशी यूरोपी रंगत की जाज़बियत, जवानी और उनकी बेहयाई ऐसे हथ्यिार थे जो अच्छे अच्छे जाबिर हुकमरानों से हथियार डलवा लेते थे।

मुहाफिज़ का कमाण्डर मिस्री था। उस ने देखा कि इन छे में से एक लड़की उस की तरफ देखती रहती है और वह जब उसे देखता है तो लड़की के होंठों पर मुसकुराहट आ जाती है। यह मुसकुराहट इस मिस्री को मोम कर रही थी। शाम के वक़्त उन्होंने पहला पड़ाव किया तो सब को खाना दिया गया। उस लड़की ने खाना न खाया। कमाण्डर को बताया गया तो उसने लड़की के साथ बात की। लड़की उस की ज़बान बोलती और समझती थी। लड़की के आंसू निकल गये। उस ने कहा कि वह उसके साथ अल्हेदगी में बातें करना चाहती है।

रात को जब सब सोगये तो कमाण्डर उठा। उसने लड़की को जगाया और अलग ले गया। लड़की ने उसे बताया कि वह एक मज़लूम लड़की है, उसे फौजियों ने एक घर से अग़वा किया और अपने साथ रखा। फिर उसे जहाज़ में अपने स थ लाये जहां वह एक अफसर की दाशता बनी रही। दूसरी लड़कियों के मुक़ाबले उसने बताया कि उनके साथ इसकी मुलाक़ात जहाज़ में हुई थी। उन्हें भी अग़वा कर के लाया गया था। अचानक जहाजों पर आग बरसने लगी और जहाज़ जलने लगे। इन लड़कियों को एक कश्ती में बिठाकर समुन्द्र में डाल दिया गया। कश्ती उन्हें उस साहिल पर ले आई जहां उन्हें जासूस समझ कर क़ैद में डाल दिया गया।

यह वही कहानी थी जो ताजिरों के भेस में जासूसों ने इन लड़कियों के मुतअल्लिक सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुनाई थी। मिस्री गार्ड कमाण्डर को मालूम नही था। वह यह कहानी पहली बार सुन रहा था। उसे तो हुकुम मिला था कि यह खतरनाक जासूस हैं। उन्हें काहिरा ले जाकर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक खुफिया महकमें के हवाले करना है। इस हुकम के पेशे नज़र वह इन लड़कियों की या इस लड़की की कोई मदद नही कर सकता था। उस ने इस लड़की को अपनी मजबूरी बता दी। उसे मालूम नही था कि लड़की की तरकश में अभी बहुत से तीर बाकी है। लड़की ने कहा–" मैं तुम से कोई मदद नहीं मांगती। तुम अगर मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हें रोक दुंगी क्योंकि तुम मुझे इतने अच्छे लगते हो कि मैं अपनी खातिर तुम्हें किसी मुसीबत में नही डालना चाहती। मेरा कोई ग़मखवार नही। मैं इन लड़कियों को बिलकुल नहीं जानती। तुम मुझे रहम दिल भी लगते हो और मेरे दिल को भी अच्छे लगते हो इस लिये तुम्हें यह बातें बता रही हूँ।"

इतनी खूबसूरत लड़की के मूंह से इस किसम की बातें सुन कर कौन सा मर्द अपने आप में रह सकता है। यह लड़की मजबूर भी थी। रात की तन्हाई भी थी। मिस्री की मर्दानगी पिघलने लगी। उस ने लड़की के साथ दोस्ताना बातें शुरू कर दीं। लड़की ने एक और तीर

चलाया और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के किरदार पर ज़हर उगलने लगी। उस ने कहा—"मैं ने तुम्हारे गवर्नर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपनी मज़लूमियत की यह कहानी सुनाई थी। मुझे उम्मीद थी कि वह मेरे हाल पर रहम करेगा मगर उसने मुझे अपने खेमें में रख लिया और शराब पी कर मेरे साथ बदकारी करता रहा। उस वहशी ने मेरा जिस्म तोड़ दिया है। शराब पी कर वह इतना वहशी बन जाता है कि उस में इन्सानियत रहती ही नहीं।"

मिस्री का खून खोलने लगा। उसने बिदक कर कहा—" हमें कहा गया था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मोमिन है, फरिश्ता है, शराब और औरत से नफरत करता है।"

"मुझे अब उसी के पास ले जाया जा रहा है। लड़की ने कहा—" अगर तुम्हें यक़ीन न आये तो रात को देख लेना कि मैं कहां हुंगी। वह मुझे क़ैद खाने में नही डालेगा, अपने हरम में रख लेगा। मुझे उस आदमी से डर लगता है।" इस किसम की बहुत सी बातों से लड़की ने इस मिस्री के दिल में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ नफरत पैदा कर दी और वह पूरी तरह मिस्री पर छा गई। उस के दिल में और दिमाग़ पर कब्ज़ा कर लिया। मिस्री को मालूम नही था कि यही इन लड़कियों का हथियार है। लड़की ने आखिर में उसे कहा—"अगर तुम मुझे इस ज़लील ज़िंदगी से निजात दिला दो तो मैं हमेशा के लिये तुम्हारी हो जाऊंगी और मेरा बाप तुम्हें सोने की अशरफियों से माला माल कर देगा।" उसने इस का तरीका यह बताया—"मेरे साथ समुन्द्र पार भाग चलो। कश्तियों की कमी नहीं। मेरे बाप तुम्हें निहायत अच्छा मकान और बहुत सी दौलत देंगे। तुम तिजारत कर सकते हो।"

मिस्री को यह याद रह गया था कि वह मुसलमान है। उस ने कहा कि वह अपना मज़हब तर्क नही कर सकता। लड़की ने ज़रा सोंच कर कहा—" मैं तुम्हारे लिये अपना मज़हब छोड़ दुंगी।"

इस के बाद वह फरार और शादी का प्रोग्राम बनाने लगे। लड़की ने उस से कहा—" मैं तुम पर ज़ोर नही देती। अच्छी तरह सोंच लो। मैं सिर्फ जानना चाहती हूं कि मेरे दिल में जितनी तुम्हारी मोहब्बत पैदा हो गई है इतनी तुम्हारे दिल में पैदा हुई है या नही। अगर तुम मुझे कुबूल करने पर आमादा हो सकते हो तो सोंच लो और कोशिश करो कि काहिरा तक हमारा सफर लम्बा हो जाये। हम एक बार वहां पहुंच गये तो फिर तुम मेरी बू भी सूंघ नही सकोगे।"

लड़की का मक़सद सिर्फ इतना सा था कि सफर लम्बा हो जाये और तीन दिनों की बजाये छः दिन रास्ते में ही गुज़र जाये। इस की वहज यह थी कि रॉबिन और उसके साथी फरार की तरकीबें सोंच रहे थे। वह इस कोशिश में थे कि रात को सोये हुये मुहाफिज़ों के हथियार उठा कर उन्हें कत्ल किया जायें। अभी तो पहला ही पड़ाव था। उनकी जरूरत यह थी कि सफर लम्बा हो जाये ताकि वह इतमिनान से सोंच सकें और अमल कर सकें। इस मकसद के लिये उन्होंने उस लड़की को इसतेमाल किया वह मुहाफिज़ों के कमाण्डर को कब्ज़े में ले ले। लड़की ने पहली मुलाकात मे ही यह मक़सद हासिल कर लिया था और मिस्री को मुंह मांगी क़ीमत दे दी। मिस्री कोई ऐसा बड़े रुतबे वाला आदमी नही था। मामूली सा

ओहदेदार था। उस ने कभी ख्वाब में भी इतनी हसीन लड़की नही देखी थी। कहां एक जीती जागती लड़की जो उस के तसव्वुर से भी ज़्याद़ा खूबसूरत थी उसकी लोंडी बन गई थी। वह अपना आप अपना फर्ज़ और अपना मज़हब ही भूल गया। वह एक लम्हें के लिये भी लड़की से अलग नही होना चाहता था।

इस पागल पन में उस ने सुबह के वक्त पहला हुकुम यह दिया कि जानवर बहुत थके हुये हैं, लिहाजा आज सफर नही होगा। मुहाफिज़ और शुतरबानों को इस हुक्म से बहुत खुशी हुई। वह मुहाज़ की सख्तियों से कतराये हुये थे। उन्हें मंज़िल तक पहुंचने की कोई जल्दी नही थी। वह दिन भर आराम करते रहे। गप शप लगाते रहे और इनका कमाण्डर इस लड़की के पास बैठा बदमस्त होता रहा। दिन गुज़र गया। रात आई और जब सब सो गये तो मिस्री लड़की को साथ लिये दूर चला गया। लड़की ने उसे आसमान पर पहुंचा दिया था।

सुबह जब यह काफ़िला चलने लगा तो मिस्री कमाण्डर ने रास्ता बदल दिया। अपने दस्ते से उस ने कहा कि इस तरफ अगले पड़ाव के लिये बहुत खूबसरूत जगह है। करीब एक गावं भी है जहां मुर्गियां और अन्डे मिल जायेंगे। उस का दस्ता इस पर भी खुश हुआ कि कमाण्डर उन्हें एश करा रहा है। अलबत्ता इस दस्ते में दो असकरी ऐसे थे जो कमाण्डर की इन हरकतों से खुश नही थे। उन्होंने उसे कहा कि हमारे पास खतरनाक कैदी हैं, यह सब जासूस हैं। उन्हें बहुत जल्दी हुकूमत के हवाले कर देना चाहिये। बिला वजह सफर लम्बा करना ठीक नहीं। मिस्री ने उन्हें यह कहकर चुप करा दिया कि यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि जल्दी पहुंचू यहा देर से जवाब तलबी हुई तो मुझ से होगी। दोनों खामोश तो हो गये लेकिन वह अलग जाकर खुसर पुसर करते रहे।

❖

दोपहर के बाद उन्हें दूर आगे बहुत से गिद्ध उड़ते और उतरते नज़र आये। यह इसकी निशानी थी कि वहां कोई मुर्दार है। वह इलाका मिट्टी और रेत के टीले का था। सहराई रुख भी था। चलते चलते वह इन टीलों में दाखिल हो गये। रास्ता ऊपर होता गया और एक बुलन्द जगह से उन्हें एक मैदान नज़र आया जहां गिद्धों के गोल उतरते हुये शोर बरपा कर रहे थे। ज़रा और आगे गये तो नज़र आया कि यह लाशें हैं। बदबू भी थी। यह उन सूडानीयों की लाशें थीं जो बहरे रोम के साहिल पर मुकीम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज पर हमला करने चले थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के जांबाज़ सवारों ने रातों को इनके अकबी हिस्से पर हमला कर के यह कुश्त व खून किया और सूडानी फौज को तितर बितर कर दिया था। जहां से अगे मीलों वुसअत में लाशें बिखरी हुई थीं। सूडानीयों को अपनी लाशें उठाने की मोहलत न मिली थी। कैदियों और मुहाफिज़ो का काफिला चलता रहा और ज़रा सा रूख बदल कर लाशों और गिद्धों से हट कर।

कफिला जब वहां से गुज़र रहा था तो उन्होंने देखा कि लाशों के इर्द गिर्द उन्के हथियार भी पड़े हुये थे। उनमें कमाने और तरकश थे। बरछियों तलवारें और ढालें भी थीं। कैदियों ने यह हथियार देख लिये थे। उन्हों ने आपस में बातें कीं और रॉबिन ने उस लड़की से कुछ

कहा जिस ने मिस्री कमाण्डर पर कबज़ा कर रखा था। लाशें और हथियार दूर दूर तक फैले हुये थे। दायें तरफ टीलों के करीब सरसबज़ जगह थी। पानी भी नज़र आ रहा था। सब्ज़ा टीलों के ऊपर तक गया हुआ था। लड़की ने कमाण्डर को इशारा किया तो वह उसके करीब चला गया। लड़की ने कहा-- "यह जगह बहुत अच्छी है। यहीं रूक जाते हैं।" मिस्री ने काफिले का रुख फेर दिया और सरसब्ज़ टीले के करीब पानी के चशमें पर जा रूका। रात यहीं बसर करनी थी। सब घोड़ों और ऊंटों से उतर गये। जानवर पानी पर टूट पड़े। रात गुज़ारने के लिये अच्छी जगह देखी जाने लगी। दो टीलों के दर्मियान जगह कुशादा भी थी और वह सब्ज़ भी थी। यही जगह मुन्तखब कर ली गई।

जब रात का अन्धेरा गहरा हुआ और सब सो गये। मिस्री जाग रहा था और लड़की भी जाग रही थी। इस रात उसे खास तौर पर जगाना और मिस्री कमाण्डर को पूरी तरह से मदहोश करना था उसे जब खर्राटों की आवाज़ सुनाई देने लगी तो वह मिस्री के पास चली गई। इसी लड़की की खातिर वह सब से अलग और दूर हट कर लेटा था लड़की उसे टीले की ओट में ले गई और वहां से और ज़्यादा दूर जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की। मिस्री उसकी ख्वाहिशों का गुलाम हो गया था उसे एहसास तक न था कि आज रात लड़की उसे एक खास मक़सद के लिये दूर ले जा रही है वह उसके साथ चलता रहा और लड़की उसे तीन टीलों से भी परे ले गई। वह रूकी और मिस्री को बाहों में ले लिया। मिस्री बे खुद हो गया।

उधर रॉबिन ने जब देखा कि कमाण्डर जा चुका है और दूसरे मुहाफिज़ गहरी नींद सोये हुये हैं तो उस ने लेटे लेटे अपने एक साथी को जगाया। उसने साथ वाले को जगाया। इस तरह रॉबिन के चारों साथी जाग उठे......... मुहाफिज़ उन से ज़रा दूर सोये हुये थे। मिस्री कमाण्डर को लड़की ने इतना बेपरवाह कर दिया था कि रात को वह संतरी नहीं खड़ा करता था। पहले रॉबिन पेट के बल रेंगता मुहाफिज़ से दूर चला गया। इसके बाद उसके चारों साथी भी चले गये। टीले की ओट मे होकर वह तेज़ तेज़ चलने लगे और लाशों तक पहुंच गये टटोल टटोल कर उन्हों ने तीन और तर्कश उठाये और एक एक बर्छी उठाली। इसी मकसद के लिय उन्होंने लड़की से कहा था कि वह कमाण्डर से कहे कि यहां पड़ाव किया जाये। वह हथियार ले कर वापस हुये। अब वह इकट्ठे थे।

वह सोये हुये मुहाफिज़ के करीब जा खड़े हुये। रॉबिन ने एक मुहाफिज़ के सीने में बर्छी मारने के लिये बर्छी ज़रा ऊपर उठाई। बाकी चार भी एक एक मुहाफिज़ के सिर पर खड़े थे। यह निहायत कामयाब चाल थी। वह बएक वक्त चार मुहाफिज़ों को खत्म कर सकते थे और बाकी ग्यारह के संभलने तक उन्हें भी खतम करना मुश्किल नही था। पीछे तीन शुतरबान थे और मिस्री कमाण्डर। वह आसान शिकार थे। रॉबिन ने ज्योंही बर्छी ऊपर उठाई ज़न्नाटा सा सुनाई दिया और एक तीर रॉबिन के सीने में उतर गया। उसके साथ ही एक तीर रॉबिन के साथी के सीने में लगा। वह डोले। उनके तीन साथी अभी देख ही रहे थे कि यह क्या हुआ है कि दो और तीर आये और दो और कैदी औंधें हो गये। यह काम इतनी खामोशी से हो गया कि इन मुहाफिज़ों मे से किसी की आखें ही न खुलीं जिनके सिर पर मौत आन खड़ी थी।

तीर अंदाज़ आगे आये। उन्होंने मशालें रौशन कीं। यह वह दो मुहाफिज़ थे जिन्होंने अपने कमाण्डर से कहा था कि इन्हें मंज़िल पर जल्दी पहुंचाया जाये। वह दयानतदार थे। वह सोये हुये थे जब चारों कैदी उनके करीब से गुज़रे तो उनमे से एक की आखं खुल गई थी। उस ने अपने साथी को जगाया और कैदियों का तआकुब दबे पावं किया। उन्होंने यह इरादा किया था कि अगर कैदियों ने भागने की कोशिश की तो उन्हें तीरों से खत्म कर देंगे। मगर इस से पहले वह देखना चाहते थे कि यह करते क्या हैं। अन्धेरे में उन्हें जो कुछ नज़र आता रहा वह देखते रहे। कैदी हथियार उठा कर वापस आये तो दोनों मुहाफिज़ आकर टीले के साथ छुप कर बैठ गये। ज्योंही कैदियो ने मुहाफिज़ों को बर्छियां मारने के लिये बर्छियां उठाई उन्होंने तीर चला दिये। फिर चारों को खत्म कर दिया। उन्होंने अपने कमाण्डर को आवाज़ दी तो उसे लापता पाया। इस आवाज़ से लड़कियां जाग उठीं और बाकी मुहाफिज़ भी जागे। लड़कियों ने अपने आदमियों की लाशें देखीं। हर एक लाशों में एक तीर उतरा हुआ था। लड़कियां खामोशी से लाशों को देखती रहीं। उन्हें मालूम था कि यह आदमी आज रात क्या करेंगे।

मिस्री कमाण्डर वहां नही था और एक लड़की भी गायब थी।

❖

मुहाफिज़ों को मालूम नही था कि जब इन कैदी जासूसों के सीने में तीर दाखिल हुये थे बिल्कुल उसी वक़्त उनके मिस्री कमाण्डर के पीठ में एक खंजर उतर गया था। उस की लाश तीसरे टीले के साथ पड़ी थी। उस रात सेहरा की रेत खून की प्यासी मालूम होती थी। मिस्री कमाण्डर अपने मुहाफिज़ दस्ते और कैदियों से बेखबर उस लड़की के साथ चला गया और लड़की उसे ख़ासा दूर ले गई थी। उसे मालूम था कि उस के साथी एक खूनी डरामा खेलेंगे। लड़की मिस्री को एक टीले के साथ ले कर बैठ गई।

उसी टीले से ज़रा परे बालियान और उसके छ मुहाफिज़ ने पड़ाव डाल रखा था। उनके घोड़े कुछ दूर बंधे हुये थे। बालियान मौबी को साथ लिये टीले की तरफ आ गया। उस के हाथ में शराब की बोतल थी। मौबी ने नीचे बिछाने के लिये दरी उठा रखी थी। बालियान मुहाफिज़ों से दूर जाकर ऐश व इशरत करना चाहता था। उसने दरी बिछा दी और मौबी को अपने साथ बिठा लिया। वह बैठे ही थे कि रात के सुकूत में उन्हें करीब से किसी की बातों की आवाज़ें सुनाई दीं। वह चौंके और दम साध कर सुनने लगे। आवाज़ किसी लड़की की थी। बालियान और मौबबी दबे पावं उस तरफ आये और टीले की ओट से देखा। उन्हें दो साये बैठे हुये नज़र आये। साफ पता चलता था कि एक औरत और एक मर्द है। मौबी और ज़्यादा करीब हुई और गौर से बातें सुनने लगी। मिस्री कमाण्डर के साथ इस लड़की ने ऐसी वाज़ेह बातें कीं कि मौबी को यक़ीन हो गया कि यह उस के साथ की लड़की है और यह भी वाज़ेह हो गया कि उसे काहिरा ले जाया जा रहा है।

मिस्री ने जो हरकतें और बातें कीं वह तो बिलकुल ही साफ थीं। किसी शक की गुन्जाईश नही थी। मौबी जान गई कि यह मिस्री इस लड़की को इस की मजबूरी के आलम में अय्याशी

का ज़रिया बना रहा है। मौबी ने यह बिलकुल न सोंचा कि इर्द गिर्द कोई और भी होगा और उस ने जो इरादा किया है उस का नतीजा क्या होगा। उस ने पीछे हटकर बालियान के कान में कहा–" यह मिस्री है और यह मेरे साथ की एक लड़की के साथ अय्याशी कर रहा है। इस लड़की को बचा लो। यह मिस्री तुम्हारा दुश्मन है और लड़की तुम्हारी दोस्त। " उस ने बालियान को और ज़्यादा भड़काने के लिये कहा। " बड़ी खूबसूरत लड़की है। उसे बचा लो और अपने सफरी हरम में इज़ाफा कर लो।"

बालियान शराब पिये हुये था। उस ने कमर बंद से खंजर निकाला और बहुत तेजी से आगे बढ़ कर खंजर मिस्री कमाण्डर के पीठ में घोंप दिया। खंजर निकाल कर उसी तेजी से एक और वार किया। लड़की मिस्री से आज़ाद हो कर उठ खड़ी हुई। वह दौड़ कर मौबी से लिपट गई। मौबी ने उस से पूछा कि दूसरी लड़कियां कहां है। उसने रॉबिन और दुसरे साथियों के मुतअल्लिक़ भी बता दिया और यह भी कि वह पंद्रह मुहाफिज़ के पहरे में है। बालियान दौड़ता गया और अपने छे साथियों को बुला लिया। उनके पास कमानें और दूसरे हथियार थे। इतने में कैदियों के मुहाफिज़ों में से एक अपने मिस्री कमाण्डर को आवाज़ देता इधर आया। बालियान के एक साथी ने तीर चलाया और इस मुहाफिज़ को खत्म कर दिया। वह लड़की उन्हें अपनी जगह ले जाने के लिये आगे आगे चल पड़ी।

बालियान को आख़िर टीले के पीछे रौशनी नज़र आई। उस ने टीलेके ओट में जाकर देखा। वहां बड़ी बड़ी दो मशालें जल रहीं थीं। उनके डंडे ज़मीन में गड़े हुये थे। उनके उपर वाले सिरों पर तेल में भीगे हुये कपड़े लिपटे हुये थे। जो जल रहे थे। बालियान अपने साथियों के साथ अन्धेरे में था। उसे रौशनी में पांच लड़कियां अलग खड़ी नज़र आई थीं और मुहाफिज़ भी दिखाई दे रहे थे। उनके दर्मियान पांच लाशें पड़ी थीं जिन में तीर उतरे हुये थे। मौबी और दूसरी लड़की की सिसकियां निकलने लगीं। मौबी के उक्साने पर बालियान ने अपने साथियों से कहा कियह तुम्हारा शिकार है तीरों से खत्म कर दो। उनकी तादाद अब चौदह थी। यह उनकी बदकिस्मती थी कि वह रौशनी में थे।

बालियान के सथियों ने कमानों में तीर डाले। तमाम तीर एक ही बार कमानों से निकले। दुसरे ही लम्हें कमानों में छे और तीर आ चुके थे। एक ही बार कैदियों के छे मुहफिज़ खत्म हो गये। बाकी भी समझ न सके थे कि यह तीर कहां से आये हैं। छे और ने छे और मुहाफिज़ो को गिरा दिया। बाकी दो रह गये थे। उनमे से एक अंधेरे में गायब हो गया। दुसरा ज़रा सुस्त निकला और वह भी सूडानीयों के बेयकवक्त तीन तीरों का शिकार हो गया। तीन शुतरबान रह गये थे। जो सामने नही थे। वह अंधेरे में कहीं इधर उधर हो गये थे। मशालों की रौशनी में अब लाशें ही लाशे नज़र आ रही थीं। हर लाश एक एक तीर लिये हुये थी और एक में तीन तीर पैवस्त थे। मौगबी दौड़ कर लड़कियों से मिली। इतने में उन्हें एक घोड़े के सरपट दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी जो दूर निकल गई। बालियान ने कहा–"यहां रुकना ठीक नहीं। इनमें एक बचकर निकल गया है। वह क़ाहिरा की सिम्त गया है। फौरन यहां से निकल चलो।"

उन्होंने मुहाफिजों के घोड़े खोले और अपनी जगह गये। वहां जाकर देखा कि एक घोड़ा बाज़ीन गायब था। उसे बच कर निकल जाने वाला मुहाफिज़ ले गया था। वह अपने घोड़ों तक नही जा सका था। छुप कर उधर चला गया जहां उसे आठ घोड़े बंधे नज़र आये। ज़ीन पास ही पड़ी थी। उस ने एक घौड़े पर ज़ीन कसी और भाग निकला। बालियान ने चौदह घोड़ों पर ज़ीन कसावाई। सामान दो घोड़ों पर लादा। बाकी घोड़े साथ लिये और रवाना हो गये। लड़कियों ने मौबी को सुनाया कि रॉबिन और उसके साथी लाशों के हथियार उठाने गये थे मगर मालूम नही कि वह किस तरह मारे गये।

मौबी ने कहा–" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के केम्प में मेरी और रॉबिन की मुलाकात हुई थी। उस ने कहा था कि मुझे यूं नज़र आ रहा है कि ईसा मसीह को हमारी कामयबी मंजूर है वरना हम इस तरह खिलाफे तवक्को न मिलती। आज हमारी मुलाकात बिलकुल खिलाफे तवक्को हो गई है लेकिन मैं यह नहीं कहुंगी कि ईसा मसीह को हमारी कामयाबी मन्जूर है। खुदाए यसूऊ मसीह हमसे नाराज़ मालूम होता है। हमारी फौज को शिकस्त हुई और मिस्र के हमारे दोस्त सूडानी फौज को शिकस्त हुई। इधर रॉबिन और क्रिस्टोफर जैसे दिलेर और काबिल आदमी और उनके इतने अच्छे साथी मारे गये। मालूम नही हमारा अन्जाम क्या होगा।"

"हमारे जीते जी तुम्हें कोई हाथ नही लगा सकता।' बालियान ने कहा–" मेरे शेरों का कमाल तुमने देख लिया है।"

जिस वक़्त कैदियों का काफिला लाशों के पास टीलों में रुका था। उस वक़्त साहिल पर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज के केम्प में तीन आदमी दाखिल हुये। वह इटली की ज़बान बोलते थे। उनका लिबास इटली के देहाती जैसा था। उनकी ज़बान कोई नही समझता था। इटली के जंगी कैदियों से मालूम किया गया। उन्हों ने बताया कि यह इटली से आये हैं और अपनी लड़कियों को ढूंढ़ते फिर रहे हैं। यह यहां के सालार से मिलना चाहते हैं। उन्हें बाहाऊद्दीन शद्दाद के पास पहुंचा दिया गया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी में शद्दाद कैम्प कमाण्डर था। इटली का एक जंगी कैदी बुलाया गया। वह मिस्र की ज़बान भी जानता था। उसके वासते से इन आदमियों के साथ बातें हुई थीं। इन आदमियों में एक अधेड़ उम्र था और दो जवान थे। तीनों ने एक ही जैसी बातें सुनाई। तीनों की एक एक जवान बहन को सलीबी फौजी उनके घरों से उठा लाए थे। उन्हें किसी ने बताया कि वह लड़कियां मुसलमानों के कैम्प में पहुंच गई हैं। यह अपनी बहनों की तलाश में आये थे। उन्हें बताया गया कि यहां सात लड़कियां आई थीं। उन्होंने यहीं कहानी सुनाई थी मगर सातों जासूस निकलीं। उन तीनों ने कहा कि हमारी बहनों का जासूसी के साथ कोई ताल्लुक नही है। हम तो ग़रीब और मज़लूम लोग हैं। किसी से किश्ती मांग कर इतनी दूर आये हैं। हम ग़रीबों की बहनें जासूसी की जुर्रअत कैसे कर सकती हैं। हमें उन सातों का कुछ पता नहीं। मालूम नही वह कौन होंगी। हम तो अपनी बहनों को ढूंढ़ रहे हैं।

"हमारे पास कोई लड़की नही।" शद्दाद ने बताया। ' यही सात लड़कियां थी जिन में से

एक लपता हो गई थी और बाकी छे को परसों सुबह यहां से रवाना कर दिया गाय है। अगर उन्हें देखना चाहते हो तो काहिरा चले जाओ। हमारे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी वही हैं तुम्हें लड़कियां दिखा देगें।"

"नहीं एक ने कहा--" हमारी बहनें जासूस नही। वह सात कोई और होंगी। हमारी बहनें समुन्द्र में डूब गई होंगी या हमारे ही फौजियों ने उन्हें अपने पास रखा हुआ होगा।"

बहाउद्दीन शद्दाद नेक खसलत का था। उस ने उन देहातियों की मज़लूमियत से मुतासिर होकर उनकी खातिर तवाज़ो की और उन्हें इज्ज़त से रुखसत किया। अगर वहां अली बिन सुफियान होता तो इन तीनों को इतनी आसानी से न जाने देता। उसकी सुराग़रासां नज़रें भाप लेती यह तीनों झूठ बोल रहें है....... तीनों चले गये। किसी ने भी न देखा कि वह कहां गये हैं। वह चलते ही चले गये। और शाम तक चलते ही रहे। कैम्प से दूर जहां कोई खतरा न था वे चट्टानों के अन्दर चले गये। वहां उन जैस अठारह आदमी बैठे थे इनका इन्तेज़ार कर रहे थे। इन तीन में जो अधेड़ उम्र का था वह मैगनान मारीयूस था। यह सलीबीयों की वह कमाण्डो पार्टी थी जिसे लड़कियों को आज़ाद कराने और अगर मुमकिन हो स के तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करने का मिश्न दिया गया था। इन तीनों ने कैम्प से कुछ और ज़रूरी मालूमात भी हासिल कर ली थीं। यह भी मालूम कर लिया था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी यहां नहीं है काहिरा में है। शद्दाद के साथ बातें करते जहां उन्हें यह मालूम हो गया था कि लड़कियां काहिरा को रवाना कर दी गई हैं। वहीं उन्होने यह भी मालूम कर लिया था कि उनके साथ पांच मर्द क़ैदी भी हैं।

यह पार्टी बड़ी कश्ती में आई थी। उन्होने कश्ती साहिल पर एक ऐसी जगह बांध दी थी जहां समुन्द्र चट्टान को काट कर अन्दर तक गया हुआ थां इन लोगो को अब काहिरा के लिये रवाना होना था मगर सवारी नही थी। यह तीन आदमी जो कैम्प में गये थे, यह भी देख आये थे कि इस फौज के घोड़े और ऊंट कहां बंधे हुये हैं। उन्होंने यह भी देखा था कि कैम्प से जानवर चोरी करना आसान नही। इक्कीस घोड़े या ऊंट चोरी नही किये जा सकते थे। अभी सूरज तुलू होने में बहुत देर थी। वह पैदल ही चल पड़े। अगर उन्हें सवारी मिल जाती तो वह कैदियों को रास्ते में ही जा लेने की कोशिश करते। अब वह यह सोंच कर पैदल चले कि काहिरा में जाकर कैदियों को छुड़ाने की कोशिश करेंगे। सब जानते थे कि यह ज़िन्दगी और मौत की मुहीम है। सलीबी फौज के सरबराह और शाहों ने उन्हें कामयाबी की सूरत में जो ईनाम देने का वादा किया था वह इतना ज़्यादा था कि कोई काम किये बग़ैर अपने कुंबों समीत सारी उम्र आराम और बेफिक्री की ज़िन्दगी बसर कर सकते थे। मैगनामारयुस को जैल ख़ाने से लाया गया था। उसे डाका ज़नी के जुर्म में तीन साल सज़ाये क़ैद दी गई थी। उसके साथ दो और क़ैदी भी थे जिन में एक की सज़ा चौबीस साल और दूसरे की सज़ा सत्ताईस साल थी। उस ज़माने में कैद खाने कसाब खाने होते थे। मुजरिम को इनसान नही समझा जाता था बड़ी ज़ालिमाना मुशक़्क़त दी जाती थीं और मवेशियों की तरह खाने को बेकार खुराक दी जाती थी। क़ैदी रात को भी आराम नही करते थे ऐसी क़ैद से मौत बेहतर थी। इन

तीनों से इनाम के अलावा सज़ा माफ करने का वादा किया गया था । सलीब पर हलफ ले कर उन्हें इस पार्टी में शामिल किया गया था जिस पादरी ने उनसे हल्फ लिया था उस ने उन्हें बताया था कि वह जितने मुसलमानों को क़त्ल करेंगे उस से दस गुना उनके गुनाह बख़्शे जायेंगे। और अगर उन्होंने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल किया तो उनके तमाम गुनाह बख़्श दिये जायेंगे और अगले जहान में खुदाये यसूअ मसीह उन्हें जन्नत में जगह देंगे।

यह मालूम नही था कि यह तीनों कैद खाने के जहन्नम से आज़ाद होने के लिये मौत की इस मुहीम में शामिल हुये थे या अगले जहांन जन्नत में दाखिल होने के लिये या ईनाम का लालच उन्हें ले आया था या वह नफरत जो उनके दिलों में मुसलमानों के खिलाफ डाली गई थी। बहर हाल वह अज़्म के पुख़ता मालूम होते थे और उनका जोश व खरोश बता रहा था कि कि वह कुछ कर के ही मिस्र से निकलेंगे या जानें कुर्बान कर देंगे। बाकी अठारह फौज के मुन्तखब आदमी थे। उन्हों ने जलते हुये जहाजों से जानें बचाई थीं और बड़ी मुश्किल से वापस गये थे। वे मुसलमानों से इस ज़लालत आमेज़ शिकस्त का इन्तेकाम लेना चाहते थे। ईनाम का लालच तो था ही । यही जज़्बा था जिस के जोश से वह अन देखी मंज़िल की सिम्त पहले ही चल पड़े थे।

❖

दोपहर के वक्त एक घोड़ा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हैडक्वार्टर के सामने रुका। घोड़े का पसीना फूट रहा था। और सवार के मुंह से थकन के मारे बात नहीं निकल रही थी। वह घोड़े से उतरा तो घोड़े का सारा जिस्म बड़ी ज़ोर से कांपा। घोड़ा गिर पड़ा और मर गया। सवार ने उसे आराम दिये बग़ैर और पानी पिलाये बग़ैर सारी रात और आधा दिन मुसलसल दौड़ाया था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुहाफिज़ों ने सवार को घेरे में ले लिया। उसे पानी पिलाया और जब वह बात करने के काबिल हुआ तो उस ने कहा कि किसी सालार या कमाण्डर से मिलवाओ। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी खुद ही बाहर आ गया था। सवार उसे देख कर उठा और सलाम करके कहा-" सुलतान का इक़बाल बुलन्द हो । बुरी ख़बर लाया हूं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उसे अन्दर ले गया और कहा-- " ख़बर जल्दी सुनाओ।"

"कैदी लड़कियां भाग गई हैं। हमारा पूरा दस्ता मारा गया है।" उस ने कहा-"मर्द कैदियो को हम ने जान से मार दिया है। मैं अकेला बच कर निकला हूं। मुझे यह मालूम नही कि हमलावर कौन थे। हम मशालों की रौशनी में और वह अंधेरे में । अन्धेरे से तीर आये और मेरे तमाम साथी खत्म हो गये।"

यह कैदियों के मुहाफिज़ों के दस्ते का वह आदमी था जो अन्धेरे में गायब हो गया था और सूडानियों का घोड़ा खोल कर भाग गया था उस ने घोड़े को बिना रोके सरपट दौड़ाया था और इतना तवील सफर आधे से थोड़े वक्त में तय कर लिया था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफियान और फौज के एक नायब सालार को बुलाया। वह आये तो इस आदमी से कहा कि वह अब सारी बातें सुनाये। उसने कैम्प से

रवानगी के वक़्त से बात शुरू की और अपने कमाण्डर के मुतअल्लिक़ बताया कि वह एक कैदी लड़की के साथ दिल बहलाता रहा और कैदियों से लापरवाह हो गया था। फिर रास्ते में जो कुछ होता रहा और आखिर में जो कुछ हुआ उस ने सुना दिया। मगर वह यह न बता सका कि हमलावर कौन थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफियान और नायब सालार से कहा–" इसका मतलब यह है कि सलीबी छापा मारा मिस्र के अन्दर मौजूद हैं।"

"हो सकता है।" अली बिन सुफियान ने कहा–" यह सहराई डाकू भी हो सकते हैं। इतनी खूबसूरत छे लड़कियां डाकुओं के लिये बड़ी कशिश थीं।"

"तुमने इस की बात ग़ौर से नहीं सुनी।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" इसने कहा कि मर्द कैदी लाशों के हथियार उठा लाये थे और मुहाफिज़ों को कत्ल करने लगे थे। मुहाफिज़ों में से दो ने उन्हें तीरों से हलाक कर दिया। उस के बाद उन पर हमला हुआ। इस से यही ज़ाहिर होता है कि सलीबी छापा मार उनके तआकुब में थे।"

"वह कोई भी थे सुलताने मोहतरम!" नायाब सालार ने कहा–"फौरी तौर पर करने वाले काम यह है कि इस असकरी को रहनुमाई के लिये साथ भेजा जाये और कम से कम बीस घोड़े सवार जो तेज़ रफतार हों तआकुब के लिये भेजे जायें। यह बाद की बात है कि वह कौन थें।"

"मैं अपने एक नायब को साथ भेजूंगा।" अली बिन सुफियान ने कहा।

"इस असकरी को खाना खिलाओ।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–"उसे थोड़ी देर आराम कर लेने दो। इतनी देर में बीस सवार तैय्यार करो और तआकुब में रवाना करो। अगर ज़रूरत समझो तो ज़्यादा सवार भेज दो।"

"मैं ने जहां से घोड़ा खोला था वहां आठ घोड़े बंधे हुये थे।" मुहाफिज़ ने कहा–" वहां कोई इन्सान नहीं था। हमलावर वहीं हो सकते हैं। अगर घोड़े आठ थे तो वह भी आठ होंगे।"

"छापा मारों की तादाद ज़्यादा नहीं हो सकती।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" और लड़कियां जासूस हैं। अगर तुम एक जासूस या छापा मार को पकड़ लो तो समझ लो कि तुम ने दुश्मन के दो सौ असकरी पकड़ लिये हैं। मैं एक जासूस को हलाक करने के लिये दुश्मन के दो सौ असकरियों को छोड़ सकता हूं। एक औरत किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती मगर एक जासूस और तखरीबकार औरत अकेली पूरे मुल्क का बेड़ा ग़र्क कर सकती है। यह लड़कियां बेहद खतरनाक हैं। अगर वह मिस्र के अन्दर रह गई तो तुम्हारा पूरे का पूरा लशकर बेकार हो जायेगे। एक जासूस या जासूसों को पकड़ने या जान से मारने के लिये अपने एक सौ सिपाही कुर्बान कर दो। यह सौदा फिर भी सस्ता है। छापा मार अगर न पकड़े जायें तो मुझे परवा नहीं इन लड़कियों को हर कीमत पर पकड़ना है। ज़रूरत समझो तो तीरों से उन्हें हलाक कर दो। जिन्दा निकल कर न जायें।"

एक घंटे के अन्दर अन्दर बीस तेज़ रफतार के सवार रवाना कर दिये गये। इनका रहनुमा मुहाफिज़ था और कमाण्डर अली बिन सुफियान का एक नायाब था। इन सवारों में फख़रूल मिस्री को अली बिन सुफियान ने खास तौर पर शामिल किया था। यह फख़र की खुशनसीबी

थी कि उसे बालियान और मौबी के तआकुब के लिये भेजा। यह तो न अली बिन सुफियान को इल्म था न फखरूल मिस्री को कि जिनके तआकुब में सवार जा रहे हैं वह बालियान ,मौबी और उनके छे फौज दार साथी हैं।

इधर से यह बीस सवार रवाना हुये जिन में इकीसवा उनका कमाण्डर था। उनका हदफ लड़कियां थी और उन्हें छुड़ाकर ले जाने वाले। उधर से सलीबियों के बीस कमाण्डो आये थे जिन में इकीसवां उनका कमाण्डर था। उनका भी हदफ यह लड़कियां थीं मगर उनमे कमज़ोरी यह थी कि वह पैदल आ रहे थे दोनों पार्टियों मे से किसी को भी मालूम नही था कि जिन्के तआकुब में वह जा रहे है। वह कहां हैं।

❖

सलीबीयों की कमाण्डो पार्टी अगले रोज़ सूरज गुरूब होने से कुछ देर पहले खासा फासला तय कर चुकी थी। रास्ता ऊपर चढ रहा था। वह इलाका नशेब व फराज़ का था। यह लोग बुलन्दी पर गये तो उन्हें दूर एक मैदान में जहां खुजूर के बहुत से दरख्त के साथ दूसरे किस्म के दरख्त भी थे। बे शुमार ऊंट घोड़े नज़र आये। उन्हें बिठा बिठा कर सामान उतारा जा रहा था। बारह चौदह घोड़े भी थे। इनके सवार फौजी मालूम होते थे। बाकी तमाम शुतरबान थे यह इक्कीस सलीबी रूक गये। उन्होंने एक दुसरे की तरफ देखा जैसे उन्हे यकीन आ रहा हो कि वे ऊंट और घोड़े हैं। यही उनकी ज़रूरत थी। इनके कमाण्डर ने पार्टी को रोक लिया और कहा–" हम सच्चे दिल से सलीब पर हाथ रख कर कसम खाते हैं। वे देखो सलीब का करिश्मा यह मौजज़ा है। खुदा ने आसमान से तुम्हारे लिये सवारी भेजी है। तुम में से जिसके दिल में किसी भी गुनाह का या फर्ज़ से कोताही का या जान बचा कर भागने का ख़्याल है वह फौरन निकाल दो। खुदा का बेटा जो मज़लूमों का दोस्त और ज़ालिमों का दुश्मन है तुम्हारी मदद के लिये आसमान से उतर आया है।"

सबके चेहरे पर थकान के जो आसार थे वह गायब हो गये और चेहरों पर रौनक आ गई। उन्होंने इस पहलू पर गौर ही नही किया था कि इतने बेशूमार ऊंट और घोड़ों में से जिनके साथ इतने ज़्यादा शुतरबान और फौज हैं वह अपनी अपनी ज़रूरत के मुताबिक जानवर किस तरफ हासिल करेंगे।

यह एक सौ के लगभग ऊंटो का काफिला था। जो मुहाज़ पर फौज के लिये राशन ले जा रहा था। चुकिं मुल्क के अन्दर दुश्मन का कोई खतरा नही था इस लिये काफ़िले की हिफाज़त का कोई खास इन्तेज़ाम नही किया गया था। सिर्फ दस घुड़ सवार साथ भेजे गये थे। शुतरबान निहत्थे थे। अभी छापा मार और शबखून मारने वाले मैदान में नही आये थे। सलीबीयों के यह इक्कीस आदमी पहले छापा मार थे या इस से पहले सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शबखून का वह तरीका आज़माया था जिसमें थोड़े से सवारों ने सूडानीयों की फौज के पिछले हिस्से पर हमला किया और गायब हो गये थे।

इस बार करो और भागो के तरीके में जंग की कामयाबी को देखते हुये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तेज़ रफतार, ज़हीन और जिस्मानी लिहाज़ से गैर मामूली तौर पर सेहत मंद

असकरियों के दस्ते तैय्यार करने को हुक्म दे दिया था और दुश्मन के मुल्क में लड़ाका जासूस भेजने की स्कीम भी तैय्यार कर ली थी। लेकिन सलीबीयों को अभी शबखून और छापों की नहीं सूझी थी। किसी बड़े काफिले को डाकू बाज़ औकात लूट लेते थे। सरकारी काफिले हमेशा महफूज़ रहते थे। इसी लिये फौजों के रस्द के काफिले बे खौफ व खतर के रवां दवां रहते थे। इस से पहले भी इसी मुहाज़ के लिये दोबार रसद के काफिले जा चुके थे और इसी इलाके से गुज़रे थे। लिहाजा हिफज़ती इकदामात की ज़रूरत नही समझी जाती थी।

यह काफिला भी खतरों से बेपरवाह मुहाज़ को जा रहा था और रात के लिये यहा पड़ाव कर रहा था। इस से थोड़ी हीदूर काफिले के लिये बहुत बड़ा खतरा आ रहा था। सलीबी कमाण्डर ने अपनी पार्टी को एक नशेब में बिठा लिया और दो आदमियों से कहा कि वह जा कर यह देखें कि काफिले में कितने ऊंट, कितने घोड़े, कितने मुसल्लाह आदमी और खतरे किया हैं। फिर वह रात को हमले करने की इसकीम बनायेगा। उनके पास हथियारों की कमी नही थीं। जज़्बे की भी कमी नही थी। हर एक आदमी जान पर खेलने को तैय्यार था।

निस्फ शब से बहुत पहले वह दो आदमी वापस आये जो काफिले को करीब से देखने गये थे। उन्होंने बताया कि काफिले के साथ दस मुसल्लह सवार हैं जो एक ही जगह सोये हुये हैं। घोड़े अलग बंधे हुये हैं। शुतरबान टोलियों में बट कर सोये हुये हैं। सामान में ज़्यादा बोरियां हैं। शुतरबानों के पास कोई हथियार नही।

यह बड़ी अच्छी मालूमात थी। काम मुश्किल नही था। काफिले वाले गहरी नींद सोये थे। सोये असकरियों की आखं भी न खुली कि तलवार और खंजरों ने उन्हें काट कर रख दिया। सलीबी छापा मारों ने यह काम इतनी खामोशी और आसानी से कर लिया कि बेशतर शुतरबानों की आखं ही न खुली और जिनकी आखं खुली वह समझ ही न पाये कि यह किया हो रहा है। जिसके मुंह से आवाज़ निकली वह उस की जिन्दगी की आखरी आवाज़ साबित हुई। छापा मारों ने शुतरबानो को हरांसा करने के लिये चींखना शुरू कर दिया। सोये हुये शुतरबान घबराये और हड़बड़ा कर उठे। ऊंट भी बिदक कर उठने लगे। सलीबीयों ने शुतरबानों का कत्ले आम करना शुरू कर दिया। बहुत थोड़े भाग सके। सलीबी कमाण्डर ने चिल्लाकर कहा—"यह मुसलमानों का राशन है। तबाह करदो। ऊंटों को भी हलाक कर दो।" उन्होंने ऊंटों के पेटों में तलवारें घोंपनी शुरू करदी। ऊंटो के चिल्लाने से रात कांपने लगी। कमाण्डर ने घोड़े देखे बारह थे दस सवरों के लिया और दो फालतू उस ने नौ ऊंट अलग कर लिये।

सूरज तुलू हुआ तो पड़ाव का मंजर बड़ा भयानक था। बेशूमार लाशें बिखरी हुई थी। बहुत से ऊंट मर चुके थेफ कई तड़प रहे थे। कुछ इधर उधर भाग गये थे। हर तरफ खून ही खून था। जिधर निगाह जाती थी ऊंट मरे हुये या तड़पते हुये नज़र आ रहे थे। राशन की बोरियां फटी हुई थीं। आटा और खाने का दिगर सामान खून में बिखरा हुआ था। बारह के बारह घोड़े गायब थे और वहां कोई ज़िंदा इनसान मौजूद नही था। छापा मार दूर निकल गये थे। इनकी सवारी की ज़रूरत पूरी हो गई थी अब वह तेज़ रफतारी से अपने शिकार को ढूंढ

सकते थे।

❖

शिकार दूर नही था। बालियान का दिमाग़ पहले ही मौबी के हुस्न व जवानी और शराब ने माउफ कर रखा था। अब इस के पास सात हसीन जवान लड़कियां थीं। वह ख़तरों को भूल ही गया था। मौबी उसे बार बार कहती थी कि इतना ज़्यादा कहीं रूकना ठीक नहीं, जितनी जल्दी हो सके समुन्द्र तक पहुंचने की कोशिश करो, हमारा तआकुब हो रहा होगा। मगर बालियान बे फिक्र बादशाह की तरह कहकहा लगा कर उस की बातें सुनी अन सुनी कर देता था। लड़कियों को जिस रात आजा़द कराया गया था उस से अगली रात वह एक जगह रूके हुये थे। बालियान ने मौबी से कहा कि हम सात मर्द हैं और तुम सात लड़कियां हो। मेरे इन छ दोस्तों ने मेरा साथ बड़ी दियानतदारी से दिया है इनकी मौजूदगी में तुम्हारे साथ रंग रलियां मनाता रहा फिर भी वह नही बोले। अब मैं उन्हे ईनाम देना चाहता हू। तुम एक एक लड़की मेरे एक एक दोस्त के हवाले कर दो और उन्हें कहो कि यह तुम्हारी वफा दारी का तोहफा है।

"यह नही हो सकता।" मौबी ने गुस्से से कहा–" हम फाहिशा नही हैं। मेरी मजबूरी थी कि मैं तुम्हारे हाथ खिलौना बनी रही। यह लड़कियां तुम्हारी ख़रीदी हुई लोंडी नही हैं।"

"मैंने तुम्हें किसी वक़्त भी शरीफ लड़की नही समझा।" बालियान ने शहाना जलाल से कहा–"तुम सब हमारे लिये अपने हुस्नों का तोहफा लाई हो। यह लड़कियां मालूम नही कितने मर्दों के साथ खेल चुकी है। उनमें एक भी मेरी नही है।"

"हम अपना फर्ज़ पूरा करने के लिये जिस्मों का तोहफा देतीं हैं। मौअबी ने कहा–" हम अयाशी के लिये मर्दो के पास नही जातीं। हमें हमारी कौ़म और हमारे मज़हब ने एक फर्ज़ सोंपा है। इस फर्ज़ की अदायगी के लिये हम अपना जिस्म अपना हुस्न और अपनी इज़्ज़त को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करतीं हैं। हमारा फर्ज़ पूरा हो चुका है। अब तुम जो कुछ कह रहे हो यह अय्याशी है जो हमें मंजूर नही। जिस रोज़ हम अय्याशी में उलझेंगे। उस रोज़ से सलीब का ज़वाल शुरू हो जायेग। सलीब टूट जायेगी। हम अपनी इस्मत के शीशे को तोड़ देती हैं ताकि सलीब न टूटे। हमें ट्रेनिंग दी गई है कि मुसलमान सरबराह को तबाह करने के लिये दस मुसलमानों के साथ रातें बसर करना जायज़ है और कारे सवाब है। मुसलमानों के एक मज़हबी पेशवा को अपने जिस्म से नापाक करने को हम एक अज़ीम कारे खैर समझते हैं।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम सलीब की बका के लिये मुझे इसतेमाल कर रही हो।" बालियान के एहसासात आहिस्ता आहिस्ता जागने लगे।" क्या तुम मुझे सलीब का मुहाफिज़ बनाना चाहती हो?"

"क्या तुम अभी तक शक में हो?" मौबी ने कहा–" तुमने सलीब के साथ क्यों दोस्ती की ह?"

"सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हुकुमरानी से आजा़द होने के लिये।" बालियान ने कहा–"सलीब की हिफाज़त के लिये नहीं। मैं मुसलमान हू लेकिन इस से पहले मैं सूडानी

हूं।"

"मैं सब से पहले सलीबी हूं।" मौबी ने कहा–" ईसाई हूं। और इस के बाद उस मुल्क की बेटी हूं जहां मैं पैदा हुई थी।" मौबी ने उसका हाथ अपने हाथ में ले कर कहा–" इसलाम कोई मज़हब नहीं। इसी लिये तुम अपने मुल्क को इस पर तरजीह दे रहे हो। यह तुम्हारी नही तुमहारे मज़हब की कमज़ोरी है। तुम मेरे साथ समुन्द्र पार चलो तो मैं तुम्हें अपना मज़हब दिखाउंगी। तुम अपने मज़हब को भूल जाओगे।"

"मैं इस मज़हब पर लानत भेज दुंगा जो अपनी बेटियों का ग़ैरों के साथ रातें बसर करने और शराब पीने पिलाने को सवाब का काम समझती हैं" बालियान अचानक बेदार हो गया। उसने कहा–" तुमने अपनी इस्मत मुझ से नही लुटाई बल्कि मेरी इस्मत लूटी है। मैं ने तुम्हें नहीं बल्कि तुम ने मुझे खिलौना बनाये रखा है।"

"एक मुसलमान का ईमान खरीद ने के लिये इस्मत कोई ज़्यादा कीमती नही।" लड़की ने कहा–"मैं ने तुम्हारी इस्मत नही लूटी ।तुम्हारा ईमान खरीदा है मगर तुम्हें रास्ते में भटकता हूआ छोड़ कर नहीं जाउंगी। तुम्हें एक अज़ीम रौशनी की तरफ ले जा रही हूं जहां तुम्हें अपना मुसतकबिल और अपनी आकबत हीरों की तरह चमकती नज़र आयेगी।

"मैं उस रौशनी में नहीं जाऊंगा।" बालियान ने कहा–

" देखो बालियान!" मौबी ने कहा–" मर्द, जंगजू मर्द वादे और सौदे से फिरा नहीं करते। तुम मेरा सौदा कबूल कर चुके हो। मैंने तुम्हारा ईमान खरीद कर शराब में डूबो दिया है और तुम्हें मुहं मांगी कीमत दी है। इतने दिनों से तुम्हारी लौंडी और बे निकाही बीवी बनी हूई हूं। इस सौदे से फिरो नही। एक कमजोर लड़की को धोका न दो।"

"तुम ने मुझे वह अज़ीम रौशनी यहीं दिखा दी है जो तुम मुझे समुन्द्र पार ले जा कर दिखाना चाहती हो।" बालियान ने कहा–" मुझे अपने मुसतकबिल और अपनी आकबत हीरों की तरह चमकती नज़र आने लगी है"........ मौबी ने कुछ कहने की कोशिश की तो बालियान गरज कर बोला।" खामोश रहो लड़की! सुलातन सलाहुद्दीन अय्यूबी मेरा दुश्मन हो सकता है। लेकिन मै उस रसूल का दूश्मन नही हो सकता जिसका सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी भी नाम लेवा है। मैं उस रसूल के नाम पर मिस्र और सूडान कुर्बान कर सकता हूं। उस के अज़ीम और मुकद्दस नाम पर मैं सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के आगे हथियार डाल सकता हूं।"

"मैं तुम्हें कई बार कह चुकी हूं। कि शराब कम पिया करो।" मौबी ने कहा–" एक शराब दूसरे रात भर जगाना और मेरे जिस्म के साथ खेलते रहना। देखो तुम्हारा दिमाग़ बिलकुल बेकार हो गया है। तुम यह भी भूल गये हो कि मैं तुम्हारी बीवी हूं।"

"मैं किसी फाहिशा सलीबी का खाविन्द नही हो सकता।" उसकी नज़र शराब की बोतल पर पड़ी उस ने बोतल उठा कर परे फैंक दी और उठ खड़ा हुआ। उस ने अपने दोस्तों को बुलाया। वह दौड़ते आये। उस ने कहा–" यह लड़कियां और यह लड़की भी तुम्हारी कैद में है। इन्हें वापस काहिरा ले चलो।"

"काहिरा? एक ने हैरान होकर कहा।" आप काहिरा जाना चाहते हैं?"

"हां !" उस ने कहा--" काहिरा! हैरान होने की ज़रूरत नही । इस रैगिसतान में कब तक भटकते रहोगे? कहां जाओगे? चलो। घोड़ों पर ज़ीनें कसो और हर लड़की को एक कए घोड़े की पीठ पर बांध कर ले चलो।"

❖

सेहरा में ऊंट का सफर बे आवाज़ होता है। घोड़ों के टापों की हलकी हलकी आवाजें सुनाई देती है लेकिन ऊंट के पावं खुदा ने ऐसे बनाये हैं कि हलकी हलकी आवाज़ भी पैदा नही होती है। बालियान जिस वक्त मीबी के साथ था बातें कर रहा थ उसे महसूस तक न हुआ एक ऊंट एक छोटे से रेतीले टीले की ओट में खड़ा दोनों को और छः लड़कियों को और छे आदमियों को देख रहा है । वह सलीबी कमाण्डो पार्टी का एक आदमी था। इस पार्टी का कमाण्डर अकलमन्द आदमी था। बालियान के डेरे से तकरीबन निस्फ मील दूर इस ने पडाव किया था। उसके वहम व गुमान में भी नही था कि उसका शिकार उस से निस्फ मील दूर खड़ा है। उस ने फौजी दानिशमन्दी से काम लेते हुये रात को तीन आदमियों को यक ड्यूटी दी थी कि वह ऊंटों पर सवार हो कर दूर दूर तक घूम आये और जहां उन्हें कोई खतरा या काम की कोई चीज़ नज़र आये आकर इत्तेला दे। इस काम के लिये ऊंट ही वहां सवारी थी क्योंकि उसके पावं की आवाज़ नही होती। तीनों सवार मुख़्तलिफ सिम्तों को चले गये थे। यह सारा इलाका ऐसा था कि पड़ाव के लिये निहायत अच्छा था, इस लिये कमाण्डर ने सोंचा था कि यहां किसी और ने भी डेरा डाल रखा होगा।

एक शुतर सवार को रौशनी सी नज़र आई तो वह उस तरफ चल पड़ा। यह एक छोटी मशाल थी जो बालियान के आरज़ी कैम्प में जल रही थी। शुतर सवार आगे गये तो एक टीले के पीछे हो गया। यह इतना ही ऊंचा था जितना ऊंट पर सवार हो कर आगे देखा जा सकता था। ऊंट और सवार उसके पीछे छुप गये थे। उसे हलकी हलकी रौशनी में लड़कियां नज़र आई जो बालियान के फौजी दसते के साथ गप शप लगा रही थी। उन से कुछ दूर एक और लड़की एक आदमी के साथ बातें करती नज़र आई । ज़रा परे बहुत से घोड़े बंधे हुये थे। उनमें वह घोड़े भी थे जो इन लोंगों ने कैदियों के मुहाफिज़ों को कत्ल करके हासिल किये थे।

सलीबी सवार ने ऊंट को मौड़ा। कुछ दूर तक आहिसता आहिसता चला और फिर ऊंट दौड़ा दिया। ऊंट के लिये यह निस्फ मील का फासला कुछ भी नही था। सवार ने अपनी पार्टी को खुशखबरी सुनाई कि शिकार हमारे कदमों में है। कमाण्डर ने एक लम्हं भी जाये न किया। शुतर सवार से हदफ की तफसील पूछी और पार्टी को पैदल चला दिया। घौड़ों के कदमों की आवाज़ से शिकार के चौकन्ने हो जाने का खत्रा था..... जिस वक़्त यह पार्टी बालियान के डेरे तक पहुंची बालियान हुक्म दे चूका था कि एक एक लड़की को घोड़ों की पीठ पर बांध दो। उसके दोस्त हैरत ज़दा होकर उस को देख रहे थे। कि उसका दिमाग़ तो खराब नही हो गया। उन्होंने उसके साथ बहस शुरू करदी और वक़्त ज़ाया होता रहा। बालियान ने बड़ी मुश्किल से उन्हें कायल किया कि वह जो कुछ कह रहा है होश ठिकाने रख कर कह रहा है और काहिरा चले जाने मे ही मसलेहत और आफियत है। लड़कियां परिशानी

के आलम में उसे देख रही थी। बालियान के आदमियों ने घोड़ों पर ज़ीने डाली और लड़कियों को पकड़ लिया। अचानक उन पर आफत टूट पड़ी। बालियान ने बुलन्द आवाज से बार बार कहा–" हम हथियार डालना चाहते हैं। लड़कियों को काहिरा ले जा रहे है।" वे हमलावरों को सुलातान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज समझ रहे थे लेकिन एक खंजर उसके दिल मे उतार कर उसे खामोश कर दिया। उसके दोस्त इतने ज़्यादा आदमियों के अचानक हमले का मुकाबला न कर सके। संभलने से पहले ही खत्म हो गये। सलीबीयों का छापा कामयाब था। लड़कियां आज़ाद हो चुकी थी। छापा मार उन्हें फौरन अपनी जगह ले गये। उन्हो ने कमाण्डर को पहचान लिया। वह भी इनकी पार्टी का जासूस था। उन्होंने रात वहीं बसर करने का फैसला किया और पहरे के लिये दो संतरी खड़े कर दिये जो डेरे के इर्द गिर्द घूमने लगे।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के भेजे हुये सवार इस जगह से अभी दूर थे जहां से कैदी लड़कियां बालियान के आदमियों से रिहा कराई गई थीं। रात को भी चले जा रहे थे। वह तआकुब में वक्त जाया करना नहीं चाहते थे। रहनुमा उनके साथ था। वह रास्ते और जगह भूला नही था। वह उन्हें उस जगह ले गया जहां उन पर हमला हुआ था एक मशाल जला कर देखागया। वहां रॉबिन और उसके साथी की लाशें और उनकी मुहाफिज़ों की लाशें पड़ी थीं। यह चीरी फाड़ी और खाई हुई थी। इस वक़्त भी उन्हें सेहराई लोमड़ियां और गीदड़ खा रहे थे। सवारों को देख कर यह दरिंदे भाग गये। दिन के वक्त उन्हें गिद्ध खाते रहे थें मुहाफिज़ अपने कमाण्डर को उस जगह ले गया जहां से उस ने घोड़ा खोला था। वहां से मशाल की रौशनी में ज़मीन देखी गई घोड़ों के कदमों के निशान नज़र आ रहे थे और सिम्त की निशान देही कर रहे थे जिधर यह गये थे मगर रात के वक़्त उन निशानों को देख देख कर चलना बहुत मुश्किल था। वक़्त ज़ाया होने का और भटक जाने का डर था। रात को वहीं कयाम किया गया।

सलीबी पार्टी के कैम्प में सब जाग रहे थे। वह बहुत खुश थे। कमाण्डर ने फैसला किया था कि सहर की तारीकी मे बहरे रोम की तरफ रवाना हो जायेंगे। इस वक़्त मैगनामारीयूस ने कहा कि मकसद अभी पूरा नहीं हुआ। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का कत्ल करना बाकी है कमाण्डर ने कहा कि यह उस सूरत में मुमकिन था कि वह लड़कियों के पीछे काहिरा चले जाते। अब वह काहिरा से बहुंत दूर हैं इस लिये कत्ल की मुहीम ख़त्म की जाती है।

"यह मेरी मुहीम है जिसे मौत के सिवा कोई खत्म नहीं कर सकता।" मैगनामारियूस ने कहा–"मैने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करने का हल्फ उठाया था। मुझे एक साथी और एक लड़की की ज़रूरत है।"

"यह फैसला मुझे करना है कि हमें किया करना है।" कमाण्डर ने कहा–" सब पर फर्ज़ है कि मेरा हुक्म माने।

"मैं किसी के हुक्म का पाबन्द नही।" मैगनामारियूस ने कहा–" तुम सब खुदा के हुक्म के

पाबन्द हो।"

कमाण्डर ने उसे डाट दिया। मैगनामारियूस के पास तलवार थी। वह उठ खड़ा हुआ और कमाण्डर पर तलवार सूंत ली। उनके साथी दरमियान में आ गये। मैगनामारियूस ने कहा—"मैं। खुदा का धितकारा हुआ इन्सान हूं। मैं गुनाह और बे इन्साफी के दर्मियान भटक रहा हूँ। क्या तुम जानते हो कि मुझे तीस सालों के लिये कैदख़ाने में बन्द क्यों किया गया था? पांच साल गुज़रे मेरी एक बहन जिसकी उम्र सौलह साल की थी अग़वा कर ली गई थी। मैं ग़रीब आदमी हूं मेरा बाप मर चुका है। माँ अंधी है। मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं। मेहनत मुशक्कत करके मैं इन सब का पेट पालता था। मैं ने गिर्जे में सलीब पर लटके हुये युसूअ मसीह के बुत से बहुत दफा पूछा था कि मैं ग़रीब क्यों हूं। मैं ने कभी गुनाह नही किया। मैं ईमानदारी से इतनी मेहनत करता हूं मगर मेरे कुन्बे के पेट फिर भी खाली रहते है। मेरी माँ को खुदा ने क्यों अंधा किया है? यसुअ मसीह ने मुझे क्यों जवाब नही दिया और जब कुवांरी बहन अगवा हुई तो मैने गिर्जे में जाकर कुंवारी मरियम की तसवीर से पूछा था की मेरी कुंवारी बहन के ऊपर तुझे तरस क्यों नही आया? वह मासूम थी। उस पर खुदा ने यह जुल्म कि ा कि उसे खूबसूरती दे दी थी। मुझे यसूअ मसीह ने कभी कोई जवाब नही दिया। मुझें कुवारी मरियम ने भी कोई जवाब नही दिया.............

"एक रोज़ मुझे एक बहुत ही अमीर आदमी के नौकर ने बताया कि तुम्हारी बहन उस अमीर आदमी के घर में है। वह अय्याश आदमी है। कुवांरियों का अगवा करता है। थोड़े दिन उनके साथ खेलता है और उन्हें कहीं गायब कर देता है। लेकिन आदमी बादशाह के दरबार में बैठता है। लोग उस की इज़्जत करते हैं। बादशाह ने उसे रूतबे की तलवार दी है गुनाह गार होते हुये भी खुदा उस पर खामोश है। दुनियां का कानून उसके हाथ का खिलौना है.... .... मैं उसके घर गया और अपनी बहन वापस मांगी। उस ने मुझे धक्के देकर अपने महल से निकाल दिया। मैं फिर गिर्जे में गया। युसूअ मसीह के बुत और कुंवारी मरियम की तसवीर के आगे रोया। खुदा को पुकारा। मुझे किसी ने जवाब नही दिया। मै। गिर्जे में अकेला था। पादरी आ गया। उस ने मुझे डांट कर गिर्जे से निकाल दिया। कहने लगा—" यहां से दो तसवीरें चोरी हो गई हैं। निकल जाओ वारना पूलिस के हवाले कर दुंगा। मैं ने हैरान होकर उस से पूछा —"क्या यह खुदा का घर नही है?" उस ने जवाब दिया—" तुम मुझ से पूछे बग़ैर खुदा के घर में कैसे आगये। अगर गुनाहों की माफी मांगनी हो तो मेरे पास आओ। अपना गुनाह ब्यान करो। मैं खुदा से कहुंगा कि तुम्हें बख्श दे। तुम खुदा से बराहे रास्त कोई बात नही कर सकते। जाओ निकल जाओ यहां से, और मेरे दोस्त! मुझे खुदा के घर से निकाल दिया गया।"

वह एसे लहजे में बोल रहा था कि सब पर सन्नाटाा तारी हो गया। लड़कियों के आंसू निकल आये। सेहरा की रात के सुकूत में उसकी बातों का तअस्सुर सब पर तिलसिम बन कर तारी हो गया।

वह कह रहा था —" मैं पादरी को, युसूअ मसीह के बुत को, कुवांरी मरियम की तसवीर

को और उस खुदा को जो मुझे गिर्जे में नज़र नही आया शक की नज़र से देखता निकल आया। घर गया तो माँ ने पूछा। "मेरी बच्ची आई या नहीं? मेरी बीवी ने पूछा। मेरे बच्चों ने पूछा। मैं भी बुत और तसवीर की तरह चुप रहा मगर मेरे अन्दर से एक तुफान उठा और मैं बाहर निकल आया। मैं सारा दिन घूमता फिरता रहा। शाम के वक़्त मैं ने एक खंजर खरीदा और दरिया के किनारे टहलता रहा। रात अंधेरी हो गई और बहुत देर बाद मैं एक तरफ चल पड़ा। मुझे उस महल की बत्तियां नज़र आई जहां मेरी बहन कैदी थी। मैं इतना चलाक और होशियार आदमी नही था। लेकिन मुझमें चलाकी आ गई। मैं पिछले दरवाज़े से अन्दर चला गया। महल के किसी कमरे में शौर शराबा था। शायद कुछ लोग शराब पी रहे थे। मैं एक कमरे में दाखिल हुआ तो एक नौकर ने मुझे रोका। मैने खंजर उसके सीने पर रख दिया और अपनी बहन का नाम बता कर पूछा कि वह कहां है। नौकर मुझे अन्दर के सीढ़ीयों से ऊपर ले गया और एक कमरे में दाख़िल करके कहा यहां है। मैं अन्दर गया तो मेरे पीछे दरवाज़ा बन्द हो गया। कमरा खाली था..........

"दरवाज़ा खुला और बहुत से लोग अन्दर आ गये। उनके पास तलवारें और डंडे थे। मैं ने कमरे की चीज़ें उठा उठा कर उन पर फैंकनी शुरू कर दी। बहुत तोड़ फोड़ की। उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मुझे मारा पीटा और मैं बेहोश हो गया। होश में आया तो मैं हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। मेरे खिलाफ इलज़ाम यह था कि मैने डाका डाला, बादशाह के दरबारी का घर बर्बाद किया और तीन आदमियों को कत्ल की नियत से ज़खमी किया। मेरी फरयाद किसी ने न सुनी और मुझे तीस साल सज़ाये कैद दे कर कैद खाने के जहन्नम में फेंक दिया। अभी पांच साल पुरे हुये हैं। मैं इनसान नही रहा। तुम कैद खाने की सखतियां नही जानते। दिन के वक्त मशीनो जैसा काम लेते हैं और रात को कुत्तों की तरह जंजीर डाल कर कोठरियों में बन्द कर देते हैं। मुझे मालूम नही था कि मेरी अंधी माँ ज़िन्दा है या मर चुकी है। बीवी बच्चों का भी कुछ पता न था। मुझे खतरनाक डाकू समझ कर किसी से मिलने नही दिया जाता था......

"मैं हर वक्त सोचता रहता था कि खुदा सच्चा है या मैं सच्चा हूँ। सुना था कि खुदा बे गुनाहों को सज़ा नही देता। मगर मुझे खुदा ने किस गुनाह की सज़ा दी थी? मेरे बच्चों को किस गुनाह की सज़ा दी थी? .... मैं पांच साल इसी उलझन में मुबतला था। कुछ दिन गुज़रे फौज के दो अफसर कैद खाने में आये। वह इस काम के लिये जिस पर हम आये हुये हैं। आदमी तलाश कर रहे थे। मै। अपने आप को पेश नही करना चाहता था क्योंकि ये बादशाहों के लड़ाई झगड़े थे। मुझे किसी बादशाह के साथ दुशमनी नही थी। लेकिन मैं ने सुना कि चन्द एक ईसाइ लड़कियों को मुसलमानो की कैद से आज़ाद कराना है तो मेरे दिल में भी अपनी बहन का खयाल आ गया। हमें बताया गया था कि मुसलमान क़ाबिले नफरत कौम है। मैं ने यह इरादा किया कि मैं ईसाई लड़कियों को मुसलमानो की कैद से आज़ाद कराऊंगा तो खुदा अगर सच्चा हे तो मेरी बहन को उस ज़ालिम ईसाई के पन्जे से छुड़ा देगा। फिर फौजी अफसरों ने कहा कि एक मुसलमान बादशाह को कत्ल भी करना है तो मैं ने उसे जज़ा

का काम समझा और अपने आप को पेश कर दिया मगर शर्त यह रखी के मुझे इतनी रकम दी जाये जो मै। अपने कुन्बे को दे सकूं। उन्होंने रकम देने का वादा किया और यह भी कहा कि अगर तुम समुन्द्र पार मारे गये तो तुम्हारे कुन्बे को इतनी ज़्यादा रक़म दी जायेगी कि सारी उम्र के लिये वह किसी के मोहताज नही रहेंगे।

उस ने अपने साथियों की तरफ इशारा किया कि –"ये दो मेरे साथ कैद खाने में थे। उन्होंने भी अपने आप को पेश कर दिया । हम से सैकड़ों बातें पूछी गई। हम तीनों ने उन्हें यक़ीन दिला दिया कि हम अपनी कौम और अपने मज़हब को धोखा नही देंगें। मैं ने दर असल अपने कुन्बे के लिये अपनी जान फरोख्त कर दी है। कैद खाने से निकलने से पहले एक पादरी ने हमें बताया कि मुसलमानों का कत्ल तमाम गुनाह बखशवा देता है और ईसाई लड़कियों को मुसलमानों की कैद से आज़ाद करवाओगे तो सीधे जन्नत में जाओगे। मैं ने पादरी से पूछा कि खुदा कहां है? उस ने जो जवाब दिया उस से मेरी तसल्ली नही हुई । मै ने सलीब पर हाथ रख कर हल्फ उठाया। हमें बाहर लाया गया मुझे मेरे घर ले गये। अब मेरे दोस्त! मुझे अपना हल्फ पूरा करना है। मैं देखना चाहता हूं कि मेरा खुदा कहां हैं। क्या एक मुसलमान बादशाह को कत्ल कर के खुदा नज़र आ जायेगा।"

"तुम पागल हो ।" एक कमाण्डो ने कहा–"तुम ने जितनी बातें की हैं। उनमे अक़ल की ज़रा सी भी बू नही आई।"

"उस ने बड़ी अच्छी बातें की हैं।" उसके एक साथी ने कहा–"मैं इस का साथ दुंगा।"

"मुझे एक लड़की की ज़रूरत है।" मैगनामारियूस ने लड़कियों की तरफ देख कर कहा–"मैं लड़की की जान और इज़्ज़त का ज़िम्मेदार हूं। लड़की के बग़ैर मैं सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास नहीं पहुंच सकुंगा। मैं जब से आया हू सोंच रहा हूं कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ तन्हाई में किस तरह मिल सकता हूं।"

मौबी उठ कर उस के साथ खड़ी हुई और बोली–"मैं इसके साथ जाऊंगी।"

"हम तुम्हें बड़ी मुश्किल से आज़ाद कराके लाये हैं मौबी।" कमाण्डर ने कहा–"मैं तुम्हे ऐसी खतरनाक मुहिम पर जाने की इजाज़त नही दे सकता।"

"मुझे अपनी इस्मत का इन्तेक़ाम लेना है।" मौबी ने कहा–"मैं सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की खवाब गाह में आसानी से दाखिल हो सकती हूं। मुझे मालूम है कि मुसलमान का रुतबा जितना ऊंचा होता है वह खुबसूरत लड़कियों का उतना ही ज़्यादा शैदाई हो जाता है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को महसूस तक न होगा कि वह अपनी ज़िन्दगी में आखरी लड़की देख रहा है।"

बहुत देर की बहस और तकरार के बाद मैगनामारियूस अपने एक साथी और मौबी के साथ अपनी पार्टी से रुखसत हुआ। सब ने उन्हे दुआओं के साथ अलविदा कहा। उन्होंने दो ऊंट लिये। एक पर मौबी सवार हुई और दूसरे पर दोनों मर्द। उनके पास मिस्र के सिक्के थे और सोने की अशरफियां भी। दोनो मर्दों ने चौग़े उठा लिये। मैगानामारियुस की दाढ़ी खासी लम्बी हो गई थी। कैद खाने के धूप में मुशक्कत कर कर के उसका रंग इटली के

बाशिन्दों की तरह गौरा नही रहा था। काला रंग हो गया था। इस से उस पर ये शक नही किया जा सकता था कि वह यूरोपी है। भेस बदलने के लिये उन्हें कपड़े दे कर भेजा गया था। मगर एक रूकावट थी जिस का बज़ाहिर कोई ईलाज नही थां वह यह की मैगनामारियूस इटली की ज़बान के सिवा और कोई ज़बान नही जानता था। मौबी मिस्र की ज़बान बोल सकती थी। दूसरा जो आदमी उनके साथ गया था। वह भी मिस्र की ज़बान नही जानता थां। उन्हे इसका कोई ईलाज करना था।

वह रात को ही चल पड़े। मौबी रास्ते से वाकिफ हो चुकी थी। वह काहिरा से ही आई थी। मैगनामारियुस ने उस पर भी एक चौगा डाल दिया और उसके सिर पर डुपट्टे की तरह चादर उढ़ा दी।

❖

सुबह की रौशनी में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के उन सवारों का दस्ता जो उनके तआकुब मे गया था घोड़ों के खुर देख कर रवाना हो गया। यह बहुत से घोड़ों के निशान थे जो छुप नही सकते थे। सुबह से पहले सलीबीयों की पार्टी लड़कियों को साथ लेकर चल पड़ी। उनकी रफतार खास तौर पर तेज़ थी। उनके तआकुब मे जाने वालों का सफर रूक गया क्यों कि रात के वक्त वो ज़मीन को नही देख सकते थे मगर सलीबीयों ने सफर जारी रखा। वह आधी रात के वक़्त पड़ाव करना चाहते थे, वह बहुत जल्दी में थे।

सुबह के धुंधलके मे सलीबी जो आधी रात के वक़्त रूके थे चल पड़े। उनके तआकुब में जाने वालों की पार्टी सुबह की रौशनी में रवाना हुई। मैगनामारियूस ने अकलमंदी की थी वह ऊंट पर गया था। ऊंट भूक और प्यास की परवाह नही करता था। रूके बग़ेर घोड़े की निस्बत बहुत ज़्यादा सफर कर लेता है। इस से मैगनामारियूस कासफर तेजी से तै हो रहा था।

सूरज गूरूब होने में अभी बहूत देर थी। जब उन्हें लाशें नज़र आई। अली बिन सुफियान के नाईब ने बालियान की लाश पहचान ली। उसका चेहरा सलामत था। उसके करीब उसके छे दोस्त की लाशें पड़ी थीं। गिद्धो और दरिंदों ने ज़्यादा तर गौश्त खा लिया था। सवार हैरान थे कि यह क्या मामला है। खून बताता था कि इन्हें मरे हुये ज़्यादा दिन नही हुये। अगर यह बग़ावत की रात मरे होते तो खून का निशान न होता और उनकी सिर्फ हड्डियां रह जाती। यह एक मुअम्मा था जिसे कोई न समझ सका। वहां से फिर घोड़ों के निशान चले। सवारों ने घोड़े दौड़ा दिये। निस्फ मिल तक गये तो ऊंटों के पाव के निशान भी नज़र आये। वह बढ़ते ही चले गये। सूरज गुरूब हुआ तो भी नही रुके क्योंकि अब मिट्टी के ऊंचे ऊंचे टीलों का इलाका शुरू हों गया था जिस में एक रास्ता बल खाता हुआ गुज़रता था। इसके अलावा वहां से गुज़रने का और कोई रास्ता नही था।

सलीबी इसी रास्ते से गुज़रे थे और बहरे रोम की तरफ चले जा रहे थे। टीलों का इलाका दूर तक फैला हुआ था। वहां से तआकुब करने वाले निकले तो रूक गये क्योंकि आगे रेतीला मैदान आ गया था।

सुबह के वक़्त चले तो किसी ने कहा कि समुन्द्र की हवा आने लगी है। समुन्द्र दूर नही था मगर सलीबी अभी तक नज़र नही आये थे। रास्ते मे एक जगह खाने के बचे कुछे टुकड़ों से पता चला कि रात यहां कुछ लोग रुके थे। घोड़े भी यहां बांधे गये थे। फिर यह घोड़े वहां से चले। ज़मीन को देख कर तआकुब करने वालों ने घोड़ों को ऐड़ लगा दीं। सूरज अपना सफ़र तैय करता गया और आगे निकल गया। घोड़ों को एक जगह आराम दिया गया। पानी पिलाया और यह दस्ता रवाना हो गया। समुन्द्र की हवायें तेज़ हो गइ थीं और उनमें समुन्द्र की बू साफ महसूस होती थी। फिर साहिल की चट्टाने नज़र आने लगीं। ज़मीन बता रही थी कि घोड़े आगे आगे जा रहे हैं। और यह बे शुमार घोड़े हैं।

साहिल की चट्टानें घोड़ों की रफतार से करीब आ रही थीं। तआकुब करने वालों को चट्टान पर दो आदमी नज़र आये, वह इस तरफ देख रहे थे। वह तेज़ी से समुन्द्र की तरफ उतर गये। घोड़े और तेज़ हो गये। चट्टानो के करीब गये तो उनहें घोड़े रोकने पड़े क्यों क कई जगहों से चट्टानो के पीछे जाया जा सकता था। एक आदमी को चट्टान पर चढ़ कर आगेदेखने को भेजा गया। वह आदमी घोड़े से उतर कर दौड़ता गया और एक चट्टान पर चढ़ने लगा। ऊपर जा कर उस ने लेट कर दूसरी तरफ देखा और पीछे हट आया। वहीं से उस नें सवारों को इशारा किया कि पैदल आओ। सवार घोड़ों से उतरे और दौड़ते हुये चट्टान तक गये। सब से पहले अली बिन सुफियान का नाईब ऊपर गया। उस ने आगे देखा और दौड़ कर नीचे उतरा। उस ने अपने दस्ते को बिखेर दिया और उन्हें मुखतलिफ जगह पर जाने को कहा।

दूसरी तरफ से घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ें आ रही थीं। सलीबी वहां मौजूद थे। यह वह जगह थी जहां समुन्द्र चट्टानो को काटकर अन्दर आ जाता था। इस पार्टी ने अपनी कश्ती वहां बांधी थी। वह घोड़ों से उतर कर कश्ती में सवार हो रहे थे। कश्ती बहुत बड़ी थी। लड़कियां कश्ती में सवार हो चुकी थीं। घोड़े चढ़ा दिये गये थे। अचानक उन पर तीर बरसने लगे। तमाम को हलाक नही करना था। उन्हे ज़िन्दा पकड़ना था। बहुत से कश्ती मे कुद गये और कश्ती के चप्पू मारने लगे। पीछे जो रह गये वह तीरों का निशाना बन गये थे। कश्ती में जाने वालों को ललकारा गया मगर वह न रुके। वहां समुन्द्र गहरा था। कश्ती आहिसता आहिसता जा रही थी। इधर से इशारे पर तीर अन्दाज़ों ने कश्ती पर तीर बरसा दिये। चप्पुओं की हरकत बन्द हो गई। तीरों की दूसरी बाढ़ गइ। फिर तीसरी और चौथी बाढ़ लाशों मे पैवस्त हो गई। उनमे अब कोई जिन्दा न था। कश्ती वहीं डोलने लगी। समुन्द्र की मौजें साहिल कीतरफ आतीं और चट्टानों से टकरा कर वापस चली जाती थीं। ज़रा सी देर में कश्ती साहिल पर वापस आ गई। सवारों ने नीचे जा कर कश्ती पकड़ ली। वहां सिर्फ लाशें थीं। लड़कियां भी मर चुकी थीं। बाज़ को दो दो तीर लगे थे।

कश्ती को बांध दिया गया और सवारों का दस्ता महाज़ की तरफ रवाना हो गया। कैम्प दूर नही था।

❖

मैगनामारियूस काहिरा की एक सराय में रुका हुआ था। इस सराय का एक हिस्सा आम और कमतर मुसाफिरों के लिये था और दूसरा हिस्सा अमीर और ऊंचे हैसियत के मुसाफिरों के लिये। इस हिस्से में दौलत मंद ताजिर भी कयाम किया करते थे। उनके लिये शराब और नाचने गाने वालियां भी मुहय्या की जाती थी। मैगनामारियूस इसी खास हिस्से में ठहरा। मौबी को उस ने अपनी बीवी बताया और अपने साथी को मुलाज़िम। बीवी की खूबसूरती और जवानी ने सराय वालों पर मैगनामारियूस का रोब तारी कर दिया। एसी हसीन और जवान बीवी किसी बूढ़े दौलत मंद की हो सकती थी। सराय वालों ने उस की तरफ खूसूसी तवज्जो दी। मौबी ने अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करके सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के घर और दफतर के मुतअल्लिक मालूमात हसिल कर ली। उस ने यह भी मालूम कर लिया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सूडानीयों को माफी दे दी है और सूडानी फौज तोड़ दी है। उसे यह भी पता चल गया कि सूडानी सालारों और कमाण्डरों वग़ैरा के हरम खाली कर दिये हैं और यह भी कि उन्हें ज़रई ज़मीन दी जा रही है।

यह मैगनामारियूस की ग़ैर मामूली दिलेरी थी या ग़ैर मामूली हिमाकत के वह इस मुल्क की ज़बान तक नहीं जानता था। फिर भी इतने खतरनाक मिशन पर आ गया था। उसे इस किस्म के कत्ल की और इतने बड़े रूतबे के इनसान तक रसाई हासिल करने की ट्रेनिंग नही दी गई थी। वे ज़िहनी लिहाज़ से इनतशार और खल्फशार का मरीज़ था। फिर भी वे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करने आया जिसके इर्द गिर्द मुहाफिज़ों का पूरा दस्ता मौजूद रहता था इसके दस्ते के कमाण्डरने उसे कहा था कि तुम पागल हो। तुम ने जितनी बातें की हैं इनमें मुझे ज़रा सी भी अकल की बू नहीं आई। बज़ाहिर मैगनामारियूस पागल ही था।

यह एक तारीख़ी हकीकत है कि बड़े आदमियों को कत्ल करने वाले उमूमन पागल ही होते हैं। अगर पागल नही तो उनके ज़िहनी तवाज़ून में कुछ न कुछ गड़ बड़ ज़रूर होती है। यही कैफियत इस इटली के सज़ा याफता आदमी की थी। उसके पास एक हथियार ऐसा था जो ढाल का काम भी दे सकता था। यह थी मौबी। मौबी मिस्र की सिर्फ ज़बान ही नही जानती थी। बल्कि उसे और उसकी मरी हुई छे साथी लड़कियों को मिस्र और अरबी मुसलमानों के रहन सहन, तहज़ीब व तमीज़ और दीगर मुआशराती ऊंचे नीचे के मुतअल्लिक लम्बे अरसे के लिये ट्रेनिंग दी गई थी। वह मुसलमान मर्दों की नफसियात से भी वाकिफ थी। आदाकारी की माहिर थी और सब से बड़ी खूबी यह कि वह मार्दो को उंगलियों पर नचाना और बवक्ते ज़रूरत अपना पूरा जिस्म नंगा करके किसी मर्द को पेश करना भी जानती थी।

यह तो कोई भी नही बता सकता कि बन्द कमरे में मैगनामारियूस, मौबी और इनके साथी ने क्या बातें की और क्या मन्सूबा बनाया। अलबत्ता ऐसा सबूत पूरानी तहरीरों में मिलता है कि तीन चार रोज़ सराय में क़याम के बाद मैगनामारियूस बाहर निकला, तो उस की डाढ़ी ढीली ढाली थी। उसके चेहरे का रंग सुडानीयों की तरह गहरा बादामी था जो मसनूई हो सकता था लेकिन मसनूई लगता ही नही था। उस ने मामुली किस्म का चौगा और सिर पर मामूली किस्म का रूमाल और अमामा बांध रखा था। मौबी सिर से पांव तक सियाह बुरका नुमां

लिबास में थी और उसके चेहरे पर बारिक नकाब इस तरह पड़ा था कि होंठ और ठोढ़ी ढकी हुई थी। पेशानी तक चेहरा नंगा था। पेशानी पर उस के भूरे रेशमी बाल पड़े हुये थे। उनका साथी मामुली से लिबास में था जिससे पता चलता था कि नौकर है। सराय के बाहर दो निहायत आली नसल के घोड़े खड़े थे। यह सराये वालों ने मैगनामारियूस के लिये उजरत पर मंगवाये थे क्योंकि उस ने कहा था कि वह अपनी बीवी के साथ सैर के लिये जाना चाहता है। मैगनामारियूस और मौबी घोड़ों पर सवार हो गये और जब घोड़े चले तो उनका साथी नौकर की तरह पीछे पीछे चल पड़ा।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने नाईबीन को सामने बिठाये सुडानीयों के मुतअल्लिक अहकमात दे रहा था। वह यह काम बहुत जल्दी खत्म करना चाहता था क्योंकि उस ने फैसला कर लिया था कि सुलतान ज़ंगी की भेजी हुई फौज, मिस्र की नई फौज और वफादार सूडानीयों को साथ मिला कर एक फौज बनायेंगे और फौरी तौर पर योरूशलम पर चढ़ाई करेंगे। बहरे रोम की शिकस्त के बाद जब कि सुलतान ज़ंगी ने फ्रैन्क को भी शिकस्त दे दी थी। एक लम्बे अरसे तक सलीबीयों के संभलने का कोई इमकान नही था उनके संभलने से पहले ही सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी योरूशलम छीन लेने का मनसूबा बना चुका था। इस से पहले वह सूडानीयों को ज़मीनों पर आबाद कर देना चाहता था कि खेती बाड़ी में उलझ जायें और इनकी बग़ावत कामयाब न रहे।

नई फौज की तनज़ीमे नौ और हज़ार हा सुडानीयों का ज़मीनों पर आबाद करने का काम आसान नही था। इन दोनों कामों में खतरा यह था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज और अपनी इन्तेज़ामिया में ऐसे आला ऑफिसर मौजूद थे जो उसे मिस्र की इमारत के सरबराह की हैसियत से नही देख सकते थे। सूडानीयों की फौज को तोड़ कर भी सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने खिलाफ खतरा पैद कर लिया था। इस फौज के कुछ आला हुक्काम जिन्दा थे। उन्होंने सुलतान की इताअत कुबूल कर ली थी मगर अली बिन सुफियान की इन्टेलीजेन्स बता रही थी कि बग़ावत की राख में अभी कुछ चिंगारियां मौजूद हैं।

इन्टेलिजेन्स की रिर्पोट यह भी थी कि इन बाग़ी सरबराहों को अपनी शिकस्त का इतना अफसोस नही जितना सलीबीयों की शिकस्त का ग़म है क्योंकि वह बग़ावत दब जाने के बाद भी सलीबीयों से मदद लेना चाहते थे और मिस्र की इन्तेज़ामिया और फौज के दो तीन आला हुक्काम को सूडानीयों की शिकस्त का अफसोस था क्योंकि वह आस लगाये बैठे थे कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मारा जायेगा या भाग जायेगा। यह इमान फरोशों का टोला था, लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का ईमान मज़बूत था। उस ने मुखालिफीन से वाकिफ होते हुये भी उनके खिलाफ कोई कारवाई न की। उनके साथ और खुलूस से पेश आता रहा। किसी महफिल में उसने उनके खिलाफ कोई बात नही की और जब कभी उसने मातेहतों से और फौजों से खिताब किया तो ऐसे अलफाज़ कभी न कहे, कि मैं अपने मुखालिफीन को मज़ा चखा दूंगा। कभी उनकी शान में धमकी आमेज़ या तन्जीया अलफाज़ इस्तेमाल नही

किये। अलबत्ता ऐसे अलफाज़ अकसर उसके मुंह से निकले थे--" अगर किसी साथी को ईमान बेचता देखो तो उसे रोको।उसे याद दिलाओ कि वह मुसलमान है और उसके साथ मुसलमानों जैसा सुलूक करो ताकि वह दुश्मन के असर से आज़ाद हो जाये"-- लेकिन दरपरदा वह मुखालिफीन की सरगर्मियों से बाख़बर रहता था। अली बिन सुफियान का मुहकमा बहुत ही ज़्यादा मसरूफ होता गया था सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को ज़ेरे ज़मीन सियासत की इत्तेलायें बाक़ायदा से दी जा रहीं थीं।

अब इस मुहकमे की ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ गई थी। मुहाफिज़ों और शुतर बानों के कत्ल की इत्तेला भी काहिरा आ चुकी थी। इस से पहले जासूसों का गिरोह जिसमें लड़कियां भी थीं, मुहाफिज़ों से नामालूम अफराद ने आज़ाद कर लिया था। इन दो वाकिआत ने यह साबित कर दिया था कि मुल्क में सलीबी जासूस और छापा मार मौजूद हैं और यह भी ज़ाहिर होता था कि उन्हें यहां के बाशिन्दों की पुश्त पनाही और पनाह हासिल था। अभी यह इत्तेला नही पहुंची थी कि छापा मारों और लड़कियों को ऐन उस वक़्त ख़त्म कर दिया गया है जब वह कश्ती में सवार हो रहे थे। छापा मारों की सरगर्मियों को रोकने के लिये फौज के दो दस्ते सारे इलाके में गश्त के लिये गुज़िश्ता शाम रवाना कर दिये गये और इन्टेलीज़ेन्स के निज़ाम को और ज़्यादा वासीअ कर दिया गया था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी काफी परेशान भी था। वह क्या अज़्म लेकर मिस्र में आया था और अब सलतनते इसलामिया के इसतेहकाम और वुसअत के लिये उस ने क्या क्या मनसूबे बनाये थे मगर उसके खिलाफ ज़मीन के ऊपर से भी और ज़मीन के नीचे से भी ऐसा तूफान उठा था कि उसके मनसूबे लरज़ने लगे थे। उसे परेशानी यह थी मुसलमान की तलवार मुसलमान की गर्दन पर लटक रही थी। ईमान नीलाम होने लगा था। सलतनते इसलामिया कि खिलाफत भी साज़िशों के जाल में उलझ कर साज़िशों का हिस्सा और आलाकार बन गइ थी। ज़न और ज़र ने अरब की सरज़मीन को हिला डाला था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी इस से भी बेखबर नही था कि उसे कत्ल करने की साज़िश हो रही है लेकिन इस पर वह कभी परेशान नही हुआ था। कहा करता था कि मेरी जान अल्लाह के हाथों मे है। उसकी ज़ात बारी को जब ज़मीन पर मेरा वजूद बेकार लगेगा तो मुझे उठा लेगा। लिहाज़ा उस ने अपने तौर पर अपनी हिफाज़त का कभी फिक्र नही किया था। यह तो उसकी फौजी इन्तेज़ामिया का बन्दोबस्त था कि उसके गिर्द मुहाफिज़ों के दस्ते और इन्टेलिजेन्स के आदमी मौजूद रहते थे और अली बिन सुफियान तो इस मामले में बहुत चौकस था। एक तो यह उसकी डियूटी थी, दूसरे यह कि वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अगर पैग़म्बर नही तो अपना पीर व मुर्शिद ज़रूर समझता था। उस रोज़ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी नाईब अमीर को अहकामात और हिदायातें दे रहा था। जब दो घोड़े उसके मुहाफिज़ दस्ते की बनाई हुई हद पर रूके। उन्हें मुहाफिज़ों के कमाण्डर ने रोक लिया था। सवार मैगनाभारियूस और मौबी थे। वह घोड़ो से उतरे तो घोड़ों की बागें उन के साथी ने थाम लीं। मौबी ने कमाण्डर से कहा कि वह अपने बाप को साथ लाई है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से

मिलना है। कमाण्डर ने मैगनामारियूस से बातें कीं और मुलाकात की वजह पूछी। मैगनामारियूस ने जैसे उसकी बात सुनी ही नही हो। वह यह ज़बान समझता ही नही था। मौबी ने अपना नाम इसलामी बताया था। उस ने कमाण्डर से कहा–" इस से बात करना बेकार है। यह गुंगा और बहरा है........ मुलाकात का मकसद हम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को या उसके किसी ऑफिसर को बतायेंगे।

अली बिन सुफियान बाहर टहल रहा था। उस ने मैगनामारियूस और मौबी को देखा तो उनके पास आया। उस ने अस्सलामो अलैकुम कहा। तो मौबी ने वालैकुम अस्सलाम कहा। कमाण्डर ने उसे बताया कि यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिलना चाहते हैं। अली बिन सुफियान ने मैगनामारियूस से मुलकात की वजह पूछी तो मौबी ने उसे भी कहा कि यह मेरे बाप हैं गूंगे और बहरे हैं। अली बिन सुफियान ने उन्हें बताया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी बहुत मसरूफ हैं। फारिग़ हो जायेंगे तो उन से मुलाकात का वक़्त लिया जायेगा। उस नेकहा–" आप मुलाकात का मकसद बताऐं। हो सकता है आप का काम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिले बग़ैर हो जाये। सुलतान छोटी छोटी शिकायतों के लिये मुलाकात का वक़्त नही निकाल सकते। मुतअल्लिका मुहकमा अज़ खुद ही शिकायत रफा कर दिया करता है।"

"क्या सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी इसलाम की एक मज़लूम बेटी की फरयाद सुनने के लिये वक़्त नही निकाल सकेंगे?" मौबी ने कहा–" मुझे जो कुछ कहना है वह मैं उन्हीं से कहुंगी।

"मुझे बताये बग़ैर आप सुलतान से नही मिल सकेंगी।" अली बिन सुफियान ने कहा–" मैं सुलतान तक आपकी फरयाद पहुंचा दुगा। वह ज़रूरी समझेंगे तो आप को अन्दर बुला लेंगे।" अली बिन सुफियान उन्हें अपने कमरे में ले गया।

मौबी ने शिमाली इलाके के किसी क़स्बे का नाम ले कर कहा–" दो साल गुज़रे सूडानी फौज वहां से गुज़री । मैं भी लड़कियों के साथ फौज देखने के लिये बाहर आ गई। एक कमाण्डर ने अपना घोड़ा मोड़ा और मेर पास आकर मेरा नाम पूछा। मैने बताया तो उस ने मेरे बाप को बुलाया । उसे परे ले जाकर कोई बात की। किसी ने कमाण्डर से कहा कि यह गुंगा है और बहरा है। कमाण्डर चला गया। शाम के बाद चार सूडानी फौज मेरे घर आये और मुझे ज़बरदसती उठा कर ले गये और कमाण्डर के हवाले कर दिया। उस का नाम बालियान है। वह मुझे अपने साथ ले आया और हरम में रख लिया। उसके पास चार और लड़कियां थीं। मैं ने उस से कहा कि मेरे साथ बाकायादा शादी कर ले लेकिन उसने मुझे शादी के बग़ैर ही बीवी बनाये रखा। दो साल उस ने मुझे अपने पास रखा। सूडानी फौज ने बग़ावत की तो बालियान चला गया। मालूम नही मारा गया है या कैद में है। आप की फौज उसके घर आई और हम सब लड़कियों को यह कह कर घर से निकाल दिया कि तुम सब आज़ाद हो............

"मैं अपने घर चली गई । मेरे बाप ने शादी करनी चाही तो सब ने मुझे कुबूल करने से इन्कार कर दिया। कहते हैं कि यह हरम की चूसी हुई हड्डी है। वहां के लोगो ने मेरा जीना

हराम कर दिया है। हम सराय में ठहरे हैं। सुना था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी सूडानीयों को ज़मीन और मकान दे रहे है। मुझे आप बालियान की फाहिशा या उसकी बीवी समझ कर यहां ज़मीन और मकान दे दें ताकि मैं उस कस्बे से निकल आऊं। वरना मैं खुद कुशी कर लुंगी या घर से भाग कर कहीं तवाएफ बन जाउंगी।"

"अगर आपको ज़मीन सुलतान से मिले बेगेर मिल जाये तो सुलतान से मिलने की क्या ज़रूरत है?" अली बिन सुफियान ने कहा।

"हाँ!" मौबी ने कहा—" फिर भी मिलने की ज़रूरत है। इसे आप अक़ीदत भी कह सकते हैं। मैं सुलतान को सिर्फ यह बताना चाहती हूं कि उस की सलतनत में औरत खिलौना बनी हुई है। दौलत मंदों और हाकिमों के हाथों शादी का रिवाज़ खत्म हो गया है। खुदा के लिये औरत की इज़्ज़त का बचाओ और औरत की अज़मत बहाल करो। सुलतान से यह कह कर शायद मेरे दिल को सुकून आ जायेगा।"

मैगनामारियूस इस तरह खामोश बैठा रहा जैसे उसके कान में कोई बात नही पड़ रही। अली बिन सुफियान ने मौबी से कहा कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इजलास से फरिग़ होने दें फिर उनसे मुलकात की इजाज़त ली जायेगी। यह कह कर अली बिन सुफियान बाहर निकल गया। वह बहुत देर बाद आया और कहा कि वह सुलतान से इजाज़त लेने जा रहा है। वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कमरे में चला गया और खासी देर बाद आया। उस ने मौबी से कहा कि अपने बाप को सुलतान के पास ले जाओ। उस ने उन्हें सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का कमरा दिखा दिया। कमरे में दाखिल होन से पहले दोनों ने बाहर की तरफ देखा। वह ग़ालिबन क़त्ल के बाद वहां से निकलने का रास्ता देख रहे थे।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी कमरे में अकेला था। उस ने दोनों को बिठाया और मौबी से पुछा—" क्या तुम्हारा बाप पैदाईशी गुंगा और बहरा है?"

"हाँ सुलताने मिस्र"— मौबी ने जवाब दिया—" यह इसका पैदाईशी नुक्स है।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी बैठा नही, कमरे में टहलता रहा और बोला—" मैं ने तुम्हारी शिकायत और मुतालबा सुन लिया है। मुझे तुम्हारे साथ पूरी हमर्ददी है। मैं तुम्हें यहां ज़मीन भी दूंगा और मकान भी बनवा दुंगा। सुना है तुम कुछ और भी मुझ से कहना चाहती हो।"

"अल्लाह आपका इकबाल बुलन्द करे।" मौबी ने कहा—" आप को बता दिया गया होगा कि मेरे साथ कोई आदमी शादी नही करता। लोग मुझे हरम की चूसी हुई हड्डी, फाहिशा और बदकार कहते है। और मेरे बाप को कहते हैं कि उस ने बेटी बेच डाली थी। आप मुझे ज़मीन और मकान तो दे दें लेकिन मुझे एक खाविन्द की ज़रूरत है जो मेरी इज़्ज़त की रखवाली करे...... "उसने झिझक कर कहा —" मैं ऐसी बात कहने की जुर्रअत नही कर सकती लेकिन अपनी माँ की गुज़ारिश आप तक पहुंचाना चाहती हूँ कि आप अगर मेरी शादी नही करा सकते तो मुझे अपने हरम में रख लें। क्या मैं आपके क़ाबिल नही हूँ?" यह कह कर उस ने मैगनामारियूस के कन्धे पर एक हाथ रख कर दूसरा हाथ अपने सीने पर रखा और

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ इशारा किया। यह इशारा शायद पहले ही से तय शुदा था। मैगनामारियूस ने दोनों हाथ जोड़ कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ किये और फिर मौबी का हाथ पकड़ कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरफ बढ़ाये जैसे वह यह कह रहा हो कि मेरी बेटी को कुबूल कर लो।

"मेरा कोई हरम नही लड़की!" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा—" मैं मुल्क से हरम कहवा खाने और शराब खत्म कर रहा हूं।" बात करते करते उस ने अपनी जैब से एक सिक्का निकाला और हाथ में उछालने लगा। उस ने कहा—"मैं औरत की इज़्ज़त का मुहाफिज़ बनना चाहता हूँ।" यह कहते हुये वह दोनों के पीठ पीछे चला गया। और सिक्का हाथ से गिरा दिया। टन की आवाज़ आई तो मैगनामारियूस ने चौंक कर पीछे देखा और फिर फौरन ही सामने देखने लगा।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तेज़ी से अपने कमर बन्द से एक फुट का खंजर निकाल कर उसकी नोक मैगनामारियूस की गर्दन पर रख दी और मौबी से कहा—" यह शख्स मेरी ज़बान नही समझता। उसे कहो कि अपने हाथ से अपना हथियार फैंक दे। इसने ज़रा सी पस व पेश की तो यहीं से तुम दोनों की लाशें उठाई जायेंगी।"

मौबी की आंखे हैरत और खौफ से खुल गई। उसने आदाकारी का कमाल दिखाने की कोशिश की और कहा—" मेरे बाप को डरा धमका कर आप मुझ पर क्यों कब्ज़ा करना चाहते हैं। मैं तो खुद ही अपने आपको पेश कर रही हूँ।"

" तुम जब मुहाज़ पर मेरे सामने आई थीं तो तुम मेरी ज़बान नही जानती थीं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा और खंजर की नोक मैगनामारियूस की गर्दन पर रख रखी। उस ने कहा—" क्या तुम इतनी जल्दी यहां की ज़बान बोलने लगी हो?...... इसे कहो फौरन हथियार बाहर फैंक दे।"

मौबी ने अपनी ज़बान में मैगनामारियूस से कुछ कहा तो उसने चोगे के अन्दर हाथ डाल कर खंजर बाहर निकाला जो इतना ही लम्बा था जितना सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस के हाथ से खंजर ले लिया और अपना खंजर उसकी गर्दन से हटा कर कहा—" बाकी छे लड़कियां कहां हैं?"

"आप ने मुझे पहचानने में ग़लती की है।" मौबी ने कांपती हुई आवाज़ में कहा—"मेरे साथ और कोई लड़की नही है। आप कौन सी छे लड़कियों की बात कर रहे हैं?"

"मुझे खुदा ने आखें दी हैं"—सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा—" और खुदा ने मुझे ज़िहन भी दिया है जिस में वह चेहरे नक़्श हो जाते हैं जिन्हें एक बार आखें देख लेती हैं। तुम्हारा चेहरा जो आधा नक़ाब में है मैं ने पहले भी देखा है........ तुम्हें और तुम्हारे इस साथी को खुदा ने इतना नाकिस ज़ेहन दिया है कि जिस काम के लिये तुम आई थी तुम उस क़ाबिल नही हो। सराय में तुम दोनों खाविन्द और बीवी थे। यहां आकर तुम बाप और बेटी बन गये मगर तुम हो कुछ भी नही और तुम्हारा एक साथी बाहर घोड़ों के पास खड़ा है वह तुम्हारा नौकर नही। उसे गिरफतार कर लिया गया है।

यह कमाल अली बिन सुफियान का था। उसे मौबी ने बताया था कि वे सराये में ठहरे हुये हैं। वह इन दोनों को अपने कमरे में बिठाकर बाहर निकल गया। और घोड़े पर सवार हो कर सराय मे चला गया था। सराय वालों से उनका हुलया बताकर पूछा तो उसको बताया गया था कि मियां बीवी हैं और उन के साथ उनका नौकर है। उसे यह भी बताया गया था उन्होने बाज़ार से कुछ कपड़े खरीदे थे जिन में लड़की का बुरका नुमा चोगा और जूते भी थे। उन्हों ने अली बिन सुफियान से कहा था कि वह मियां बीवी हैं। उस ने और कोई तफतीश नही की। उनके कमरे का ताला तोड़ कर उनके समान की तलाशी ली। उस में से चन्द एसी चीज़ें व समान बरामद हुआ जिन्हों ने शक को यकीन में बदल दिया। अली बिन सुफियान समझ गया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से उनका तन्हाई में मिलने का मतलब क्या हो सकता है। उसने उनके घोड़े देखे थे। आला नस्ल के तेज़ रफतार घोड़े थे। सराय वालों से उनके घोड़ों के मुतअल्लिक पूछा गया। तो उसने बाताया कि यह तीनो मुसाफिर ऊंट पर आये थे। और घोड़े लड़की ने यह कहकर मंगवाये थे कि अच्छे हो और तेज़ रफतार हो। सराय वाले ने यह भी बताया कि लड़की का खाविन्द गुंगा है और नौकर भी गुंगा मालूम होता है। वह किसी से बात नही करता। दर असल वह भी यहां की ज़बान नही जानता था।

अली बिन सुफियान ने वापस आकर देखा कि इजलास खत्म हो गया है तो वह सुतलान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास चला गया। उसे इन्के मुतअल्लिक बताया और वह कहानी भी सुनाई जो लड़की ने उसे सुनाई थी। फिर सराये से जो मालूमात उसने हासिल की थीं और उनके समान से जो मश्कूक चीज़ें बरामद की थीं वह दिखाई और अपनी राए दी कि आप को कत्ल करने आये हैं। आप से तन्हाई में मिलना चाहते हैं। इन्होंने यह मनसूबा बनाया होगा कि आप को क़त्ल करके निकल जायेंगे। जितनी देर मे किसी को पता चलेगा उतनी देर में वह तेज़ रफतार से घोड़ों पर सवार हो कर शहर से दूर जा चुके होंगे और यह भी हो सकता है कि यह लोग आप को इतनी खूबसूरत लड़की के चक्कर में डाल कर खवाबगाह में क़त्ल करना चाहते हों।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी सोंच में पड़ गया। फिर कहा–" इन्हें अभी गिरफतार न करो। मेरे पास भेज दो।"

अली बिन सुफियान ने उन्हें अन्दर भेज दिया और खुद सुलतान के कमरे के दरवाज़े से लग कर खड़ा रहा। उस ने मुहाफिज़ दस्ते के कमाण्डर को बुला कर कहा। –" उन दोनों घोड़ों को अपने घोड़ों के साथ बांध दो। और ज़ीनें उतार दो उनके साथ जो आदमी है उसे अपनी हिरासत में बिठा लो।" उसकी तलाशी लो उसके कपड़ों के अन्दर खंजर होगा। वह उस से ले लो।"

इन अहकाम पर अमल हो गया। मैगनामारियूस का साथी गिरफतार हो गया। उस से एक खंजर बरामद हुआ। घोड़ों पर भी कब्ज़ा कर लिया गया।

और जब उन्हें सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कमरे में दाखिल किया गया तो बातों बातों में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक सिक्का फर्श पर फेंक कर यकीन कर लिया कि यह

शख्स बहरा नही। सिक्के की आवाज़ पर उसने फौरन पीछे मुड़ कर देखा था।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने लड़की से कहा–" इसे कहो कि मेरी जान सलीबीयों के खुदा के हाथों मे नही मेरे अपनें खुदा के हाथ में है।"

मौबी ने अपनी ज़बान में मैगनामारियूस से बात की तो उस ने चौंक कर कुछ कहा। मौबी ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहा –" यह कहता है, क्या आपका खुदा कोई और है और क्या मुसलमान खुदा को मानते हैं?"

"इसे कहो कि मुसलमान उस खुदा को मानते हे। जो सच्चा है और सच्चे अकीदे वालों को अजीज रखता है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मुझे किसने बताया कि तुम दोनों मुझे कत्ल करने आये हो?..... मेरे खुदा ने ।अगर तुम्हरा खुदा सच्चा होता तो तुम्हारा खंजर मुझे हलाक कर चूका होता ।मेरे खुदा ने तुम्हारा खंजर मेरे हाथों में दे दिया है।" उस ने एक तलवार कहीं से निकाली और चन्द और चीज़ें इन्हें दिखा कर कहा–" यह तलवार और चीज़ें तुम्हारी हैं। यह तुम्हारे साथ समुन्द्र पार से आई है। तुम से पहले यह मुझ तक पहुंच गई है।"

मैगनामारियूस हैरत से उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखें उबल कर बाहर आ गई जितनी बातें हुई वह मौबी के वास्ते से हुई मैगनामारियूस ने बोलना शुरू कर दिया और वह सिर्फ अपनी ज़बान बोलता समझता था। खुदा के मुतअल्लिक यह बातें सुन कर उसने कहा–" यह शख्स सच्चा अकीदे का मालूम होता है। मैं इसकी जान लेने आया था लेकिन अब मेरी जान इसके हाथों में है। इसे कहो कि तुम्हारे सीने में जो खुदा है ।वह मुझे दिखायें। मैं उस खूदा को देखना चाहता हूँ जिसने इसे इशारा दिया है कि हम इसे कत्ल करने आये हैं।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास इतनी लम्बी चौड़ी बातों का वक़्त नही था। उसे चाहिये था कि इन दोनों को जल्लाद के हवाले कर देता लेकिन उस ने देखा कि यह शख्स भटका हुआ मालूम होता है। अगर ये पागल नही तो ये ज़िहनी तौर पर गुमराह ज़रूर है। चुनांचे उस ने उसके साथ दोस्ताना अन्दाज़ से बातें शुरू कर दीं। इस दौरान अली बिन सुफियान अन्दर आ गया ।वह देखना चाहता था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी खैरियत से तो है, सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुसकुराकर कहा–" सब ठीक है अली! मैं ने इन से खंजर ले लिया है।" अली बिन सुफियान सुकून की आह भर कर बाहर चला गया।

मैगनामारियूस ने कहा–" इसके पहले कि सुलतान मेरी गर्दन तन से जुदा करदें, मैं अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाने की मोहलत चाहता हूँ।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इजाज़त दे दी। मैगनामारियूस ने बिल्कुल वही कहानी जो रात सेहरा में उस ने अपनी पार्टी कमाण्डर और अपने साथियों को सुनाई थीं, हूबहू सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुनाई। इस बार उस ने सलीब पर लटकती हूई हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम के बुत, कवांरी मरियम की तसवीर और पादरियों के उस खुदा से जिन से वह पादरी की इजाज़त के बगैर बात भी नही कर सकता था , बेज़ारी का इज़हार और ज़्यादा

शिद्दत से किया और कहा–" मरने से पहले मुझे खुदा की एक झलक दिखा दो। मेरे खुदा ने बच्चों को भूखा मार दिया है। मेरी माँ को अन्धा कर दिया है। मेरी बहन को शराबी व हशीशों का कैदी बना दिया है और मुझे तीस सालों के लिये कैद खानें में बन्द कर दिया है, मैं वहां से निकला तो मौत के मुंह में आ पड़ा। सुलतान! मेरी जान तेरे हाथ में है, मुझे सच्चा खुदा दिखा दे, मैं उस से फरियाद करूंगा। उस से इनसाफ मागूंगा।

"तेरी जान मेरे हाथ में नहीं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मेरे खुदा के हाथ में है। अगर मेरे हाथ में होती तो इस वक्त तक तुम मेर जल्लाद के पास होते मैं तुम्हें वह सच्चा खुदा दिखा दुगां। जा तेरी गर्दन मारने से मुझे रोके रहा है। लेकिन तुझे इस खुदा का सच्चा अकीदा कुबूल करना होगा। वरना खुदा तुम्हारी फरियाद नही सुनेगा और ना इन्साफी भी नही मिलेगी।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उसका खंजर उसकी गौद में फेंक दिया और खुद उस के पास जाकर उसकी तरफ पीठ कर के खड़ा हो गया। मौबी से कहा–" उसे कहो मैं अपनी जान उस के हवाले करता हूँ। यह खंजर मेरी पीठ में घोंप दे।"

भैगनामारियुस ने खंजर हाथ में ले लिया। उसे गौर से देखा। सुलातान सलाहुद्दीन अय्यूबी की पीठ पर निगाह दौड़ाई, उठा और सुलतान के सामने चला गया। उसे सर से पावं तक देखा। यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की जलाली शख्सियत का असर था या सुलतान की आँखों की चमक में उसे सच्चा खुदा नज़र आ गया कि उसके हाथ कांपे। उस ने खंजर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कदमों में रख दिया। वह दो जानों बैठ गया और सुनलतान का हाथ चूम कर ज़ारो कतार रोने लगा। मौबी से कहा–" इस से कहो कि यह खुदा है या इस ने खुदा को अपने सीने में कैद कर रखा है। इस से कहो मुझे अपना खुदा दिखा दो।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे उठाया और सीने से लगा कर अपने हाथ से उसके आँसू पोंछे।

❖

वह तो भटका हुआ इन्सान था। उस के दिल में मुसलमानों के खिलाफ नफरत भर दी गई थी और इसलाम के खिलाफ ज़हर डाला गया था। फिर हालात ने उसे अपने मज़हब से बेज़ार किया। यह एक किस्म का पागल पन था और एक तिशनगी थी जो उसे एसी खतरनाक मुहीम पर ले आई थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उसे बे गुनाह समझता था लेकिन उसे अज़ाद भी न किया बल्कि अपने पास रख लिया। मौबी बाकायदा ट्रेंनिंग लेकर आई थी। और जासूस थी। यह वह सातवीं लड़की थी जिस ने सलीबीयों का पैगाम सूडानीयों तक पहुंचाया और बगावत कराई थी। वह मुल्क की दुश्मन थी। उसे इसलामी कानून बख्श सकता था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे और उसके साथी को अली बिन सुफियान के हवाले कर दिया। तफतीश में दोनो ने इकबाले जुर्म कर लिया और यह भी बता दिया कि रसद के काफिले को उन्होंने ही लूटा था और लड़कियों को भी उन्होंने आजाद कराया और मुहाफिज़ दसते को हलाक किया था और बालियान और उसके साथियों को भी उन्होंने हलाक किया था।

यह तफतीश तीन दिन जारी रही। इस दर्मियान मैगनामारियूस का दिमाग रौशन हो चुका था। एक बार उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से पूछा–" क्या आपने उस लड़की को मुसलमान करके हरम में दाखिल कर लिया है?"

"आज शाम को इस सवाल का जवाब दूंगा।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जवाब दिया।

शाम के वक़्त सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मैगनामारियूस को साथ लिया और कुछ दूर ले जा कर एक अहाते में ले गया। लकड़ी के दो तखते पड़े थे। उन पर सफेद चादरें पड़ी थीं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने चादरों को एक तरफ से उठा दिया और मैगनामारियूस को दिखाया। उसके चेहरे का रंग बदल गया। उसके सामने मौबी की लाश पड़ी थी और दूसरे तखते पर उसके साथी की लाश पड़ी थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मौबी के सर पर हाथ रख कर पीछे खींचा। गर्दन कन्धे से जुदा थी। उस ने मैगनामारियूस से कहा–" मैं इसे बख्श नही सकता था। तुम इसे अपने साथ लाये थे कि मैं उस के हुस्न और जिस्म पर फिदा हो जाऊंगा मगर इसका जिस्म मुझे ज़र्रा भर अच्छा नही लगता था। यह नापाक जिस्म था। यह अब मुझे अच्छा लग रहा है। अब जब के इस जिस्म से इतनी हसीन शकल व सूरत जूदा हो चुकी है मुझे यह बहुत अच्छी लग रही है। अल्लाह इसके गुनाह माफ करे।"

"सुलतान!" मैगनामारियूस ने पूछा–" आप ने मुझे क्यों बख्श दिया है।"

"इस लिये कि तुम मुझे कत्ल करने आये थे।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जवाब दिया–"मगर यह मेरी कौम के किरदार को कत्ल करने आई थी और तुम्हारा साथी सोंचे समझे मनसुबे के तेहत बहुत से लोगों का कातिल बना और तुम ने मेरा खून बहा कर खुदा को देखना चाहा था।"

चन्द ही दिनों बाद मैगनामारियूस सैफुल्लाह बन गया जो बाद में सुलतान के मुहाफिज़ दस्ते में शामिल हुआ और जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी खालिके हकीकी से जा मिला, तो सैफुल्लाह ने ज़िन्दगी के आख़री सतरह बरस सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की कब्र पर गुजार दिये। आज किसी को भी मालूम नही कि सैफुल्लाह की कब्र कहां है।

❖❖

दूसरी बीवी

काहिरा से डेढ़ दो मील दूर जहां एक तरफ रेत के टीले और बाक़ी हर तरफ सेहर रेत के समुन्द्र की मानिन्द उफक तक फैला हुआ था, इन्सानों के समुन्द्र तले दब गया था। यह लाखों इन्सानों का हुजूम था। इनमें शुतर सवार भी थे और घुड़ सवार भी। बहुत से लोग गद्दों पर भी सवार थे। तादाद उनकी ज़्यादा थी जिनके पास कोई सवारी नही थी। लातादाद हुजूम चार पांच दिनो से सेहरा की इस वुसअत में जमा होना शुरू हो गया था। क़ाहिरा के बाज़ारों में भीड़ और रोनक़ ज़्यादा हो गई थी। सराये भर गई थी। यह लोग दूर दूर से उस सरकारी मनादी पर आये थे कि छे सात रोज़ बाद काहिरा के मज़ाफाती रेगिसतान में मिस्र की फौज घुड़ सवारी, शुतर सवारी, दौड़ते घोड़ों और ऊंटो से तीर अंदाज़ी और बहुत से जंगी कमालात का मुज़ाहिरा करेगी। मनादी में यह ऐलान भी किया गया था कि ग़ैर फौजी लोग भी इन मुज़ाहिरों में जिस किसी को चाहे तेग़ ज़नी, कुश्ती, दौड़ते घोड़ों की लड़ाई और तीर अन्दाज़ी वग़ैरा के लिय ललकार कर मुकाबला कर सकता है।

यह मनादी सुलातन सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कराई थी। उसके दो मकसद थे। एक यह कि लोगों को फौज में भर्ती होने की तरग़ीब मिलेगी और दूसरी यह कि जो लोग अभी तक सुलतान को फौजी लिहाज़ से कमज़ोर समझते हैं उनके शुकूक रफा हो जायें। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को जब यह इत्तेलायें मिलीं कि लोग छे रोज़ पहले ही तमाशागाह में जमा होना शुरू हो गये हैं तो वह बहुत खुश हुआ मगर अली बिन सुफियान परेशान सा नज़र आता था। उसने सुलतान के आगे इस परेशानी का इज़हार भी कर दिया था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुसर्रत से उस से कहा था–" अगर तमाशाईयों की तादाद एक लाख हो जाये तो हमे पांच हज़ार सिपाही तो मिल ही जायेंगे।

"मोहतरम अमीर!" अली बिन सुफियान ने कहा–" मैं तमाशाईयों के हुजूम को किसी और नज़रये से देख रहा हूँ मेरे अन्दाज़े के मुताबिक़ अगर तमाशाईयों की तादाद एक लाख होती है तो इस में एक हज़ार जासूस होंगे। देहात से औरतें भी आई हैं। उनमे ज़्यादा तर सूडानी हैं। इनमें अकसर का रंग इतना गोरा है कि ईसाई औरत उनमें छुप सकती है।"

"मैं तुम्हारी इस मुश्किल को अच्छी तरह समझ रहा हूँ अली!" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" लेकिन तुम जानते हो कि मैने जिस मैले का इन्तेज़ाम क़िया है वह क्यों ज़रूरी है। तुम अपने मुहकमे को और ज़्यादा होशियार करदो।"

"मैं इसके हक में हूँ।" अली बिन सुफियान ने कहा–" यह मेला बहुत ही ज़रूरी है। मैं ने अपनी परेशानी आपको परेशान करने के लिये नही सुनाई, सिर्फ यह इत्तेला पेश की है कि

यह मेला अपने साथ क्या खतरा ला रहा है। क़ाहिरा में आरज़ी क़हबा खाने खुल गये है। जो सारी रात शौक़ीनों से भरे रहते है। तमाशाईयों में से बाज़ ने शहर के बाहर खैंमें नसब कर लिये ह। मेरे गिरोह ने मुझे इत्तला दी है कि इनमें भी शरारतियें और इस्मत फरोंशें के खेमें मौजूद है। कल मेले का दिन है। नाचने वालियों ने तमाशाईयों से दौलत के ढेर जमा कर लिये है।"

"मेला ख़त्म हो जायेगा तो यह गिलाज़त भी हुजूम के साथ ही साफ़ हो जायेगी।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मै। इस पर पाबन्दी आयद नहीं करना चाहता। मिस्र की अख़लाकी हालत अच्छी नही ।नाचने और इस्मत फरोशी एक दो दिन में ख़त्म नही की जा सकती । अभी मुझे ज़्यादा से ज़्यादा तमाशाईयों की ज़रूरत है। मुझे फौज तैय्यार करनी है और तुम जानते हो अली! हमें बहुत ज़्यादा फौज की ज़रूरत है। मैं ने फौज और इन्तेजामिया के सरबराहों के इजलास में यह ज़रूरत वज़ाहत से बयान कर दी थी।"

"मैं आपको इस वज़ाहन से रोक नही सका था।अमीरे मोहतरम!" अली बिन सुफियान ने कहा–" मेरी सुराग़रसां निगाहों में इन सरबराहों में निस्फ ऐसे है जो हमारे वफादार नही। आप अच्छी तरह जानते है कि इनमें कुछ ऐसे है। जो आपको इस गद्दी पर नही देखना चाहते और बाक़ी जो हैं उनकी दिल चसपियां सूडानीयों के साथ हैं । मैं ने इनमें से हर एक के पीछे एक एक आदमी छोड़ रखा है। मेरे आदमी मुझे इनकी सरगर्मियों से आगाह करते रहते हैं।"

"किसी की कोई ख़तरनाक सरगर्मी सामने आई है?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा।

"नही ।" अली बिन सुफियान ने जवाब दिया–" सिवाये इसके कि यह लोग अपनी हैसियत और रूतबे को फ़रामोश कर के रातों को मशकूक खैमों मे और उन मकानों में जाते हैं। जो आरज़ी कहबा खाने और नाचगाहें बन गये है। दो ने तो नाचने वाली लड़कियों को घरों में भी बुलाया है...... इन से ज़्यादा मेरा दिमाग़ दो बाद बानी कशतियों पर घूम रहा है जो दस रोज़ गुज़रे बहरे रोम के साहिल के साथ देखी गई थी।"

"उनमें क्या खास बात थी?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा।

इस वक़्त तक बहरे रोम के साहिल से फौज को वापस बुला लिया गया था। वहां ढकी छुपी जगहों पर दो दो फौजी समुन्द्र पर नज़र रखने के लिये बिठा दिये गये थे। अली बिन सुफियान ने माहीगिरों और सेहराई खाना बदोंशों के लिबास में साहिल पर इन्टेलीजेन्स के चन्द आदमी मुकर्र कर दिये थे। यह एहतमाम एक तो इस लिये किया गया था कि इधर से सलीबीयों का जासूस न आ सकें , मगर साहिल बहुत लम्बा था। कहीं कहीं चट्टानें थीं जहां समुन्द्र अन्दर आ जाता था। सारे साहिल पर नज़र नही रखी जा सकती थी। दस रोज़ गुज़रे एसी ही एक जगह से जहां समुन्द्र चट्टानों के अन्दर आया हुआ था। दो बाद बानी कश्तियां निकलती देखी थीं। वह शायद रात को आई थीं।

उन्हें जाता देख कर सुलतान के दो सवार सरपट घोड़े दौड़ाते उस जगह पहुंचे जहां से कश्तियां निकल कर गई थीं। वहां कुछ भी न था। कोई इनसान नही था और कश्तियां समुन्द्र

में दूर चली गई थीं। कश्तियों और बाद बानों की साख्त बताती थी कि यह मिस्र के माहि गिरों की नहीं। समुन्द्र पार की मालूम होती थीं। सवार थोड़ी दूर तक सेहरा में गये। उन्हें किसी इनसान का सुराग नही मिला। उन्होने काहिरा इत्तेला भिजवा दी थी कि साहिल के साथ दो, मशकूक कश्तियां देखी गई हैं। अली बिन सुफियान के लिये यह नामुमकिन न था कि रेगज़ार में उन्हें ढूंढ लेता जो कश्तियों मे उतरे थे। इत्तेला पहुचते पहुंचते तीन दिन गुज़र गये थे। यह भी यकीन नही था कि कश्तियों से कौन उतरा है।

अली बिन सुफियान ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस सवाल के जवाब में कि उन कश्तियों में क्या खास बात थी, यह वजाहत कर दी और कहा—" हम मेलों की मनादी डेढ़ महीने से करा रहे हैं। डेढ़ महीने में खबर यूरोप के दस्ते तक पहुंच सकती है और वहां से जासूस आ सकते है। मुझे यकीन की हद तक शक है कि तमाशाईयों के साथ सलीबीयों के जासूस मेले में आ गये हैं। काहिरा मे इस वक़्त लड़कियां आर्ज़ी तौर पर नही मुस्तकिल तौर पर फरोख्त हो रही है। सुलतान समझ सकते हैं कि उनके खरीदार मामूली हैसियत के लोग नही हो सकते। उन खरीदारों मे काहिरा के ताजिर हमारी इन्तेज़ामिया और फौज के सरबाराह और नामी ग्रामी आदमी शामिल हैं। मिलने वाली लड़कियों में सलीबी की जासूस लड़कियां हो सकती हैं और यकीनन होंगी।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी इन इत्तेलाओं से परेशान न हुआ। बहरे रोम मे सलीबीयों को शिकस्त दिये तकरीबन एक साल गुज़र गया था। अली बिन सुफियान ने समुन्द्र पार जासूसी का इन्तेज़ाम कर रखा था जो मज़बूत और सौफिसदी काबिले एतमाद था। ताहम यह इत्तेला मिल गई थी कि सलीबीयों ने मिस्र में जासूस और तखरीब कार भेज रखी है। अभी यह मालूम नही हो सका था कि मिस्र के मुतअल्लिक उनके मनसूबे क्या हैं। बगदाद और दमिश्क से आने वाले इत्तेलाओं से पता चलता था कि सलीबी ने ज़्यादा तर दबाव उध ार ही रखा हुआ है। वहां खुसूसन शाम में, वह मुसलमान उमरा को अय्याशियों और शराब में डूबोते चले जा रहे थे। सुलतान नूरूद्दीन ज़ंगी की मौजूदगी में सलीबी अभी बराहे रास्त टक्कर लेने की जुर्रत नही कर रहे थे। बहरे रोम में जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उनका बेड़ा लशर समेत गर्क कर दिया था। उधर अरब में सुल्तान ज़ंगी ने सलीबीयों की मुम्लिकत पर हमला करके उन्हें सुलह पर मजबूर किया और जिज़्या वसूल कर लिया था। इस मारके में बहुत से सलीबी सुलतान नूरूद्दीन ज़ंगी की कैद में आये थे जिनमें रेनाल्ट नाम का एक सलीबी सालार भी था। सुलतान ज़ंगी ने इन कैदियों को रिहा नही किया था। क्योंकि सलीबीयों ने मुसलमान जंगी कैदियों को शहीद कर दिया था। इसके अलावा सलीबी अहद शिकनी भी करते थे।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इतमिनान था कि उधर सुलतान ज़ंगी सलतनते इसलामिया की पासबानी कर रहा है फिर भी वह फौज तैय्यार कर रहा था ताकि सलीबयों से फिलिस्तीन लिया जाये और अरब की सरज़मीन को कुफ्फार से पाक किया जाये। इसके साथ ही वह मिस्र का दिफाअ मज़बूत करना चाहता था। साथ ही हमले और दिफा के लिये बे

शुमार फौज की जरूरत थी। मिस्र में भरती की रफतार सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के अज़ाईम के मुताबिक सुस्त थी। इसकी एक वजह यह थी कि सूडानीयों की जो फौज तोड़ दी गई थी उसके कमाण्डर और ओहदेदार देहात में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ परोपेगंडा करता फिर रहा था। इस फौज में से थोड़ी सी तादाद सुलतान की फौज में वफादारी का हल्फ उठा कर शामिल हो गई थी। कुछ फौज मिस्र से तैय्यार करली गई थी और कुछ सुलतान ज़ंगी ने भेज दी थी। मिस्र के लोगों ने अभी यह फौज नही देखी थी। न ही उन्होने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को देखा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इस मेले का ऐलान कर के अपने फौजी सरबराहों और उनके मातेहत कमाण्डरो वग़ैरह को हिदायत दी थी कि वह बाहर से आये हुये लोगों से मिलें और प्यार व मुहब्बत से उनका एतमाद हासिल करें। उन्हें बावर करायें कि वह उन्हीं में से है और हम सबका मकसद यह है कि खुदा और रसूल स0 की सलतनत को दूर दूर तक फैलाना और उसे सलीबी फितने से पाक करना है।

मेले से एक रोज़ पहले अली बिन सुफियान, सुलतान को जासूसों के खतरे से आगाह कर रहा था। उसने कहा –" अमीरे मोहतरम! मुझे जासूसों का कोई डर नही, दर असल खतरा अपने उन कलमा गौ भाईयों से है जो कुफ्फार के इस ज़मीन दूज़ हमले को कामयाब बनाते हैं। अगर इनका ईमान मज़बूत हो तो जासूसों का पूरा लश्कर भी कामयाब नही हो सकता मेले के तमाशाईयों में नाचने वाली लड़कियां नज़र आ रही है वह सलीबीयों का जाल है, ताहम मेरा गिरोह दिन रात मसरूफ है।"

"अपने आदमियों से यह कह दो कि किसी जासूस को जान से न मारें।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" ज़िन्दा पकड़ो। जासूस दुशमन के लिये आँखें और कान होता है लेकिन हमारे लिये वह ज़बान है। वह तुम्हें उनकी खबर देगा जिन्होने उसे भेजा है।"

❖

मेले की सुबह तुलू हुई। वह मैदान बहुत ही बड़ा था जिसके तीनों तरफ तमाशाईयों का हुजूम था जिस तरफ रेत के टीले थे उधर किसी को नही जाने दिया गया था जंगी दफ बजने लगे। घोड़ों के टापों की आवाज़ें इस तरह सुनाई दीं जैसे सैलाबी दरया आ रहा हो। गर्द आसमान की तरफ उठ रही थी। यह दो हज़ार से ज़्यादा घोड़े थें। पहला घुड़ सवार मैदान में दाखिल हुआ। यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी था। उसके दोनो तरफ उसके मुहाफिज़ थे और पीछे सवारों का दस्ता था। घोड़ों पर फुलदार चादरें डाली गई थीं। हर सवार के हाथ में बर्छि थीं। बर्छि के चमकते हुये फल के साथ रंगीन कपड़े की चौड़ी सी झंडी थी। हर सवार की कमर से तलवार लटक रही थी घोड़े हलकी चाल आ रहे थे। सवार गर्दनें ताने और सीने फुलाये बैठे थे। उनके चेहरों पर जलाली तास्सुर था। यह मालूम होता था जैसे यह तमाशाईयों के दमबखुद हुजुम से आला वा बेहतर हों। उनकी आन बान देख कर तमाशाईयों पर खामोशी तारी हो गई थी उन पर रोब छा गया था।

तमाशाई नीम दायरे में खड़े थे। उनके पीछे तमाशाई घौड़ो पर बैठे थे और उनके पीछे के तमाशाई ऊंट पर बैठे थे। एक एक घोड़े और एक एक ऊंट पर दो दो तीन तीन

आदमी बैठे थे। उनके आगे एक जगह शामियाना लगाया गया था। जिसके नीचे कुर्सियां रखी थीं। यहां ऊंची हैसियत वाले तमाशाई बैठे थे। उनमे ताजिर भी थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हुकूमत के ऑफिसर और शहर के मौअज़्ज़िज भी। उनमे काहिरा की मस्जिदो के इमाम भी बैठे थे। उन्हें सब से आगे बैठाया गया था क्योंकि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पेशवाओं और उलेमाओं का इस कदर एहतराम करता था। कि उनकी मौजूदगी में उकनी इजाज़त के बग़ेर बेठता नही था। उनमे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के वे ऑफिसर भी बैठे थे जो इन्तेज़ामिया के थे लेकिन इनका ताल्लुक फौज से था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें खास तौर पर कहा था कि इन ज़ोअमां मे बैठ कर उनके साथ दोस्ती पैदा करें। उनमे खादिमउद्दीन अलबरक भी था। अली बिन सुफियान के बाद यह दूसरा आदमी था जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खुफिया मनसूबों, मुमलिकत और फौज के हर राज़ से वाकिफ था। उसका काम ही ऐसा था और इसका ओहदा सालार जितना था। जंग के मन्सूबे और नक्शे इसी के पास होते थें इसकी उम्र चालीस साल के करीब थी। वह अरब के मर्दाना हुस्न और जलाल का पैकर था। जिस्म तवाना और चेहरा हशाश बशाश था।

अलबरक के साथ एक लड़की बैठी थी। बहुत ही खूबसूरत लड़की थी। वह नौजवान थी। लड़की के साथ एक आदमी बैठा था जिसकी उम्र साठ साल से कुछ ज़्यादा थी। वह कोई अमीर कबीर ताजिर लगता था। अलबरक कई बार उस लड़की की तरफ देख चुका था। एक बार लड़की ने भी उसे देखा तो मुसकुरा दी। फिर उसने बूढ़े की तरफ देखा तो उस की मुसकुराहट गायब हो गई

घोड़े तमाशाईयों के सामने से गुज़रे तो शुतर सवार आ गये। ऊंटों को घोड़ों की तरह रंग दार चादरों से सजाया गया था। हर सवार के हाथ में एक लम्बा नेज़ा और उस के फल से ज़रा नीचे तीन तीन इन्च चौड़े और डैढ़ फुट लम्बे दो रंगे कपड़े झंडों की तरह बंधे हुये थे। हवा मे वह फड़ फड़ाते हुये बहुत ही खूबसूरत लगते थे। हर सवार के कन्धों से एक कमान आवेज़ा और ऊंट की ज़ीन के साथ रंगीन तरकश बंधी थी। ऊंट की गर्दनें खम खाकर ऊपर को उठी हुई और सिर जैसे फख़र से ऊंचे हो गये थे। सवारों की शान निराली थी। घुड़ सवारों की तरह हर शुतर सवार सामने देख रहा था। उनकी आँखें भी दायें बायें नही देखती थीं। यह ऊंट उन्हीं ऊंटो जैसे थे जिन पर तमाशाई बैठे हुये थे लेकिन फौजी तरतीब, फौजी चाल और फौजी सवारों के नीचे वह किसी और जहां के लगते थे।

अलबरक ने अपने पास बैठी हुई लड़की को एक बार फिर देखा। अबके लड़की ने उसे आँखों में आँखें डाल कर देखा। उसकी आँखों मे ऐसा जादू था कि अलबरक ने अपने आप में बिजली का झटका सा महसूस किया।

लड़की के होंठों पर शर्म व हया का तबस्सुम आ गया और उस ने आपने पास बैठे हुये बूढ़े को देखा तो उस का तबस्सुम नफरत में बदल गया। अलबरक की एक बीवी थी जिस से उसके चार बच्चे थे। वह शायद इस बीवी को भूल गया था। वह लड़की के इस कद्र करीब बैठा था कि लड़की का उठा हुआ रेशमी नकाब हवा से उड़ कर कई बार अलबरक के सीने

से लगा। एक बार उस ने नक़ाब हाथ से परे किया लड़की ने शरमा कर माज़रत की। अलबरक मुसकुराया, मुंह से कुछ न कहा।

शुतर सवारों के पीछे प्यादा फौज आ रही थी। उनमे तीर अन्दाज़ों और तेग़ ज़नों के दस्ते थे। उनकी एक ही जैसी चाल, एक ही जैसे हथियार और एक ही जैसा लिबास तमाशाईयों पर वही तअस्सुर तारी कर रहा था जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी करना चाहता था। सिपाहियों के चेहरों पर तन्दुरस्ती और तवानाई की रौनक थी और वह खुश व खुर्रम और मुतमईन नज़र आते थे। यह सारी फौज नही, सिर्फ मुन्तखब दस्ते थे। उनके पीछे मुंजिनीकें आ रही थीं जिन्हें घोड़े घसीट रहे थे। हर मुनजिनीक के पीछे एक एक घोड़ा गाड़ी थी जिसमें बड़े बड़े पत्थर और हांडियों की किसम के बर्तन रखे थे। उनमे तेल जैसी कोई चीज़ भरी हुई थी जो मुनजिनीकों से फैंकी जाती थी। जहां यह बर्तन गिरता था वह कई टुकड़ों में टूट कर सियाह माद्दे को बहुत सी जगह पर बिखेर देता था। उन पर आतिशी तीर चलाये जाते तो सियाह माद्दा शोला बन जाता था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की कयादत मे यह सवार और पियादा दस्ते, नीम दायरे में खड़े और बैठे हुये तमाशाईयों के आगे से दूर आगे निकल गये। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रास्ते में से वापस आ गया। उसके घोड़े के आगे अलमबरदारों के घोड़े, दायें बायें और पीछे मुहाफिज़ों के घोड़े और उनके पीछे नाईब सालारों के घोड़े थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने घोड़ा रोक लिया, कूद कर उतरा और तमाशाईयों को हाथ हवा में हिला हिला कर सलाम करता शामियाने के नीचे चला गया। वहां बैठे हुये तमाम लोग उठ खड़े हुये सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सब को सलाम किया और अपनी नशिस्त पर बैठ गया।

सवार और पियादा दस्ते दूर आगे जा कर टीलों के अक़ब में चले गये। मैदान खाली हो गया। एक घुड़ सवार सरपट घोड़ा दौड़ाता आया। उसके एक हाथ में घोड़े की लगाम और दूसरे में ऊंट की रस्सी थी। ऊंट घोड़े की रफतार के साथ दौड़ता आ रहा था। मैदान के बीच में आकर घुड़ सवार घोड़े पर खड़ा हो गया। उस ने बागें छोड़ दी। वह उछल कर ऊंट की पीठ पर खड़ा हो गया। वहां से कुद कर घोड़े की पीठ पर आ गया और वहां से ज़मीन पर कूद गया। चन्द कदम घोड़े और ऊंट के साथ भागा फिर कूद कर घोड़े पर सवार हुआ। घोड़े और ऊंट की रफतार मे कोई फर्क नही आया था। घोड़े की पीठ से वह ऊंट की पीठ पर चला गया और दूर आगे जाकर गायब हो गया।

खादिमउद्दीन अलबरक दायें को ज़रा सा झुक गया। उस के मुंह और लड़की के सिर के दर्मियान दो तीन इन्च का फासला रह गया था। लड़की ने उसे देखा। अलबरक मुसकुराया लड़की शरमा गई। बूढ़े ने दोनो को देखा। उस के बूढ़े माथे के शिकन गहरे हो गये।

अचानक टीलों के पीछे से हांडियों की तरह के मिट्टी के वह बर्तन जो घोड़ा गाड़ियों पर लादे हुये थे। ऊपर को जाते आगे आते और मैदान मे गिरते नज़र आये। बर्तन टुकड़ते थे तो तेल उछल कर बिखर जाता था। कमो बेश एक सौ बर्तन गिरे और उनसे निकला हुआ माद्दा तकरीबन एक सौ गज़ लम्बी और इसी क़दर चौड़ाई में बिखर गया। एक टीले पर छ

तीर अन्दाज़ नमुदार हुये। उन्होंने जलते हुये फलीतों वाले तीर चलाये जो सियाह मादे वाली जगह गड़ गये। फौरन वह तमाम जगह एक ऐसा शोला बन गई जो घोड़ों की पीठ तक बुलन्द और कोई एक सौ गज़ तक फैला हुआ था। एक तरफ से चार घोड़े सवार घोड़े पूरी रफतार से दौड़ाते आये। शोले के करीब आकर वह रुका नही। रफतार कम भी नही की। चारों शोलों में चले गये। तमाशाई दम बखूद थे कि वह जल जायेंगे मगर वह इनते वसी शोलों मे दौड़ते नज़र आ रहे थे। आखिर वह चारों शोलों में से निकल गये। तमाशाईयों ने दादों का वह शौर बरपा किया कि असमान फटने लगा। दो सवारों के कपड़ों को आग लगी हुई थी। दोनों भागते घोड़ों से रेत पर गिरे और थोड़ी दूर लुढ़कियां खाते गये। उनके कपड़ों की आग बुझ गई।

अलबरक इस शौर गुल और सवारों के कमालात से नज़रें फेरे हुये लड़की को देख रहा था। लड़की उसकी तरफ देखती और ज़रा सी मुसकुरा कर बूढ़े को देखने लगती थी। बूढ़ा उठ कर जाने क्यों चला गया। लड़की उसे जाता देखती रही। अलबरक को मालूम था कि लड़की बूढ़े के साथ आई है। उस ने लड़की से पूछा–" तुम्हारे वालिद साहब कहां चले गये हैं?"

"यह मेरा बाप नही।" लड़की ने जवाब दिया–" मेरा खाविन्द है।"

"खाविन्द?" अलबरक ने हैरत स पूछा–" क्या यह शादी तुम्हारे वालिदेन ने कराई है?"

" उसने मुझे खरीदा है।" लड़की ने उदास लहजे में कहा।

"वह कहां गया है?" अलबरक ने पूछा।

"नाराज़ होकर चला गया है।" लड़की ने जवाब दिया–" उसे शक हो गया है मैं आपको दिलचसपी से देखती हूं।"

"क्या तुम वाकई मुझे दिलचसपी से देखती हो?" अलबरक ने रोमानी अन्दाज़ मे पूछा।

लड़की के होंटों पर शर्मिली मुसकुराहट आ गई। धीमी सी आवाज़ में बोली–"मैं इस बूढ़े से तंग आ गई हूँ। अगर किसी ने मुझे इस से निजात न दिलाई तो मैं खुदकुशी कर लुंगी।

मैदान में सवार और पियादा फौजी हैरान कुन करतब दिखा रहे थे और हरब व ज़रब के मुज़ाहिरे कर रहे थे। तमाशाईयों ने जंगी मुजाहिरे पहले कभी नही देखे थे। उन्होंने सिर्फ सूडानी फौज देखी थी जो ख़ज़ाने के लिये सफेद हाथी बनी हुई थी। उसके कमाण्डर बादशाहों की तरह बाहर निकलते थे। उनके साथ अगर फौज का दस्ता हो तो वह अवाम के लिये मुसीबत बन जाते थे। मवेशी तक खोल कर ले जाते थे। किसी के पास अच्छी नसल का ऊंट,घोड़ा देखते तो ज़बरदसती ले जाते थे। लोगों के दिल में यह बात बैठ गई थी कि फौज रिआया पर ज़ुल्म व तकलीफ देने व हुकुमत करने के लिये रखी जाती है लेकिन सुलतान की फौज बहुत मुखतलिफ थी। एक तो वह दस्ते थे जो मुज़ाहिरे मे शरीक थे। बाकी फौज को सुलतान की हिदायत के मुताबिक तमाशाईयों में फैला दिया गया ताकी वह लोगों के साथ घुल मिल कर उन पर यह तास्सुर पैदा करें कि फौजी उनके भाई हैं और उन्हीं में से है। बदतमीज़ी या बद अख़लाकी करने वाले फौजी के लिये बड़ी सख़्त सज़ा मुकर्र की गई थी।

खादिमुद्दीन अलबरक़ जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की जंगी मुशावरती मुहकमे का सरबराह और राज़दान था। सुलातान की हिदायत और मेले के शोर गुल से बिलकुल ही ला तअल्लुक हो गया था। लड़की एक जादू बन कर उसकी अक़्ल पर ग़ालिब हो गई थी। उस ने लड़की में दिलचसपी का इज़हार किया, उसे लड़की ने क़ुबूल कर लिया था। इस से दोनों के लिये सहुलियत पैदा हो गई। अलंबरकने कहीं मिलने को कहा तो लड़की ने जवाब दिया कि वह ख़रीदी हुई लौंडी हैं और उस बूढ़े ने उसे कैद में रखा हुआ है। वह उस पर हर वक़्त नज़र रखता है। लड़की ने यह भी बताया कि बूढ़े के घर चार बीवीयां हैं.......अलबरक़ ने अपने रूतबे को फरामोश कर दिया। आशिक़ बाज़ नौजवान की तरह उसने मुलक़ात की वह जगहें बतानी शुरू कर दीं जहां आवारा आदमियों के सिवा कोई नही जाता था। उन जगहों में एक जगह लड़की को पसन्द आ गई यह शहर से बाहर क़दीम ज़माने का कोई खंडर था। अलबरक़ ने लड़की से यह बावर भी किया कि वह उसे बूढ़े से आज़ाद कराने की कोशिश करेगा।

❖

तीसरी रात अलबरक़ घर से निकला। वह हाकिमों की शान से घर से निकला करता था मगर इस रात वह चोरों की तरह बाहर निकला। इधर उधर देखा और एक तरफ चल पड़ा। क़ाहिरा पर सुकूत तारी थी। फौजी मेला खत्म हुये दो दिन गुज़र गये थे। बाहर से आये हुये तमाशाई जा चुके थे। सरकारी हुकुम के तेहत आरज़ी कहवा खाने उठा दिये गये थे। अली बिन सुफियान का मुहकमा अब यह सुराग़ लगाता फिर रहा था कि बाहर से आई हुई कितनी लड़कियां और कितने मशकूक लोग शहर या मज़ाफाती देहात में रह गये हैं। मेले का मकसूद पूरा हो चुका था। दो ही दिनों में चार हज़ार जवान फौज में भर्ती हो गये थे और मज़ीद भर्ती की तवक़्क़ो थी।

अलबरक़ शहर से निकल गया और उस ने उस खन्डर का रूख किया जहां लड़की को आना था। सेहराई गिदड़ों के सिवा ज़मीन व आसमान गहरी नींद सो गये थे। लड़की ने अलबरक़ से कहा था कि वह बूढ़े की क़ैदी है और वह उस पर हर वक़्त नज़र रखता है। फिर भी अलबरक़ इस उम्मीद पर जा रहा था कि लड़की ज़रूर आयेगी। मुम्किन खतरों से निपटने के लिये उस के पास ए खंजर था। औरत ऐसा जादू है कि जिस पर तारी हो जाये वह किसी की परवाह नही किया करते। अक़्ल व दानिश उसका साथ छोड़ जाते हैं। अलबरक़ पुख़्ता उम्र का आदमी था मगर वह नादान नौजवान बन गया था। उसे अन्धेरे में खंन्डर के करीब एक तारीक साया सिर से पांव तक लिबादे में लिपटा हुआ नज़र आया और खन्डर में जज़्ब हो गया तो वह तेज़ तेज़ चलता खन्डर में पहुंचा। गिरी हुई दिवार के शग़ाफ़ से वह अन्दर आ गया। आगे अन्धेरा कमरा था। छत में बड़ी ज़ोर से कोई बहुत बड़ा परिन्दा फड़फड़ाया। अलबरक़ ने हवा के तेज़ झोंके महसूस किये और अचानक उस के मुंह पर थप्पड़ पड़ा। इसके साथ ही उसे "छी छी" की आवाज़ सुनाई देने लगीं। वह जान गया कि यह बड़े चमगादड़ हैं जिन के पंजे उसका मुंह नोच डालेंगे। वह बैठ गया और पांव पर सरकता कमरे से निकल गया। कमरा उड़ते चमगादड़ों से भर गया था।

आगे सेहन था जिसके इर्द गिर्द गोल बरामदा था। अलबरक ने यह भी न सोंचा कि एक खरीदी हुई कैदी लड़की जिस पर हर वक़्त नज़र रखी जाती है, इस हैबतनाक खन्डर में कैसे आयेगी, मगर बरामदे में किसी के कदमों की दबी दबी आहट ने उसे बताया कि यहां कोई मौजूद है। उस ने कमर से खंजर निकाल कर हाथ में ले लिया। उसके सिर पर चमगादड़ उड़ रहे थे। फड़ फड़ाने की आवाज़ें डरावनी थीं। अलबरक ने आहिसता से पुकारा "आसिफा!"—लड़की ने उसे अपना नाम बता दिया था और मेले में यह भी बताया था कि वह किस तरह फरोख्त हुई है।

"आप आ गये?" उसे आसिफा की आवाज़ सुनाई दी। वह बरामदे मे से दौड़ती आई और अलबरक के साथ चिपक गई। कहने लगी—" आपके खातिर जान को खतरे में डाल कर आई हूं। मुझे जल्दी वापस जाना है। बूढ़े को शराब में नींद का सफूफ पिला कर आई हूँ। वह जाग न उठे।"

"क्या तुम उसे शराब में ज़हर नही पिला सकती थी?" अलबरक ने पूछा।

"मैंने कभी कत्ल नही किया।" आसिफा ने कहा—" मैंने तो कभी यह भी नही सोंचा था कि इस तरह किसी ग़ैर मर्द से मिलने इस डरावने खन्डर में आऊंगी।"

अलबरक ने उसे बाज़ुओं में जकड़ लिया—" अचानक उनके पीछे बरामदा रौशन हो गया। जिस कमरे से अलबरक गुज़र कर आया था उस में से दो मशालें निकलीं। यह लकड़ियों के सिरों पर तेल में भीगे हुये कपड़े में लिपट कर बनाई गई थी। उनके शोले खासे बड़े थे। अलबरक ने आसिफा को अपने पीछे कर लिया। उसके हाथ में खंजर था। क्या यह खन्डर में रहने वाली बदरूह थीं? या लड़की के तआकुब में उस का खाविन्द आ गया था? अलबरक अभी सोंच ही रहा था कि एक आवाज़ गर्जी। "दोनों को कत्ल कर दो।"

मशालें करीब आई तो उनके नाचते शोलों में अलबरक और आसिफा को चार आदमी नज़र आये। एक के हाथ में बर्छी और तीन के पास तलवारें थीं। उन्होंने मशालें ज़मीन में गाड़ दीं। खन्डर का सेहन रौशन हो गया। चारों अलबरक के गिर्द भूके भेड़िये कि तरह आहिसता आहिसता चक्कर में चलने लगे। आसिफा उसके पीछे थी। बरामदे मे से एक और आवाज़ आई। "मिल गये? जिन्दा न छोड़ना" यह लड़की के बूढ़े खाविन्द की आवाज़ थी।

आसिफा अलबरक के अकब से आगे आ गई। उस ने गुस्से से बूढ़े से कहा—" आगे आओ और मुझे कत्ल करो। मैं तुम पर लानत भेजती हूँ। मैं अपनी मर्ज़ी से यहां आई हूँ।"

चारों मुसल्लह आदमी उनके गिर्द खड़े थे। बर्छी वाले ने आहिस्ता आहिस्ता आसिफा की तरफ की और उस की नोक उसके पहलू से लगा कर कहा—" मरने से पहले बर्छी की नोक देख लो लेकिन तुम से पहले ये शख्स तुम्हारे सामने तड़प तड़प कर मरेगा। जिसकी खातिर तुम यहां आई हो "

आसिफा ने झपट्टा मार कर बर्छी पकड़ ली और झटका देकर बर्छी छीन ली। आसिफा अलबरक से अलग हो गई और ललकार कर कहा—" आओ। मैं देखती हूँ कि तुम मुझ से पहले इस आदमी को कैसे कत्ल करते हो।"

अलबरक् खंजर आगे किये उसके सामने आगया। लड़की ने बर्छी से उस पर वार किया जिस से उस ने बर्छी छीनी थी। वह आदमी पीछे को भागा। उसके साथियों ने अलबरक् पर हमला करने के बजाये सिर्फ पैंतरे बदले। वह आसानी से कत्ल कर सकते थे मगर वे बढ़ कर हमला नही कर रहे थे। आसिफा की ललकार गर्ज रही थी। वह बढ़कर वार करती थी। मगर वह खाली जाता था। अलबरक् ने एक आदमी पर खंजर से हमला किया तो आदमी उसके पीछे आये। आसिफा एक ही जुस्त में उसके पीछे हो गई। उसके हाथ में लम्बी बर्छी थी जो तलवार का मुक़ाबला कर सकती थी। खंजर तलवार के मुक़ाबले में कुछ भी नही था। बूढ़ा एक तरफ खड़ा अपने आदमियों को ललकार रहा था। थोड़ी सी देर में उन्होंने अलबरक् और आसिफा पर हमले किये। आसिफा उन पर लोट लोट पड़ती थी। अलबरक् वार बचाता था। और खंजर से वार करने की कोशिश करता था मगर अजीब अमर यह था कि लड़की के हमलों के बावजूद कोई ज़ख्मी नही हुआ। बूढ़े के आदमियों ने भी तेग़ ज़नी के जोहर दिखाए मगर अलबरक् और आसिफा को खराश तक न आई। इतने में बूढ़े ने कहा–"रूक जाओ" और लड़ाई बन्द हो गई।

"मैं एसी बेवफा लड़की को घर में नही रखना चाहता।" बूढ़े ने कहा–" मुझे मालूम नही था यह इतनी दिलेर और बहादुर है। अगर इसे मैं ज़बरदस्ती ले भी गया तो यह मुझे कत्ल कर देगी।"

"मैं इस की तुम्हें पूरी कीमत दूंगा।" अलबरक् ने कहा–" कहो, तुम ने इसे कितने में खरीदा था।"

बूढ़ा हाथ बढ़ा कर आगे बढ़ा और अलबरक् से हाथ मिला कर बोला–" मेरे पास दौलत की कमी नही। मैं यह लड़की तुम्हें बख़्श देता हू। उसे तुम्हारे साथ इतनी मुहब्बत है कि तुम्हारी खातिर इतने सारे आदमियों के मुक़ाबले में आई है। मैं इसे इस लिये भी तुम्हारे हवाले करता हूँ कि यह जंगजू नस्ल की लड़की है। मैं ताजिर और सौदागर हूँ। यह किसी तुम जैसे जंगजू के घर में अच्छी लगेगी। तीसरी वजह ये है कि तुम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुकूमत के हाकिम हो। मैं सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का वफादार मर्द हूँ। मैं तुम्हें नाराज़ नही करना चाहता। जाओ। मैंने इसे तलाक दी और इसे तुम पर हलाल कर दिया. ..... चलो, दोस्तो। इन्हें अकेले छोड़ दो।" वे मशालें उठा कर चले गये।

अलबरक् की हैरत की इन्तिहा यह थी कि उसके पांव तले ज़मीन हिलने लगी। उसे यक़ीन नही आ रहा था। वे उसे बूढ़े का फरेब समझ रहा था। उसे यह खतरा नज़र आ रहा था कि यह लोग रास्ते में घात लगा करइन दोनों को कत्ल करेंगे। आसिफा के हाथ में बर्छी थी, वे अलबरक् ने ले ली और कुछ देर बाद खन्डर से निकला। वे दायें बायें और पीछे देखते तेज़ तेज़ चलने लगे। ज़रा सी आहट सुनाई देती तो वह चोंक कर रुक जाते। हर तरफ अन्धेरे में देखने की कोशिश करते और आहिस्ता आहिस्ता चल पड़ते। शहर में दाखिल हुये तो उनकी जान मे जान आई। आसिफा ने रुक कर बाज़ू अलबरक् के गले में डाल दी और पूछा–" आप को मुझ पर इतमिनान है या नही?" अलबरक् ने उसे सीने से लगा लिया। उस पर जज़्बात का

ग़लबा था कि कुछ बोल न सका। लड़की ने उसे बेदाम खरीद लिया था। उसे यह तो अब पता चला था कि लड़की उसे कैसी दिवानगी से चाहती है और कितनी बहादुर है। दर असल वह लड़की के हुस्न पर मर मिटा था। उसकी बीवी उसकी हम उम्र थी। आसिफा को देख कर उस ने महसूस किया कि वह बीवी उस के काम की नही है।

उस दौर में जब औरत फरोख्त होती थी, घर में बीवी की कोई हैसियत नही थी। बैयक वक़्त चार बीवियां तो खाविन्द अपना हक़ समझता था। लेकिन जो पैसे वाले थे वे दो चार खुबसूरत लड़कियां तो बग़ैर निकाह के रख लेते थे। मुसलमान उमरा को औरत ने ही तबाह किया था। उनके यहां यह भी रिवाज था कि एक आदमी की बीवीयां खाविन्द की खुशनूदी हासिल करने के लिये ढूंढ ढूंढ कर खूबसूरत लड़कियां खाविन्द को बतौरे तोहफा पेश करती थीं।

अलबरक जब आसिफा को साथ लिये घर में दाखिल हुआ तो सब सोये हुये थे। सुबह उसकी बीवी ने अपने खाविन्द के पलंग पर इतनी हसीन लड़की देखी तो उसे ज़रा भर महसूस न हुआ कि उसका सुहाग उजड़ गया, बल्कि वह खुश हुई कि उसके इतने अच्छे खाविन्द को इतनी खूबसूरत लड़की मिल गई। उसके आजाने से वह कुछ फराइज़ से सुबकदोश हो गई थी। अलबरक की हैसियत एसी थी कि वह ऐसी एक और बीवी या दासी रख सकता था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मुसलमानों को औरत से और औरत को मुसलमानों से आज़ाद करना चाहता था। वह एक खाविन्द एक बीवी, का हुकम नाफिज़ करना चाहता था। मगर अभी वह हर उस अमीर और वज़ीर को दुशमन बनाने से डरता था जिस ने कई कई लड़कियों को घर में रखा हुआ था। औरत के खरीदार यही लोग थे। इन्ही की दौलत से औरत खुली मंडी में नीलाम होती थी। अग़वा की वारदातें होती थीं। क़त्ल और खून खराबा होते थे और उमरा और हाकिमों की ज़न परसती का ही नतीजा था कि ईसाई और युरोपियों ने लड़की की मदद से सलतने इसलामिया की जड़ों में ज़हर भर दिया था। इसके अलावा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को यह एहसास भी परिशान किये रखता था कि यही औरत मर्द के दोश बदोश कुफ्फार के खिलाफ लड़ा करती थीं। मगर अब यह जो जिहाद में मर्द के लिये आधी कुव्वत थीं मर्द की तफरीह और अय्याशी का ज़रिया बन गई है। उस से सिर्फ यह नही हुआ कि कौम की आधी जंगी कुव्वत खत्म हो गई है। बल्कि औरत एक एसा नशा बन गई है जिसने कौम की मर्दानगी को बेकार कर दिया है।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी औरत की अज़मत बहाल करना चाहता था। उस ने एक मनसूबा तैय्यार कर रखा था जिसके तेहत वह ग़ैर शादी शुदा लड़कियों को बक़ायदा फौज में भर्ती करना चाहता था। इसी के तेहत हरम भी खाली करने थे। मगर एसे अहकाम वह उसी सूरत में नाफिज़ कर सकता था कि सलतनत की खिलाफत या इमारत उसके हाथ आ जाये। यह मुहिम बड़ी दुशवार थी। उसके दुशमनों में अपनों की तादाद ज़्यादा थी और वह जानता था कि कौम में ईमान फरोशों की तादाद बढ़ती जा रही है। उसे यह मालूम नही हुआ

था कि उसका एक मातेहत खास और हुकुमत के राज़ों का रखवाला,खादिमुद्दीन अलबरक भी एक नौजवान हसीना को घर ले आया है और ये लड़की उसके आसाब पर ऐसी बुरी तरह छाई हुई है कि वह अब फराईज़े सलतनत से बे परवाह हो सकता है।

❖

फौजी मेले मे मिस्र के लोग सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौजी ताक़त से मरऊब नही हुये बल्कि इसे इसलामी और मिस्री फौज समझ कर इस से मुतास्सिर हुये थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक़रीरें करने वाला हाकिम नही था लेकिन उस दिन इतने बड़े इन्तेज़ामिया मेले में खिताब करना ज़रूरी समझा। उस ने कहा कि यह फौज कौम की इस्मत की मुहाफिज़ और इसलाम की पासबान है। उस ने सलीबीयों के अज़ाएम तफसील से बियान किये और मिस्रीयों को बताया कि अरब में मुसलमान उमरा और हाकिमों की ऐश परस्ती की वजह से सलीबीयों ने वहां मुसलमानों का जीना हराम कर रखा है। वे काफिलों को लूट लेते हैं। मुसलमान लड़कियों को अग़वा करके बे आबरू करते फिर उन्हें बेच डालते हैं.,...... सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने लोगों को कौमी जज़्बे से आगाह करके उन्हें कहा कि वह फौज में भर्ती हो कर अपनी बेटियों की इस्मत और इसलाम की अज़मत की पासबानी करें। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के तक़रीर में जोश था और ऐसा तास्सुर था कि तमाशाईयों के दिल में हलचल मच गई और उसी रोज़ जवान आदमी फौज में भर्ती होने लगे।

दस रोज़ में भर्ती होने वालों की तादाद छे हज़ार हो गई । इस में कमों बेश डेढ़ हज़ार जवान अपने ऊंट साथ लाये और एक हज़ार के करीब घोड़ों और खच्चरों समीत आये थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें जानवरों का मुआवज़ा फौरी तौर पर आदा कर दिया और फौज ने उनकी ट्रेनिंग शुरू कर दी।

मेले के तीन माह बाद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में जराइम की रफतार बढ़ने लगी। चोरी , जुआ बाज़ी और रात की ग़ैर हाज़री। यह जराईम इस से पहले भी होते थे लेकिन न होने के बराबर थे। फौजी मेले के बाद यह वबा की सूरत इख़तियार करने लगे। इन तीनों की बुनियाद जुआबाज़ी थी। चोरी की वारदातें इसी तक महदूद थीं कि सिपाही की कोई ज़ाती चीज़ें चुरा कर बाज़ार में बेच डालता था,मगर एक रात फौज के तीन घोड़े गायब हो गये। सवारों और सिपाहियों की तादाद पूरी थी। कोई भी ग़ैर हाज़िर नही था। अगर इस नुकसान को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता तो अगली बार दस घोड़े चोरी हो जाते। आला हाकिम की एक रिर्पोट पहुंची। उन्होंने फौजों को तम्बीहें कीं। सज़ा से डराया, खुदा से डाराया मगर यह तीनों जराईम बढ़ते गये।

एक रात एक सिपाही पकड़ा गया । वह कहीं से कॅम्प में आरहा था इस से पहले रात को ग़ैर हाज़िर होने वाले सिपाही चोरी छिपे संतरियों से बच कर निकल जाते थे और बचते बचाते आ जाते थे लेकिन यह सिपाही लड़खड़ाता आ रहा था। संतरी ने उसे देख लिया और उसे पुकारा। सिपाही रुक गया और गिर पड़ा। संतरी ने देखा कि यह खून में नहाया हुआ था। उसे उठा कर अपने ओहदेदार के पास ले गया। उसकी मरहम पट्टी की गई मगर वह जिन्दा

न रह सका। मरने से पहले उस ने बताया कि अपने एक सिपाही साथी को कत्ल कर आया है और उसकी लाश कैंम्प से निस्फ कोस दूर खेमें में पड़ी है। उसके बयान के मुताबिक वहां तीन खेमे थे। वे लोग खाना बदोश थे। उनके पास खूबसूरत औरतें थीं। वे उन औरतों की नुमाईश फौजियों में करते थे रात को सिपाही वहां तक पहुंच जाते थें। वे दूसरों को बताते तो वह भी चले जाते।

वह खानाबदोश सिर्फ इस्मत फरोश नही थे। उनकी हर औरत अपने हर फौजी गाहक को यह तास्सुर देती थी कि वे उस पर फिदा है और उस के साथ शादी कर लेगी। बाद की हकीकात से पता चला कि उन्होंने सिपाहियों में रकाबत पैदा कर दी थी। इसी का नतीजा था कि यह दो सिपाही खाना बदोशों के खेमें में लड़ पड़े थे। एक मारा गया और दूसरा ज़खमी होकर आया और बयान देकर मर गया।

दूसरे सिपाही की लाश लाने के लिये आदमी रवाना कर दिये गये। उनके साथ कमान्डर भी था। मरने वाले सिपाही ने रास्ता और जगह बता दी थी। वहां गये तो देखा कि सिपाही की लाश पड़ी है। खेमे नही है। वहां के निशान बता रहे थे कि यहां से खेमे उठाये गये हैं। रात के वक़्त उनकी तलाश मुमकिन नही थी। सिपाही की लाश उठा लाये। इस हादसे की रिर्पोट सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को दी गई और यह भी बाताया गया कि फौज मे जराईम बढ़ गये हैं और तीन घोड़े भी चोरी हो चूके हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफियान को बुला कर कहा कि वह सिपाहियों के भेस में अपने सुराग़रसां फौज में शामिल करके मालूम करे कि यह जराइम क्यों बढ़ गये हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस सिलसिले मे अलबरक को भी हुक्म दिया। इस क्यों का जवाब शहर के अन्दर मौजूद था जहां तक अली बिन सुफियान के सुराग़रसां की रसाई मुहाल थी। यह एक बहुत बड़ा किला नुमां मकान था। मिस्रीयों का एक कुन्बा नही बल्कि पूरा खान्दान उस में रहता था। इस मकान को और मकानों से शहर में इज़्ज़त हासिल थी क्यों कि यहां खैरात बहुत ज़्यादा होती थी। नादारों को यहां से माली मदद मिलती थी। फौजी मेले में इस खनदानों ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अशरफियों की दो थैलियां फौज के लिये पेश की थी। यह सौदागर खानदान था मिस्र में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के आने से पहले यह मकान सुडानी फौज के बड़े रूतबे वालों और इन्तेज़ामिया के हाकिमों की मेहमानगाह बना रहा था। सुडानीयों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने आकर खत्म कर दिया तो इस खानदान की वफादारियां हुकूमत के साथ रहीं और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का वफादार हो गया।

जिस रोज़ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अलबरक और अली बिन सुफियान को हुकम दिया कि वह फौज में जराईम की वबा की वजुहात मालूम करें, उस से अगली रात इस मकान के एक कमरे में दस बारह आदमी बैठे थे। शराब का दौर चल रहा था कमरें में एक बूढ़ा आदमी दाखिल हुआ। उसे देख कर सब उठ खड़े हुये। उसके साथ एक बड़ी खूबसूरत लड़की जिसका आधा चेहरा नकाब में था। कमरे में नकाब उठा दिया। वह बूढ़े के साथ बैठ गई।

"कल अमीरे मिस्र तक इत्तेला पहुंच गई है कि फौज में जुए बाज़ी और बदकारी बढ़ गई ह।" बूढ़े ने कहा–" हमारी आज की यह नशिस्त बहुत अहम है। अमीर ने सिपाहियों के भेस में सुराग़रसां शामिल करने का हुकम दे दिया है। हमे इन सुराग़रसानों को नाकाम करना है। ताज़ा इत्तेला बड़ी उम्मीद अफज़ा है। दो मिस्री सिपाहियों ने एक औरत पर लड़कर एक दूसरे को क़त्ल कर दिया है यह हमारी कामयाबी की इबतदा है।"

"तीन महीनें में सिर्फ एक मुसलमान सिपाही ने दूसरे को कत्ल किया और खुद भी क़त्ल हुआ। एक आदमी ने बूढ़े की बात काट कर कहा–" कामयाबी की यह रफतार बहुत सुस्त है। कामयाबी हम उसको कहेंगे जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का कोई नाइब सालार अपने सालार को कत्ल कर देगा।"

"मैं कामियाबी उसे कहुंगा जब कोई सालार या नाईब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कर देगा।" बूढ़े ने कहा–" मुझे मालूम है कि एक हज़ार सिपाही क़त्ल हो जायेंगे तो भी कोई फर्क नही पड़ेगा। हमारा मक़सद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का क़त्ल है। आप सबको पिछले साल के दोनो वाकिआत याद होंगे। साहिल पर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर तीर चलाया गया था वह खता हो गया । रोम से आदमी आये वह ऐसे नाकाम हुये कि सब के सब मारे गये और एक बदबख्त मुसलमान हो गया। इस से क्या ज़ाहिर होता है? यह कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करना इतना आसान नही जितना आप लोग समझते हैं। यह भी हो सकता है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी क़त्ल हो जाये तो उस का जानशीन इस से ज़्यादा सख़्त और कट्टर मुसलमान साबित हो। इस लिये ये तरीक़ा ज़्यादा बेहतर है कि उसकी फौज को खूबसूरत तबाही के रास्ते पर डाल दो जिस पर सलीब के परसतारों नें दमिश्क व बग़दाद के मुसलमान उमरा और हाकिमों को डाल दिया है।"

"सलीब के परस्तारों और सूडानीयों को शिकस्त खाये एक साल गुज़र गया है।" एक ने कहा–" इस एक साल मे आपने क्या किया?...... मोहतरम! आप बड़ा लम्बा रास्ता इखतियार कर रहे हैं। दो आदमियों का क़त्ल बेहद लाज़िम है। एक सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी दूसरा अली बिन सुफियान।"

"अगर अली बिन सुफियान को ख़त्म कर दिया जाये तो अय्यूबी अन्धा और बहरा हो जाये, एक और ने कहा। मैं ने वह आँखें हासिल कर ली हैं जो सलाहुद्दीन अय्यूबी के सीने के हर एक राज़ को देख सकती हैं।" बूढ़े ने कहा और उस लड़की की पीठ पर हाथ रखा जो उस के साथ आई थीं बूढ़े ने कहा–" यह है वह आँखें। देख लो इन आँखों में क्या जादू है। तुम सब ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक हाकिम खादिमुद्दीन अलबरक़ का नाम सुना होगा। तुम में से बाज़ ने उसे देखा भी होगा। सिर्फ दो आदमी हैं जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के सीने में देख सकते है एक अली दूसर अलबरक़। अली बिन सुफियान को क़त्ल करना हिमाक़त होगी। मैंने जिस तरह अलबरक़ पर क़बज़ा कर लिया है, इसर तरह अली पर भी कर लुंगा।'8

"अलबरक़ आपके क़बज़े में आ चुकाहै?" एक ने पूछा।

"हाँ! बूढ़े ने लड़की के रेशमी बालों को हाथों से छेड़ कर कहा–" मैंने उसे इन ज़ंजीरों मे जकड़ लिया है। मैंने आज आप सब को चन्द और बातें बतानें के अलावा यह खुशखबरी भी सुनाने के लिये बुलाया है ।हमें जल्दी बरखास्त होना है क्योंकि हम सब का एक जगह इकट्ठा होना ठीक नही। इस लड़की को तुम सब शायद जानते हो। मुझे बिल्कुल उम्मीद नही थी कि यह इतनी आसानी से यह ड्रामा खेल लेगी। इस की उम्र देखिये। पुख्ता नही है। मैं पूरा एक साल इस मौके की तलाश मे मारा मारा फिरता रहा कि अली बिन सुफियान या अलबरक़ को या दोनों को फांस सकूं। मैं उन से मिला भी नही क्योंकि मैं उनकी शनाख्त में आना नही चाहता था। फौजी हाकिमों को सुलतान शहरियों से दूर रखता था। आख़िर उस ने फौजी मेले का एलान किया और मुझे पता चला कि मेले में वह शहरियों में बैठे और उन से बातें करें और उन पर अपना रोब नही बल्कि एतामाद पैदा करें। मुझे अली बिन सुफियान क्यों नज़र नही आया। इस लड़की को मैं साथ ले गया। उस के साथ दो कुर्सियां खाली थीं। मैं ने लड़की को उस के पास बिठा दिया। उसे मैं आठ महीने से उसतादी तरीके सिखाता रहा था। लड़की ने उसे अपनी खूबसूरती में गिरफतार कर लिया। मुलाकात का वक्त और जगह तय कर ली। मैं ने उसे बताया कि उसे खन्डर में क्या नाटक खेलना है। लड़की खन्डर में चली गई। मैं चार आदमियों के साथ वहां मौजूद था। दो आदमी इस वक्त वहां मौजूद हैं। दो को आप सब नही जानते। वह हमारे गिरोह के आदमी हैं। उस ने अलबरक़ पर साबित कर दिया कि यह उस की खातिर जान दे देगी। हमारे चारों साथियों ने अलबरक़ पर और इस पर तलवारों से हमला किये। उस ने बर्छी के वार किये। यह नाटक इस क़दर हकीक़ी मालूम होता था कि अलबरक़ को शक तक न हुआ। कम्बख़्त के दिमाग़ में यह भी न आया कि तलवारों और बर्छी के इतने वार हुये मगर कोई ज़ख़मी न हुआ। मैं ने यह कह कर खेल खत्म कर दिया कि यह लड़की इतनी बहादूर है कि किसी बहादूर के पास ही अच्छी लगती है। मैंने उसे खुशी का इज़हार करते हुये अलबरक़ के हवाले कर दिया।"

"मैं ने उसे अपना नाम आसिफा बता रखा है।" लड़की ने कहा–" मैं हैरान हूँ कि इतनी पुख्ता उम्र का हाकिम इतनी आसानी से मेरे जाल में फंस गया है। मैं ने उसे शराब का आदी बना दिया है। उस ने कभी नही पी थी। पहली बीवी उसी घर में रहती है। उसके बच्चें भी हैं लेकिन वे सबको जैसे भूल गया है" लडकी ने महफिल को तफसील से बताया कि उस ने किस किस तरीके से सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस मातेहते खुसूसी की अक़ल को अपनी मुट्ठी में ले रखा है।

"इन तीन महीनों में यह लड़की मुझे सुलातन सलाहुद्दीन अय्यूबी के कई कीमती राज़ दे चूकी है।" बूढ़े ने कहा–" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत ज़्यादा फौज तैय्यार कर रहा है। इस मे से वह निस्फ़ आदमी मिस्र में रखेगा और बाक़ी निस्फ को अपनी कमान में ईसाई बादशाहों के खिलाफ लड़ने के लिये ले जायेगा। उसकी नज़र योरूशलम पर है लेकिन अलबरक़ से इस लड़की ने जो राज़ लिये हैं। वह यह है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी सब से पहले अपने मुसलमान हुकुमरानों और क़िले दारों को मुत्तहिद करेगा। उनके इत्तेहाद

को सलीब के परस्तारों ने बिलकुल इसी तरह बिखेर दिया है जिस तरीके से हमने अलबरक को अपने कब्जे मे लिया है।"

"तो क्या हम यह समझें कि अर्लबरक हमारे गिरोह का फर्द है?" एक आदमी ने पूछा ।

"नही।" बूढ़े ने जवाब दिया –" वह सच्चे दिल से अय्यूबी का वफादार है। वह उसका उतना ही वफादार है जितना इस लड़की का है। यह लड़की अय्यूबी, कौम और इसलाम की वफादारी का इज़हार एसे वालिहाना तरीके से करती है कि अलबरक इसे, कौम की जान बाज़ बेटी समझता है। इस लड़की के हुस्न व जवानी और मुहब्बत के अमली इज़हार का जादू अलग है। अलबरक को हम अपने साथ नही मिला सकते। ज़रूरत ही क्या है। वह पूरी तरह हमारे हाथों में खेल रहा है।"

" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ज़िहन में सलतनते इसलामिया है" बूढ़े ने कहा–" वह सलीब की सलतनत में इसलाम का झंडा गाड़ने का मनसूबा बना चुका है। हमारे इन जासूसों को जो समुन्द्र पार से आये हैं ; सुलतानसलाहुद्दीन अय्यूबी ने गिरफतार और बेकार करने के लिये अली बिन सुफियान की निगरानी में एक बहुत बड़ा गिरोह तैय्यार किया है अलबरक से हासिल की हुई इत्तेलाआत के मुताबिक उस ने जानबाजों की एक अलग फौज तैय्यार की है। जिसे वह सलीबी मुल्कों में भेज कर जासूसी और तबाही करायेगा। उस फौज की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मनसूबे बहुत खतरनाक हैं। भर्ती होने वालों में सूडानी भी हैं। मुझे ऊपर से जो हिदायत मिली है वह यह है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में बदकारी के बीज बोने हैं। इसका तरीका यह है कि उनके दिलों में औरत और जुआ दाखिल करो।"

बूढ़े ने बताया कि उस ने फौजी मेले के फौरन बाद अपने आदमी भर्ती करा दिये थे। उन्होनें बड़ी खूबी से फौज मे जुआ शुरू करा दिया है। जुआ और औरत ऐसी चीज़ हैं जो इन्सान को चोरी और क़त्ल तक ले जाती है। उस ने दूसरा तरीका यह बताया कि इस्मत फरोश औरतों को ट्रेनिंग दे कर फौजी कैमपों के इर्द गिर्द छोड़ दिया गया है जो यह ज़ाहिर नही होने देती कि वह पेशावर हैं। उन्होंने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के फौजियों को बदी के रास्ते पर डालने के साथ साथ उनमे रक़ाबत भी पैदा कर दी है। बूढ़े ने कहा–" उसकी कामियाबी परसों सामने आई है। दो सिपाही एक औरत के खेमे में बेयक वक्त पहुंच गये। दोनो लड़ पड़े और एक दूसरे को बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया। एक तो खेमे में ही मर गया दूसरे के मुतअल्लिक पता चला कि कैम्प मे जा कर मर गया है....... यह रिपोर्ट सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंच गई है। उस ने अली बिन सुफियान और अलबरक को हुक्म दिया है कि फौजों मे अपने सुराग़रसां भेज कर मालूम करे कि जूआ बाज़ी, चोरी चकारी और बदकारी क्यों बढ़ती जा रही है। लिहाज़ा आप सब इन तमाम औरतों से जो इसी काम मे मसरूफ हैं कह दें कि कैम्प के क़रीब न जायें।"

इसी मजलिस में यह भी बताया गया कि आसिफा जिसका असली नाम कुछ और था, पांचवीं छटी रात बूढ़े को इत्तला देने जाती है जो वह अलबरक से हासिल करती है। जिस

रात उसे बाहर मिलना होता है वह अलबरक को शराब में एक खास सफूफ घोल कर पिला देती है उसके असर से सुबह तक उसकी आंखें नहीं खुल सकती। मजलिस में यह इनकशाफ भी हुआ कि मिस्र के शहरों और कस्बों में खुफिया कहबा खाने और किमार खाने कायम कर दिए गये हैं। इनके असरात उम्मीद अफज़ा हैं। तरबियत याफता औरतें अच्छे अच्छे घरानों के नौजवानों को बदकारी के रास्ते पर डालती जा रही हैं। अब कोशिश यह की जायेगी कि मुस्लिम लड़कियों में भी बेहयाई का रुजहान पैदा किया जाये।

यह महफिल जो जासूसों का एक खुफिया इजलास था, बरख़ास्त हुई। वे सब इक्ट्ठे बाहर न निकले। एक एक आदमी बाहर जाता था। दस पन्द्रह मिनट बाद दूसरा आदमी निकलता था। बूढ़ा भी चला गया था। सिर्फ आसिफा और एक आदमी रह गया। आसिफा ने नक़ाब में चेहरा छुपाया और इस आदमी के साथ निकल गई।

❖

अलबरक ने आसिफा को एक राज़ बना के रख हुआ था। उसने अभी किसी को नहीं बताया था कि उसने दूसरी शादी कर ली है। दूसरी शादी की मनाही नही थी, लेकिन वह डरता था कि दोस्त मज़ाक करेंगे कि इतना अरसा एक बीवी के साथ गुज़ार कर चालीस साल की उम्र में नौजवान लड़की के साथ शादी कर ली। मगर यह भेद छुप न सका। अली बिन सुफियान ने शहर में और फौजी कैम्पों के इर्द गिर्द अपने जासूस फैला रखे थे। उसे यह इत्तलायें मिल रही थीं कि फौजी मेलों के बाद शहर में भी जुआ और बदकारी बढ़ रही है। एक रोज़ एक जासूस ने अली बिन सुफियान को यह रिपोर्ट दी कि गुज़िश्ता तीन महीनों में उसने चार बार देखा कि अलबरक के घर से रात उस वक़्त जब सब सो जोते हैं, एक औरत सियाह लिबास में लिपटी हुई निकलती है। वह थोड़ी दूर जाती है तो एक आदमी उसके साथ हो जाता है। जासूस ने बताया कि दो बार उसने याहां तक देखा। तीसरी बार उसने इस औरत का पीछा किया। वह उस आदमी के साथ एक मकान में चली गई। वहां से कुछ देर बाद निकली और उस आदमी के साथ वापस चली गई।

इस जासुस ने बताया कि उसने इस औरत को गुज़िश्ता रात घर से निकलते एक आदमी के साथ जाते देख तो तआकुब किया। वह उसी मकान में दाख़िल हो गई। ज़रा सी देर बाद वह एक आदमी के साथ मकान से निकली। वह दोनों शहर के एक बहुत बड़े मकान में दाखिल हो गई। जासूस मकान से दूर रहा। बहुत सा वक़्त गुज़र जाने के बाद इस मकान में एक एक करके ग्यारह आदमी निकले। आख़िर में यह औरत एक आदमी के साथ निकली। जासूस अन्धेरे से फायदा उठाते हुए उनके तआकुब में गया। अलबरक के मकान से कुछ दूर आदमी एक और तरफ चला गया और औरत अलबरक के मकान में दाख़िल हो गई।

जासूस अलबरक जैसे हाकिम के घर के मुताअल्लिक कोई बात कहने की जुर्रत नहीं कर सकता था लेकिन अली बिन सुफियान की हिदायत और एहकाम बड़े ही सख्त थे। उसने अपने जासूसों, मुख्बिरों और जासूस से कह रखा था कि वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की किसी हरकत को शक से देखें तो भी उसे बतायें और वह किसी के रुतबे का लिहाज़ न करें।

जहां उन्हें किसी किस्म का शक हो, ख़्वाह कितना ही मामूली क्यों न हो, वह अली बिन सुफियान को तफसील से बतायें। यह सबकी जासूसी की ट्रेनिंग में शामिल था कि जासूसी की कामयाबी का दारोमदार ऐसी ही हरकतों और बातों से होता है जिन्हें बेनाम समझ कर नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है।

इस जासूस ने चार बार जो मुशाहदा किया था वह अली बिन सुफियान के लिए अहम था। वह अलबरक की बीवी को अच्छी तरह जानता था। वह ऐसी औरत नहीं थी कि रातों को किसी ग़ैर मर्द के साथ बाहर जाये। अलबरक की कोई बेटी जवान नहीं थी। यह तो किसी को भी इल्म नही था कि अलबर्क ने एक नौजवान लड़की के साथ शादी कर ली है। उसने इस मसले पर बहुत ग़ौर किया। उसे यह ख़याल भी आया कि अलबरक उसका दोस्त भी है। उसे हक पहुंचता था कि उसके दोस्त के घर में कोई गड़बड़ है तो उसके लिय कुछ करे। मगर उसके ज़िहन में जो सोंच ग़ालिब थी वह यह थी कि शहर में मशकूक औरतों का रैला सा आगया था। कहीं ऐसा तो नही कि अलबरक किसी बदकार औरत के चक्कर में आगया हो? एक तरीका उसके दिमाग में आगया। उसने अपने महकमें की एक औरत को इस रूप में अलबरक के घर भेजा कि वह एक मजलूम औरत है। उसका ख़ाविंद मर गया है और उसके बेटे आवारा हो गये है। लिहाज़ा उसकी मदद की जाये।

हिदायत के मुताबिक यह औरत उस वक़्त अलबरक के घर में गई जब वह घर में नहीं था। दूसरी हिदायत के मुताबिक वह सारे घर में फिरी तो उसे आसिफा नज़र आगई। यह औरत अलबरक की पहली बीवी से मिली। अपनी "फरियाद" पेश की और कहा कि वह अलबरक से उस की सिफारिश करे। बातों बातों में उसने कहा– "आप की बेटी की शादी हो गई है या अभी कुंआरी है?" उसे जवाब मिला– "यह मेरी बेटी नहीं मेरे ख़ाविंद की दूसरी बीवी है। तीन महीने हुए उन्हों ने शादी की है।"

अली बिन सुफियान के लिए यह इत्तेला हैरान कुन थी। उसके दिल में यही शक पैदा होगया के रात को बाहर जाने वाली उसकी नई बीवी हो सकती है। अली बिन सुफियान ने एक और औरत के हाथ अलबरक की पहली बीवी को पैग़ाम भेजा कि वह उसे कहीं बाहर मिलना चाहता है। मगर अलबरक को पता न चले, उसने यह भी कहला भेजा कि उनके घर के मुताल्लिक कोई बहुत ही ज़रूरी बात करनी है। अली ने मुलाकात के लिये एक जगह भी बता दी और वक़्त वह बताया जब अलबरक दफ्तर में मसरूफ होता था। वह आ गई। अली बिन सुफियान के दिल में इस मोअज़्ज़ औरत का बहुत ही एहतराम था। उसने अलबरक की बीवी से कहा कि उसे मालूम हुआ है कि अलबरक ने दूसरी शादी कर ली है। बीवी ने जवाब दिया– "खुदा का शुक्र है कि उसने दूसरी शादी की है। चौथी और पांचवी नहीं।"

बातें करते करते अली बिन सुफियान ने पूछा। "वह कैसी है?"

"बहुत खूबसूरत है।" बीवी ने जवाब दिया।

"शरीफ भी है?" अली बिन सुफियान ने पूछा– "आपको उस पर किसी किस्म का शक तो नहीं?" कुछ देर तक वह गहरी सोंच में पड़ी रही। अली ने कहा– "अगर मैं यह कहू कि वह

कभी कभी रात को बाहर चली जाती है तो आप बुरा तो न जानेंगी?"

वह मुस्कराई और कहने लगी– "मैं खुद परेशान हूं कि यह बात किस से करूं। मेरे खाविंद का यह हाल है कि उसका गुलाम हो गया है। मुझसे तो अब बात भी नहीं करता। मैं इस लड़की के खिलाफ़ खाविंद के साथ बात करूं तो वह मुझे घर से निकाल देगा। वह समझेगा कि मैं हसद से शिकायत कर रही हूं। यह लड़की साफ नहीं हमारे घर में शराब की बू भी कभी नहीं आई थी। अब वहां मटके ख़ाली होते हैं।"

"शराब?" अली बिन सुफियान ने चौंक कर पूछा– "अलबरक शराब भी पीने लगा है?"

"सिर्फ पीता नहीं।" बीवी ने कहा– "बदमस्त और मंदहोश होता है। मैंने छः बार उस लड़की को रात के वक़्त बाहर जाते और बहुत देर बाद आते देखा है। मैने यह भी देखा है कि जिस रात लड़की को बाहर जाना होता है, उस रात अलबरक बेहोश होता है। सुबह बहुत देर से उठता है। लड़की बदमाश है। उसे धोखा दे रही हैं।"

"लड़की बदमाश नहीं।" अली बिन सुफियान ने कहा– "वह जासूस है। वह अलबरक को नहीं, कौम को धोखा दे रही है।"

"जासूस?" बीवी ने चौंक कर कहा– "मेरे घर में जासूस?" वह उठ खड़ी हुई। दांत पीस कर बोली– "आप जानते हैं कि मैं शहीद की बेटी हूं। अलबरक पक्का मुसलमान था। उसने जिन्दगी इस्लाम के नाम पर वक़्फ कर रखी थी। मैं बच्चों को जेहाद के लिए तैय्यार कर रही हूं और आप कहते हैं कि मेरे बच्चों का बाप एक जासूस लड़की के कब्ज़े में आगया है। मैं अपने बच्चों पर बाप को कुर्बान कर सकती हूं, कौम और इस्लाम को कुर्बान होता नहीं देख सकती। मैं दोनो को कत्ल कर दूंगी।"

अली बिन सुफियान ने उसे बड़ी मुश्किल से ठंडा किया और समझाया कि अभी यह यकीन नहीं है कि यह लड़की जासूस है और यह भी देखना है कि अलबरक भी जासूसों के गिरोह में शामिल हो गया है या उसे शराब पिला कर सिर्फ इस्तेमाल किया जा रहा है। इस औरत को यह भी बताया गया कि जासूसों को कत्ल नहीं गिरफ्तार किया जाता है और उनके दूसरे साथियों के मुताल्लिक पूछा जाता है। अली बिन सुफियान ने उसे कुछ हिदायतें दीं और उसे कहा कि वह लड़की की हर हरकत पर नज़र रखे...... यह औरत चली गई। यों मालूम होता था जैसे अली बिन सुफियान की हिदायतों पर ठंडे दिल से अमल करेगी। मगर उसकी चाल और उसके अन्दाज़ से यह भी मालूम होता था कि किसी भी वक़्त बे काबू हो जाएगी। वह हरम की औरत नही थी। वह खाविंद की वफादार बीवी और मुल्क व मिल्लत पर जान निसार करने वाली कौम की बेटी थी।

❖

ख़ादिमुद्दीन, अलबरक और अली बिन सुफियान सिर्फ रफ़ीके कार ही नहीं थे। उनकी गहरी दोस्ती भी थी। वे हम उम्र थे। उन्हों ने अखाड़े में मारके लड़े थे। दोनों सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पुराने साथी थे। इतनी गहरी दोस्ती के बावजूद अलबरक ने अली बिन सुफ़ियान से दूसरी शादी छुपा रखी थी। अली बिन सुफियान को मालूम हुआ तो उसने अलबरक के

साथ इस बारे में कोई बात न की। वह उसकी बीवी की मदद से उसके घर का मुअम्मा हल करने की कोशिश में लगा हुआ था। उसने अलबरक के मकान और उसके मकान के दर्मियान अपने जासूसों में इज़ाफा कर दिया था। जहां अलबरक की नई बीवी रात को जाया करती थी। अलबरक की पहली बीवी के साथ बातें किये दो रातें गुज़र गई थीं। लड़की बाहर नहीं निकली थी। जासूस पूरी पूरी रात बेदार रहे थे।

तीसरी रात, निस्फ शब से ज़रा पहले अली बिन सुफियान गहरी नींद सोया हुआ था। उसने अपने अमले और अपने मुलज़िमों से कह रखा था कि वे जब चाहें उसे जगा सकते हैं वह इन हाकिमों से अलग था जो किसी को आराम में दखल डालने की इजाज़त नहीं देते थे। उस रात अली बिन सुफियान को मुलाज़िम ने गहरी नींद से बेदार किया और कहा— "उमर आया है, घबराया हुआ है।"

अली बिन सुफियान कमान से निकले हुए तीर की तरह कमरे से निकला, सेहन दोतीन छलांगों में पार किया और डेयोढ़ी से बाहर निकल गया। उसके अमले का एक आदमी बाहर खड़ा था। उसने कहा— "मुलाज़िम को दौड़ाऐं। दस बारह सवार फौरन मंगवाऐं। अपना घोड़ा जल्दी तैय्यार करें, फिर आपको बताता हूं कि क्या हुआ है।"

अली बिन सुफियान ने मुलाज़िम को चौदह मुसल्लह सवार अपना घोड़ा और तलवार लाने को दौड़ाया और उमर से पूछा— "कहो क्या बात है?"

उमर और आज़र नाम के दो जासूस आसिफा को देखने के लिए मुतैयन थे। अली बिन सुफियान ने उन्हें हुक्म दे रखा था कि लड़की घर से निकल कर कहीं जाए तो उसे फौरन इत्तला दी जाऐ। उमर बड़ी खतरनाक इत्तला लेकर आया। उसने बताया कि थोड़ी देर गुज़री अरबरक के घर से सियाह चादर में सिर से पांव तक लिपटी हुई एक औरत निकली। पचास साठ गज़ आगे गई तो अलबरक के घर से उसी लिबास में एक और औरत निकली। वह बहुत तेज़ तेज़ अगली औरत के पीछे चली गई। जब उससे ज़रा दूर रह गई तो अगली औरत रूक गई। दोनो जासूस छुपे हुए थे। उन्हें कोई न देख सका। वे पीछा भी छुप कर करते थे। दोनो औरतों में न जाने क्या बात हुई। उन में से एक ने ताली बजाई। कहीं करीब से एक आदमी निकला। उसने बाद में आने वाली औरत को पकड़ना चाहा। औरत ने उस पर किसी हथियार का वार किया जो अन्धेरे में नज़र नहीं आता था। उस आदमी ने भी उस पर किसी हथियार से वार किया।

जो औरत पहले आई थी, उसकी आवाज़ सुनाई दी। "इसे उठा कर ले चलो" दूसरी औरत ने उस पर वार किया। उसकी चीख़ सुनाई दी। दूसरी औरत ने उस पर एक और वार किया। और आदमी का वार बचाया भी। दोनों औरतें ज़ख़मी हो गई थीं। उमर अली बिन सुफियान को इत्तेला देने दौड़ पड़ा। आज़र वहीं छुपा रहा। उसे यह देखना था कि यह लोग कहां जाते हैं।

अली बिन सुफियान ने इस किस्म के हंगामी हालत के लिये तेज़ रफतार घोड़े और तजुरबाकर लड़ाका सवारों का एक दस्ता तैय्यार रखा हुआ था। यह सवार अपने घोड़ों के

करीब सोते थे। ज़ीन और हथियार उनके पास रहते थे। उन्हें यह मश्क़ कराई जाती थी कि रात के वक़्त ज़रूरत पड़ने पर वे चन्द मिन्टों में तैय्यार हो कर ज़रूरत की जगह पहुंचे। वे इस क़दर तेज़ हो गये थे कि अली बिन सुफ़ियान के मुलाज़िम ने दस्ते के कमाण्डर को इत्तिलाअ दी कि चौदह सवार भेजदो तो वह अली बिन सुफ़ियान के कपड़े बदलने और उसका घोड़ा तैय्यार होने तक पहुंच गये।

अली बिन सुफ़ियान की क़यादत और उमर की रहनुमाई में वे वारदात की जगह पहुंचे। दो सवारों के हाथों में डंडों के साथ तेल में भीगे हुये कपड़ों की मशालें थीं। वहां दो लाशें पड़ी थीं। अली बिन सुफ़ियान ने घोड़े से उतर कर देखा। एक अलबरक़ की पहली बीवी थी। दूसरा आज़र था। उमर का साथी। दोनों जिन्दा थे और खून में डूबे हुये थे। आज़र ने बताया कि वह अलबरक़ की बीवी को फैंक कर चले गये तो वह इस के पास गया। अचानक पीछे से किसी ने उस पर खंजर के तीन वार किये। वह संभल न सका। हमला आवर भाग गया। आज़र ने बताया कि दूसरी औरत अलबरक़ की घर की तरफ नही गई बल्कि उधर गई है जहां वह पहले जाया करती थी। उमर को उस घर का इल्म था।

अली बिन सुफ़ियान ने दो सवारों से कहा कि वे दोनों ज़ख्मियों को फौरन जर्राह के पास ले जायें और इनका खून रोकने की कोशिश करें। बाक़ी सवारों को उमर की रहनुमाई मे उस मकान की तरफ ले गया। जहां आसिफा पहले कई बार जाते देखी गई थी। वह पूराने ज़माने का बड़ा मकान था। उ से लगे कई मकान थें पिछवाड़े से घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ आई। अली बिन सुफ़ियान ने अपने सवारों को मकान के दानो तरफ से पीछे भेजा। दो सवारों को मकान के सामने खड़ा कर दिया और कहा कि कोई भी अन्दर से निकले उसे पकड़ लो। भागने की कोशिश करे तो पीछे से तीर मारो और खत्म करदो।

सवार अभी चक्कर काट कर पिछवाड़े की तरफ जा ही रहे थे कि दौड़ते घोड़ों के टाप सुनाई देने लगी। अली बिन सुफ़ियान ने एक सवार से कहा– "सरपट जाओ। अपने कमाण्डर से कहो कि इस मकान को घेरे में ले कर अन्दर दाखिल हो जाये। अन्दर के तमाम अफराद को गिरफतार कर लो।" सवार कैम्प की तरफ रवाना हो गया। अली बिन सुफ़ियान ने बुलन्द आवाज़ से अपने सवारों को हुकुम दिया– "ऐड़ लगाओ। पीछा करो। एक दूसरे को नज़र में रखो।" और उस ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई। यह चुने हुये घोड़े थे और इनके सवार सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से कई बार ख़िराजे तहसीन हासिल कर चुके थे। शहसवार मालूम होते थे। उनके घोड़ो के टाप बताते थे। कि अच्छी नस्ल के बहुत तेज़ दौड़ने वाले घोड़े हैं यह शहर का इलाका था जहां मकानों की रूकावटें थीं। गलियां थीं जो घोड़े कि दौड़ के लिये कुशादा नही थीं। उनसे से आगे खुला मैदान था।

अन्धेरे में घोड़े नज़र नही आते थे। उनकी आवाजों पर पीछा हो रहा था। वे जब खुले मैदान में गये तो उनका छुपना मुश्किल हो गया। उफक़ के पसेमंजर में वे सायों की तरह साफ नज़र आने लगे। वे चार थे। उन्हों ने कम व बेश एक सौ गज़ का फासला हसिल कर लिया था। पहलू ब पहलू जा रहे थे। अली बिन सुफ़ियान के हुकूम पर दो सवारों ने उसी

रफ़्तार से घोड़े दौड़ाते तीर चलायें। तीर शायद ख़ता हो गये थे। भागने वाले दानिशमन्द मालूम होते थे। तीर उनके करीब से या दर्मियान से गुज़रे तो उन्होंने घोड़े फेर दिये। वे इकट्ठे जा रहे थे। उनके घोड़े खुलने लगे। निहायत अच्छे तरीके से घोड़े एक दूसरे से खासे दूर हट गये। अली बिन सुफ़ियान का दस्ता बहुत तेज़ था। फ़ासला कम होता जा रहा था। मगर भागने वालों के घोड़े और ज़्यादा एक दूसरे से हटते जा रहे थे। आगे खजूर के पेड़ों का झुंड आ गया। उनके घोड़े वहां इस तरह एक दूसरे से हट गये कि दो दायें तरफ़ और दो खजूर के बायें तरफ़ हो गये। यह जगह ऊंची थी। घोड़े ऊपर उठे और गायब हो गये। पीछा करने वाले बुलन्दी पर गये तो उन्हें आगे जो भागते साये नज़र आयेवे एक दूसरे से बहुत ही दूर हो गये थे। फिर वे इतनी दूर दूर हो गये कि उनके रूख़ भी बदल गये। अली बिन सुफ़ियान जान गया कि वे उसके सवारों को मुन्तशिर करना चाहते हैं। अली बिन सुफ़ियान ने बुलन्द आवाज से कहा–" हर सवार के पीछे तक़सीम हो जाओ। एक दूसरे को बता दो। एड़ लगाओ। फ़ासला कम करो। कमानों में तीर डाल लो।"

सवार तक़सीम हो गये। सबने कन्धों से कमानें उतार कर तीर डाल लिये और तक़सीम हो कर एक एक घोड़े के पीछे गये। उनके घोड़ों की रफ़्तार और तेज़ हो गई। टापों के शोर व गुल में कमानों से तीर निकलने की आवाज़ सुनाई दी। किसी ने ललकार कर कहा–" एक को मार लिया। घोड़ा बेकाबू हो गया है।" इधर अली बिन सुफ़ियान के साथ जो दो सवार थें उन्हों ने बेयक वक़्त तीर चलाये। अन्धेरे में तीर ख़ता जाने का डर था और तीर ख़ता जा भी रहा था। फिर भी उन्होंने एक और घोड़े को निशाना बना लिया। दुसरे ने अपने घोड़े से झुक कर उसके पेट में बरछी दाखिल कर दी मगर घोड़ा तो भाग रहा था। गिरा नही। सवार ज़िन्दा पकड़ना था। अली बिन सुफ़ियान के एक सवार ने बाज़ू बढ़ा कर एक सवार की गर्दन जकड़ ली। नीचे घोड़ा ज़ख़मी था। वे रूकते रूकते रूक गया। उस पर एक आदमी सवार था और लड़की जिसे सवार ने आगे बिठा रखा था। लड़की शायद बेहोश थी।

सेहरा की तारीक रात में अब किसी सरपट दौड़ते घोड़े की टाप सुनाई देते थीं सवार एक दूसरे को पुकार रहे थे। उनकी आवाज़ों से पता चलता था कि उन्होंने भागने वालों को पकड़ लिया है। अली बिन सुफ़ियान ने सबको इकट्ठा कर लिया। भागने वाले पकड़े गये थे उनके दो घोड़े ज़ख्मी थे उनके घोड़ें को मरने के लिये सेहरा में छोड़ दिया गया। भागने वाले पांच थे। चार आदमी और एक लड़की। लड़की गिर पड़ी थी। भागने वालों में से एक ने कहा–" हमारे साथ तुम लोग जो सुलूक करना चाहो कर लो मगर यह लड़की ज़ख़मी है। हम उम्मीद रखेंगे कि तुम इसे परेशान नही करोगे।"

एक घोड़े की ज़ीन के साथ मशालें बंधी हुई थी। खोल कर जलाई गई। लड़की को देखा गया। बहुत ही खूबसूरत और नौजवान लड़की थी। उसके कपड़े खून से सुर्ख हो गये थे। उसके कन्धे पर, गर्दन के करीब, खंजर का गहरा जंख्म था। उस से इतना खून निकल गया था कि लड़की का चेहरा लाश की तरह सफ़ेद और आँखें बन्द हो गई थी। अली बिन सुफ़ियान ने ज़ख्म में एक कपड़ा ठूंस कर ऊपर एक और कपड़ा बांध दिया और उसे एक

घोड़े पर डाल कर सवार से कहा कि जल्दी जर्राह तक पहुंचो। वहां जल्दी का तो सवाल नहीं था। वह शहर से मीलों दूर निकल गये थें कैदियों में एक बूढ़ा भी था।

❖

यह काफिला जब काहिरा पहुंचा तो सुबह तुलू हो रही थी। सुलतान को रात के वक़्त की इत्तेला मिल गई थी । अली बिन सुफियान हसपताल गया। जर्राह और तबीब कैदी लड़की की मरहम पट्टी मे और होश में लाने में मसरूफ थे सवार ने उसे थौड़ी देर पहले पहुंचा दिया था। अलबरक़ की पहली बीवी और आज़र होश में आ गये थे मगर उनकी हालत तसल्ली बख्श नही थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी हसपताल में मौजुद था। उस ने अली बिन सुफियान को आगे कर के कहा-" मैं बहुत देर से खड़ा हूँ। मैंने अलबरक़ को बुलाने के लिये आदमी भेजा तो उसने अजीब बात बताई है। वह कहता है कि अलबरक़ होश में नही है। उसके कमरे में शराब के पियाले और सुराही पड़ी हैं। क्या वह शराब पीने लगा है? उसे इतना भी होश नही कि उसकी बीवी घर से बाहर ज़खमी पड़ी है । मैं ने उस की बीवी से अभी कोई बात नहीं की। तबीब ने मना कर दिया है।"

"उसकी एक नही दो बीवियां ज़खमी है।" अली बिन सुफियान ने कहा-" यह लड़की जिसे हम ने सेहरा में जाकर पकड़ा है अलबरक़ की दूसरी बीवी है। ज़रा ज़ख्मियों को बोलने के क़ाबिल होने दें। हमने बहुत बड़ा शिकार मारा है।"

अलबरक़ सूरज निकलने के बाद जागा। मुलाज़िम के बताने पर वह दौड़ता आया । उसकी दोनो बीवीयां ज़खमी पड़ी थीं। उसे चारों जासूस दिखाये गये । वह बूढ़े को देख कर बहुत हैरान हुआ । उसे वह आसिफा का बूढ़ा खाविन्द समझता था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह वारदात अपनी तहवील में ले ली क्यों कि यह जासूसों के पूरे गिरोह की वारदात थी। और इसमें उसका खास आदमी शरीक था जिसे फौज के तमाम राज़ और आयन्दा के मनसूबे मालूम थे।

ज्योंहि ज़खमी बयान देने के काबिल हुये उन से बयान लिये गये। उनसे यह कहानी बनी कि अलबरक़ की पहली बीवी को जब अली बिन सुफियान ने बताया कि उसके खाविन्द की दूसरी बीवी मुश्तबा चाल चलन की है और वह जासूस मालूम होती है तो वह सख्त गुस्से के आलम में घर चली गई। वह अपने खाविन्द को और आसिफा को क़त्ल करदेना चाहती थी। लेकिन अली बिन सुफियान ने उस से कहा था कि जासूसों को ज़िन्दा पकड़ा जाता है ताकि उनके छूपे हुये साथियों का सुराग़ लिया जा सके। उसने अपने आप पर क़ाबू पाया और आसिफा पर गहरी नज़र रखने लगी। उसने रात को सोना भी तर्क कर दिया । मौक़ा देख कर उस ने उनके सोने वाले कमरे के उस दरवाज़े में छोटा सा सूराख कर लिया जो दूसरे कमरे में खुलता था। रात को इस सुराख मे से उन्हें देखती रहती थी। दो रातें तो उस ने यही देखा कि लड़की अलबरक़ को शराब पिलाती और नगेंपन का पूरा मुज़हिरा करती थी। वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की बातें ऐसे अन्दाज़ से करती थी जैसे वह उसका पीर व मुरशिद हो। सलीबीयों को बुरा भला कहती और वही बातें करती जो सुलतान सलाहुद्दीन

अय्यूबी के जंगी मनसूबे में शामिल थीं। अलबरक उसे बताता था कि सुल्तान क्या कर रहा है और क्या सोच रहा है।

अलबरक की पहली बीवी ने दो रातें यही कुछ देखा और सुना था। तीसरी रात वह नाटक खेला गया जिसका अलबरक की बीवी को बेताबी से इन्तेज़ार था। आसिफा ने अलबरक को शराब पिलानी शुरू की और उसे बिलकुल हैवान बना दिया। आसिफा दोनों पियाले उठा कर यह कह कर दूसरे कमरे में चली गई। "दूसरी लाती हूँ" वह वापस आई तो पियालों में शराब थी। उस ने एक पियाला अलबरक को दे दिया। दूसरा खुद मुहं से लगा लिया। इसके बाद उस ने बेहद नंगी हरकत की और अलबरक बेसुद लेट गया। आसिफा ने कपड़े पहने और अलबरक को आहिस्ता आहिस्ता बुलाया। वह न बोला। फिर उसे हिलाया। हाथ से उसके पलकें ऊपर की मगर उस की आँखें न खुलीं। उस ने पियाले दूसरे कमरे में ले जाकर शराब में बेहोश करने वाली कोई चीज़ अलबरक के पियाले में डाल दी थी।

आसिफा ने कपड़े पहने। ऊपर सियाह चादर इस तरह ले ली कि सर से पावं तक छुप गई। आधी रात होने को थी। उस ने कंदील बुझाई और बाहर निकल गई। पहली बीवी आग बगोला हो गई। उस ने खंजर उठाया। ऊपर लिबादा ओढ़ा। वह कमरे से निकलने लगी तो देखा कि आसिफा एक मुलाज़िमा के साथ खुसुर फुसुर कर रही थी। उस से पता चला कि मुलाज़िमा को उसने साथ मिला रखा था। आसिफा बाहर निकल गई। मुलाज़िमा अपने कमरे में चली गई। पहली बीवी बड़े दरवाज़े से निकल गई। वह तेज़ तेज़ चलती आसिफा के तआकुब में गई। वह उसके कदमों की आहट पर जा रही थी। वह सिर्फ यह देखना चाहती थी कि वह कहां जा रही है। आसिफा को शायद उसके कदमों की आहट सुनाई दी थी। वह रुक गई। पहली बीवी अन्धेरे में अच्छी तरह देख न सकी। वह आसिफा के करीब चली गई और रुक गई। अचानक आमने सामने आजाने से पहली बीवी फैसला न कर सकी कि क्या करे। उसके मुंह से निकल गया—"कहां जा रही हो आसिफा।"

पहली बीवी को मालूम न था कि लड़की की हिफाज़त के लिये आदमी छुप छुप कर उसके साथ जाता है जो किसी को नज़र नही आता। आसिफा ने अपने हाथ पर हाथ मारा अलबरक की पहली बीवी से हंस कर कहा—" आप मेरे पीछे आई हैं या कहीं जा रही हैं? " इतने में पीछे से पहली बीवी को बाजूओं में जकड़ लिया मगर इस औरत ने गिरफत मज़बूत होने से पहले ही जिस्म को ज़ोर से झटका दिया और आज़ाद हो गई। उस ने तेज़ी से खंजर निकाल लिया। उसके सामने एक आदमी था। औरत ने उस पर वार किया जो वह बचा गया। अदमी ने ऐसा वार किया कि खंजर औरत के पहलू में उतर गया। इस आदमी ने देख लिया कि औरत के पास खंजर है। वह फौरन पीछे हट गया। पहली बीवी ने आसिफा पर हमला किया। और खंजर उसकी गर्दन और कन्धे के दर्मियान उतार दिया। लड़की ने ज़ोर से चीख मारी। आदमी ने पहली बीवी पर वार किया। जो औरत फुर्ती से बचा गई। उस ने वार किया तो इस आदमी ने उस का बाजू अपने बाजू से रोक लिया।

आसिफा गिर पड़ी थी। अलबरक की पहली बीवी को भी गहरा ज़ख्म आया था जो पहलू

10
—
1

से पीठ तक चला गया था। वह डगमगाने लगी। वह आदमी आसिफा को उठा कर कहीं चला गया। अली बिन सुफियान के दो जासूस उमर और आज़र छुप कर देख रहे थे उन्हे मालूम नही था कि दूसरी औरत कौन है। उमर उस आदमी के पीछे छुप छुप कर गया जो आसिफा को उठा ले गया था वह उसी मकान में ले गया जहां वह जाया करती थी। वहां से उमर अली बिन सुफियान को इत्तेला देने चला गया। आज़र ने बताया कि वह वहीं छुपा रहा। ज़ख्मी औरत वहीं पड़ी थी। वहां और कोई न था। आज़र इस औरत के पास चल कर बैठ गया। पीछे से किसी ने उस पर खंजर से तीन वार किये और हमलावर भाग गया। आज़र वहीं बेहोश हो गया।

शाम तक अलबरक की पहली बीवी और आज़र की हालत बिगड़ गई। जर्राह और तबीबों ने बहुत कोशिश की मगर वह जिन्दा न रह सके। अलबरक की बीवी ने अली बिन सुफियान से कहा था कि मैं अपने खविन्द को कुर्बान कर सकती हूँ, कौम और मुल्क की इज़्ज़त को कुर्बान होता नही देख सकती। उस ने कौम के नाम पर जान दे दी।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुक्म से खादिमुद्दीन अलबरक को कैद खाने में डाल दिया गया। उस ने यकीन दिलाने की हर मुमकिन कोशिश की कि उस ने यह जुर्म दानिस्ता नही किया। वह इन लोगों के हाथों में बेवकूफ बन गया था। मगर यह साबित हो चुका था कि उस ने हुकूमत और फौज के राज़ शराब और हसीन लड़की के नशे में दुशमन के जासूसों तक पहुंचाये हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी कत्ल का जुर्म बख्श सकता था। शराब खोरी और अय्याशी और दुशमन को राज़ देने के जुर्म नहीं बख्शा करता था।

आसिफा से उस रोज़ कोई बयान नही लिया गया। उस पर ज़ख्म का इतना असर न था जितना खौफ का था। वह जासूस लड़की थी। सिपाही नही थी। उसे शहज़ादी के रूप में शहज़ादों से भेद लेने की ट्रेनिंग दी गई थी। उस ने सोंचा भी न था कि उसका यह हशर भी हो सकता है। उस पर ज़यादा खौफ इस का था कि वह मुसलमानों की कैदी है और मुसलमान उसे बहुत खराब करेंगे। एक खतरा यह भी नज़र आया था कि मुसलमान उसके ज़ख्म का इलाज नही करेंगे। उस ने इस खतरे का इज़हार हर उस आदमी से किया जो उसके करीब गया। वह डरे हुये बच्चे की तरह रोती थी। अली बिन सुफियान ने उसे बहुत तसल्ली दी कि उसके साथ वही सुलूक किया जायेगा जो किसी मुसलमान ज़ख्मी औरत के साथ किया जाता है। मगर वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से मिलना चाहती थी आखिर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बुलाया गया।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उसके पास गया और उसके सिर पर हाथ रख कर कहा था इस हालत में वह उसे अपनी बेटी समझता है।

"मैं ने सुना था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तलवार का नही दिल का बादशाह है।" आसिफा ने रोते हुये कहा--" इतना बड़ा बादशाह जिसे शिकस्त देने के लिये ईसाईयों के सारे बादशाह इकट्ठे हो गये हैं एक मजबूर लड़की को धोखा देते अच्छा नही लगता......... उन लोगों से कहो कि मुझे फौरन ज़हर दे दें। मैं इस हाल में कोई तकलीफ बर्दाश्त नही कर

सकुंगी।"

"कहो तो मैं तुम्हारे पास हर वक्त मौजूद रहुंगा।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मैं तुम्हें धोखा भी नही दुंगा, तकलीफ भी नही दुंगा मगर वादा करो कि तुम भी मुझे धोखा नही दोगी। तुम ज़रा और बेहतर हो लो। तबीब ने कहा है कि तुम ठीक हो जाओगी। अगर तुम्हें तकलीफ देनी होती तो मैं इसी हालत में कैद खाने में डाल देता। तुम्हारे ज़ख्म पर नमक डाला जाता। तुम चीख़ चीख़ कर और चिल्ला चिल्ला कर अपने जुर्म और अपने साथियों के पर्दे उठाती मगर हम किसी औरत के साथ ऐसा सुलूक नही किया करते। अलबरक़ की बीवी मर गई है लेकिन तुम्हें ज़िन्दा रखने की पूरी कोशिश की जा रही है।"

"मैं ठीक हो जाऊंगी तो मेरे साथ क्या सुलूक करोगे?" उसने पूछा।

"यहां तुम्हें कोई मर्द इस नज़र से नही देखे गा कि तुम एक नौजवान और खुबसूरत लड़की हो।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" तुम यह खदशाह दिल से निकाल दो। तुम्हारे साथ वही सुलूक होगा जो इसलामी क़ानून में लिखा है।"

उस मकान की तलाशरी ली गई थी जहां आसिफा जाया करती थी। वह किसी का घर नही था। जासूसों का अड्डा था। अन्दर ही असतबल बना हुआ था। अन्दर से पांच अदमी बरआदम हुये थे। उन्हें गिरफतार कर लिया गया था। इन पांचो ने और उन चारों ने जिन्हें तआकुब में पकड़ा गया था। जुर्म का एतराफ करने से इनकार कर दिया। आख़िर उन्हें उस तहखाने में ले जाया गया जहां पत्थर भी बोल पड़ते थे। बूढ़े ने तसलीम कर लिया कि उस ने उस लड़की को दाने के तौर पर फैंक कर अलबरक़ को फांसा था। उसने सारा नाटक सुना दिया। दुसरे उसने बहुत से पर्दे उठाये और उस मकान का राज़ फाश किया जिसे शहर के लोग इहतराम की निगाहों से देखते थे। उस मकान में बहुत सी लड़कियां रखी गई थीं जो दो मकसद के लिये इसतेमाल होती थी। एक जासूसी के लिये और दुसरी हाकिमों और ऊंचे घराने के मुसलमान नौजवानों का अख़लाक तबाह करने के लियें। वह मकान जासूसों और तख़रीब कारों का अड्डा था।

उन जासूसों ने यह भी बताया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में उन्होंने अपने आदमी भर्ती करा दिये हैं। जिन्होंन सिपाहियों में जुए बाज़ी की आदत पैदा करदी है। वे हारी हुई बाज़ी जीतने के लिये एक दूसरे के पैसे चुराते और चोर बनते जा रहे हैं शहर मे उन्हो ने पांच सौ से ज़्यादा फाहिशा औरतें फैला दीं है जो नौजवानों को फांस कर उन्हें अय्याशी की राह पर डाल रही हैं। खुफिया किमार खाने भी खोल दिये गये हैं। उन लोगों ने यह भी बताया कि उन सूडानीयों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ भड़काया जा रहा है जिन्हें फौज़ से निकाल दिया गया था सब से अहम इनकाशाफ यह था कि उन्होंने छे एसे मुसलमान ऑफिसरों के नाम बताये जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हुकूमत में अहम हैसियत रखते थे मगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ काम कर रहे थे। आसिफा ईसाई लड़की थी। उसका नाम फलीमैनगो बताया गया है। वह यूनानी थी। उसे तेरह-साल की उम्र से इस काम की ट्रेनिंग दी जा रही थी। उसे मिस्र की ज़बान सिखाई गई।

ऐसी सैंकड़ों लड़कियां मुसलमान इलाकों में इसतेमाल करने के लिये तैय्यार की गई थीं जिन्हें चोरी छिपे इधर भेजा गया था।

उस लड़की ने भी कुछ न छुपाया। पन्द्रह रोज़ बाद उसका ज़ख़्म ठीक हो गया। उसे जब बताया गया कि उसे सज़ाये मौत दी जा रही है तो उस ने कहा–" मैं खुशी से यह सज़ा कुबूल करती हूँ। मैंने सलीब का मिश्न पूरा कर दिया है।" उसे जल्लाद के हवाले कर दिया गया।

दूसरों की अभी ज़रूरत थी। उनकी निशानदेही पर चन्द और लोग पकड़े गये जिसमें चन्द एक मुसलमान भी थे। उन सब को सज़ाये मौत दी गई। अलबरक को एक सौ कोड़ों की सजा दी गई जो वह बर्दाश्त न कर सका और मर गया। उसके बच्चों को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सरकारी तहवील मे ले लिया। उनके लिये सरकारी खर्च पर मुलाज़िम और उसताद मुकर्रर किये गये। वे अलबरक के बच्चे नहीं, एक मुजाहिदा के बच्चे थे, उनकी माँ शहीद हो गई थी।

उम्मे अराराह का इग़वा

जून 1171 का वह दिन मिस्र की गर्मी से जल रहा था जिस दिन खलीफा अलआज़िद के क़ासिद ने आकर सलाहुद्दीन अय्यूबी को पैग़ाम दिया कि खलीफा याद फरमा रहे हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के तेवर बदल गये। उस ने कासिद से कहा–" खलीफा को बादअज़ सलाम कहना कि कोई बहुत ज़रूरी काम है तो बता दें मैं आ जाऊंगा। इस वक़्त मुझे ज़रा सी भी फुर्सत नही। उन्हें यह भी कहना कि मेरे सामने जो काम पड़े हैं, वे हुज़ूर के दरबार में हाज़िरी देने की निस्बत ज़्यादा ज़रूरी और अहम हैं।"

क़ासिद चला गया और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी बेचैनी में कमरें में टहलने लगा। वह फातमी खिलाफत का दौर था। मिस्र में इस खिलाफत का खलीफा अलआज़िद था। उस दौर का खलीफा बादशाह होता था। जुमा के खुतबे में हर मस्जिद में खुदा और रसूल स0 के बाद खलीफा का नाम लिया जाता था। एश व इशरत के सिवा इन लोंगों के पास कोई काम न था। अगर नूरूद्दीन ज़ंगी और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी न होते तो इस दौर के खलीफाओं ने तो सलतनते इसलामिया को बेच दिया था। अलआज़िद एसा ही एक खलीफा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र में गर्वनर बन कर आया तो इब्तेदा में खलीफा ने उसे कई बार बुलाया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी समझ गया कि खलीफा उसे सिर्फ इस लिये बुलाता है कि उसे यह एहसास रहे कि हाकिम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी नही खलीफा है वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का इहतराम करता था। उसे अपने साथ बिठाता था मगर उसका अन्दाज़ शाहाना और लब व लहजा आमिराना होता था। उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को जब भी बुलाया बे मक़सद बुलाया और रूखसत कर दिया।सलीबीयों को बहरे रोम में शिकस्त देकर और सूडानी फौज की बग़ावत को खत्म कर के सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने खिलाफत को टालना शुरू कर दिया था।

उस ने खलीफा के महल में जो शान व शौकत देखी थी, उस ने उस के सीने में आग लगा रखी थी। महल में ज़रो जवाहर का यह आलम था कि खाने पीने के बर्तन सोने के थे। शराब की सुराही और प्यालों में हीरे जड़े हुये थे। हरम लड़कियों से भरा पड़ा था। उनमें अरबी, मिस्री, मराकशी, सूडानी और तुर्की लड़कियों के साथ ईसाई और यहूदी लड़कियां भी थीं। यह उस कौम का खलीफा था जिसे सारी दुनियां में अल्लाह का पैग़ाम फैलाना था और जिसे दुनिया ए कुफ्र की मुहीब जंगी कुव्वत का सामान था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को खलीफ़ा की कुछ और बातें भी खाये जा रही थीं। एक यह कि खलीफा का ज़ाती

हिफाज़ती दस्तार सुडानी हबशियों और कबाईलियों का था जिनकी वफादारी मशकूक थी। दूसरे यह कि खलीफा के दरबार में सुडान के बाग़ी और बरतरफ की हुई फौज के कमाण्डर और नायब सालार खुसूसी हैसियत के मालिक थे।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिदायात पर अली बिन सुफियान ने कसरे खिलाफत में नौकरों और अन्दर के दिगर काम करने वालों के भेस में अपने जासूस भेज दिये थे। खलीफा के हरम की दो औरतों को भी एतमाद में लेकर जासूसी के फराईज़ सौंपे गये थे। उन जासूसों की इत्तेलाओं के मुताबिक, खलीफा सुडानी कमाण्डर के ज़ेरे असर था। वह साठ पैंसठ साल की उम्र का बूढ़ा था लेकिन खूबसूरत औरतों की महफिल में खुश रहता था। उसकी इसी कमज़ोरी से सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुखालिफीन फायदा उठा रहे थे। 1171 के दूसरे तीसरे महीने में खलीफा के हरम में एक जवान और ग़ैर मामुली तौर पर हसीन लड़की का इज़ाफा हुआ था। हरम की जासूस औरतों ने अली बिन सुफियान को बताया था कि तीन चार आदमी आये थे जो अरबी लिबास में थे। वह इस लड़की को लाये थे। उनके पास बहुत से तोहफे भी थे। लड़की भी तोहफे के तौर पर आई थी। उसका नाम उम्मे अराराह बताया गया था। उसमें खूबी यह थी कि खलीफा अलआज़िद पर उस ने जादू सा कर दिया था। बहुत ही चालाक और होशियार लड़की थी।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कसरे खिलाफत की इन तमाम खुराफात का इल्म था मगर हुकूमत पर उसकी गिरफत अभी इतनी मज़बूत नही हुई थी....... कि वह खलीफा के खिलाफ कोई कारवाई कर सकता। इस से पहले के गर्वनर और अमीर खलीफा के आगे झुके रहते थे। इसी लिये मिस्र बग़ावत की सरज़मीन बन गया था। वहां इसलामी खिलाफत तो थी मगर इसलाम का परचम सरनिगुं होता जा रहा था। फौज सलतनते इसलामिया की थी मगर सूडानी जनरल शहरी हुकुमत की बाग डोर हाथ में लिये हुये थे और उनका राबता सलीबीयों के साथ था उन्हीं की बदौलत काहिरा और स्कन्दरिया में ईसाई कुम्बे आबाद होने लगे थे। उनमे जासूस भी थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सूडानी फौज को तो ठिकाने लगा दिया था लेकिन अभी चन्द एक सूडानी जनरल मौजूद थे जो किसी भी वक़्त खतरा बन कर उठ सकते थे। उन्होने कसरे खिलाफत में असर पैदा कर रखा था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी खिलाफत की ऐश परस्त गद्दी को इस डर से नही छेड़ना चाहता था कि खिलाफत के मुतअल्लिक कुछ लोग जज़बाती थे और कुछ हामी थे। उनमें जो खुशामदियों के टोले की कसरत थी। इस कसरत मे वह आला हुक्काम भी थे जो मिस्र की इमारत की तवक्को लगाये बैठे थे। मगर यह हैसियत सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिल गई। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी इन हालत में जहां मुल्क जासूसों और ग़द्दारों से भरा पड़ा था और सलीबीयों के जवाबी हमले का खतरा भी था, इन आला और अदना हाकिमों को अपना दुश्मन नही बनाना चांहते थे जो खिलाफत के परवुरदा थे, मगर जून 1171 के एक रोज़ जब खलीफा ने उसे बुलाया तो उस ने आने से साफ इनकार कर दिया।

उस ने दरबान से कहा–"अली बिन सुफियान, बहाउद्दीन शद्दाद, ईसा अलहिकारी फकीह

और अलनासिर को मेरे पास जलदी भेज दो।"

❖

यह चारों सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खुसूसी मुशीर थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें कहा–" अभी अभी खलीफा का कासिद मुझे बुलाने आया था। मैने जाने से इनकार कर दिया है। मैने आपको यह बात बताने और राय लेने के लिये बुलाया है कि मैं जुमा के खुतबे से खलीफा का नाम निकलवा रहा हूँ।"

"यह कदम अभी वक़्त से पहले नही होगा।" शद्दाद ने कहा–" खलीफा को लोग पैगम्बर समझते हैं। लोगो की राय हमारे खिलाफ हो जायेगी।"

"अभी तो लोग उसे पैगम्बर समझते हैं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" थोड़ी ही अर्से बाद वह उसे खुदा समझने लगेंगे। उसे पैगम्बरी और खुदाई देने वाले हम लोग हैं जो खुतबे में उसका नाम खुदा और रसूल स0 के साथ लेते हैं। क्यों ईसा फकीह! आप क्या मशवरा देते हैं?"

"मैं आपकी ताईद करता हूँ।" ईसा अलहिकारी फकीह ने जवाब दिया –"कोई भी मुसलमान खुतबे में किसी इन्सान का नाम बर्दाश्त नही कर सकता। इनसान भी एसा जो शराब और औरत और हर तरह के गुनाह का शैदाई है। यह अलग बात है कि सदियों से खलीफाओं को। पैगम्बरों का दर्जा दिया जा रहा है। मैं चूंकी शहरी और मज़हबी उमूर का ज़िम्मेदार हूँ इस लिये यह नही बता सकता कि सियासी और फौज के लिहाज़ से आपके फैसेले का रद्दे अमल क्या होगा।"

"रद्दे अमल शदीद होगा।" बहाउद्दीन शद्दाद ने कहा–" और हमारे खिलाफ होगा। इसके बावजूद मैं यही मशवरा दुंगा कि यह बिदअत खत्म होनी चाहिये या ख़लीफ़ा को पक्का मुसलमान बना कर लोगों के सामने लाया जाये जो मुझे मुमकिन नज़र नही आता।"

"लोगों को मुझ से बेहतर और कौन जान सकता है–" अली बिन सुफियान ने कहा जो जासूसी और सुराग़रसानी के शोबे का सरबराह था। उस ने मुल्क के अन्दर जासूसों और मुखबिरों का जाल बिछा रखा था। उस ने कहा–" आम लोगों ने खलीफा की कभी सूरत नही देखी। वह अलआज़िद के नाम से नही सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के नाम से वाकिफ हैं। मेरे मुहकमें की पक्की इत्तेला ने मुझे यकीन दिला दिया है कि आप के दो साला दौर इमारत में लोगों की ऐसी ज़रूरियात पूरी हो गई हैं जिनके मुतअल्लिक़ उन्होंने कभी सोंचा भी न था। शहरों में ऐसा मतब नही था जहां मरीज़ों को दाखिल करके ईलाज किया जा सकता। लोग मामूली मामूली बीमारियों से मर जाते थे। अब सरकारी मतब खोल दिये गये हैं। दरसगाहें भी खोल दी गई हैं। ताजिर और दुकानदारों की लूट खसोट खत्म हो गई है। जराईम भी कम हो गये है और अब लोग अपनी मुशकिल और फरियाद आप तक बराहेरास्त पहुंचा सकते हैं। आपके यहां आने से पहले लोग सरकारी अहलकारों और फौजों से खौफ ज़दा रहते थे। आपने उनके हुकूक बता दिये हैं। और वह अपने आपको मुल्क व मिल्लत का हिस्सा समझने लगे हैं। खलीफा से उन्हें बेइनसाफी और बेरहमी के सिवा कुछ नही मिला। आपने इन्हें

अदल व इनसाफ और वकार दिया है। मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि कौम खलीफा की बजाये इमरात के फैसले को कुबूल करेगी।"

" मैं ने कौम को अदल व इन्साफ और वकार दिया है। या नही ।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मैं ने कौम के हुकूक उसे दिये हैं या नही। मैं नही जानता । मैं कौम को एक इन्तहाई बेहूदा रिवायत नही देना चाहता था। ज़रूरी हो गया है कि इस रिवायत को तोड़ कर माज़ी के कूड़े करकट में फेंक दिया जाये जो मज़हब का हिस्सा बन गई है। अगर यह रिवायत कायम रही तो यह भी हो सकता है कि कल परसों मैं भी अपना नाम खुत्बे में शामिल करदूं। दिये से दिया जलता है लेकिन मैं इस दिये को बुझा देना चाहता हूँ जो कि शिर्क की रौशनी को आगे चला रहा है। कसरे खिलाफत बदकारी का अड्डा बना हुआ है। खलीफा उस रात भी शराब पिये हुये हरम के हुस्न में बदमस्त पड़ा था, जिस रात सुडानी फौज ने हम पर हमला किया था। अगर मेरी चाल नाकाम हो जाती तो मिस्र से इसलाम का परचम उतर जाता। जब अल्लाह के सिपाही शहीद हो रहे थे उस वक्त भी खलीफा शराब पिये हुये था। मैं इस एहकाम के मुताबिक यह बताने गया कि सलतनत पर क्या तूफान आया था और हमारी फौज ने इस का दम ख़म किस तरह तोड़ा है तो उस ने मस्त सान्ड की तरह झूम कर कहा था–"शाबाश! हम बहुत खुश हुये।"

हम तुम्हारे बाप को खूसूसी कासिद के हाथ मुबारकबाद और ईनाम भेजेगें।" मैने उसे कहा कि या खलीफा अलमुसलीमीन! मैं ने अपना फर्ज़ अदा किया है । मैं ने यह फर्ज़ अपने बाप की खुशनूदी के लिये नहीं, अल्लाह की और उसके रसूल स0 की खुशनूदी के लिया अदा किया है।

उस बूढ़े खलीफा ने कहा–" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ! तुम अभी बच्चे हो मगर काम तुमने बड़ों वाला कर दिया है.........."

"उसने मेरे साथ इस तरह बात की थी जैसे वह मुझे अपना गुलाम और अपना हुकूम का पाबन्द समझता है। यह बद्दीन इनसान कौम केलिये सफेद हाथी बना हुआ है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक ख़त निकाल कर सबको दिखाया और कहा–" छे सात दिन गुज़रे नूरुद्दीन ज़ंगी ने मुझे यह पैग़ाम भेजा है। उन्होंने लिखा है कि ख़लीफा तीन हिस्सों में बट गये है। बगदाद की मरकज़ी खिलाफत का दोनो मातेहत खलीफाओं पर असर खत्म हो चुका है। आप यह खयाल रखें कि मिस्र का खलीफा खुद मुखतार हाकिम न बन जाये। वह सुडानीयों और सलीबीयों से भी साज़बाज़ करने से गुरेज़ नही करेगा। मैं सोंच रहा हूँ कि खलीफा सिर्फ बग़दाद में रहे और ज़लील खलीफा ख़त्म कर दिये जायें लेकिन मैं डरता हूं कि इन लोगों ने हमारे खिलाफ साज़िश तैय्यार कर रखी है। अगर आप मिस्र के खलीफा की बादशाही उसके महल के अन्दर ही महदूद रखने की कोशिश करेंगे तो मैं आपको फौज और माली मदद दूंगा। इहतियात की भी ज़रूरत है क्यों कि मिस्र के अन्दरूनी हालात ठीक नही । मिस्र में एक बग़ावत और भी होगी। सुडानीयों पर कड़ी नज़र रखें।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ख़त पढ़ कर कहा–" इसमें क्या शक है कि खिलाफत

सफेद हाथी है। क्या आप देखते नही कि खलीफा अलअज़िद दौरे पर निकलता है तो आपकी आधी फौज उसकी हिफाज़त के लिये हर तरफ फैला दी जाती है? लोगों को मजबूर किया जाता है कि वह खलीफा के रास्ते में चारों तरफ कालीन बिछायें। ख़लीफा का हिफाज़ती दस्ता दौरे से पहले लोगों को धमका कर मजबूर कर देता है कि उनकी औरत और जवान बेटियां खलीफा पर फूलों की पत्तियां फैंके। उसके दौरे पर ख़ज़ाने की वह रक़म तबाह की जाती है जो हमें सलतनते इसलामिया के दिफ़ा और तौसीअ के लिये और कौम की फलाह व बहबूद के लिये दरकार है। इसके अलावा इस पहलू पर भी ग़ौर करो कि हमें मिस्री अवाम पर यहां के ईसाईयों और दीगर ग़ैर मुस्लिमों पर यह साबित करना है कि इस्लाम शहंशाहों का मज़हब नही। यह अरब के सहराओं के गुदड़ियों, किसानों और शुतरबानों का सच्चा मज़हब है और यह इनसान को इन्सानियत का वह दर्जा देने वाला मज़हब है जो खुदा को अज़ीज़ है।"

"यह भी हो सकता है कि खलीफा के खिलाफ कारवाइ करने से आप के खिलाफ यह बातें होने लगें कि खलीफा की जगह आप खुद हाकिम बनना चाहते हैं।" शद्दाद ने कहा–" आज झूठ और बातिल की जड़ें सिर्फ इस लिये मज़बूत हो गई है कि मुख़ालिफाना रद्दे अमल से डर कर लोगों ने सच बोलना छोड़ दिया है। हक़ की आवाज़ सीने में दब कर रह गई है। शाहाना दौरों ने और शहांशाहियत के इज़हार के ओछे तरीकों ने रिआया के दिलों से वह वक़ार ख़त्म कर दिया है जो कौम का तुररह इम्तयाज़ था। अवाम को भूखा रख कर और उन पर ज़बर्दस्ती अपनी हुकूमरानी ठूंस कर उन्हें गूलामी की इन ज़न्जीरों में बांधा जा रहा है जिन्हें हमारे रसूल स0 ने तोड़ा था। हमारे बादशाहों ने कौम को उस पस्ती तक पहुंचा दिया है कि यह बादशाह अपनी अय्याशी की ख़ातिर सलीबीयों से दोस्ती कर रहें हैं उन से पैसे मांगते हैं और सलीबी आहिस्ता आहिस्ता सलतनते इसलामिया पर क़ाबिज़ होते चले जा रहे हैं........ आपने शद्दाद! मुख़ालिफत की बात की है। हमें मुखालिफत से नही डरना चाहिये।"

"क़ाबिले सद इहतराम अमीर!" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से नायब सालार आलनासिर ने कहा–" हम मुख़ालिफत से नही डरते। आप ने हमें मैदाने में जंग में देखा है हम उस वक़्त नही डरे थे जब मुहासरे में लड़े थे। हम भूखे और प्यासे भी लड़े थे। सलीबियों के तूफान हम ने उस हालत में भी रोके थें जब हमारी तादाद कुछ भी नही थी। मगर मैं आपकी ही कही हुई एक बात याद दिलाता हूँ। आप ने एक बार कहा था कि हमले बाहर से आते तो हैं उसे हम कलील तादाद में भी रोक सकते है। लेकिन हमले जो अन्दर से होते हैं और जब हमलावर अपनी कौम के अफराद होते हैं। तो हम एक बार तो चौंक उठते हैं और सुन्न हो जाते हैं कि या खदुा यह क्या हुआ। काबिले इहतराम अमीरे मिस्र! जब मुल्क के हाकिम मुल्क के दुश्मन हो जोयें तो आपकी तलवार म्यान के अन्दर तड़पती रहेगी बाहर नही आयेगी।"

"आपने दरुस्त कहा अलनासिर!" मेरी तलवार न्याम में तड़प रही है। यह अपने हाकिमों के खिलाफ बाहर नही आना चाहती। मेरे दिल में कौम के हुकुमरानों का हमेशा इहतराम रहा है। मुल्क का हुकमरान कौम की अज़मत का निशान होता है, कौम के वक़ार की अलामत

होता है, लेकिन आप सब गौर करें कि हमारे हुकमरानों में कितनी कुछ अज़मत और कितना कुछ वकार रह गया है। मैं सिर्फ खलीफा अलआज़िद की बात नही कर रहा। अली बिन सुफ़ियान से पूछो। उसका मुहकमां मूसिल, हलब, दमिश्क, मक्का और मदीना मुनव्वरा की जो खबरें लाया है वह यह है कि खिलाफत की एश परस्ती की वजह से जहां जहां कोई अमीर और हाकिम है वह वहां का मुखतारे कुल बन गया है। सलतनते इसलामिया धड़ों में बंटती जा रही है। खिलाफत इस क़दर कमज़ोर हो गई है कि इसने अम्रा और हाकिमों को ज़ाती रियासत बाज़ों के लिये इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। मैं इस ख़तरे से बे ख़बर नही कि कौम के बिखरे हुये शिराज़े को हम जब यकजा करने की कोशिश करेंगे तो यह और बिखरेगा। हमारे सामने पहाड़ खड़े हो जायेंगे लेकिन मैं घबराऊंगा नही और मुझे उम्मीद है कि आप भी नही घबरायेंगे। मैं आपके मशवरों का इहतराम करूंगा लेकिन मैं आईन्दा ख़लीफा के बुलावे पर सिर्फ उस सूरत में जाऊंगा जब कोई ज़रूरी काम होगा। फौरी तौर पर मैं खुतबे से खलीफा का नाम और ज़िक्र निकलवा रहा हूँ।'

सबने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की इस इकदाम की हिमायत की और उसे अपनी पूरी मदद और हर तरह की कुर्बानी देने का यकीन दिलाया।

❖

खलीफा अलआज़िद उस वक़्त अपने एक खुसूसी कमरे में था जब क़ासिद ने उसे बताया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा कि अगर कोई ज़रूरी काम है तो मैं आ सकता हूँ वरना मैं बहुत मसरूफ हूँ। खलीफा आग बगूला हो गया। उस ने क़ासिद से कहा कि रजब को मेरे पास भेज दो। रजब उसके हिफाज़ती दस्तों का कमाण्डर था जिसका ओहदा नायब सालार जितना था। वह मिस्र की फौज का अफसर था। उसे खलीफा के बाडी गार्ड की कमान दी गई थी उस ने कसरे खिलाफत और खलीफा के हिफाजती दस्तों में चुन चुन कर सुडानी हबशियों को रखा था। वह सुलातन सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुखालिफीन में से और खलीफा के खुशामदिदों मे से था।

उस वक़्त उसके इस खुसूसी कमरें में उम्मे अराराह मौजूद थी जब क़ासिद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का जवाब ले के आया था। उस ने खलीफा से कहा—" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी आपका नौकर है। आपने उसे सिर पर चढ़ा रखा है। आप क्यों नही उसे माजूल कर देते ? क्यों नही अपने सिपाही भेज कर उसे हिरासत में यहां बुला लेते ?"

" इस लिये कि नतीजा अच्छा नही होगा।" खिलीफा ने गुस्से के आलम में कहा—" फौज उसकी कमान में है। वह मेरे खिलाफ फौज इस्तेमाल कर सकता है।"—इतने मे रजब आ गया। उस ने झुक कर फरशी सलाम किया। अलआज़िद ने गुस्से से कांपती हुई आवाज़ में उसे कहा—" मैं पहले ही जानता था कि यह कमबख़्त खुदसर और सरकश आदमी है...... यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी .... मैं ने उसे बुलाया तो यह कह कर आने से इन्कार कर दिया है कि कोई ज़रूरी काम है तो आऊंगा वरना आपका बुलावा मेरे लिये कोई माइने नही रखता क्योंकि मेरे सामने ज़रूरी काम पड़े हैं।"

गुस्से में बोलते बोलते उसे हिचकी आई फिर खांसी उठी और उस ने दिल पर हाथ रख लिया। उसका रंग ज़र्द हो गया। इस हालत में कमजोर सी आवाज़ में कहा–" बदबख़्त को यह भी इहसास नही कि मैं बीमार हूँ। मेरा दिल मुझे ले बैठेगा। मेरे लिये गुस्सा ठीक नही। मुझे अपनी सेहत का ग़म खाये जा रहा है और उसे अपने कामों की पड़ी है।"

" आपने उसे क्यों बुलाया था?" रजब ने पूछा–" मुझे हुकुम दे देते।"

"मैं ने उसे सिर्फ इस लिये बुलाया था कि उसे इहसास रहे कि उसके सिर पर एक हाकिम भी है।" खलीफा ने दिल पर हाथ रखे हुये कराहती आवाज़ में कहा–" तुम ही ने मुझे बताया था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी खुद मुखतार होता जा रहा है। मैं उसे बार बार यहां बुलाना चाहता हूँ उसे हुकुम देना चाहता हूँ ताकि उसे अपने पावं के नीचे रखूं। यह ज़रूरी नही कि कोई ज़रूरी काम हो तो ही मैं उसे बुलाऊं।"

उम्मे अराराह ने शराब का पियाला उसके होंठों से लगा कर कहा–" आप को सौ बार कहा कि गुस्से में न आ जाया करें। आपके दिल और आसाब के लिये गुस्सा ठीक नही।" उस ने सोने की एक डिब्बी मे से नस्वारी रंग के सफूफ में से ज़रा सा खलीफा के मूंह में डाला और पानी पिला दिया। खलीफा ने उसके बिखरे हुये रैशमी बालों मे उंगलियां उलझाकर कहा–" अगर तुम न होतीं तो मेरा क्या हाल होता। सबको मेरी दौलत और रूतबे से दिल चस्पी है। मेरी एक भी बीवी ऐसी नही जिसे मेरी ज़ात के साथ दिलचस्पी हो। तुम तो मेरे लिये फरिशता हो।" उस ने लड़की को अपने क़रीब बिठा कर बाज़ू उसकी कमर मे डाल दिया।

"खलीफा अलमुसलीमीन! रजब ने कहा–" आप बड़े ही नरम दिल और नेक इनसान हैं। यही वजह है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह गुसताख़ी की है। आपने यह भी फरामोश कर दिया है कि वह अरबी नस्ल से नही। वह आपकी नस्ल से नही। वह कुर्द है। मैं हैरान हूँ कि उसे इतनी बड़ी हैसियत किसने दे दी है। अगर उस में कुछ खूबी हे ता सिर्फ यह है कि वह अच्छा असकरी है। मैदाने जंग का उसताद है। लड़ना भी जानता है और लड़ाना भी जानताहै मगर यह वसफ इतना अहम नही कि उसे मिस्र की ईमारत सौंप दी जाती....... उस ने सूडान की इतनी बड़ी और इतनी तजर्बेकार फौज यूं तोड़ कर खत्म कर दी है जिस तरह बच्चे कोई खिलौना तोड़ देते हैं। आप ज़रा ग़ौर फरमाईये के जब यहां सूडानी बाशिन्दे की फौज थी, नाजी और ओरोश जैसे सालार थे तो रिआया आपके कुत्तों के आगे भी सजदे करती थी। सूडानी लशकर के सालार आपकी दहलीज़ पर हाज़िर रहते थे। अब यह हाल है कि आप अपने एक मातेहत को बूलाते हैं तो वह आने से इन्कार कर देता है।"

"रजब!" खलीफा ने अचानक गर्ज कर कहा–" तुम एक मुजरिम हो।"

रजब का रंग पीला पड़ गया। उम्मे अराराह बिदक कर अलआज़िद से अलग हो गई। अलआज़िद ने उसे फिर बाज़ू के घेरे में लेकर अपने साथ लगा लिया। और प्यार से बोला–" क्या मैं ने तुम्हें डरा दिया है? मैं रजब से यह कहना चाहता हूँ कि यह आज दो साल बाद मुझे बता रहा है कि हमारी पूरानी फौज और उसके सालार अच्छे थे और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की बनाई हुई फौज खिलाफत के हक़ में अच्छी नहीं। क्यों रजब! तुम यह बात पहले

भी जानते थे? चुप क्यों रहे ? अब जब की यह अमीरे मिस्र अपनी जड़ें मज़बूत कर चुका है, मुझे बता रहे हो कि वह खिलाफत का बाग़ी और सरकाश है।"

" मैं हुजूर की एताब से डरता था।' रजब ने कहा–' सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का इन्तखाब बग़दाद की खिलाफत ने किया था। यह आप के मशवरे से ही हुआ होगा। मैं खिलाफत के इन्तेखाब के खिलाफ ज़बान खोलने की जुर्रत नही कर सकता था। आज अमीरे मिस्र की गुसताख़ी और उसके ज़ेरे असर आपके दिल के दौरे ने मुझे मजबूर कर दिया है कि ज़बान खोलूं। मैं कब से देख रहा हूँ कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी कई बार आप के हुजूर में गुसताखी कर चुका है। मेरा फर्ज़ है कि आप को खतरों से अगाह करूँ और बचाऊँ।"

इस दौरान उम्मे अराराह खलीफा के गालों से गाल रगड़ती रही और उसकी उगंलियों में उंगलियां उलझाकर बच्चों की तरह खेलती रही एक बार उस ने खलीफा के गालों को हाथों में थाम कर पूछा–" तबियत बहाल हूई?"

खलीफा ने उसके ठोड़ी को छूते हुये कहा–" दवाई ने इतना असर नही किया जितना तेरे प्यार ने किया है। खुदा ने तुझे वह हुस्न और वह जज़्बा दिया है जो मेरे हर रोग के लिये अकसीर है।" उस ने उम्मे अराराह का सिर अपने सीने पर डाल कर रजब से कहा–" रोज़े कियामत जब मुझे जन्नत में भेंजेंगे तो मैं खुदा से कहुगाँ कि मुझे कोई हूर नही चाहिये, मुझे उम्मे अराराह दे दो।"

" उम्मे अराराह सिर्फ हसीन ही नही।" रजब ने कहा–" यह बहुत होशियार और ज़हीन भी है। हुजूर का हरम साज़िशों का घर बना हुआ था। उस ने आकर सबको लगाम डाल दी है। अब किसी की जुर्रत नही कि कोई औरत किसी औरत के खिलाफ या कोई अहलकार क़सरे खिलाफत में ज़रा सी भी गड़बड़ करे।"

" रजब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक बात कर रहा था।" अम्मे अराराह ने कहा–" उनकी बातें गौर से सुनें और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को लगाम डालें।"

" तुम क्या कह रहे थे रजब?" खलीफा ने पूछा।

"मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि मैं ने इस डर से ज़बान बन्द रखी कि अमीरे मिस्र के खिलाफ कोई बात खिलाफत को गवारा न होगी।" रजब ने कहा–" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी क़ाबिल सालार हो सकता है।"

" मुझे उसका सिर्फ यही वस्फ पसन्द है कि मैदाने जंग में वह इसलाम का परचम सरनिगूं नही होने देता।" खलीफा ने कहा–" हमें सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसे ही सालारों की ज़रूरत है जो खिलाफते इसलामिया का वक़ार मैदाने जंग में क़ायम रखें।"

" मैं गुसताख़ी की माफी चाहता हूँ खलीफाये मुसलीमीन!" रजब ने कहा–" खिलाफत ने हमें मैदान जंग में नहीं आज़माया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक मैं यह कहने की जुर्रत करूंगा। कि वह खिलाफते इसलामिया के वक़ार के लिये नही लड़ता बल्कि अपने वक़ार के लिये लड़ता है। आप फौज के सालार से सिपाही तमक पूछ लें । सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उन्हें यह सबक़ देता रहता है कि वह ऐसी सलतनते इसलामिया के क़याम

के लिये लड़ें जिसकी सरहदें लामहदूद हों। साफ जाहिर है कि वह एसी सलतनत के ख़्वाब देख रहा है जिसका बादशाह वह खुद होगा। नूरूद्दीन ज़ंगी उसकी पुश्त पनाही कर रहा है। उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ मज़बूत करने के लिये दो हजार सवारों और इतने ही पियादा असकरियों की फौज भेजी थी। क्या उसने खलीफा बग़दाद की इजाज़त से यह फौज भेजी थी। क्या खिलाफत का कोई ऐलची आपसे मशवरा लेने आया था कि मिस्र में फौज की ज़रूरत है या नही? जो कुछ हुआ खिलाफत से बालातर हुआ।"

" तुम ठीक कहते हो।" खलीफा ने कहा—" मुझ से नही पूछा गया था और मुझे अब खयाल आया है कि उधर से आई हुई इतनी ज़्यादा कमक वापस नही भेजी गई।"

"वापस इस लिये नही भेजी गई कि यह कमक मिस्र पर गिरफ्त मज़बूत करने के लिये भेजी गई थी और इसी लिये यहां रखी गई हैं।" रजब ने कहा—" मिस्र की पूरानी फौज के सिपाहीयों को किसान और भिखारी बनाने के लिये यह कमक आई थी। नाजी, ओरोश, काकेश, आबिदयाज़दान अबी आज़र और उन जैसे आठ और सालार कहां हैं? हुजूर ने कभी सोंचा नही। इन सबक को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने खुफिया तौर पर कत्ल करा दिया था। उनका कुसूर सिर्फ यह था कि वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से ज़्यादा काबिल सालार थे। यह कत्ल किसकी गर्दन पर है? सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हाकिमों की मजलिस मे कहा था कि खलीफा मिस्र ने उन सबको गद्दारी और बग़ावत के जुर्म में सज़ाये मौत दे दी है।"

"झूठ" खलीफा ने भड़क कर कहा—" सफेद झूठ। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बताया था कि यह सब गद्दार हैं। मैं ने उसे कहा था कि गवाह लाओ और मुकदमें चलाओ।"

" उस ने मुकदमा चलाये बग़ैर वह फैसला खुद किया जो खिलाफत की मोहर के बगैर बेकार होता है।" रजब ने कहा—" उन बद किस्मत सालारों का जुर्म यह है कि उन्होंने सलीबी बादशाह से राबता कायम किया था। उनका मकसद कुछ और था। वह यह था कि सलीबीयों से बात चीत करके जंग व जदल खत्म किया जाये और हम अपने मुल्क और रिआया की खुशहाली और फलाह व बहबूद की तरफ तवज्जो दे सकें। आप शायद तसलीम न करें मगर यह हकीकत है कि सलीबी हमें अपना दुश्मन नही समझते। वह हमारे खिलाफ जंगी ताकत सिर्फ इस लिये तैय्यार रखते हैं कि नूरूद्दीन ज़ंगी और शेरेकोह मर गया तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपनी जगह छोड़ गया। यह शख्स शेरेकोह का परवुरदा है। उस ने सारी उम्र ईसाई कौम से लड़ते और इसलाम के दुश्मन पैदा करते और दुश्मनों में इज़ाफा करते गुज़ारी है। अगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की जगह मिस्र का अमीर किसी और को मुकर्रर किया जाता तो आज ईसाई बादशाह आपके दरबार में दोस्तों की तरह आता। कत्ल व ग़ारत न होती। इतने पुराने और तजर्बेकार सालार कत्ल होकर गुमनाम न हो जाते।"

"मगर रजब!" खलीफा ने कहा—" सलीबीयों ने बहरे रोम से हमला जो किया था?"

" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एसे हालात पैदा किये थे कि सलीबी अपने दिफा के लिये हमले मे पहल करने पर मजबूर हो गये।" रजब ने कहा—" सुतलान सलाहुद्दीन अय्यूबी

को मालूम था कि हमला आ रहा है क्यों कि हालात उसी ने पैदा किये थे। इस लिये उस ने हमले रोकने का इन्तेज़ाम पहले ही कर रखा था। यह शख़्स फरिश्ता तो नही था कि उसे ग़ैब का हाल मालूम हो गया था। उस ने एक ऐसा नाटक खेला था जिसमें हजारों औरतें बेवा हो गईं। इस पर आपने उसे मेरी मौजूदगी में खिराजे तहसीन पेश किया। फिर उस ने सुडानी फौज को जो आपकी वफादार थी, जंगी मश्क के बहाने रात को बाहर निकाला और अन्धेरे में उस पर अपनी नई फौज से हमला कर दिया। मशहूर यह किया कि नाजी की फौज ने बग़ावत कर दी थी। इ पर भी आपने उसे खिराजे तहसीन पैश किया। आप इतने सादा और मुखलिस हैं कि आप चाल और उस धोखे को समझ न सके।"

इस दौरान उम्मे अराराह जो अरब के हुस्न का शाहकार थी। खलीफा अलआज़िद के साथ बड़ी मासुमियत से कुछ ऐसी फहश हरकतें करती रही कि अलआज़िद पर शराब का नशा दुगुना हो गया। उसकी ज़ेहनी कैफियत इस लड़की के कबज़े में थी। रजब की बातें उसके दिमाग़ में उतरती जा रही थी। उसकी ज़्यादा तर तवज्जो उम्मे अराराह पर मरकूज़ थीं। रजब की बातें तो वह ज़िमनी तौर पर सुन रहा था। रजब ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर एक इन्तेहाई बेहुदा वार किया। उस ने कहा–" उस ने एक और फरेबकारी शुरू कर रखी है। किसी खूबसूरत और जवान लड़की को पकड़ कर उसकी आबरू रेज़ी करवाता है और चन्द दिन अय्याशी करके उसे यह कहर कर मरवा देता है कि यह जासूस है। ईसाईयों के खिलाफ कौ़म मे नफरत पैदा करने के लिये उस ने फौज और अवाम में यह मशहूर कर रखा है कि सलीबी अपनी लड़कियों को मिस्र में जासूसी के लिये भेजते है। और वह बदकार औरतों को भी यहीं भेजते है जो कौ़म का अख़लाक़ तबाह करती हैं। मैं इसी मुल्क का बादशाह हूँ। यहां जितने कहबे खाने हैं वहां मिस्री और सुडानी औरतें हैं। अगर कोई ईसाई औरत हैं तो वह किसी की जासूस नहीं। यह उसका पेशा है।"

"मुझे हरम की तीन चार लड़कियों ने बताया है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इन्हें अपने घर बुलाया था और खराब किया था।" उम्मे अराराह ने कहा।

खलीफा भड़क उठा और कहा–" मेरे हरम की लड़कियां ? तुम ने मुझे पहले क्यों नही बताया।"

" इस लिये कि आपकी बीमारी में यह खबर आपके लिये अच्छी नहीं थी।" उम्मे अराराह ने कहा–" अब भी ये बात मेरे मूंह से बे इखतियार निकल गई है मैं ने ऐसा इन्तेजाम कर दिया है कि अब कोई लड़की किसी के बूलाने पर बाहर नही जा सकती।"

" मैं उसे भी बुलाकर दुर्रे लगवाऊंगा।" खलीफा ने कहा–" मैं इन्तेकाम लूंगा।"

" इन्तेकाम लेने के तरीके और भी हैं। "–रजब ने कहा–" इस वक्त अवाम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ है यह लोग आपके खिलाफ हो जायेंगे।"

" तो क्या मैं अपनी ये तौहीन बर्दाश्त करूँ? " खलीफा ने कहा।

" नही।" रजब ने कहा–" अगर आप मुझे इजाज़त दें और मेरी मदद करें तो मैं सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को उसी तरह गयाब करा दुंगा जिस तरह उस ने मिस्र की पुरानी फौज के

सालारों को गुम कर दिया है।"

"तुम यह काम किस तरह करोगे?" खलीफा ने पूछा।

"हशीशीन यह काम कर दिखायेंगे।" रजब ने कहा–" वह रकम बहुत ज़्यादा तलब करते हैं।"

" रकम का मुतालबा जिस कदर होगा वह मैं दूंगा।" खलीफा ने कहा–" तुम इन्तेज़ाम करो।"

❖

दो रोज़ बाद जुमा था। काहिरा की जामा मस्जिद के खतीब को ईसा अलहिकार फकीह ने कह दिया था कि खुतबे में खलीफा का नाम न लिया जाये यह खतीब तुर्क था। जिसका पूरा नाम तारीख में महफूज़ नहीं। वह अमीर अलआलम के नाम से मशहूर था। उस दौर के दस्तावेज़ी सबूत ऐसे ही मिलें है। जिनके मुतअल्लिक खतीब अलआलम ने कई बार इस बिदअत को खतम करने के अज़्म का इज़हार किया था और यह इन्हीं की कोशिशों का नतीजा था कि खलीफा का नाम खुतबे से निकाल दिया गया था। एक रिवायत यह भी है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अमीर अलआलम ने ही मशवरा दिया था कि इस बिदअत के खातमें के अहकाम जारी करें और दो वाकिआ निगार इसका सेहरा ईसा अलहिकारी फकीह के सिर बांधते है। हो सकता है कि यह मनसूबा खतीब अमीर अलआलम और मज़बही ऊमूर के मुशीर ईसा अलहिकारी फकीह के पेशे नज़र भी हो लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की गुफतगू की जो दस्तावेज़ात मिल सकीं है उने से पता चलता है कि यह दिलेराना इकदाम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का ही था बहरहाल इसमें कोई शक नही रहता कि उस वक़्त सच्चे मुसलमान मौजूद थे।

खतीब अलआलम ने खुतबे में खलीफा का नाम न लिया। जामा मस्जिद में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी दर्मियानी सफों में मौजूद था। अली बिन सुफियान उस से थोड़ी दूर किसी सफ में बैठा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअद्दिद दिगर मुशीर और सलाहकार बिखर कर अवाम में बैठे थे ताकि उनका रद्दे अमल भांप सकें। अली बिन सुफियान के मुखबिरों की बहुत बड़ी तादाद मस्जिद में मौजूद थी। खलीफा का नाम खुतबे से गायब करना एक संगीन इकादम नही बल्कि खिलाफत के इहकाम के मुताबिक संगीन जुर्म था। उसका इरतकाब कर दिया गया। सरबराहों में से अगर कोई मस्जिद में नही था तो वह खलीफा अलआज़िद था।

नमाज़ के बाद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उठा। खतीब के पास गया। उन से मुसाफा किया। उनके चौगे का बोसा लिया और कहा–" अल्लाह आपका हामी व नासिर है।" खतीब अमीर अलआलम ने जवाब दिया–" यह हुकम सादिर फरमाकर आप ने जन्नत में घर बना लिया है।" वापिस चन्द कदम चल कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रुक गया और खतीब के करीब जाकर कहा –" अगर आपको खलीफा का बुलावा आऐ तो उसके पास जाने की बजाये मेरे पास आ जाना। मैं आपके साथ चलुंगा।"

"अगर अमीरे मिस्र गुसताखी न समझें।" अमीर अलआलम ने कहा–" तो अर्ज़ करूँ कि बातिल और शिर्क के खिलाफ अमल और हक गोई अगर जुर्म है तो इस की सज़ा मैं अकेला भुगत लुंगा। मैं आपका सहारा नही ढुंढुंगा। खलीफा ने बुलाया तो अकेला जाऊंगा। मैंने खलीफा के नाम को अपके हुक्म से नही खुदा के हुकम से निकाला है। मैं आपको मुबारक बाद पेश करता हूँ।"

शाम के बाद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अली बिन सुफियान, बहाउदीन शद्दाद और चन्द एक और मुशीरों से दिन की रिपोर्ट ले रहा था। सारे शहर में शहरियों के भेस में मुखबिर और जासूस फैला दिये गये थे जिन्होंने लोगों की राये मालूम कर ली थी। अली बिन सुफियान ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बताया कि कहीं से भी उसे ऐसी इत्तेला नही मिली जहां कि सी ने यह कहा हो कि खुतबे में खलीफा का नाम नही लिया गया। अली बिन सुफियान के बाज़ आदमियों ने दो तीन जगहो पर यह भी कहा कि जामा मस्जिद के खतीब ने आज खुतबे में खलीफा का नाम नही लिया था, यह उस ने बुरा किया है। उस पर कुछ आदमी इस तरह हैरान होगये जैसे उन्हें मालूम ही नहीं कि खुतबे मे खलीफा का नाम लिया गया था या नहीं। इनमे से चार पांच ने इस किस्म के खयालात का इज़हार किया कि इस से क्या फर्क पड़ता है। खलीफा खुदा या पैग़म्बर तो नहीं। इन इत्तेलाआत से सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इतमिनान हो गया कि अवाम के जिस रद्दे अमल से उसे डराया गया था उसका कहीं भी इज़हार नही हुआ।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसी वक्त सुलतान नूरूद्दीन ज़ंगी के नाम पैग़ाम लिखा जिसमें उसे इत्तेला दी कि उस ने जुमा के खुतबे में से खलीफा का नाम निकलवा दिया है। अवाम की तरफ से अच्छे रद्दे अमल का इज़हार हुआ है। लिहाज़ा आप भी मरकज़ी खिलाफत को खुतबे से खारिज करदें। इस लुब्बे लुबाब का तवील पैग़ाम लिखा कर उस ने हुकुम दिया कि कासिद को सुबह सवेरे रवाना कर दिया जाये। जो यह पैगाम नूरुद्दीन ज़ंगी को देकर वापस आजाये। इस के बाद उस ने अली बिन सुफियान से कहा कि खलीफा के महल में जासूसों को चौकन्ना कर दिया जाये। वहां ज़रा सी भी मशकूक हरकत हो तो फौरन इत्तेला दें रजब को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी जानता था। उसे यह भी मालूम था कि रजब खलीफा का मुंह चढ़ा नायब सालार है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अली बिन सुफियान से कहा–"रजब के साथ एक आदमी साये की तरह लगा रहना चाहिये।"

उस रात महफिले अय्याशी व तरब में रजब नही था। वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल का इन्तेज़ाम करने चला गया था। उसे हसन बिन सबाह के हशीशीन से मिलना था। खलीफा रोज़ मर्राह की तरह बाहर की दुनिया से बे खबर और उम्मे अरारराह के तिलस्माती हुस्न और नाज़ों अदा में गुम था। उसे किसी ने बताया ही नही था कि खुतबे में से उसका नाम निकाल दिया गया है। वह खुश था कि सुतलान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल का इन्तेज़ाम होने वाला है। उम्मे अराराह ने उसे जल्दी सुलाने और बेहोश करने के लिये ज़्यादा शराब पिला दी और शराब में खवाबआवर सफूफ भी मिला दिया। उस बूढ़े से जल्दी छुटकारा

हासिल करने के लिये वह यही नुस्खे इसतेमाल किया करती थीं। उसे सुला कर और मशाले बुझा कर वह कमरे से निकल गई। वह अपने मखसूस कमरे की तरफ जा रही थी जिसमें रजब चोरी छिपे उसके पास आया करता था। वह कमरे में दाखिल हुई थी कि किवाड़ों के पीछे से किसी ने उस पर कम्बल फेंका। उसकी आवाज़ भी न निकल पाइ थी कि उसके मुंह पर जहां पहले ही कम्बल लिपट गया था एक और कपड़ा बांध दिया गया। उसे किसी ने कन्धों पर डाल लिया और कमरे से निकल गया। यह दो आदमी थे। वह महल की भूल भूलय्या और चोर रास्तों से वाकिफ मालूम होता था। वह अन्धेरी सीढ़ीयों पर चढ़ गये। उस के पीछे दूसरा उतर गया और दोनों अन्धेरे में गायब हो गये। कुछ दूर चार घोड़े थे और उनके पास दो आदमी बैठे हुये थे। उन्होंने अपने साथियों को अन्धेरे मे आते देखा और यह भी देखा कि एक ने कन्धे पर कुछ उठा रखा है। वह घोड़ों को आगे ले गया। सब घोड़ों पर सवार हो गये। एक सवार ने लड़की को अपने आगे डाल लिया। उन में से किसी ने कहा–" घोड़ों को अभी दौड़ाना नही। टाप सारे शहर को जगा देंगे।" घोड़े आहिस्ता आहिस्ता चलते गये और शहर से निकल गये।

" यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का काम है।"

" अमीरे मिस्र के सिवा ऐसी हरकत और कोई नही कर सकता।"

" उसके सिवा और हो ही कौन सकता है।"

कसरे खिलाफत में यही शोर था कि उम्मे अराराह को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अग़वा कराया है। रजब वापस आंगया था। महल के कोने कोने की तलाशी ली जा चुकी थी। मुहाफिज़ दस्ता कमाण्डरों के अताब का निशाना बना हुआ था। खुद कमाण्डर भी सिपाहियों की तरह थर थर कांप रहे थे। एक लड़की का इग़वा मामूली वारदात नही थी और लड़की भी एसी जिसे खलीफ़ा हरम का हीरा समझता था। महल के पीछवाड़े एक रस्सा लटक रहा था। ज़मीन पर पावं के निशान थे जो थोड़ी दूर जा कर घोड़ो के निशानात मे खत्म हो गये थे। इन से यह शुब्हा मिलता था कि लड़की को रस्से से उतार गया है। इस शक का इज़हार भी किया गया कि लड़की अपनी मर्ज़ी से किसी के साथ गई है। खलीफ़ा ने इस शक को मुसतरद कर दिया था। वह कहता था कि उम्मे अराराह उस पर जान छिड़कती थी।

"यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का काम है।" रजब ने अलआज़िद से कहा–" कसरे खिलाफत मे हर किसी की ज़बान पर यही अलफाज़ हैं कि उसके सिवा कोई भी ऐसी हरकत नही कर सकता।"

हर किसी के कानों मे यह अल्फाज़ रजब ने ही डाली थी। उसे ज्योंही उम्मे अराराह की गुमशुदगी की इत्तेला मिली थी,उसने सारे महल में घूम फिर कर हर किसी से लड़की के मुतअल्लिक पूछा और हर किसी से कहा था।" यह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का काम है।" कसरे सदारत के आला हाकिम से अदना मुलाज़िम तक इन्ही अलफाज़ को दोहराये चले जा रहे थे और जब यह अलफाज़ खलीफा अलआज़िद के कानों में पड़े तो उस ने जर्रा भर सोंचने की ज़रूरत न समझी कि यह इलजाम बे बुनियाद हो सकता है। उस के कानों में यह

11
1

तो पहले ही डाला जा चूका था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी औरतों का शैदाई है। उम्मे अराराह ने उसे यह बताया था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी हरम की चार लड़कियों को खराब कर चुका है। खलीफा ने उसी वक़्त अपने खुसूसी कासिद को बुलाया और उसे कहा कि अमीरे मिस्र के पास जाओ और उसे कहो कि पर्दे में लड़की वापस करो, मैं कोई कारवाई नही करूंगा।"

जिस वक्त खलीफा कासिद को यह पैगाम दे रहा था उस वक़्त काहिरा से दस बारह मील दूर तीन शुतर सवार काहिरा की तरफ आहिस्ता आहिस्ता आ रहे थे। वह मिस्र की फौज के गश्ती संतरी थे। मिस्र के सियासी हालात चुंकी अच्छे नही थे। जासूसों और तखरीबकारों की सरगर्मियां रुकने की बजाये बढ़ती जा रही थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अच्छी तरह मालूम था कि मुल्क में गद्दारी और बगावत की चिंगारियां भी सुलग रही हैं उस सुडानी फौज की तरफ से जिसे उसने बरतरफ कर दिया था, खतरा पूरी तरह टला नही था उस के फौज के कमाण्डर ओहदेदार और सिपाही तजुर्बेकार अस्करी थे। किसी भी वक़्त मुल्क के लिये खतरा बन सकते थे। सब से बड़ा खतरा यह था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुखालिफीन ने सलीबीयों से दोसताना कर रखा था। उनके जासूसों को वह पनाह अड्डे और मदद मुहय्या करते थे। इन खतरात के पेशे नज़र दारूल हुकूमत से बहुत दूर दूर और हर तरफ फौज के चन्द एक दस्ते रखे गये थे। उनके गशती संतरी दिन रात सेहराओं और टीलों टेकरियों के इलाकों में घोड़े और ऊंटों पर गश्त करते रहते थे ताकि आने वाले खतरे की इत्तेला कब्ल अज़ वक़्त दी जा सके।

वे तीन शुतर सवार इन्हीं दस्तों के साथ गश्ती संतरी थे जो अपने जिम्मेदारी के इलाके में गश्त करके आ रहे थे। आगे मिट्टी और पत्थरों की पहाड़ियों और चट्टानों का वसीअ इलाका था। वह एक वादी में से गुज़र रहे थे। उन्हें किसी औरत की आह व ज़ारी सुनाई दी। मर्दाना आवाज़ भी सुनाई दी। इनसे साफ पता चलता था कि लड़की पर ज़बर्दसती की जा रही है। एक शुतर सवार उतरा और उस चट्टान पर चढ़ गया जिसकी दूसरी तरफ से आवाज़ आ रही थी उस ने छुप कर देखा। उधर चार घोड़े थे और चार आदमी भी थे। चारों सूडानी हबशी थे...... एक बड़ी ही खूबसूरत लड़की थी जो दौड़ी जा रही थी। एक हबशी ने उसे पकड़ लिया और उसे बाजुओं में दबोच कर उठा लिया और उसे अपने साथियों के दर्मियान खड़ी करके उसके सामने घुटनों के बल हो गया। उस ने अपने सीने पर हाथ बांध कर कहा—" तुम मुकद्दस लड़की हो। अपने आपको तकलीफ मे डाल कर हमें गुनाहगार न करो। देवताओं का कहर हमें जला डालेगा या हमें पत्थर बना देगा।"

"मैं मुसलमान हूँ।" लड़की ने चिल्लाकर कहा—" तुम्हारे देवताओं पर लानत भेजती हूँ। मुझे छोड़ दो वरना मैं तुम सब को खलीफा के कुत्तों से बोटी बोटी करा दुगी।"

" तुम अब खलीफा की मिलकियत नही।" एक हबशी ने कहा—" अब तुम देवता की मिलकियत हो जिसके हाथ में आसमान के बिजली का कहर, नागों का ज़हर और शेरों की ताकत है। उस ने तुम्हें पसंद कर लिया है। अब तो कोई तुम्हें उस से छुड़ाने की कोशिश

करेगा उसे सेहरा की रेत जला कर राख करदेगी।"

एक हबशी ने दूसरे से कहा–" मैं ने कहा था कि यहां न रूको मगर तुम आराम करना चाहते थे। इसे बंधा हुआ चले चलते और शाम से पहले पलहे मन्ज़िल पर पहुंच जाते।"

"क्या हमारे घोड़े थक नही गये थे?" हबशी ने जवाब दिया–" हम सारी रात के जागे हुये नही थे? इसे फिर बांध लो और चलो।"

उस ने लड़की को दबोच लिया। अचानक उसकी पीठ में एक तीर उतर गया। उसकी गिरफ्त लड़की से ढीली हो गई। लड़की उसे देख कर भागने लगी तो दूसरे आदमी ने उसे पकड़ कर घसीटा और घोड़ों की औट में हो गया। एक और तीर आया एक आदमी की गर्दन में लगा। वह आदमी बुरी तरह तड़पने लगा। जिस आदमी ने लड़की को पकड़ा था। वह घोड़े की बाग पकड़ कर लड़की और घोड़े को नशीबी जगह ले गया जो बिलकुल करीब थी। एक हबशी और भी रह गया था। वह भी दौड़ कर नशेब में उतर गया....... यह तीर उस शुतर सवार संतरी ने चलाया था जो चट्टान पर चढ़ गया था। उसने बाद में जो ब्यान दिया इसमें उस ने कहा था कि वह देवताओं के नाम से डर गया था लेकिन लड़की ने जब यह कहा कि मैं मुसलमान हूँ और मैं देवताओं पर लानत भेजती हूँ तो संतरी का ईमान बेदार हो गया। लड़की ने जब खलीफा का नाम लिया तो समझ गया कि यह हरम की लड़की हैं। उसका लिबास, उसकी शकल व सूरत और उसकी डील डोल बता रहा था कि यह मामूली दर्जे की लड़की नही, उसे अग़वा किया जा रहा है और उसे सूडान में ले जाकर फरोख्त किया जायेगा। संतरी को यह मालूम था कि थोड़ें दिनो बाद सूडानी हबशियों का एक मेला लगने वाला है जिस में लड़कियों की खरीद व फरोख्त होती है।

फौज को सुलातान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह हुक्म दे रखा था कि औरत की इज्ज़त की हिफाज़त की जायेगी। एक औरत की इज़्ज़त को बचाने के लिये एक दर्जन आदमियों के कत्ल की भी इजाज़त थी। संतरी ने यह सारी बातें सामने रख कर फैसला कर लिया कि इस लड़की को बचाना है। उसने दो तीर चलाये और दो हबशि मार डाले। उसने ग़लती यह की कि बाकी दो हबशियों को पकड़ने के लिये नीचे उतर आया। अपने ऊंट पर सवार हुआ अपने साथियों को बताया कि बुर्दा फरोश कापीछा करना है। वह तीनो ऊंट को दौड़ाते दूसरी तरफ गये मगर उन्हें चट्टान का चक्कर काट कर जाना पड़ा। उसने यह भी सोंचा कि ऊंट घोड़ा का पीछा कर सकता है कि नहीं। इन तीनों मे से तीर कमान सिर्फ उसी संतरी के पास था। बाकी दो के पास बर्छियां और तलवारें थीं।

वह जब उस जगह पहुचें जहां लड़की और हबशी को देखा था तो वहां दो लाशों के सिवा कुछ भी न था। सूडानी हबशी लड़की को भी ले गये थे और अपने मरे हुये साथियों के घोड़े को भी। शुतर सवारों ने तआकुब में ऊंट दौड़ाये लेकिन वह टीले और चट्टानों का इलाका था। रास्ता घूमता और मिटता था। इन्हें भागते घोड़ों की टाप सुनाई दे रही थी जो दूर हटते गये और खामोश हो गये। शुतर सवार ने दोनों लाशों को ऊंटों पर लादी और वापस आ गये। उन्हें मालूम न था कि यह लाशें किसकी है। यह आम किसम के बुर्दा फरोंशों की भी हो सकती

थीं उन्हें उठा लाना ज़रूरी न था लेकिन लड़की खलीफा की मालूम होती थी। इस लिये लाशें उठाना ज़रूरी समझा गया । ताकि यह मालूम हो सके कि अग़वा करने वाले कौन हैं।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी परेशानी और गुस्से के आलम में टहल राह था। कमरें में उसके मुशीर बैठे थे। यह उसके दोस्त भी थे। वह सर झुकाये बैठे थें। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने आप को हमेशा क़ाबू में रखता था। वह कभी जज़्बाती नही हुआ था। गुस्सा पी जाया करता था और ज़िहन को पूरी तरह क़ाबू में रख कर सोंचा और फैसला किया करता था। ऐसे हालत ने भी उसे आज़माया था जिन में जाबिर जंगजू भी हथ्यार डाल दिया करते हैं। वह मुहासरों में घिर कर लड़ा था और इस हाल में भी मुहासरे में रहा था कि उसके सिपाही इस इन्तेज़ार में थे कि वह हथियार डाल कर इन्हें इस अज़ियत और मौत से बचा लेगा लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपना हौसला ही मज़बूत न रखा बल्कि सिपाहियों मे भी नई रूह फूंक दी । मगर उस रोज़ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपने ऊपर क़ाबू नही रहा था। चेहरे पर गुस्सा था, घबराहट थी। यही वजह थी कि सब खामोश बैठे थे।

"आज पहली बार मेरा दिमाग़ साथ छोड़ गया है–" उस ने कहा।

"क्या यह मुमकिन नहीं कि आप खलीफ़ा के इस पैग़ाम को नज़र अंदाज़ कर दें?" उसके नायब सालार अल–नासिर ने कहा।

" मैं इसी कोशिश में मसरूफ हूँ।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" लेकिन इल्ज़ाम की नौईयत देखो जो मुझ पर आयद किया गया है। मैं ने उसके हरम की लड़की अग़वा करवाई है। असतग़फिरुल्लाह– अल्लाह मुझे माफ करे। उस ने मेरी तौहीन में कोई कसर नही छोड़ी । पैग़ाम बल्कि धमकी क़ासिद की ज़बानी भेजी है। वह मुझे बुला लेता। मेरे साथ बराहे रास्त बात करता।"

"मैं फिर भी यह मशवरा दुंगा कि अपने आप को ठंडा किजिये। " बहाउद्दीन शद्दाद ने कहा।

"मैं सोंच रहा हूँ कि क्या वाक़ई हरम से कोई लड़की ग़ायब हुई है?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" यह झूठ मालूम होता है। उसे पता चल गया होगा कि मै ने खुत्बे में से उसका नाम निकाल लिया है। इसके जवाब में उस ने मुझपर यह इलज़ाम लगाकर कि मैं ने उसके हरम की एक लड़की अग़वा कराई है। इन्तेक़ाम लेने की कोशिश की है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ईसा अलहिकारी फकीह से कहा–" एक हुक्म नामा मिस्र की तमाम मस्जिदो के नाम जारी करो कि आईन्दा किसी मस्जिद में खुत्बे में खलीफा का ज़िक्र नही किया जायेगा।"

" आप उसके यहां चले जायें और उस से बात करें।"अलनासिर ने कहा–" उसे साफ अलफाज़ मे बता दें कि खलीफ़ा कौम की इज्ज़त का निशान होता है लेकिन उसका हुक्म नही चल सकता , खुसूसन उस सूरते हाल में जब हालात जंगी हैं। और दुशमन का खतरा बाहर से भी है और अन्दर से भी मौजूद है। मैं तो यहा तक मशवरा दुंगा कि उसके मुहाफिज़

दस्ते की नफरी कम करें। सुडानी हबशियों की जगह मिस्री दस्ता रखें और उसके महल के इखराजात कम करें। मै इस नतीजे से आगाह हूँ। हमें मुक़ाबला करना ही पड़ेगा। हमें अल्लाह पर भरोंसा रखना चाहिये।"

"मैं ने हमेशा अपने अल्लाह पर भरोसा किया है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" खुदाये जुजलाल मुझे इस जिल्लत से भी बचा लेगा।"

दरबान अन्दर आया। सबने उसकी तरफ देखा। उसने कहा–" सेहरा के गश्ती दस्ते का कमाण्डर अपने तीन सिपाहियें के साथ आया है। वह दो सूडानीयों की लाशें लाया है।"

सब ने दरबान की मुदाख़लत को अच्छी नजर से न देखा। इस वक़्त सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ही अहम और खुफिय इजलास में मसरूफ था लेकिन सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दरबान से कहा–" उन्हें अन्दर भेज दो।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने दरबान से कह रखा था कि जब भी उसे कोई मिलने आये तो वह उसे इत्तेला दे और अगर रात को उसे जगाने की ज़रूरत महसूस हो तो फौरन जगा ले। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी कोई बात और कोई मुलाकाम इलतवा में नही डाला करता था।

ओहदेदार अन्दर आया। उसका चेहरा गर्द से भरा हुआ और थका हुआ नज़र आता था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे बिठाया और दरबान से कहा कि उसके लिये पीने के लिये कुछ ले आओ। ओहदेदार ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बताया कि उसके गश्ती संतरियों ने चार सुडानी हबशियों से एक इग़वा शुदा लड़की को छुड़ाने की कोशिश में दो को तीर से मार डाला है और वह लड़की को उठा कर भाग गये है। ओहदेदार ने बताया कि संतरियों के बयान के मुताबिक़ लड़की खाना बदोश या किसी आम घराने की नही थी। वह बहुत अमीर लगती थी और उस ने कहा था कि वह खलीफ़ा की मिल्कियत है।

" मालूम होता है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" खुदाये जुलजलाल मेरी मदद को आगया है।" वह बाहर निकल गया। कमरे में बैठे हुये सब हाकिम उसके पीछे चले गये।

बाहर ज़मीन पर दो लाशें पड़ी थीं। एक लाश पेट के बल थी। उसकी पीठ में तीर उतरा हुआ था दुसरी लाश की गर्दन में तीर घुसा था पास तीन सिपाही खड़े थे उन्होंने अमीर को जो उनका सालार आला भी था शायद ही पहली बार देखा था। वह फौजी अन्दाज़ से सलाम करके परे हट गये। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसके सलाम का सिर्फ जवाब ही नही दिया बल्कि उनसे हाथ भी मिलाया और कहा–" यह शिकार कहां से मार लाये हो मोमिनो?" उस संतरी ने जिस ने चट्टान से तीर चला कर दो आदमियों को मारा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सारा वाक़िआ पूरी तफसील से सुना दिया।

"क्या यह मुमकिन हो सकता है कि वह लड़की खलीफ़ा की ही दाश्ता हो?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने मुशीरों से पुछा।

" मालूम यही होता है।"अली बिन सुफियान ने कहा–" इनके खंजर देखिये।" उस ने दो खंजर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को दिखाये। जिस वक़्त सिपाही वाक़िया सुना रहा

था अली बिन सुफियान लाशों की तलाशी ले रहा था। उन्होंने सुडान का कबाईली लिबास पहन रखा था कपड़ों के अन्दर उनके कमर बन्द थे जिन के साथ एक एक खंजर था। यह खलीफा के हिफाज़ती दस्ते के खास साख्त के खन्जर थे। उनके दस्तानों पर क़सरे खिलाफत की मोहर लगी थी। अली बिन सुफियान ने कहा–" अगर उन्हों ने यह खन्जर चोरी नही किये तो यह दोनो क़सरे खिलाफत के हिफाज़ती दस्ते के सिपाही हैं। यह कहा जा सकता है कि लड़की वही है जो खलीफा के हरम से अग़वा हुई है औ अग़वा करने वाले खलीफा के मुहाफिज़ में से है।"

"लाशें उठाओ और खलीफा के पास ले चलो।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा।

" पहले यकीन कर लिया जाये कि यह वाकई खलीफा के मुहाफिज़ में से है।' अली बिन सुफियान ने कहा और वहां से चला गया।

ज़्यादा वक़्त नही गुज़रा था कि अली बिन सुफियान के साथ कसरे खिलाफत का एक कमाण्डर आ गया। उसे दोनों लाशें दिखाई गई। उस ने फौरन पहचान लिया और कहा–" यह दोनों मुहफिज़ दस्ते के सिपाही हैं। गुज़िश्ता तीन रोज़ से छुट्टी पर थे। इनकी छुट्टी सात दिन रहती थी।"

" कोई और सिपाही भी छुट्टी पर है?" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पूछा।

" दो और हैं।"

" क्या वह इनके साथ छुट्टी पर गये थे?"

" इकट्ठे गये थे।" कमाण्डर ने जवाब दिया और एक ऐसा इन्कशाफ किया जिस ने सब को चौंका दिया। उस ने कहा–"यह सूडानी के ऐस क़बीले से तअल्लुक़ रखते हैं जो खून खोरी में मशहूर हैं। इनमें फिरऔन के वक़्त की कुछ रस्मे चली आ रही हैं। यह कबीले हर तीन साल बाद एक जश्न मनाते है। यह एक मेला होता है जो तीन दिन और तीन रात रहता है। दिन ऐसे मुकर्रर करते हैं चौदहवीं रात का चांद पूरा होता है। मेले में वह लोग भी जाते है जिनका उस क़बीले के साथ कोई तअल्लुक़ नही होता। वह सिर्फ अय्याशी के लिये जाते हैं। मेले में लड़कियों की खरीद फरोख्त के लिये बाक़ायदा मन्डी लगती है। इस मेले से एक माह पलहे ही इर्द गिर्द बल्कि क़ाहिरा तक के लोग जिनकी बेटियां जवान हो गई हों होशियार और चौकस हो जाते हैं। वह लड़कियों को बाहर नही जाने देते। इन दिनों खानाबदोश भी उस इलाक़े से दूर चले जाते हैं। लड़कियां इग़वा होती हैं और इस मेले में फरोख्त हो जाती हैं। यह चारों सुडानी इसी मेले के लिये छुट्टी पर गये थे। मेला तीन रोज़ बाद में शुरू हो रहा है।"

" क्या इनके मुतअल्लिक़ यह कहा जा सकता है कि खलीफा के हरम की लड़की उन्हों ने अग़वा की होगी?" अली बिन सुफियान ने पूछा।

"मैं यकीन से नही कह सकता।" कमाण्डर ने जवाब दिया –" यह कह सकता हूँ कि इन दिनों में इस कबीले के लोग जान का खतरा मोल ले कर भी लड़कियां अग़वा करने की कोशिश करते हैं और यह खुंखार इतने हैं कि अगर किसी लड़की के वारिस मेले में चले जायें

और अपनी लड़की लेने की कोशिश करें तो उन्हें कत्ल कर दिया जाता है। लड़कियों के गाहकों में मिस्र के अमीर, वज़ीर और हाकिम भी होते हैं। मेले में ऐसे आरजी कहबा खाने भी खोले जाते हैं जहां जुआ, शराब और औरत के शैदाई दौलत लुटाते हैं। इस जश्न की आख़री रात बड़ी पुरअसरार होती है। किसी खुफिया जगह एक नौजवान और ग़ैर मामूली तौर पर हसीन लड़की को कुर्बान किया जाता है। यह किसी को भी मालूम नही कि लड़की को कहां और किस तरह कुर्बान किया जाता है। यह काम उनका एक मज़हबी पेशवा जिसे हबशी खुदा भी कहते हैं करता है। उसके साथ बहुत थोड़े से खास आदमी और चार पांच लड़कियां होती हैं। लोगों को लड़की का कटा हुआ सिर और खून दिया जाता है जिसे देख कर यह कबीला पागलों की तरह नाचता और शराब पीता है।

खलीफा ने मुहाफिज़ दस्ते का नाक में दम कर रखा था। तमाम तर मुहाफिज़ दस्ता धूप में खड़ा था। सूरज गुरूब होने में कुछ देर बाकी थी। इस दस्ते को सुबह खड़ा किया गया था। कमाण्डरों और ओहदेदारों को भी खाने की इजाज़त दी गई थी न पानी पीने की। रजब बार बार आता और ऐलान करता था कि लड़की मुहफिज़ की मदद के बग़ैर अग़वा नही की जा सकती थी। जिस किसी ने अग़वा में मदद दी है वह सामने आ जाये वरना तुम्हें यहीं भूखा और प्यासा मार दिया जायेगा। अगर लड़की खुद बाहर गई होती तो तुम में से किसी न किसी ने ज़रूर देखी होती..... इन धमकियों का कुछ असर नही हो रहा था। सब कहते थे कि वह बेगुनाह हैं।

खलीफा रजब को टिकने नही दे रहा था। उसने रजब से कहा था। मुझे लड़की का अफसोस नही, परेशानी यह है कि जो इतने कड़े पहरे से लड़की को इग़वा कर सकते हैं वह मुझे भी क़त्ल कर सकते हैं। मुझे यह सबूत चाहिये कि लड़की को सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अग़वा कराया है।

रजब ने ही अग़वा का इल्ज़ाम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के सर थोपा था मगर खलीफा उसे कह रहा था कि सबूत लाओ। रजब सबूत कहां से लाता। उसकी जान पर बन गई थी। वह एक बार फिर मुहाफिज़ दस्ते के सामने गया। गुस्से से वह बावला हुआ जा रहा था। वह कई बार दी हुई धमकी एक बार फिर देने ही लगा था कि दरवाज़े पर खड़े संतरियों ने दरवाज़े खोल दिये और एलान किया।" अमीरे मिस्र तशरीफ ला रहे हैं।"

बड़े दरवाज़े में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का घोड़ा दाखिल हुआ। उसके आगे दो मुहाफिज़ सवार के घोड़े थे। आठ सवार पीछे थे। एक दायें और एक बायें था। उनके पीछे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाकिम और मुशीर थे। इनमें अली बिन सुफियान भी था। रजब ने खलीफा को इत्तेला भेज दी कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी आया है। सबने देखा कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस जूलूस के पीछे चार पहियों वाली एक गाड़ी थी जिसके आगे दो घोड़े जुते हुये थे। गाड़ी पर दो लाशें पड़ी थीं। एक सीधी दूसरी आड़ी। तीर अभी तक लाशों में उतरे हुये थे। इन लाशों के साथ वह तीन शुतर सवार जिन्होंने इन हबशियों को मारा था।

खलीफा बाहर आ गया। सूलतानसलाहुद्दीन अय्यूबी और उसके तमाम सवार घोड़े से उतरे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसी एहतराम से खलीफा को सलाम किया जिस ऐहतराम का वह हकदार था। झुककर उस से मुसाफा किया और उसका हाथ चूमा।

"मुझे आपका पैग़ाम मिल गया था कि मैं आपके हरम की लड़की वापस करूं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मैं आपके दो मुहाफिजों की लाशें लाया हूँ। यह लाशें मुझे बेगुनाह करेंगी और मैं। हुजूर की खिदमते अक़दस में यह गुज़ारिश करना ज़रूरी समझता हूँ कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी आपकी फौज का सीपाही नही है। जिस खिलाफत की आप नुमाइंदगी कर रहे हैं वह उसका भेजा हुआ है।"

खलीफा ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के तेवर भांप लिये। इस फातमी खलीफा का ज़मीर गुनाहों के बोझ से घिरा रहा था। वह सुलतान ससलाहुद्दीन अय्यूबी की बारोब और पुर जलाल शखसियत का सामना करने के क़ाबिल नही था उसने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कन्धें पर हाथ रख कर कहा–" मैं तुम्हें अपने बेटों से ज़्यादा महबूब समझता हूँ सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अन्दर आओ।"

"मेरी हैसियत अभी मुलाज़िम की है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मुझे अभी सफाई पेश करनी है कि मैं अग़वा का मुलाज़िम हूँ। खुदाये जल्लाजलालहू ने मेरी मदद फरमाई है और दो लाशें भेजी हैं। यह लाशें बोलेंगी नही, उनकी खामोशी और उनमे उतरे हुये तीर गवाही देंगे कि सुलनतान सलाहुद्दीन अय्यूबी इस जुर्म का मुजरिम नही है जो कसरे खिलाफत में सरज़द हुआ है। मैं जब तक अपने आपको बेगुनाह साबित न करूंगा अन्दर नही जाऊंगा।" वह लाशों की तरफ चल पड़ा।

खलीफा खिंचा हुआ उसके पीछे गया। थोड़ी दूर चार साढे चार सौ नफरी का मुहाफिज़ दस्ता खड़ा था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने लाशें उठवा कर इस दस्ते के सामने रख दीं और बुलन्द आवाज़ से कहा–" आठ आठ सिपाही आगे आओ और लाशें देख कर बताओ कि यह कौन है?"पहले कमाण्डर और ओहदेदार आये। उन्हों ने लाशों को देख कर उनके नाम बताये और कहा–" यह हमारे दस्ते के सिपाही थे" उनके आठ सिपाही आये, उन्हों ने भी लाशों को देखे कर कहा कि यह उनके साथी थे। आठ और सिपाही आये। फिर आठ और आये। इस तरह आठ आठ सिपाही आते रहे और बताते रहे कि यह लाशें उनके फलां फलां साथियों की है।

"सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस गश्ती संतरी से जिसने उन्हें हलाक किया था, कहा कि अपना बयान दोहराओ उसने सारा वाकिया खलीफा को सुना दिया। वे खत्म कर चुके तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने खलीफा से कहा–" लड़की मेरे पास नहीं लाई गई। वह सूडानी हबशियों के मेले में फरोख्त होने के लिये गई है।"

खलीफा खिसयाना हुआ जा रहा था। उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहा था कि वह अन्दर चले। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अन्दर जाने से इन्कार कर दिया और कहा–" मैं उस लड़की को ज़िन्दा या मुर्दा बरआमद कर के आपके हुजूर हाजिरी दुंगा। अभी

"मैं इतना ही कहुंगा कि हरम की एक ऐसी लड़की का अग़वा जो तोहफे के तौर पर आई थी और जो आपकी निकाही बीवी नही दाश्ता थी।, मेरे लिय ज़र्रा भर अहमियत नही रखती। खुदा ताला ने मुझे इस से अहम फराईज़ सौंपे हैं।"

"मेरी परीशानी यह नही कि एक लड़की अग़वा हो गई है।" खलीफा ने कहा–" असल परेशानी यह है कि इस तरह लड़कियां अग़वा होने लगीं तो मुल्क में कानून का क्या हश्र होगा।"

"और मेरी परेशमनी यह है कि सलतनते इसलामिया अग़वा हो रही है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" आप ज़्यादा परेशान न हों। मेरा शोबा सुराग़रसानी लड़की को बरआमद करने की पूरी कोशिश करेगा।"

खलीफा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को ज़रा परे ले गया और कहा–" अय्यूबी ! मैं एक अरसे से देख रहा हूँ कि तुम मुझ से खिचें खिचें से रहते हो। मैं नजमद्दीन (सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के वालिद मोहतरम) का बहुत इहतराम करता हूँ मगर तुम्हा दिल में मेर लिये ज़र्रा भर इहतराम नही है और मुझे आज बताया गया है कि जामा मस्जिद के ख़तीब अमीर आलम ने यह गुसताख़ी की है कि ख़ुतबे से मेरा नाम हटा दिया गया है। मुझे रजब ने बताया कि मैं उसे इस गुसताखी की सज़ा दे सकता हूँ। मैं तुम से पूछना चाहता हूँ कि उसने तुम्हारी शह पर तो एसा नही किया?"

"मेरी शह पर नही, मेरे हुक्म पर उस ने खलीफा का नाम खुत्बे से हटाया है।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा –" सिर्फ आपका नाम नही बल्कि हर उस खलीफा का नाम खुत्बे से हटा दिया गया है जो आपके बाद आयेगा और जो उसके बाद आयेगा।"

" क्या यह हुक्म फातमी खिलाफत को कमज़ोर करने के लिये जारी किया गया है?"खलीफा ने पूछा–"मुझे शक है कि यहां अब्बासी खिलाफत लाई जा रही है।"

"हुज़ूर बहुत बूढ़े हो गये हैं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" कुरआन ने शराब को इसी लिये हराम कहा है कि उस से दिमाग़ माऊफ हो जाता है।"...........सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ज़रा सोंच कर कहा–" मै ने फैसला किया है कि कल से आपके मुहाफिज़ दस्ते मे रद्दो बदल होगी और रजब को मैं वापस लेकर आपको नया कमाण्डर दुंगा।"

"लेकिन मैं रजब को यहां रखना चाहता हूँ।' खलीफा ने कहा।

" मैं हुज़ूर से दरख्वास्त करता हूँ कि फौज़ी मामलात में दखल देने की कोशिश न करें।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा और अली बिन सुफियान की तरफ मुतवज्जा हुआ जो पांच हबशी मुहाफिज़ों को साथ लिये आ रहा था।

" यह पाचों उसी कबीले से तअल्लुक रखते है।" अली बिन सुफियान ने कहा–" मैं ने इस दस्ते से मुखातिब हो कर कहा कि इस कबीले का कोई आदमी यहां हो तो बाहर आ जायें। यह पांच सफों से बाहर आगये। उनके मुतअल्लिक मुझे उनके कमाण्डर ने बताया है कि परसों से छुट्टी पर जा रहे थे। मै इन्हें अपने साथ ले जा रहा हूँ लड़की के अग़वा में इनका हाथ हो सकता है।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने रजब को बुलाकर कहा–" कल यहां दुसरा कमाण्डर आ रहा है। आप मेरे साथ आ जायेंगे। मैं आपको मुनजिनीकों की कमान देना चाहता हूँ।" रजब के चेहरे का रंग बदल गया।

❖

उम्मे अराराह को घोड़े पर डाले हुये जब वह दो हबशी इतनी दूर निकल गये जहां इन्हे तआकुब का ख़तरा न राह तो उन्हो ने घोड़े रोक लिये। लड़की एक बार फिर आज़ाद होने को तड़पने लगी। हबशियों ने उसे कहा कि उसका तड़पना बेकार है। अब अगर उसे वह आज़ाद भी करें तो वह इस रेगिसतान से ज़िन्दा नही निकल सकेगी। उंन्हों ने यह भी कहा कि वह उसे बेआबरू नही करना चाहते। अगर उनकी नियत ऐसी होती तो वह उसके साथ वहशियों जैसा सुलूक कर चुके होते। उम्मे अराराह हैरान थी। कि उन्होने उसे छेड़ा तक नही था। उन्हें तो जैसे एहसास ही नही था कि इतनी दिलकश लड़की उनके रहम व करम पर है इनमें से एक ने जो मारा जा चुका था, मरने से पहले उसके सामने घुटनों के बल बैठ कर इलतेजा की थी कि वह तड़प तड़प कर अपने आपको तकलीफ में न डाले। उम्मे अराराह ने उन से पूछा कि उसे कहां ले जाया जा रहा है तो उसे जवाब दिया गया कि वह उसे आसमान के देवता की मिल्कियत बनाने के लिये ले जा रहे हैं।

उन्होंने लड़की की आँखों पर पट्टी बांध दी और उठा कर घोड़े पर बिठा दिया। उस नें आज़ाद होने की कोशिश तरक कर दी। उस ने देख लिया था कि यह कोशिश बेकार है। घोड़े चल पड़े और उम्मे अराराह एक हबशी के आगे घोड़े पर बैठी हिचकोले खाती रही। एक जगह रूक कर उसके मुह में पानी डाला गया और घोड़े चल पड़े। बहुत देर बाद उम्मे अरारह ने यह महसूस किया कि रात हो गई है। घोड़े रूक गये। इस वक़्त तक इस नाज़ुक लड़की का जिस्म मुसलसल घुड़सवारी से टूट रहा था। दहशत से उसका दिमाग़ बेकार हो गया था। उसे घोड़े रूकते ही अपने इर्द गिर्द तीन चार मर्दों और तीन औरतों की मिली जुली आवाज़ सुनाई देने लगीं। यह ज़बान उसकी समझ से बाला थी। यही हबशी रास्ते में उसके साथ अरबी में बातें करते थे। उनका लहजा अरबी नही था।

अभी तक आँखों से पट्टी नही खोली गई थी। उसकी तो जैसे ज़बान भी बन्द हो गई थी। उसे किसी ने उठा कर किसी नरम चीज़ पर बिठा दिया। यह पालकी थी। पालकी ऊपर को उठी और उसका एक और सफर शुरू हो गया। इस के साथ ही दफ की हलकी हलकी गुंजदार थाप सुनाई देने लगी और औरतें गाने लगीं। इस गाने के अलफ़ाज़ वह न समझ सकती थी, उसके लहजे में जादू का असर था। यह असर ऐसा था जिस ने उम्मे अराराह के खौफ में इज़ाफा कर दिया लेकिन इस खौफ में एसा तास्सुर भी पैदा होने लगा जैसे उस पर नशा या खुमार तारी हो रहा हो। रात की खुनकी खुमार में लज़्ज़त सी पैदा कर रही थी। उम्मे अराराह ने यह चाहते हुये कि वह पालकी से कूद जाये और भाग उठे और यह लोग उसे जान से मार दें, उसने ऐसी जुर्रअत न की। वह महसूस कर रही थी कि वह इन इनसानों के कब्ज़े मे नही बल्कि कोई और ही ताक़त है जिसने उस पर काबू पा लिया है और अब वह

अपनी मर्ज़ी से कोई हरकत नही कर सकेगी।

वह महसूस करने लगी कि पालकी बरदार सीढ़ियां चढ़ रहा है। वह चढ़ते गये। कमो बेश तीस सीढ़ियां चढ़ कर वह हमवार चलने लगे और चंद कदम चल कर रूक गये। पालकी ज़मीन पर रख दी गई। उम्मे अराराह की आँखों से पट्टी खोल कर किसी ने उसकी आँखों पर हाथ रख लिया। थोड़ी देर बाद इन हाथों की उंगलियां खुलने लगीं और लड़की को रोशनियां दिखाई देने लगीं। आहिस्ता आहिस्ता हाथ उसकी आँखों से हट गये। वह एक ऐसी इमारत में खड़ी थी जो हजारों साल पूरानी नज़र आती थी। गोल सुतून ऊपर तक चले गये थे एक वसीअ हाल था जिस पर फर्श रोशनियों में चमक रहा था। दिवारों के साथ डंडे से लगे हुये थे और डंडों के सिरों पर मशालों के शोले थे। अन्दर की फिज़ा में ऐसी खुशबू थी जिसकी महक उसके लिये नई थी। दफ की हल्की हल्की थाप और औरतों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। यह थाप और लय हॉल में एसी गूंज पैदा कर रही थी जिसमें ख्वाब का तासुर था।

उसने सामने देखा। एक चबुतरा था जिसकी आठ दस सीढ़ीयां थीं। चबूतरे पर पत्थर के बुत का मुहं और सिर था। उसकी ठोड़ी के नीचे थोड़ी सी गर्दन थी। ठोडी से माथेतक यह पत्थर का चेहरा कदआवर इन्सान से भी दो फुट ऊंचा था। मुंह खुला हुआ था जो इतना चौड़ा था कि एक आदमी ज़रा सा झुक कर उस में दाखिल हो सकता था। मुहं में सफेद दात भी थे। यूं लगता था जैसे यह चेहरा कहकहे लगा रहा हो। उसके दोनों कानों से डंडे निकले हुये थे जिनके बाहर वाले सिरों पर मशालें जा रहीं थीं। अचानक उसकी आँखें जो कमोबेश गज़ गज़ भर चौड़ी थीं चमकने लगी। इनसे रौशनी फूटने लगी। औरतों के गीत की लये बदल गई। दफ की थाप में जोश पैदा हो गया। पत्थर के मुंह के अन्दर रौशनी हो गई। लम्बे लम्बे सफेद चांगे पहने हुये दो आदमी झुक कर मुंह से बाहर आये। मुंह के आगे तीन सीढ़ीयां थीं। इन आदमियों के रंग सियाह और सरों पर परिंदों के लम्बे लम्बे और रंग बिरंगे पर बंधे हुये थे। मुंह से बाहर आकर एक दायें और एक बायें तरफ खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद पत्थर के मुंह से एक और आदमी नमूदार हुआ। वह भी झुक कर बाहर आया। वह ज़रा बूढ़ा लगता था। उसका चेहरा सुर्ख रंग का था और उसके सर पर ताज था। एक सांप जो मसनूई था उसके दायें कन्धे पर कुंडली मारे और फन फैलाये बैठा था और एक बायें कन्धे पर। दोनों सिपाहियों के रंग सियाह थे। उम्मे आराराह पर एसा रोब तारी हुआ कि वह सुन हो के खड़ी रही। यह आदमी जो इस कबीले का मज़हबी पेशवा या पुरोहित था, चबुतरे की सीढ़ीयां उतर आया। वह आहिस्ता आहिस्ता उम्मे अराराह तक आया और दोनों घुटने फर्श पर रख कर उस लड़की के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर चुमे। उसने लड़की से अरबी ज़बान में कहा–" तुम हो वह खुश नसीब लड़की जिसे मेरे देवता ने पसन्द किया है। हम तुम्हें मुबारक बाद पेश करते हैं।"

उम्मे अराराह बेदार हो गई। उस ने रोते हुये कहा–" मैं किसी देवता को नही मानती। अगर तुम देवताओं को मानते हो तो मैं तुम्हें उन्ही का वास्ता देकर कहती हूँ कि मुझे छोड़ दो। मुझे यहां क्यों लाये हो।"

"यहां जो भी आती है यही कहती है।" पुरोहित ने कहा–"लेकिन उस परइस मुकद्दस जगह का राज़ खुलता है तो कहती है कि मैं यहां से जाना नही चाहती । मैं जानता हूँ तुम मुसलमान के खलीफा की महबूबा हो मगर जिसने तुम्हें पैदा किया है उसके आगे दुनिया के खलीफा और आसमानों के फरिश्ते सजदे करते हैं। तुम जन्नत में गई हो।" उस ने चोगे के अन्दर से एक फूल निकाला और उम्मे अराराह की नाक से लगा दिया । उम्मे अराराह हरम की शहज़ादी थी। उस ने ऐसे ऐसे इतर सूघें थे जो उस जैसी शहज़ादियों के सिवा और कोई ख्वाब में भी नही सूंघ सकता था, मगर इस फूल की बू उसके लिये अनोखी थी। यह बू उसकी रूह तक उतर गई। उसकी सोंचों का रंग ही बदल गया। उसकी नज़रों के ज़ाविये बदल गये। पुरोहित ने कहा–" यह देवता का तोहफा है" और उस ने फूल उसकी नाक से हटा लिया।

उम्मे अराराह ने हाथ आहिस्ता आहिस्ता आगे किया और पुरोहित का फूल वाला हाथ पकड़ कर अपनी नाक के करीब ले आई। फूल सूंघ कर खुमार भरी आवाज़ में बोली–" कितना दिलकश तोहफा है। आप यह मुझे देंगे नही?"

"क्या तुम ने तोहफा कुबूल कर लिया है?" पुरोहित ने पूछा उसके होंटो पर मुसकुराहट थी।

"हाँ!" उम्मे अराराह ने जवाब दिया । " मैं ने यह तोहफा कुबूल कर लिया है।" उसने फूल को एक बार फिर सूंघा और उसने आँखें बन्द कर लीं जैसे उसकी महक को अपने वजूद में जज़्ब करने की कोशिश कर रही हो।

"देवता ने भी तुम्हें कुबूल कर लिया है।" पुरोहित ने कहा और पूछा–" तुम अब तक कहां थी?"

लड़की सोंच में पड़ गई जैसे कुछ याद कर ने की कोशिश कर रही हो। सर हिला कर बोली–" मैं यहीं थी नहीं। मैं एक और जगह थी..... मुझे याद नही कि मैं कहां थी।"

"तुम्हें यहां कौन लाया है?"

" कोई भी नही।" उम्मे अराराह ने जवाब दिया–" मैं खुद आई हूँ।"

"तुम घोड़े पर नही आई थी?"

" नहीं ।" लड़की ने जवाब दिया–" मैं उड़ती हुई आई हूँ।"

"क्या रासते में सेहरा और पहाड़ और जंगल और वीराना नही था?"

"नही तो !"लड़की ने बच्चों की सी शोखी से जवाब दिया "हर तरफ सब्ज़ा ज़ार और फूल थे।"

"तुम्हारी आँखो पर किसी ने पट्टी नहीं बांधी थी?"

"पट्टी ?" .....नही तो। " लड़की ने जवाब दिया। "मेरी आँखें खुली हुई थीं और मैं ने रंग बिरंगे परिंदे देखे थे प्यारे प्यारे परिंदे।"

पुरोहित ने अपनी ज़बान से बुलन्द आवाज़ से कुछ कहा। उम्मे अराराह के अकब से चार लड़कियां आईं। उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये । वह मादर जाद नंगी हो गई। उस ने

मुसकुराकर पुछा–"देवता मुझे इस हालत में पसंद करेंगे?" पुरोहित ने कहा–" नहीं तुम्हें देवता के पसदं के कपड़े पहनाये जायेंगे"लड़कियों ने उसके कन्धों पर चाद सी डाल दी जो इतनी चौडी थी कि कन्धों से पावं तक उसका जिस्म मस्तूर हो गया था। उस चादर के किनारों पर रंगदार रस्सों के टुकड़े थे। निहायत मौजूं चोग़ा बन गई। उम्मे अराराह के बाल रेशम जैसे मुलायम और सियाही माईल भूरे थे। एक लड़की ने उसके बालों में कंघी करके उसके शानों पर फैला दिये। उसका हुस्न और ज़्यादा बढ़ गया।

पुरोहित ने उसे मुसकुराकर देखा और घूम कर पत्थर के मुहीब चेहरे की तरफ चल पड़ा। दो लड़कियों ने उम्मे अराराह के हाथ थाम लिये और पुरोहित के पीछे पीछे चल पड़ीं। उम्मे अराराह शाहज़ादी कीतरह चल पड़ी। उसने इधर उधर नही देखा कि माहोल कैसा है। उसकी चाल में और ही शान थी। औरतों का राग उसे पहले से ज़्यादा तिलिस्माती और पुरसोज़ मालूम होने लगा। वह पुरोहित के पीछे हाथ लड़कियों के हाथों पर रखे चबूतरों पर चढ़ने लगी। पुरोहित पत्थर के पहाड़ जैसे चेहरे के मुंह में दाखिल हो गया। उम्मे अराराह भी तीन सीढ़ीयां चढ़ कर पत्थर के मुंह में झुक कर दाखिल हो गई। दोनों लड़कियां वहीं खड़ी रहीं। उम्मे अराराह का हाथ पुरोहित ने थाम लिया। मुंह की छत इतनी ऊंची थी कि वह सीधे चल रहे थे। हलक़ में पहंचे तो आगे सीढ़ीयां थी। वह सीढ़ीयां उतर गये। यह एक तहख़ानाथा जहां कन्दीले रौशन थीं इस कमरे में भी महक थी। यह कमरा कुशादा नही था। छत ऊंची नही थी। उसकी दीवारें और छत दरख्तों के पत्तों और फूलो से ढ़की हुई थी। फर्श पर मुलायम घास और घास पर फूल बिछे हुये थे। एक कोने में खुशनुमां सुराही और प्याले रखे हुये थे। पुरोहित ने सुराही से दो प्याले भरे। एक उम्मे अराराह को दिया। दोनो ने प्याले होंठो से लगाये और खाली कर दिये।

"देवता कब आयेंगे?" उम्मे अराराह ने पूछा।

" तुम ने अभी उसे पहचाना नही?" पुरोहित ने कहा–" तुम्हारे सामने कौन खड़ा है?"

उम्मे अराराह उसके पावं में बैठ गई और बोली–" हाँ! मैंने पहचान लिया है तुम वह नही हो जिसे मैं ने ऊपर देखा था। तुमने मुझे कबूल कर लिया है।"

"हाँ!" पुरोहित ने कहा–" आज से तुम मेरी दुल्हन हो।"

❖

"मैं आपको और कुछ नही बता सकता। मेरे बाप ने मुझे बताया था कि पुरोहित लड़की को फूल सुंघाता है जिसकी खुशबू से लड़की के ज़िहन से निकल जाती है कि वह क्या थी। कहां से आई है और किस तरह लाई गई है। वह पुरोहित की लौंडी बन जाती है। और उसे दुनिया की गंदी चीज़े भी खूबसूरत दिखाई देती हैं। पुरोहित तीन रातें उसे अपने साथ तहखानें में रखता है।"

यह इन्कशाफ इन पांच सुडानी हबशियों मे से एक अली बिन सुफियान के सामने कर रहा था जिन्हें उस ने खलीफा के मुहफिज़ दस्ते में से निकाला था। यह पांचों उसी कबीले में से थे जिस क़बीले के वह चारों थे जिन्होंने उम्मे अराराह का अग़वा किया था। अपने साथ ले

जाकर अली बिन सुफियान ने इन पांचो से कहा था कि चुंकि वह इसी कबीले के हैं जो तीसरे साल के आखिर में जश्न मनाता है और वह छुट्टी पर जा रहे थे। इस लिये इन्हें मालूम होगा कि लड़की किस तरह अग़वा हुई है।इन पांचों ने कहा कि उन्हें अग़वा का इल्म नही। अली बिन सुफियान ने उन्हें यह लालच भी दिया कि वह सच बता देंगे तो उन्हें कोई सज़ा नही दी जायेगी। फिर भी वह लाइल्मी का इज़हार करते रहे। यह कबीला वेहशियाना मिज़ाज और खूनखारी की वजह से मशहूर था। इन्हे सज़ा का ज़र्रा भर भी डर न था। पांचो बहुत दिलेरी से इन्कार कर रहे थे। आख़िर में अली बिन सुफियान को वह तरीकें आज़माने पड़े जो पत्थर को भी पिघला देते थे।

पांचों को अलग अलग कर के अली बिन सुफियान इन्हें उस जगह ले गया जहां चीखें और आवाज़ें कोई नहीं सुनता था। मुसलसल अज़ियत और तशदुद से कोई मुलज़िम मर जाये तो किसी को परवा नही होती थी। यह पांचों सूडानी बड़े ही सख़्त जान मालूम होते थे। वह रात भर अज़ियत सहते रहे। अली बिन सुफियान रात भर जागता रहा। अख़िर में इन्हें इस इम्तेहान में डाला गया जो आखरी हरबा समझा जाता था। यह था चक्कर शिकन्जा। रहट की तरह चौड़े और बहुत बड़े पहिये पर मुलज़िम को उलटा लिटा कर हाथ रस्सों से चक्कर के साथ बांध दिये जाते और पांव टखनों से रस्सियां डाल कर फर्श में गड़े हुये कीलों से कस दिये जाते थे। पहियों को ज़रा सा आगे चलाया जाता तो मुलज़िम के बाज़ू कन्धों से और टांगे कूलहों से अलग होने लगतीं बाज़ औकात मुलज़िम को खींच कर पहियों को एक जगह रोक लिया जाता था। अज़ियत का यह तरीका मुलज़िमों को बेहोश कर देता था।

सहर के वक़्त एक अधेढ़ उम्र हबशी ने अली बिन सुफियान से कहा– "मैं सब कुछ जानता हूं लेकिन देवता के डर से नहीं बताता। देवता मुझे बहुत बुरी मौत मारेंगे।"

"क्या इससे बढ़ कर कोई बुरी मौत होसकती है जो मैं तम्हें दे रहा हूं?" अली बिन सुफियान ने कहा– "अगर तुम्हारे देवता सच्चे होते तो वह तुम्हें इस शिकन्जे से निकाल न लेते?" अगर तुम मरने से डरते हो तो मौत यहां भी मौजूद है। तुम बात करो। मेरे हाथ में एक ऐसा देवता है जो तुम्हें तुम्हारे देवता से बचा लेगा।"

यह सूडानी हबशी कई बार बेहोश हो चुका था। उसे देवता तो नही मौत साफ नज़र आ रही थी। अली बिन सुफियान ने इसकी ज़बान खोलली। उसे शिकन्जे से खोल कर खिलाया पिलाया और आराम से लिटाया। उसने ऐतराफ किया कि उम्मे अराराह को उनके कबीले के चार आदमियो ने अगवा किया था। वह चारों छुट्टी पर चले गये थे। उन्हों ने अग़वा की रात और वक़्त बता दिया था। यह पांच हब्शी जो अली बिन सुफियान के कब्ज़े में थे, उस रात पहरे पर थे। अगवा करने वालों में से दो को अन्दर आना था। उन्हें बड़े दरवाज़े से दाखिल करने का इन्तेज़ाम उन्हों ने किया था और इन्हें अग़वा और फरार करने में पूरी मदद दी थी। उस हब्शी ने बताया कि इस लड़की को देवता की कुर्बानगाह पर कुर्बान किया जायेगा। हर तीन साल बाद इनका कबीला चार रोज़ जशन मनाता है लेकिन लड़की अपने कबीले की नहीं होती। शर्त यह है कि लड़की गैर मुलकी हो, सफेद रंग की हो, ऊंचे दर्जे के ख़ानदान की हो

और इतनी खूबसूरत हो कि लोग देख कर ठिठक जायें।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि हर तीन साल बाद तुम्हारा क़बीला बाहर से एक खूबसूरत लड़की अग़वा करके लाता है।" अली बिन सुफ़ियान ने पूछा।

"नहीं। यह ग़लत है।" सूडानी हब्शी ने जवाब दिया। "तीन साल बाद सिर्फ मेला लगता है। लड़की की कुर्बानी पांच मेलों के बाद यानी हर पन्द्रह साल बाद दी जाती है। मशहूर यही है कि हर तीन साल बाद लड़की कुर्बान की जाती है।"

उसने अपने बाप के हवाले से वह जगह बताई जहां कुर्बानी दी जाती थी। पुरोहित को वह देवता का बेटा कहता था। जहां मेला लगा था, उससे डेढ़ एक मील जितनी दूर एक पहाड़ी इलाक़ा था जहां जंगल भी था। यह इलाक़ा ज़्यादा वसीअ और अरीज़ नहीं था। इसके मुतअल्लिक मशहूर था कि वहां देवता रहते हैं और उनकी खिदमत के लिये जिन और परियां भी रहती हैं। लोग इस लिये यह बातें मानते थे कि हर तरफ सेहरा और उसमें जज़ीरे की तरह कुछ इलाक़ा पहाड़ी और सर सब्ज़ था कुदरत का एक अजूबा था। यह देवताओं का मसकन ही हो सकता था। उस इलाके में फिरऔनों के वक़्तों के खन्डर थे। वहां एक झील भी थी जिस में छोटे मगरमछ रहते थे।

क़बीले का कोई आदमी संगीन जुर्म करे तो उसे पुरोहित के हवाले कर दिया जाता था। पुरोहित उसे जिन्दा झील में फैंक देता जहां मगरमच्छ उसे खा जाते थे। पुरोहित इन्हीं खन्डरों में रहता था। वहां एक बहुत बड़ा पत्थर का सर और मुंह था जिसमें देवता रहता था। हर पन्द्रह साल के आखिर दिनों में बाहर से एक लड़की इग़वा करके लाई जाती जो पुरोहित के हवाले कर दी जाती थी। पुरोहित लड़की को एक फूल सुंघाता था जिसकी खुश्बू से लड़की के ज़ेहन से निकल जाता था कि वह क्या थी, कहां से आई थी और उसे कौन लाया था। इस फूल में कोई नशावर बू डाली जाती थी, जिसके असर से वह पुरोहित को देवता और अपना ख़ाविंद समझ लेती थी। उसे वहां की गंदी चीजें भी खूबसूरत दिखती थीं।

लड़की की कुर्बानी उन्हीं खन्डरात में दी जाती थी। लड़की को पुरोहित तहखाने में अपने साथ रखता था। इस जगह चार मर्द और चार खूबसूरत लड़कियां रहती थीं। लड़की को जब कुर्बानगाह पर ले जाया जाता तो उसे एहसास ही नहीं होता था कि उसकी ग़र्दन काट दी जाएगी। वह फख्र और खुशी से मरती थी। उसका धड़ मगरमच्छों की झील में फैंक दिया जाता और बाल काट कर क़बीले के हर घर में तकसीम कर दिये जाते थे। इन बालों को मुकद्दस समझा जाता था। लड़की का सर खुश्क होने के लिये रख दिया जाता था। जब गोश्त खत्म हो कर सिर्फ खोपड़ी रह जाती तो उसे एक ग़ार में रख दिया जाता था। लड़की किसी को दिखाई नहीं जाती थी।

"पन्द्रह साल पूरे हो रहे हैं। अब के लड़की की कुर्बानी दी जाये गी।" इस हब्शी ने कहा— "हम नौ आदमी मिस्र की फौज में भरती हुए थे। हमें चूंकि निडर और वहशी समझा जाता है इसलिये हमें खलीफ़ा के मुहाफ़िज़ दस्ते के लिये मुन्तख़ब कर लिया गया। दो महीने गुज़रे हमने इस लड़की को देखा। ऐसी खूबसूरत लड़की हमने कभी नहीं देखी थी। हम सब ने

सोंचा कबीले के लिये इस लड़की को उठा ले जायेंगे और कुर्बानी के लिये पेश करेंगे। हमारे एक साथी ने जो कल मारा गया है, अपने गांव जा कर कबीले के बुजुर्ग को बता दिया था कि इस बार कुर्बानी के लिये हम लड़की लायेंगे। हमने लड़की को इग़वा कर लिया।"

❖

यह किस्सा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुनाया गया तो वह गहरी सोंचा में खो गया। अली बिन सुफियान उसके हुकुम का मुन्तज़िर था सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नक्शा दिया और कहा– "अगर जगह यह है तो यह हमारी अमलदारी से बाहर है। तुमने शहर के पुराने लोगों से जो मालूमात हासिल की हैं उनसे यह साबित होता है कि फिरऔन तो सदियों गुज़रे मर गये हैं लेकिन फिरऔनियत अभी बाकी है। बहैसियत मुसलमान हम पर फ़र्ज आयद होता है कि हम अगर दूर न पहुंच सके तो करीबी पड़ोसी से तो कुफ्र और शिर्क का ख़ातमा करें आज तक मालूम नहीं कितने वालदैन की मासूम बेटियां कुर्बान की जा चुकी हैं और उस मेले में कितनी बेटियां अग़वा होकर फरोख़त हो जाती हैं। हमें देवताओं का तसव्वुर ख़त्म करना है। लोगों को देवताओं का तसव्वुर देकर नाम निहाद मज़हबी पेशवा लड़कियां अगवा करवा के बदकारी और अय्याशी करते हैं।"

"मेरे मुख़्बिरों की इत्तलाओं ने यह बेहूदा इन्कशाफ़ किया है कि हमारी फौज के कई कमान्डर और मिस्र के पेशेवर लोग इस मेले में जाते हैं और लड़कियां ख़रीदते या चन्द दिनों के लिये किराये पर लाते हैं।" अली बिन सुफियान ने कहा– "किरदार की तबाही के अलावा यह ख़तरा भी है कि सूडानियों की बरतरफ फौज के अस्करी इस मेले में ज़्यादा तादाद में जाते हैं। हमरी फौज और हमारे लोगों का सूडानी साबका फौजों के साथ मिलना जुलना और जश्न मनाना ठीक नहीं। यह मुश्तरक तफरीह मुल्क के लिये ख़तरनाक साबित हो सकती है।" अली बिन सुफियान ने ज़रा झिझक कर कहा– "और लड़की को कुर्बान होने से पहले बचाना और ख़लीफा के हवाले करना इस लिये भी जरूरी है कि उसे मालूम हो जाये कि उसने आप पर इग़वा का जो इल्ज़ाम आयद किया है वह कितना बे बुनियाद है।"

"मुझे इसकी कोई परवाह नही अली।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा– "मेरी तवज्जह अपनी जात पर नहीं। मुझे कोई कितना ही हकीर कहे मैं इस्लाम की अज़मत के फरोग और तहफ्फुज़ को नहीं भूल सकता। मेरी ज़ात कुछ भी नहीं और तुम भी याद रखो अली! अपनी ज़ात से तवज्जह हटाकर सलतनत के इस्तेहकाम और फलाह व बहबूद पर मरकूज़ कर दो। इस्लाम की अज़मत का अमीन ख़लीफा हुआ करता था मगर वक़्त गुज़रने के साथ साथ ख़लीफा अपनी ज़ात में गुम होते गये और अपने नफ्स का शिकार हो गए। अब हमारी खिलाफत इस्लाम की बहुत बड़ी कमजोरी बन गई है। सलीबी हमारी इस कमज़ोरी को इस्तेमाल कर रहे हैं। अगर तुम कामयाबी से अपने फराईज़ निभाना चाहते हो तो अपनी ज़ात और अपने नफ्स से दस्त बरदार होजाओ.. ख़लीफा ने मुझ पर जो इल्ज़ाम आयद किया है, उसे मैं ने बड़ी मुश्किल से बर्दाश्त किया है। मैं ओछे वार का जवाब दे सकता था मगर मेरा वार भी आछा होता। फिर मै जाती सियासत बाज़ी में उलझ जाता। मुझे ख़तरा यही नज़र आ रहा है

कि मिल्लत–ए–इस्लामिया किसी दौर में जाकर अपनी ही हुकुमरानों की जाती सियासत बाज़ियों, खुदपसन्दी, नफ्स परस्ती और इकतदार की हवस की नज़र हो जायेगी।"

"गुस्ताखी की माफी चाहता हूं मोहतरम!" अली बिन सुफियान ने कहा– "अगर आप इस लड़की को कुर्बान होने से बचाना चाहते हैं तो हुकुम सादिर फरमाईये। वक्त थोड़ा है। परसों से मेला शुरू हो रहा है।"

"फौज में यह हुकुम फौरन पहुचा दो कि इस मेले में किसी फौजी को शरीक होने की इजाज़त नहीं।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नायब सालार को बुला कर कहा– "ख़िलाफ वरज़ी करने वाले को उसके ओहदे और रुतबे से कतऐ नज़र पचास कोड़े सरे आम लगाये जायेंगे।"

इस हुकुम के बाद स्कीम बन्ने लगी। मुतअल्लिका हाकिम को सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने बुला लिया था। उसने सब से कहा था कि हमारा मक्सद यह है कि इस तिलिस्म को तोड़ना है। यह जगह फिरऔनियत की आख़िरी निशानी मालूम होती है। पहले फौज कशी ज़ेरे बहस आई जो इस वजह से खारिज अज़ बहस कर दी गई कि उसे उस कबीले के लोग अपने ऊपर बाकायदा हमला समझेंगे। लड़ाई होगी जिसमें मेले देखने वाले बे गुनाह लोग भी मारे जायेंगे और औरतों और बच्चों के मारे जाने का खतरा भी है। यह हल भी पेश किया गया कि इस सूडानी हबशी को रहनुमा के तौर पर साथ रखा जाये और उस जगर छापा मार भेजे जायें जहां लड़की को कुर्बान किया जायेगा। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हब्शी को साथ ले जाना पसंद नही किया क्योंकि धोखे का खतरा था। उस वक़्त तक सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुकुम के मुताबिक छापा मारों और शबखून मारने वालों का एक दस्ता तैय्यार किया जा चुका था। इसे मुसलसल जंगी मशकों ने तजर्बेकार बना दिया था कि वह जानबाज़ों का दस्ता था जिन्हें जज़्बे के लिहाज़ से इस कदर पुख्ता बना दिया गया था कि वे इस पर फख करने लगे कि उन्हें जिस मुहिम पर भेजा जायेगा उससे वे ज़िन्दा वापस नहीं आयेंगे।

नायब सालार अलनासिर और अली बिन सुफियान के मशवरे से यह तय हुआ कि बारह छापा मार इस पहाड़ी जगह के अन्दर जायेंगे जहां पुरोहित रहता है और लड़की कुर्बान की जाती है। हब्शी की दी हुई मालूमात के मुताबिक उस रात मेले में ज्यादा रौनक होती है, क्योंकि वह मेले की आखरी रात होती है। कबीले के लोगों के सिवा किसी और को मालूम नहीं होता कि लड़की कुर्बान की जा रही है जिसे मालूम होता है वह यह नहीं जानता कि कुर्बान गाह कहां है। इन मालूमात की रौशनी में यह तय किया गया कि पांच सौ सिपाही मेला देखने वालों के भेस में तलवारों वग़ैरा से मुसल्लह हो कर उस रात मेले में मौजूद होंगे। इन में से दो सौर के पास तीर कमान होंगे। उस ज़मानें में इन हथियारों पर पाबन्दी नहीं थी। छापा मारों के ज़ेहनों में वाज़ेह तसव्वुर की सूरत में वह जगह नक्श कर दी जायेगी। वे बराहे रास्त हमला नहीं करेंगे। छापा मारों की तरह पहाड़ी इलाके में दाखिल होंगे। पहरेदारों को ख़ामोशी से खत्म करेंगे और असल जगह पहुंच कर उस वक़्त हमला करेंगे जब लड़की कुर्बान गाह में लाई जायेगी। इससे कब्ल हमले का यह नुक्सान हो सकता है कि लड़की को तहख़ानें में ही

ग़ायब या खत्म कर दिया जायेगा।

यह मालूम हो गया था कि कुर्बानी आधी रात के वक्त पूरे चांद में दी जाती है। पांच सौ सिपाहियों को उस वक़्त से पहले कुर्बानगाह वाली पहाड़ी के इर्द गिर्द पहुंचना था। छापा मारों के लिये घेरे में आंजाने या नाकाम होने की सूरत में यह हिदायत दी गई कि वह फलीते वाले एक आतिशीं तीर ऊपर को चलायेगा। इस तीर का शोला देख कर यह पांच सौ नफरी हमले कर देंगे।

उसी वक़्त बारह जांबाज़ मुंन्तखब कर लिये गये और इस फौज में से जो दो साल पहले नूरुद्दीन जंगी ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मदद के लिये भेजी थी, पांच सौ जहीन और बेख़ौफ सिपाही, ओहदे दार और कमान्डर मुन्तखिब कर लिये गये। यह लोग अरब से आये थे, मिस्र और सूडान की सियासत बाजों और अकाइद का उन पर कुछ असर न था। वे सिर्फ इस्लाम से आगाह थे और यही इनका अकीदा था। वे हर उस अकीदे के खिलाफ उठ खड़े होते थे जिसे वह गैर इस्लामी समझते थे। उन्हे बताया गया कि वह एक बातिल अकीदे के खिलाफ लड़ने जारहे हैं और हो सकता है उन्हें अपने से ज़्यादा नफरी से मुकाबला करना पड़े और लड़ाई खूंरेज़ हो, और यह भी हो सकता है कि उनके सामने कोई ठहर ही न सके और बगैर लड़ाई के मुहिम सर हो जाये। उन्हें स्कीम समझा दी गई और उनके ज़ेहनों में पहाड़ी इलाके का और इन पहाड़ियों की बुलन्दी, जो ज़्यादा नहीं थी और इनमें घिरी हुई कुर्बानगाह का तसव्वुर बिठा दिया गया। बारह जांबाज़ों को भी उनके हदफ का तसव्वुर दिया गया। उन्हें ट्रेनिंग बड़ी सखती से दी गई। पहाड़ों पर चढ़ना और रेगिस्तानों में दौड़ना, भूख और प्यास ऊंट की तरह बर्दाश्त करना उनके लिये मुश्किल नहीं था।

कुर्बानी की रात को छः रोज बाकी थे। तीन दिन और तीन रातें छापा मारों और पांच सौ सिपाहियों को मश्क कराई गई। चौथे रोज़ छापा मारों को ऊंटों पर रवाना कर दिया गया। ऊंटों की दरमियानी चाल से एक दिन और आधी रात का सफर था। शुतुरबानों को हुकुम दिया गया था कि छापा मारों को पहाड़ी इलाके से दूर जहां वे कहें उतार कर वापस आजायें। पांच सौ सिपाहियो के दस्ते को तमाशाईयों के भेस में दो दो चार चार की टोलियों में घोड़ों और ऊंटों पर रवाना किया गया। उन्हें जानवर अपने साथ रखने थे। उनके साथी और उनके कमान्डर भी इस भेस में चले गये।

❖

मेले की आख़िरी रात थी।

पूरा चांद उभरता आरहा था। सेहरा की फिज़ा शीशे की तरह शफ्फाफ थी। मेले में इन्सानों के हुजूम का कोई शुमार न था। कहीं नीम बरहना लड़कियां नाच कर रही थीं और कहीं गाने वालों ने मजमा लगा रख था। सबसे ज़्यादा भीड़ उस चबूतरे के इर्द गिर्द थी जहां लड़कियां नीलाम हो रही थीं। एक लड़की को चबूतरे पर लाया जाता। ग्राहक उसे हर तरफ से देखते। उसका मुंह खोल कर दांत देखते। बालों को उलट पलट कर देखते। जिस्म की सख्ती और नर्मी महसूस करते और बोली शुरू हो जाती। वहां जुआ भी था, शराब भी थी।

अगर वहां नहीं था तो कानून नहीं था। पूरी आज़ादी थी। दूर दूर से आये हुऐ लोगों के खैमें मेले के इर्द गिर्द नसब थे। तमाशाई मज़हब और अख़लाक़ की पाबन्दियों से आजाद थे। उन्हें मालूम नहीं था कि इनसे थोड़ी ही दूर जो पहाड़ियां हैं इनमें एक खुबसूरत लड़की को ज़िबह करने के लिये तैय्यार किया जा रहा है और वहां एक इन्सान देवता बना हुआ है। वह इतना ही जानते थे कि इन पहाड़ियों में घिरा हुआ इलाका देवताओं का पाया तख़्त है। जहां जिन और भूत पहरा देते हैं। और कोई इन्सान वहां जाने की सोंच भी नहीं सकता।

उन्हें यह भी मालूम नहीं कि इन के दर्मियान अल्लाह के पांच सौ सिपाही घूम फिर रहे हैं और बारह इन्सान देवताओं के पाया तख़्त की हदों में दाख़िल हो चुके हैं। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के बारह छापा मारों को बताया गया था कि पहाड़ियों के अन्दरूनी इलाके में दाखिल होने का रास्ता कहां है लेकिन वहां से वे दाख़िल नहीं हो सकते थे क्योंकि वहां पहरे का खतरा था। उन्हें बहुत दुश्वार रास्ते से अन्दर जाना था। उन्हें बताया गया था कि पहाड़ियों के इर्द गिर्द कोई इन्सान नहीं होगा मगर वहां इन्सान मौजूद थे जिसका मतलब यह था कि उस हब्शी ने अली बिन सुफियान को गलत बताया था कि इस इलाके के गिर्द कोई पहरा नहीं होता। पहाड़ियों का यह ख़ित्ता एक मील भी लम्बा नहीं था और इसी कदर चौड़ा था। वे चूंकी तरबियत याफता छापा मार थे इसीलिये वे बिखर कर और एहतियात से आगे गये थे। एक छापा मार को इत्तेफाक़ से एक दरख़्त के करीब एक मुतहर्रिक साया नज़र आया। छापा मार छुपता और रेंगता उसके पीछे में चला गया। करीब जा कर उस पर झपट पड़ा। उसकी गर्दन बाजू के शिकन्जे में लेकर खन्जर की नौक उसके दिल पर रख दी। गर्दन ढ़ीली छोड़ कर उससे पूछा कि तुम यहां क्या कर रहे हो और यहां किस किस्म का पहरा है?"

वह हब्शी था। छापा मार अरबी बोल रहा था जो हब्शी समझ नहीं सकता था। इतने में एक और छापा मार आ गया। उसने भी खन्जर हब्शी के सीने पर रख दिया। उन्होंने इशारों से पूछा तो हब्शी ने इशारों में जवाब दिया जिससे शक होता था कि यहां पहरा मौजूद है। इस हब्शी की शह रग काट दी गई और छापा मार और ज़्यादा होशियार हो कर आगे बढ़े। यकलख़्त जंगल आ गया। आगे पहाड़ी थी। चांद ऊपर उठ रहा था लेकिन दरख़्तों और पहाड़ियों ने अन्धेरा कर रखा था। वह पहाड़ी पर एक दूसरे से ज़रा ऊपर चढ़ते गये।

अन्दर के इलाके में जहां लड़की को पुरोहित के हवाले किया गया था कोई और ही सरगर्मी थी। पत्थर के चेहरे के सामने चबूतरे पर एक कालीन बिछा हुआ था। उस पर चौड़े फल वाली तलवार रखी थी। उसके करीब एक चौड़ा बर्तन रखा था और कालीन पर फूल बिखरे हुये थे। उसके करीब आग जल रही थी। चबूतरे के चारों किनारों पर दिये जला कर चराग़ां किया गया था। वहां चार लड़कियां घूम फिर रही थीं। उनका लिबास दो दो चौड़े पत्ते था बाकी जिस्म बरहना था। चार हब्शी थे जिन्हों ने कन्धों से टखनों तक सफेद चादरे लपेट रखी थीं। उम्मे अराराह तहखानें में पुरोहित के साथ थी। पुरोहित उसके बालों से खेल रहा था। और वह मख़्मूर आवाज़ में कह रही थी– "मैं अंगोक की मां हूं। तुम अंगोक के बाप हो। मेरे बेटे मिस्र और सूडान के बादशाह बनेंगे। मेरा खून उन्हें पिला दो। मेरे लम्बे लम्बे सुनहरे

बाल उनके घरों में रख दो। तुम मुझ से दूर क्यों हट गये हो। मेरे करीब आओ।" पुरोहित उसके जिस्म पर तेल की तरह कोई चीज़ मलने लगा।

अंगोक ग़ालेबन उस क़बीले का नाम था। एक अरबी लड़की को नशे के खुमार ने उस क़बीले की मां और पुरोहित की बीवी बना दिया था। वह कुर्बान होने के लिये तैय्यार हो गई थी। पुरोहित आखिरी रस्म पूरी कर रहा था।

बारह छापा मार रात के कीड़ों की तरह रेंगते हुए पहाड़ियों पर चढ़ते उतरते और ठोकरें खाते आ रहे थे। बहुत ही दुश्वार गुज़ार इलाक़ा था। बेशतर झाड़ियां ख़ारदार थीं। चांद सिर पर आ गया था। उन्हें दरख़्तों में से रौशनी की किरण दिखाई देने लगी। इन किरणों में उन्हें एक हब्शी खड़ा नज़र आया। जिसके एक हाथ में बर्छी और दूसरे में लमबोतरी ढाल थी। वह भी देवताओं के पाया-ए-तख़्त का पहरेदार था। उसे खामोशी से मारना ज़रूररी था। वह ऐसी जगर खड़ा था जहां उस पर आसानी से हमला नही किया जासकता था। आमने सामने का मुक़ाबला क मौजूं नहीं था। एक छापा मार झाड़ियों में छुप कर बैठ गया। दूसरे ने उसके सामने एक पत्थर फेंका जिसने गिर कर और लुढ़क कर आवाज़ पैदा की। हब्शी बिदका और उस तरफ आया। वह ज्योंही झाड़ी में छुपे हुए छापा मार के सामने आया उसकी गर्दन एक बाज़ू के शिकन्जे में आ गई और एक खन्जर उसके दिल में उतर गया। छामा मार कुछ देर वहां रुके और एहतियात से आगे चल पड़े।

उम्मे अराराह के लिये तैय्यारी हो चुकी थी। पुरोहित ने आखरी बार उसे अपने सीने से लगाया और उसका हाथ थाम कर सीढ़ियों की तरफ चल पड़ा। बाहर के चार हबशी मर्दों और लड़कियों को पत्थर के सर और चेहरे के मुह में रौशनी नज़र आई तो वह मुंह के सामने सजदे में गिर गऐ। पुरोहित ने अपनी ज़बान में एक ऐलान किया और मैंढ से उतर आया। उमम्मे अराराह उसके साथ थी। उसे यह कालीन पर ले गया। मर्द और लड़कियां उनके इर्द गिर्द खड़ी हो गई। उम्मे अराराह ने अरबी ज़बान में कहा– "मैं अंगोक के बेटों और बेटियों के लिये अपनी गर्दन कटवा रही हूं। मैं इनके लिये गुनाहों का कफ्फारा अदा कर रही हूं। मेरी गर्दन काट दो। मेरा सर आंगोक के देवता के क़दमों में रख दो। देवता इस सर पर मिस्र और सूडान का ताज रखेंगे।" चारों आदमी और लड़कियां एक बार फिर सजदे में गिर गई। पुरोहित ने उम्मे अराराह को कालीन पर दो ज़ानू बिठा कर उसका सर आगे झुका दिया और वह तलवार उठाली जिसका फल पूरे हाथ जितना चौड़ा था।

एक छापा मार जो सबसे आगे था, रुक गया। उसने सरगोशी करके पीछे आने वालों को रोक लिया। पहाड़ी की बुलन्दी से उन्हें चबूतरा और पत्थर का सर नज़र आया। चबूतरे पर एक लड़की दो ज़ानू बैठी थी। जिसका सर झुका हुआ था। शफ्फाफ चांदनी, चरागां और बड़ी मशालों ने सूरज की रौशनी का समा बना रखा था। लड़की के पास खड़े आदमी के हाथ में तलवार थी। दो ज़ानू बैठी हुई लड़की बरहना थी। उसके जिस्म का रंग बता रहा था कि हब्शी क़बीले की लड़की नहीं। छापा मार दूर थे और बुलन्दी पर भी थे। वहां से तीर खता जाने का खतरा था, मगर वै जिस पहाड़ी पर थे उस के आगे ढलान नहीं थी बल्कि सीधी दीवार थी

जिससे उतरना नामुमकिन था। वे जान गये कि लड़की कुर्बान की जा रही है और उसे बचाने के लिये वक़्त इतना थोड़ा है कि वे उड़ कर न पहुंचे तो उसे बचा नहीं सकेंगे। उन्होंने चोटी से नीचे देखा तो वहां एक झील नज़र आई। उन्हें बताया गया था कि वहां एक झील है जिसमें मगरमच्छ रहते हैं।

दाई तरफ ढलान थी वह भी तकरीबन दीवार की तरह थी। वहां झाड़ियां और दरख़्त थे। उन्हें पकड़ पकड़ कर और एक दूसरे का हाथ थाम थाम कर वह ढलान उतरने लगे। उनमें से आख़री जांबाज ने इत्तफाक़ से सामने देखा। चांदनी में सामने की चोटी पर उसे एक हब्शी खड़ा नज़र आया। उसके एक हाथ में ढाल थी और दूसरे हाथ में बर्छी जो उसने तीर की तरह फैंकने के लिये तान रखी थी। छापा मारों पर चांदनी नहीं पड़ रही थी। हब्शी अभी शक में था। आखरी छापा मार ने कमान में तीर डाला। रात की खामोशी में कमान की आवाज़ सुनाई दी। तीर हब्शी की शहे रग में लगा और वह लुढ़कता हुआ नीचे आगया। छापा मार ढलान उतरते गये। गिरने का खतरा हर क़दम पर था।

❖

पुरोहित ने तलवार की धार उम्मे अराराह की गर्दन पर रखी और ऊपर उठाई। लड़कियों और मर्दों ने सजदे से उट कर दो ज़ानू बैठते हुए पुरसोज़ और धीमी आवाज़ में कोई गाना शुरू कर दिया। यह एक गूंज थी जो इस दुन्यिा की नहीं लगती थी। पहाड़ों में घिरी हुई इस तंग सी वादी में ऐसा तिलिस्म तारी हुआ जा रहा था जो बाहर के किसी भी इंसान को यक़ीन दिला सकता था कि यह इंसानों की नहीं देवताओं की सरज़मीं है। पुरोहित तलवार को ऊपर ले गया। अब तो एक दो सांसों की देर थी। तलवार नीचे को आने ही वाली थी कि एक तीर पुरोहित की बगल में धंस गया। उसका तलवार वाला हाथ अभी नींचे नहीं गिरा था कि तीन तीर बयकवक़्त उसके पहलू में उतर गये। लड़कियों की चीखें सुनाई दीं। मर्द किसी को आवाज़ देने लगे। तीरों की एक और बाढ़ आई जिसने दो मर्दों को गिरा दिया। लड़कियां जिधर मुहं आया उधर दौड़ पड़ीं। उम्में अराराह इस शोरो गुल और अपने इर्द गिर्द तड़पते हुये और खून में डूबे हुये जिस्मों से बे ख़बर सर झुकाये बैठी थी।

छापा मार बहुत तेज़ी से दौड़ते आये। चबूतरे पर चढ़े और उम्मे अराराह को एक ने उठा लिया। वह अभी तक नशे की हालत में बातें कर रही थी। एक जानबाज़ ने अपना कुरता उतार कर उसे पहना दिया। उसे लेकर चले ही थे कि एक तरफ से बारह तेरह हब्शी बर्छियां और ढालें उठाये दौड़ते आये। छापा मार बिखर गये। उनमें चार के पास तीर कमान थीं। उन्हों ने तीर बरसाये। बाक़ी छापा मार एक तरफ छुप गये और जब हब्शी आगे आये तो अक़ब से उनपर हमला कर दिया। एक तीर अन्दाज़ ने कमान में फलीते वाला तीर निकाला। फलीते को आग लगाइ और कमान में डाल कर ऊपर को छोड़ दिया। तीर दूर ऊपर जाकर रुका तो उसका शोला जो रफतार की वजह से दब गया था, रफतार ख़त्म होते ही भड़का और नीचे आने लगा।

मेले की रौशनी अभी मान्द नही पड़ी थी। तमाशाईयों में से पांच सौ तमाशाई मेले से

अलग होक कर इस पहाड़ी खित्ते की तरफ देख रहे थे। उन्हें दूर फिज़ा में ऐक शोला सा नज़र आया जो भड़क कर नीचे को जाने लगा। वे घोड़ों और ऊंटों पर सवार हुये। उनके कमाण्डर साथ थे। पहले तो वे आहिस्ता आहिस्ता चले ताकि किसी को शक न हो। ज़रा दूर जा कर उन्होंने घोड़ा दौड़ा दिये। तमाशाई मेले में शराब जुआ और नाचने वाली लड़कियों और इस्मत फरोश औरतों में इतने मगन थे कि किसी को कानों कान खबर न हुई कि उनके देवताओं पर क्या कयामत टूट पड़ी है।

छापा मार ने इस खतरे की वजह से आतिशी तीर चला दिया था कि हब्शियों की तादाद ज़्यादा होगी मगर फौज वहां पहुंची तो वहां बारह तेरह लाशें हब्शियों की और दो लाशें छापा मार शहीदों की पड़ी थीं वे बर्छियों से शहीद हुये थे। कमाण्डरों ने वहां का जायज़ा लिया। पत्थर के मुंह में गये और तहखाने में जा पहुंचे। वहां उन्हों ने जो चीज़ें हाथ लगीं वह उठा लीं। उनमें एक फूल भी था जो कुदरती नही बल्कि कपड़े से बनाया गया था। एहकाम के मुताबिक फौज को वहीं रहना था लेकिन पहाड़ों में छुप कर छापा मारों ने उम्मे अराराह को घोड़े पर डाला और काहिरा की तरफ रवाना हो गये।

सुबह तुलू हुई।

मेले की रौनक ख़त्म हो गई थी। बेशतर तमाशाई रात शराब पी पी कर अभी तक मदहोश पड़े थे। दुकानदार जाने के लिये माल असबाब बांध रहें थे। लड़कियों के व्यापारी भी जा रहे थे। सेहरा में रवाना होने वालों की कतारें लगीं हुई थीं। मेले के करीब जो गांव था वहां के लोग बेताबी से उस लड़की के बालों का इन्तेज़ार कर रहे थे जिसे रात कुर्बान किया गया था। इस कबीले के लोग जो दूर दराज़ देहात के रहने वाले थे पहाड़ी जगह से दूर खड़े देवताओं के मसकन की तरफ देख रहे थे। उनके बड़े बूढ़े उन्हें बता रहे थे कि अभी पुरोहित आयेगा। वह देवताओं की खुशनुदी का पैग़ाम देगा और उनमे बाल तकसीम करेगा अभी तक कोई नही आया था। देवताओं के मसकन पर सुकूत तारी था। इस मुन्तज़िर हुजूम को मालूम न था कि वहां फौज मुकीम हैं और अब वहां से देवताओं का कोई पैग़ाम नही आयेगा.............. दिन गुज़रता गया।। कबीले के जिन नौजवानों ने कुर्बानी की बातें सुनी थीं उन्हें शक होने लगा कि यह सब झूठ है। दिन गुज़र गया। सुरज उन्ही पहाड़ियों के पीछे जा कर डूब गया। किसी में इतनी जुर्रत नही थी कि वहां जा कर देखते कि पुरोहित क्यों नही आया।

❖

"तबीब को बुलाया गया।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" लड़की पर नशे का असर है।"

उम्मे अराराह उसके सामने बैठी थी और कह रही थी।" मैं अंगोक की माँ हूँ। तुम कौन हो?" तुम देवता नही हो। मेरे शौहर कहां हैं। मेरा सर काटो और देवता को दो मुझे मेरे बेटों पर कुर्बान कर दो।" वह बोले जा रही थी मगर अब उस पर गुनूदगी भी तारी हो रही थी। उसका सर डोल रहा था।

तबीब ने आते ही उसकी कैफियत देखी और उसे कोई दवाई दे दी ज़रा सी देर में उसकी

आँखें बन्द हो गईं। उसे लिटा दिया गया और वह गहरी नीदं सो गई। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को तफसील से बताया गया कि पहाड़ी ख़ित्ते में क्या हुआ और वहां क्या मिला है। उस ने अपने नायब सालार अलनासिर और बहाऊद्दीन शद्दाद को हुक्म दिया कि पांच सौ सवार ले जायें। ज़रूरी समान ले जायें और उस बुत को तोड़ डालें मगर उस जगह को फौज के घेरे में रखे। हमले की सुरत में मुक़ाबला करें। अगर वह लोग दब जायें और लड़ न सकें तो उन्हें वह जगह दिखा कर प्यार और मुहब्बत से समझायें कि यह महज़ एक फरेब था।

शद्दाद ने अपनी डाइरी में जो अरबी ज़बान में लिखी थी उस वाकिये को यूं ब्यान कि या है। कि वह पांच सौ सवारों के साथ वहां पहुँचा। रहनुमाई उस फौज के कमाण्डर ने की जो पहले ही वहां मौजूद था। सैकड़ों सुडानी हब्शी दूर दूर खड़े थे। उनमें से बाज़ घोड़ों और ऊंटों पर सवार थे। उनके पास बर्छियां, तलवारें और कमानें थीं। हम ने अपने तमाम तर सवारों को इस पहाड़ी जगह के इर्द गिर्द इस तरह खड़ा कर दिया कि उनके मुंह बाहर की तरफ और उनकी कमानों में तीर थे और जिनके पास कमानें नही थीं उनके हाथों में बर्छियां थीं। खतरा खूनरेज़ लड़ाई का था। मैं अलनासिर के साथ अन्दर गया। बूतों को देख कर मैं ने कहा कि फिरऔन की यादगार है। हब्शियों की लाशें पड़ी थीं। हर जगह घूम फिर कर देखा। दो पहाड़ियों के दर्मियान एक खन्डर था, जो फिरऔन के वक्तों की खुशनूमां इमारत थी। देवताओं पर उस ज़माने की तहरीरें थीं। अल्फाज़ लकीरों वाली तसवीरों की मानिन्द थी। कोई शुबहा न रहा कि यह फिरऔन की जगह थी..... दीवार जैसी एक पहाड़ी के दामन में झील थी जिसके अन्दर और बाहर दो दो कदम लम्बे मगरमच्छ थे। झील का पानी वहाड़ी के दामन को काट कर पहाड़ी के नीचे चला गया था। पानी के ऊपर पहाड़ी की छत थी। जगह खौफनाक थी। हमें देख कर बहुत सारे मगरमच्छ किनारे पर आ गये और हमें देखने लगे।

मैं ने सिपाहियों से कहा, हब्शियों की लाशें झील में फेंक दो, यह भूखे हैं। वे लाशें घसीट कर लाये और झील में फेंक दीं। मगरमच्छों की तादाद का अन्दाज़ा नही, पूरी फौज थी। लाशों के सर बाहर रहे और यह सर पानी में दौड़ते पहाड़ी के अन्दर चले गये। फिर पुरोहित की लाश आई उस ने दूसरे इन्सानों को मगरमच्छ के आगे फेंका था। हमने उसे भी झील में फेंक दिया .... दो सिपाही चार सुडानी लड़कियों को लाये। वे कहीं छुपी हुई और नंगी थीं। कमर के साथ पत्ता आगे पीछे बन्धा था। मैं ने और अलनासिर ने मुंह फेर लिया। सिपाहियों से कहा कि उन्हें कपड़े पहनाओ। जब उनके जिस्म कपड़ों में छुप गये तो देखा वह बहुत खूबसूरत थीं। रोती थीं डरती थीं। हमारे तरजुमान को उन्होंने वहां का हाल अपनी ज़बान में ब्यान किया जो शरमनाक था। मुसलमान को औरत ज़ात का यह हाल बर्दाशत नही करना चाहिये। औरत अपनी हो, किसी और की हो, काफिर हो, इसलाम उसे बेटी कहता है। इन चार लड़कियों का ब्यान ज़ाहिर करता था कि वे फिरऔन को खुदा मानतीं हैं। उनका कबीला इनसान को खुदा मानता है।

यह जगह खुशनुमां थी। सारे सेहरा में सर सब्ज़ी थी। अन्दर पानी का चश्मा था जिसने झील बनाई। दरख्त थे जिन्होंने साया दिया। किसी फिरऔन को यह मुकाम पसंद आया तो

उसे तफरीह का मुकाम बना लिया। अपनी खुदाई के सबूत में यह बुत बनाये। इसे तहखाना में रखा और अय्याशी की। आसमान ने कोई और रंग नही दिखाया। सूरज उधर से इधर हो गया। फिरओनों के सितारे टूट गये और मिस्र में दुसरे बातिल मज़हब आये। आख़िर में हक की फतह हुई और मिस्र ने कलमा ला इलाहा इल्लल्लाहू सुना और खुदा के हुजूर में सुरखुरू हुआ। लेकिन किसी ने न जाना कि बातिल इन पहाड़ियों में ज़िंदा रहा। अल्हमदुलिल्लाह, हम ने खुदाये जल्लजलालहू से रहनुमाई ली। बातिल का यह नक्शा भी उखाड़ा और इस रेगज़ार को पाक किया।

❖

इस जगह को सवारों के घेरे में लेकर फौज ने पत्थर के इस हैबतनाक बुत को मिसमारा कर दिया। चबुतरा भी गिरा दिया। तहखाना मलबे से भर दिया। बाहर सैकड़ों हब्शी हैरान और खौफ ज़दा खड़े थे कि यह क्या माजरा है। उन सबको बुला कर अन्द ले जाया गया कि यहां कुछ भी नही था। उन्हों ने अपनी अपनी लड़की ले ली। उन्हें बताया गया कि यहां एक बदकार आदमी रहता था वह मगरमच्छों को खिला दिया गया है। उन सैकड़ों हब्शियों को इकट्ठा बिठा कर उनकी ज़बान में वाज़ दिया गया। वे सब खामोश रहे। उन्हें इसलाम की दावत दी गई वे फिर भी खामोश रहे। कभी कभी शक होता था कि जैसे उनकी आँखों में खून उतर आया है। उन्हें यह अल्फाज़ धमकी के लहजे में कहे गये।" अगर तुम सच्चे खुदा को देखना चाहते हो तो हम तुम्हें दिखायेंगे। अगर तुम इसी जगह को जहां तुम बैठे हो अपनी झूठे खुदाओं का घर कहते रहोगे तो हम इन पहाड़ियों को भी रेज़ा रेज़ा कर के रेत के साथ मिला देगें। फिर तुम देखोगे कि कौन सा खुदा सच्चा है।"

उधर काहिरा में उम्मे अराराह होश में आचुकी थी। वह अपनी दास्तान सुना चुकी थी। जो ऊपर ब्यान की गई थी। उस ने बाताया कि पुरोहित उसे दिन रात बेआबरू करता था और फूल कई बार उसके नाक के साथ लगाता था। उम्मे अराराह को बताया गया कि उसकी गर्दन कटने वाली थीं अगर छापा मार बरवक़्त न पहुंच जाते तो उस का सर ग़ार में और जिस्म मगरमच्छ के पेट में होता। नाजुक सी यह हसीन लड़की खौफ से कांपने लगी। उस के आँसू निकल आये। उस ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के हाथ चुम लिये और कहा--" खुदा ने मुझे गुनाहों की सज़ा दी है। मैं अपने गुनाह का एतराफ करना चाहती हूँ। खुदा के लिये मुझे पनाह में ले लो।" उसकी ज़ेहनी कैफियत बहुत बुरी थी।

उस ने शाम के एक दौलत मन्द ताजिर का नाम ले कर कहा कि वह उसकी बेटी है। यह मुसलमान ताजिर था। उसका दौसताना शाम के अमीरों के साथ था। उस वक़्त अमीर एक एक शहार या थोड़े थेड़े रक़्बे के ख़ित्तों के हाकिम हुआ करते थे जो मरकज़ी इमरात के मातेहत होती थी। यह उमरा दसवी सदी के बाद पूरी तरह अय्याशीयों में डूब गये थे। बड़े ताजिर से दोसती रखते थे उनके साथ कारोबार भी करते और रिश्वत भी लेते थे। उनके हरमों में लड़कियों की अफरात रहती और शराब भी चलती थी उम्मे अराराह ऐसी ही एक दौलत मन्द ताजिर की बेटी थी जो अपने बाप के साथ बारह तेरह साल की उम्र में उमरा की

रक़्क़ास महफिल में जाने लगी थी। बाप ग़ालिबन देख रहा था कि लड़की खूबसूरत है, इस लिये वह उसे लड़कपन में ही उमरा की सुसाईटी का आदी बनाने लगा था। उम्मे अराराह ने बताया कि वह चौदह साल की हुई तो उमरा ने उस में दिलचसपी लेनी शुरू कर दी थी। दो ने उसे बड़े क़ीमती तोहफे भी दिये। वह गुनाहों की ऐसी दुनियां की हो के रह गई।

उम्र के सोलहवें साल वह बाप को बताये बग़ैर एक अमीर की दर परदा दाश्ता बन गई। मगर रहती अपने घर में थी। दो तीन साल बाद वह बाप के हाथ से निकल गई और आज़ादी से दो और उमरा से तअल्लुक़ात पैदा रक लिये। उस ने खूबसूरती, चरब ज़ुबानी और मर्दों को उंगलियों पर नचाने में नाम पैदा कर लिया। बाप ने उसके साथ समझौता कर लिया। गुज़िश्ता छे साल से उसे एक और किस्म की ट्रेनिंग मिल रही थी। उन तीन उमरा ने मिल कर सजिश की थी जिस में उसका बाप भी शामिल था। उसे खलीफा की जड़ें खोखली करने की ट्रेनिंग दी जा रही थी। आगे चल कर इस साज़िश में एक सलीबी भी शामिल हो गया। उमरा खुद मुख़्तार हाकिम बनने का ख़्वाब देख रहे थे। सलीबीयों की मदद के बग़ैर मुम्किन न था। उम्मे अराराह को नुरूद्दीन ज़ंगी और खलीफा के दर्मियान ग़लत फहमियां पैदा करने के लिये भी इस्तेमाल किया था। सलीबीयों ने इस मुहीम में तीन ईसाई लड़कियां शामिल कर के एक ज़मीन दोज़ मुहाज़ बना लिया।

उन्होनें जब देखा कि मिस्र में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने नाम पैदा कर लिया है और उस ने दो ऐसे कारनामें कर दिखाये हैं जिसने उस मिस्र का वज़ीर और अमीर नही बल्कि बादशाह बना दिया है तो उम्मे अराराह को खलीफा अलआज़िद की खिदमत में तोहफे के तौर पर भेजा गया। उसे मुहिम यह दी गई कि खलीफा के दिल में सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ दुशमनी पैदा करे और साबिक़ सुडानी फौज के जो चन्द एक हाकिम फौज में रह गये हैं उन्हें अलआज़िद के क़रीब कर के सूडानीयों को एक और बग़ावत पर आमादा कर ले। उसे दूसरी मुहिम यह दी गई थी कि खलीफा अलआज़िद को आमादा करे के सूडानी जब बग़ावत करें तो वह उन्हें हथियारों और साज़ों सामान से मदद दे और अगर मुमकिन हो सके तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज का कुछ हिस्सा बाग़ी कर के सुडानियों से मिला दे। खलीफा और कुछ न कर सके तो अपने मुहाफिज़ दस्ते सूडानियों के हवाले कर के खुद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जा पनाह ले और उसे कहे कि उसके मुहाफिज़ बाग़ी हो गये हैं। मुख़तसर यह कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ ऐसा मुहाज़ क़ायम करना था जो उसे मिस्र से भागने पर मजबूर कर दे और वह बाक़ी उम्र गुमनामी में गुज़ार जाये।

उम्मे अराराह ने सुलातान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बताया कि वह मुसलमान के घर पैदा हुई थी लेकिन बापने उसे मुसलमानों कैंी ही जड़ें काटने की तरबियत दी और सलतनतें इसलामिया के उमरा ने अपने दुशमनों के साथ मिलकर अपनी ही सलतनत को तबाह करने की कोशिश की। इस लड़की ने खलीफा अलआज़िद का दिमाग़ अपने क़ब्जे मेंले लिया और सलुतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ कर दयिा था। रजब को वह इस साज़िश में

शरीक कर चूकी थी। रजब ने दो और फौजी हाकिमों को अपने साथ मिला लिया था। रजब ने इस सिलसिले में यह काम किया कि खलीफा के मुहाफिज़ दस्ते में वह मिस्रयों की जगह सुडानी रखता जा रहा था। उम्मे अराराह को खलीफा के पास आये अभी दो ढ़ाई महीने हुये थे। वह कसरे खिलाफत पर गालिब आ गई थी और हरम की मलिका बन गई थी। उस ने यह इन्कशाफ किया कि ख़लीफा सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को कतल कराना चाहता है और रजब ने हशीशीन से मिल कर कत्ल का इन्तेज़ाम कर दिया हैं

यह महज़ इत्तेफाक़ की बात है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने खलीफा के बेकार वजूद और ऐश परसती से तंग आ कर उसके खिलाफ कारवाई शुरू कर दी थी। और यह भी इत्तेफाक़ था कि उम्मे अराराह को वही लोग अग़वा कर ले गये जिन्हें सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ लड़ाना चाहता था। और यह इत्तेफाक़ तो बड़ा ही अच्छा था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने रजब से मुहाफिज दसते की कमान ले ली और वहां अपनी पसन्द का एक नायब सालार भेज दिया था। मगर इन इत्तेफाक़ ने हालत का धारा मोड़ दिया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उम्मे अराराह को अपनी पनाह में रखा। लड़की बूरी तरह पछता रही थी। और गुनाहों का कफ्फारा अदा करना चाहती थी। कुदरत ने उसे एक धक्का दे कर उसका दिमाग़ दुरूस्त कर दिया था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ठंडे दिल से सोंचने लगा कि इस साज़िश में जो हाकिम शामिल हैं। उनके साथ वह क्या सुलूक करे।

दूसरे दिन अलनासिर और बहाउद्दीन शद्दाद फिरऔनो का आख़री निशान मिटा कर फौज वापस ले आये।

❖

आठ दिनों बाद—

रात का पिछला पहर था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के जागने में अभी कुछ देर बाकी थी। । उसे मुलाज़िम ने जगा दिया और कहा कि अलनासिर अली बिन सुफियान और दो नायब आये हैं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी उछल कर उठा और मुलाकात के कमरे में चला गया। उन हाकिम के साथ उन दस्तों में से एक का कमाण्डर भी था जो शहर से दूर गश्त करते रहते थे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को बताया गया कि कमों बेश छे हज़ारा सूडानी जिनमें बरतरफ सूडानी फौज के अफराद हैं और उस वहशी कबीले के भी जिसके अकीदे को मलिया मेट किया गया था मिस्र की सरहद में दाखिल हो कर एक जगह पड़ाव किये हैं। इस कमाण्डर ने यह भी अकलमन्दी की कि आम लिबास में दो शुतर सवार यह मालूम करने के लिये भेजे कि उस लश्कर का क्या इरादा है। उन शुतर सवारों ने अपने आप को मुसाफिर ज़ाहिर किया और यह मालूम कर लिया कि यह लशकर काहिरा पर हमला करने जा रहा है। शुतर सवारों ने लशकर के सरबाराहों से मिल कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ बातें की और कहा कि वह बहुत से आदमियों को इस लशकर में शामिल करने के लिये लायेंगे। यह कह कर वह रूख़सत हो आये। उनकी इत्तेला के मुताबिक यह लशकर इधर उधर से मज़ीद नफ़री का मुन्तज़िर था और उसे अगले रोज़ वहां से कुच करना था।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पहले हुक्म यह दिया कि ख़लीफा के मुहाफिज़ दस्ते में सिर्फ पचास सिपाही और एक कमाण्डर रहने दो। बाकी तमाम दस्ते को छावनी में बुला लो। अगर खलीफा मना करे तो कह देना कि यह मेरा हुक्म है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा कि अपने शौबे के कम अज़ कम सौ आदमी जो सूडानी ज़बान अच्छी तरह बोल सकते है। सूडानी बाग़ियों के भेस में इस कमाण्डर के साथ अभी रवाना कर दो। कमाण्डर से कहा कि यह सौ आदमी उन दो शुतर सवारों के साथ सुडानियों के लशकर मे शामिल होंगे। यह दो शुतर सवार संतरी बतायेंगे कि वह वादे के मुताबिक मदद लाये हैं। उनके लिये हिदायतें यह हैं कि वह लशकर की पेश कदमी के मुतअल्लिक इत्तेला देंगे और यह देखें कि रात के वक़्त इस लशकर के जानवर और रसद कहां होती है। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अलनासिर से कहा कि तेज़ रफतार घोड़े सवार छापा मारों और छोटे मिन्जनिकों के दस्ते तैय्यार रखो।

" मैं ने सोंचा था कि सीधी टक्कर ले कर सूडानियों को शहर से दूर ही खत्म किया जाये।" अलनासिर ने कहा।

"नहीं।" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" याद रखो अलनासिर! अगर दुश्मन की तादाद कभी तुम से थौड़ी हो तो भी बराहेरास्त तसादुम से गुरेज़ करो। रात को छापा मार इस्तेमाल करो, शबखून मारो, दुशमन को पहलू से लो। अक़ब से लो। ज़र्ब लगाओ और भागो। दुशमन की रसद तबाह करो। जानवर तबाह करो। दुशमन को परेशान करो। उसके दसते बिखेर दो। उसे आगे आने की मुहलत न दो। उसे दायें बायें फैल जाने पर मजबूर कर दो। अगर सामने से टक्कर लेना चाहते हो तो यह न भूलो कि यह सेहरा है। सब से पहले पानी की जगह पर क़बजा करो। सूरज और हवा के रुख को दुशमन के खिलाफ रखो। उसे परेशान कर के अपनी पसंद के मैदान में लाओ। मैं तुम्हें अमली सबक़ दुंगा। उस लशकर की यह खवाहिशें मैं पूरी नही होने दुगां कि वह काहिरा तक पहुंचे या मेरी फौज आमने सामने जाकर लड़ें" उस ने अली बिन सुफियान से कहा–" तुम जिन एक सुडानियों को लशकर में शामिल होने के लिये भेजोगे उन्हें कहना कि वह सूडानियों में यह अफवाह फैला दें क छे सात दिनों तक सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी फलसतीन पर हमला करने जा रहे हैं इस लिये काहिरा पर हमला उसकी ग़ैर मौजूदगी में किया जायेगा।"

ऐसी बहुत से हिदायतें और हुक्म देकर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इन्हें बताया कि वह आज शाम से काहिरा में नही होगा। उस ने इन्हें काहिरा से बहुत दूर एक जगह बताई थी। वह अपना हैड क्वॉटर दुशमन के करीब रखना चाहता था ताकि जंग अपनी निगरानी में लड़ा सके। सब ने मुलाकात के कमरे में ही सुबह की नमाज़ पढ़ी और सुलातन सलाहुद्दीन अय्यूबी के एहकाम पर कारवाई शूरू हो गई।

सुल्तान अय्यूबी तैयारी के लिये अपने कमरे में चला गया।

❖

सुडानियों के लशकर में इज़ाफा होता जा रहा था। दो साल गुज़रे उनकी बग़ावत बुरी तरह नाकाम हो चुकी थी। दूसरी कोशिश की तैयारियां उसी वक़्त शुरू हो गई थीं। सलीबीयो

ने मदद का वादा कर रखा था और जासूसों की बहुत बड़ी तादाद मिस्र में दाखिल कर दी थी। सूडानियों का हमला एक न एक रोज़ आना ही था लेकिन अचानक आ गया। वजह यह थी कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक सूडानी कबीले के मज़हब पर फौजी हमला किया और उसके देवताओं का मसकन तबाह कर दिया था। यह वजह मामूली नही थी। मिस्र में जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुखालीफीन थे उन्होंने उसके इस इकदाम को उसके खिलाफ इस्तेमाल किया। सूडानी फौज के बरतरफ किये हुये बागी कमाण्डरों को भी शामिल किया। यह सब फौरन हरकत में आ गये। उनमें मिस्री मुसलमान भी थे। उन्होंने उस कबीले के मज़हबी जज़्बात को भड़काया और उन्हें कहा कि उनका मज़हब सचा है और अगर वे सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ उठेंगे तो उनके देवता अपनी तौहीन का इन्तेकाम लेने के लिये उनकी मदद करेंगे। उन्होंने पांच सात दिनों में लशकर जमा कर लिया और काहिरा पर हमले के लिये चल पड़े। जूं जूं इधर उधर के लोगों को पता चलता था। वे इस लशकर में शामिल हो जाते थे।

दो शुतर सवारों के साथ जब एक सौ मुसल्लह आदमी इस लशकर में शामिल हुये यह लशकर सरहद से आगे आ गया था और एक जगह पड़ाव किये हुये था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रात के वक़्त इतना आगे चला गया जंहा उसे इस लशकर की नकल व हरकत की इत्तेला जल्दी मिल सकती थी। इन सौ आदमियों ने हमला आवरों के सरबराहों को बताया कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी चन्द दिनों तक फिलिस्तीन की तरफ कूच कर रहा है। सरबराह खुश हुये। उन्होंने यह पड़ाव दो दिन और बढ़ा दिया। अगली रात सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इस लशकर की पहली इत्तेला मिली।

उस से अगली रात उसने पचास सवार और पांच मुनजनीकें भेजे जिनके साथ आतिशगीर माद्दे वाली हाडियां थी। उन्हें एक घोड़ा खींचता था। आधी रात के वक़्त जब सूडानी लशरक सोया हुआ था। उनके अनाज के ज़खीरे पर हाडियां गिरने लगीं। कुछ देर बाद आतिशीं तीर आये और मुहीब शोले उठने लगे। लशकर में भगदड़ मच गई। मुनजनीकों को वहां से फौरन पीछे भेज दिया गया। पचास सवारों ने तीन चार हिस्से में तकसीम हो कर घोड़े सरपट दौड़ा दिये और लश्कार के पहलू के आदमियों को कुचलते और बर्छियों से ज़ख़्मी करते गायब हो गये। लशकरियों को संभलने का वक़्त न मिला। आग के शोले से जहां अनाज का ज़खीरा जल रहा था वहीं ऊंट और घोड़े बिदक कर इधर उधर भागने लगे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के सवार एक बार फिर आये और तीर बरसाते गुज़र गये।

दूसरे दिन इत्तेला मिली कि सुडानियों के कम व बेश चार सौ आदमी आग से, घोड़ों और ऊंटों की भगदड़ से और छापा मार सवारो के हमले से मारे गये हैं। तमाम तर अनाज जल गया और तीरों का ज़खीरा भी नज़रे आतिश हो गया। लशकर ने वहीं से कूच किया और रात ऐसी जगह पड़ाव किया जंहा इधर उधर मिट्टी के टीले थे। उस जगह शबखून का खतरा नहीं था और रात को गशती दस्ते भी पड़ाव से दूर दूर गश्त करते रहे मगर हमला फिर भी हुआ। इसका अन्दाज़ भी गुज़िश्ता रात जैसा था। लशकर के सरबराहों को मालूम नहीं था कि उनके दो गश्ती दस्ते सुलता

सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापा मारों की घात में आ गये थे और मारे गये हैं। तीर अन्दाजों ने टीलों से आतिशीं तीर चलाये और गायब हो गये सहर का धुंधलापन निखरने तक शबखून जारी रहे। इन से गुज़िशता रात की निस्बत ज़्यादा नुकसान हुआ।

शाम को अली बिन सुफियान ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपने जासूसों की लाई हुई यह इत्तेला दी कि कल दिन के वक़्त सूडानी लशकर इस अन्दाज़ से पेश क़दमी करेगा कि शबखून मारने वालों का ठिकाना मालूम कर के उसे खत्म किया जाये। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने करीब कुछ फौज रखी हुई थी। उस ने रात के वक़्त हमला न कराया। उसे मालूम था कि अब दुशमन चौकन्ना हो गया है। अगले रोज़ उस ने चार सौ पियादे सिपाही सुडानियों के लशकर के दांयी तरफ निस्फ मील दूर भेजे और चार सौ बायीं तरफ। उन्हें यह हिदायत दी कि वे आगे को चलते जायें। दोनों दस्ते जंगी तरतीब में सूडानियों के पहलू से गुज़रे तो सुडानियों ने इस खतरे के पेशे नज़र अपने पहलू फैला दिये कि यह दस्ते पहलू पर या अक़ब से हमले करेंगे। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिदायत के मुताबिक़ उसके कमाण्डर अपने दस्तों को परे हटाते गये। सूडानी धोखे में आ गये। उन्होनें अपने लशकर को दायें बायें फैला दिया। अचानक सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पांच सौ सवारों ने टीलों की औट से निकल कर सूडानियों के वस्त में हल्ला बोल दिया। यहां इनकी आला कमान थीं। घुड़ सवार का यह हमला बेहद शदीद था। सारे लशकर में भगदड़ मच गई पहलूओं से पियादा तीर आन्दाजों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये। इस तरह सिर्फ तेरह सौ नफरी की फौज ने कम व बेश छ हज़ार के लशकर को भगदड़ में मुबतला कर के एसी शिकस्त दी कि सेहरा लाशों से अट गया और सूडानी कै़द में भी आये और भागे भी। भागने वालों की तादाद थोड़ी थी।

यह सूडानियों की दूसरी बग़ावत थी जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हीं के खून मे डूबो दी। अब के सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने डिप्लेमेसी से काम नही लिया। उस ने जंगी कैदियों से मालमूमात हासिल कर के उन तमाम कमाण्डरों और दिगर हाकिमों को कै़द में डाल दिया जो दर परदार बग़ावत की साज़िश में शरीक थे। तखरीबकारों की भी निशान देही हो गई उन्हें सज़ाये मौत दी गई। रजब जैसे नायब सालारों को हमेशा के लिये कै़द खानों में डाल दिया गया। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी हैरान इस पर हुआ कि बाज़ ऐसे हाकिम इस साज़िश में शीरीक थे जिन्हें वह अपना वफ़ा दार समझता था। उस ने अपने मातेहत सलारों और दिगर हुक्काम से कह दिया कि मिस्र की द्विफा और सलतनत के इसतेहकाम के लिये सूडानियों पर हमला और क़ब्जा ज़रूरी हो गया है।

उसने ख़लीफा अलआज़िद से मुहाफिज़ दस्ता वापस ले कर उसे माजूल कर दिया और ऐलान कर दिया कि अब मिस्र खिलाफ़ते अब्बासिया के तेहत है और यह भी कि खिलाफत की गद्दी बग़दाद में होगी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उम्मे अराराह को आठ मुहफिजों के साथ नूरुद्दीन ज़ंगी के हवाले करने के लिये रवाना कर दिया।

❖❖❖

लड़की जो फ़लस्तीन से आई थी

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कमरे में टहलते हुये आह भरी और कहा–"कौम मुत्तहिद हो सकती है और हो भी जाती है– कौम का शीराज़ा उमरा और हुक्काम बिखेरा करते हैं या वह खुद साख्ता कायद जो अमीर, वज़ीर या हाकिम बनना चाहते हैं– तुमने देख लिया है अली! मिस्र के लोगों की ज़बान पर हमारे खिलाफ कोई शिकायत नही– गद्दारी और तख़रीब कारी सिर्फ बड़े लोग कर रहे हैं– उन बड़े लोगों को मेरी ज़ात के साथ कोई अदावत नही में उन्हें इस लिये बुरा लगता हूँ कि मैं उस गद्दी पर आगया हूँ जिसके वह खवाब देख रहे थे।"

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने कमरे में टहल रहा था अली बिन सुफियान और बहाउद्दीन शद्दाद बैठे सुन रहे थे। वह सितम्बर के पहले हफते की शाम थी। जून और जूलाई में सूलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सूडानियों की बग़ावत को कुचला और उसके फौरन बाद अलआज़िद को खिलाफत की गद्दी से हटाया था। उस से पहले उस ने सूडानियों की बग़ावत को निहायत ही अच्छी जंगी हिकमते अमली से दबाकर सूडानी फौज तोड़ दी थी मगर बग़ावत करने वाले किसी भी कायद कमाण्डर या असकरी को सज़ा नही दी थी डिप्लोमेसी से काम लिया था। इस तरह उसकी जंगी अहमियत की भी धाक बैठ गई थी और डिप्लोमेसी की भी। अब सूडानियों ने फिर सर उठाया तो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उस सर को हमेशा के लिये कुचल देने के लिये पहले तो मैदाने जंग में सूडानियों की लाशों के अम्बार लगाये फिर जो भी पकड़ा गया उसके ओहदे और रूतबे का लिहाज़ किये बग़ैर उसे कड़ी सज़ा दी। अक्सरियत को तो जल्लाद के हवाले किया बाकी जो बचे उन्हें लम्बी कैद में डाल दिया था। मुल्क बदर करके उन्हें सूडान की तरफ निकाल दिया।

"आज दो महीने हो गये हैं सुतलान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" मैं सलतनत के इन्तेज़ाम और कौम की फलाह व बहबूद की तरफ तवज्जोह नही दे सका। मुजरिम लाये जा रहें हैं। और मैं सोंच विचार के बाद उन्हें सज़ाए मौत देता चला जा रहा हूँ। यूं दिल को तकलीफ हो रही है। जैसे में कत्ले आम कर रहा हूँ। मेरे हाथों मरने वालों की अकसरियत मसुलमानों की है।"

"मोहतरम अमीर"– बहाउद्दीन शद्दाद ने कहा–" एक काफिर और एक मुसलमान एक ही किसम का गुनाह करें तो ज़्यदा सज़ा मुसलमानों को मिलनी चाहिये क्योंकि उस तक अल्लाह के सच्चे दीन की रौशनी पहुंची फिर भी उस ने गुनाह किया। काफिर तो अकल का भी अन्धा है मज़हब का भी अन्धा है। आप उस पर ग़म न करें कि आप ने मुसलमानों को सज़ा दी है। वह गद्दार थे सलतनत इसलामिया के बाग़ी थे उन्हों ने इसलाम का नाम मिट्टी में

मिलाने के लिये काफिरों से इत्तिहाद किया।"

" मेरा असल ग़म यह है शद्दाद"– सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" कि मैं हुक्मरां बनके मिस्र नही आया। अगर मुझे हुकुमत करने का नशा होता तो मिस्र की मौजूदा फिज़ा मेरे लिये साज़गार थीं जिन्हें सिर्फ इमारत की गद्दी से प्यार होता है वह साज़िशी ज़ेहन के हाकिमों को ज़्यादा पसंद करते है। वह कौम को कुछ दिये बग़ैर लोगों को दिलकश मगर झूठे रंगों की तसवीर दिखाते रहते है। अपने ज़ाती अमले में शैतानी खसलत के अफराद को रखते हैं। वह अपने मातेहत हाकिमों को शहज़ादों का दर्जा दिये रखते हैं और खुद शहंशाह बन जाते हैं। मैं कहता हूँ मुझ से यह गद्दी ले लो लेकिन मेरे रास्ते में कोई रूकावट खड़ी न करना। मैं जो मकसद लेकर घर से निकला हूँ वह मुझे पूरा कर लेने दो। नूरूद्दीन ज़ंगी ने हज़ारों जवानों की कुर्बानी देकर और दरियाए नील को अरब के मुजाहिदों के खून से सुर्ख करके शाम और मिस्र का इत्तिहाद कायम किया है। मुझे इस मुत्तिहद सलतनत को वुसअत देनी ह। सूडान को मिस्र में शामिल करना है। फलस्तीन को सलीबीयों से छुड़ाना है। सलीबीयों को यूरोप के वसत में ले जाकर किसी गोशे में घुटनों बिठाना हैं और मुझे यह फतुहात अपनी हुक्मरानी के लिये नही अल्लाह की हुक्मरानी के लिये हासिल करनी है मगर मिस्र मेरे लिये दलदल बन गया है। वह कौन सा गोशा है जहां साजिश बग़ावत और ग़द्दारी नहीं–"

" इन तमाम साज़िशों के पीछे सलीबी हैं–" अली बिन सुफियान ने कहा–" मैं हैरान हूँ कि वह किस बेदर्दी से अपनी जवान लड़कियों को बेहयाई की तरबियत देरक हमारे खिलाफ इसतेमाल कर रहे हैं। उन लड़कियों की खूबसूरती का अपना जादू है, उनका तिलसिम उनकी ज़बान में है–"

"ज़बान का वार तलवार से गहरा होता है–" सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा–" वह अकल जो तुम्हारी कमजोरियों को भांप सकती है अली, वह अपनी ज़बान से ऐसे अन्दाज़ से और ऐसे मौके पर ऐसे लफज़ कहलवाएगी कि तुम अपनी तलवार नियाम में डाल कर दुशमन कि कदमों में रख दोगे। ईसाईयों के पास दो ही तो हथियार हैं, अलफाज़ और हैवानी जज़बा, जिसे इनसानी जज़बे पर ग़ालिब करने के लिये वह अपनी जवान और खूबसूरत लड़कियों को इसतेमाल कर रहे हैं। उन्हों ने मुसलमान उमरा और हुक्काम के दिलों से मज़हब तक निकाल दिया है

" सिर्फ हुक्काम नही अमीर मोहतरम"– अली बिन सुफियान ने कहा–" मिस्र के आम लोगों में भी बदकारी आम हो गई हैं। यह सलीबीयों का कमाल है। दौलतमन्द मुसलमानों के घरों मे भी बेहयाई शुरू हो गई है।

"यही सबसे बड़ा ख़तरा है" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं सलीबियों के सारे लशकर का मुकाबला कर सकता हूं और किया है मगर मैं डरता हूं कि सलीबियों के इस वार को नहीं रोक सकूंगा और जब मेरी नज़रें मुस्तकबिल में झांकती हैं तो मैं कांप उठता हूं। मुसलमान बराऐ नाम मुसलमान रह जाऐंगे। उनमे बेहयाई सलीबियों वाली होगी और उनके तहज़ीब व तमद्दुन

पर सलीबी रंग चढ़ा हुआ होगा। मैं मुसलमानों की कमज़ोरियां जानता हूं। मुसलमान अपने दुश्मन को नहीं पहचानते। उसके बिछाऐ हुए खूबसूरत जाल में फंस जाते हैं। मैं सलीबियों की कमज़ोरियां जानता हूं वह बेशक मुसलमानों के खिलाफ मुत्तहिद हो गये हैं लेकिन उनके अंदर से दिल फटे हैं। फ्रांसीसी और जर्मन एक दूसरे के खिलाफ हैं। बरतानवी और इतालवी एक दूसरे को पसंद नहीं करते। वह मुसलमानों को मुश्तरक दुशमन समझकर इकट्ठे हैं। लेकिन उनमें अदावत की हद तक इख़्तिलाफ़ात हैं। उनका शाह आगस्टस दोग़ला बादशाह है। बाक़ी भी ऐसे ही हैं मगर उन्होंने मुसलमान उमरा को औरत के हुस्न और ज़रो जवाहरात की चमक दमक से अंधा कर दिया है अगर मुसलमान उमरा मुत्तहिद हो जाऐं तो सलीबी चंद दिनों में बिखर जाऐं। अब फातमी खिलाफ़त को ख़त्म करके मैं ने अपने दुश्मनों में इज़ाफा कर लिया है। फ़ातमी अपनी गद्दी की बहाली के लिऐ सूडानियों और सलीबियों के साथ साज़ बाज़ कर रहे हैं।"

"उनके शाएर को कल सज़ा–ए–मौत दे दी गई है।" अली बिन सुफियान ने कहा।

"जिसका मुझे बहुत अफसोस है।" सुलतान अय्यूबी ने हा– "अमारतुलयमनी की शायरी ने मेरे दिल पर भी गहरा असर किया था मगर उसने अलफाज़ और तरन्नुम को चिंगारियां बनाकर इस्लाम के खिरमन को जलाने की कोशिश की है।"

अमारतुल यमनी उस दौर का मशहूर शाएर था। उस दौर में और उससे पहले भी लोग शाएरों को पीरों और पैगम्बरों जितना दर्जा देते थे। शाएर अलफ़ाज़ और तरन्नुम से फौजों में जज़्बे की नई रूह फूंक दिया करते थे। यही दर्जा उस मुसलमान शाएर को हासिल था कि एक तरफ वह लोगों में जिहाद का जज़्बा पुख़्ता करता था और साथ ही फातमी ख़िलाफ़त की अज़मत की धाक लोगों के दिलों में बिठाता था। उसे फातमी खिलाफ़त की इतनी पुश्त पनीही हासिल थी कि उसने सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ ज़हर उगलना शुरू कर दिया था। उसके आख़री अशआर यह थे– "मुझे फातमी ख़िलाफत की मोहब्बत का ताना देने वालो मुझ पर लानत भेजो। मैं तुम्हें लानत के लायक समझता हूं। फातमी महल्लात की वीरानी पर आंसू बहाओ। उनमें रहने वालों को मेरा पैग़ाम दो कि मैं ने तुम्हारे लिय जो ज़ख़्म खाऐ हैं वह कभी हलके न होंगे।

उसके घर अचानक छापा मारा गया था। वहां से दस्तावेज़ी सबूत मिला था कि वह सिर्फ फ़ातमी खिलाफ़त का ही बही ख़्वाह नहीं बल्कि सलीबियों का वजीफ़ा खोर भी है। सलीबी उसे इस मक्सद के लिये वज़ीफा देते थे कि वह मिस्रियों के दिलों पर फ़ातमी ख़िलाफत को ग़ालिब करें और सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ नफरत पैदा करता रहे। उसे सज़ाये मौत देदी गई थी।

जिस कौम के शायर भी दुश्मन के वज़ीफे ख्वार हों उस कौम के लिये ज़िल्लत और रुसवाई है। सुल्तान अय्यूबी ने कहा–

दरबान अन्दर आया और कहा कि ख़लीफा अल आज़िद का क़ासिद आया है। सुल्तान अय्यूबी के माथे के शिकन गहरे हो गये। उसने कहा– "ख़िलाफत के सिवा यह बूढ़ा मुझ से

और क्या मांग सकता है।" दरबान से कहा– "उसे अन्दर भेज दो।"

अलआज़िद का कासिद अन्दर आया और कहा– "ख़लीफ़ा का सलाम पेश करता हूं।"

"वह ख़लीफ़ा नहीं है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "दो महीने हो गए उसे माजूल हुए वह अपने महल में कैद है।"

"माफी चाहता हूं काबिले सद एहतराम अमीर" कासिद ने कहा– "आदत के तेहत मुंह से निकल गया है। अलआज़िद ने बाद अज़ सलाम कहा है कि बीमारी ने बिस्तर पर डाल दिया है उठना मुहाल है। मिलने की ख़्वाहिश है अगर अमीरे मोहतरम तशरीफ़ ला सकें तो एहसान होगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने बेक़रारी से अपनी रान पर हाथ मारा और कहा– "वह मुझे बुला रहा है क्योंकि वह अभी तक अपने आप को ख़लीफ़ा समझता है।"

"नहीं अमीरे मिस्र" कासिद ने कहा– "उन की हालत बहुत ख़राब है। महल के तबीब ने ख़तरे का इज़हार किया है। यह उनका पुराना मर्ज़ है जो ग़म और गुस्से में तेज़ हो जाता है, अब तो वह उठने से माजूर हो गए हैं।" कासिद ने ज़रा झिजक कर कहा "उन्हों ने यह भी कहा है कि आप अकेले तशरीफ़ लायें। राज़ की दोचार बातें हैं जो किसी दुसरे के सामने नहीं कही जा सकतीं।"

"उन्हें बाद अज़ सलाम कहना सलाहुद्दीन अय्यूबी राज़ की सब बातें जानता है" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अब राज़ की बातें ख़ुदा से कहना। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे।"

कासिद मायूस होकर चला गया सुल्तान अय्यूबी ने दरबान को बुलाकर कहा कि तबीब को बुलाओ, उसने अली बिन सुफ़ियान और बहाउद्दीन शद्दाद से कहा– "उसने मुझे अकेला आने को कहा है। क्या इसमें कोई चाल नहीं? क्या मेरा ख़दशा गलत है कि मुझे महल में बुलाकर मेरा काम तमाम करना चाहता है? उसे मुझ पर ओछा वार करना चाहिए। उसे हक हासिल है।

"आप ने अच्छा किया नहीं गये" शद्दाद ने कहा और अली बिन सुफ़ियान ने ताईद की।

तबीब आ गया तो सुल्तान अय्युबी ने उस से कहा– "आप अलआज़िद के पास चले जाएं। मैं जानता हूं वह बहुत मुद्दत से बीमार है। मालूम होता है उसका तबीब मायूस होगया है। आप जाकर देखें और उसका इलाज करें, यह भी हो सकता है कि वह बीमार न हो, अगर ऐसा है तो मुझे बताएं।"

❖

साबिक़ ख़लीफ़ा अलआज़िद को उसी महल में रहने की इजाज़त दे दी गई थी जो उसकी ख़िलाफ़त की गद्दी थी। उस महल को उसने जन्नत बना रखा था। हरम देस देस की खूबसूरत औरतों से पुर रौनक था। लौंडियों का हुजूम अलग था। सैकड़ों मुहाफ़िज़ों का दस्ता मुस्तइद रहता था। फौजी कमाण्डर हाज़िरी में खड़े रहते थे। सुल्तान अय्यूबी के लाये हुए इन्क़लाब ने उस महल की दुन्या ही बदल डाली थी। ख़लीफ़ा अब ख़लीफ़ा नहीं था। महल में ऐशो इशरत का तमाम सामान ज्यों का त्यों रहने दिया गया, फौजी कमाण्डर और

13
1

मुहाफ़िज दस्ते को वहां से हटा दिया गया था। फौज का एक दस्ता अब भी वहां नज़र आता था मगर यह अलआज़िद का मुहाफ़िज नहीं पहरेदार था खिलाफ़त का महल चूंकि साजिशों का मरकज़ था इसलिये अब यहां पहरा लगा दिया गया था। अलआज़िद अब अपने महल में कैदी था। वह बूढ़ा था और दिल के मर्ज़ का मरीज़ था। खिलाफत छिन जाने का ग़म, बुढ़ापा, शराब और ऐशो इशरत ने उसे बिस्तर पर डाल दिया था।

चन्द दिनों में वह लाश की मानिन्द हो गया था। उसकी तीमारदारी के लिये दो अधेड़ उम्र औरतों और एक खादिम उसके कमरे में मौजूद था। अलआज़िद आँख खोलता उन्हें देखता और आँखें बन्द कर लेता था। महल का तबीब उसे दवाई पिला गया था। दो जवान लड़कियां कमरे में आई। यह अलआज़िद के हरम की रौनक़ थी। उनमें से एक ने खलीफा का हाथ अपने हाथ में लिया और उस पर झुक कर सेहत का हाल पूछा। दूसरी ने अलआज़िद का चेहरा दोनो हाथों में थाम कर उसे सेहतयाबी की दुआ दी। दोनों लड़कियों ने एक दूसरे की आँखों में देखा और एक ने कहा–" आप आराम फरमाएँ, हम आप को बेआराम नही करेंगे।" दूसरी ने कहा–" हम हर वक़्त साथ वाले कमरे में मौजूद रहती हैं। बुला लिया करें" और दोनो कमरे से निकल गई।

अलआज़िद ने कराहकर लम्बी आह भरी और अपने पास खड़ी अधेड़ उम्र औरतों से कहा–" यह दोनों लड़कियां मेरी तीमारदारी के लिये नही आई थी। यह देखने आई थीं कि मैं कब मर रहा हूँ। मैं जानता हूँ उन्होंने अपनी दोस्तियां लगा रखी हैं। यह गिद्ध हैं मेरे मरने का इन्तिज़ार कर रही हैं। उनकी नज़र मेरे माल और दौलत पर है। तुम तीनों के सिवा यहां मेरा हमदर्द कोन है ? कोई नहीं, कोई भी नहीं, फातमी खिलाफत के नारे लगाने वाले कहां गये।" उसने दिल पर हाथ रख लिया और करवट बदल ली, वह तकलीफ में था।

इतने में कासिद कमरे में आया और कहा–" अमीरे मिस्र ने आने से इन्कार कर दिया है।"

" ओह! बदनसीब सलाहुद्दीन! अलआज़िद ने कराहने के लहजे में कहा–" मेरे मरने से पहले एक बार तो आ जाता–" सदमें ने उसकी तकलीफ में इज़ाफा कर दिया। उसने नहीफ़ आवाज़ मे रुक रुक कर कहा–"अब तो मेरी लोंडियां भी मेरे बुलाने पर नहीं आतीं, अमीरे मिस्र क्यों आयेगा.......... मुझे गुनाहों की सज़ा मिल रही है। मेरे खून के रिश्ते भी टूट गये हैं। उनमे से भी कोई नही आया। वह मेरे जनाज़े पर आयेंगे। और महल में जो हाथ लगेगा उठा कर ले जायेंगे।"

वह कुछ देर कराहता रहा, दोनों तीमारदार औरतें परेशानी के हालत में उसकी बातें सुनती रहीं। उनके पास तसल्ली और हौसला अफज़ाई के लिये भी जैसे कोई अल्फाज़ नही रहे थे। उनके चेहरों पर खौफ सा तारी था जैसे वह खुदा के इस कहर से डर रही थीं जो बादशाह को गदा और अमीर को फकीर बना देता है।

दोनों ने चौंक कर दरवाज़ें की तरफ देखा एक सफेद रेश बुजुर्ग खड़ा था, वह ज़रा रुक कर अन्दर आया और अलआज़िद की नब्ज़ पर हाथ रख कर कहा–" अस्सलामो अलैकुम मैं अमीरे मिस्र का तबीबे खास हूँ। उन्हों ने मुझे अप के इलाज के लिये भेजा है।"

"क्या अमीरे मिस्र में इतनी सी भी मरव्वत नही रही कि आके मुझे देख जाता?" अलआज़िद ने कहा—" मेरे बुलाने पर भी नही आया।"

"उसके मुतअल्लिक मैं कुछ नही कह सकता"तबीब ने कहा—" उन्हों ने मुझे आप के लिये भेजा है। मैं यह कहने की जुर्रत ज़रूर करूंगरा कि इतने बड़े वाकिये के बाद जिस में बाकायदा जंग हुई और हजारों जानें ज़ाया हो गई। अमीरे मिस्र शायद यहां नही आएंगे। उन्हे आप की सेहत का फिक्र ज़रूर है। ऐसा न होता तो वह मुझे आप के इलाज का हुक्म न देते, इस हालत में आप ऐसी कोई बात ज़ेहन में न लायें जो आप के दिल को तकलीफ देती है, वर्ना इलाज नही हो सकेगा।"

"मेरा इलाज हो चुका है"— अलआज़िद ने कहा—" मेरा एक पैग़ाम गौर से सुन लो। सलाहुद्दीन को लफज़ ब लफज़ पहुंचा देना । मेरी नबज़ से हाथ हटा लो। मैं अब दुनिया की हिकमत और तुम्हारी दवाईयों से बेनियाज़ हो चुका हूँ। सुनो तबीब! सलाहुद्दीन से कहना कि मैं तुम्हारा दुश्मन न था। मैं तुम्हारे दुश्मनों के जाल में आ गया था। यह बदकिसमती मेरी है या सलाहुद्दीन की कि मैं अपने गुनाहों का एतराफ इस वक़्त कर रहा हूँ जब मैं एक घड़ी का मेहमान हूँ। सलाहुद्दीन से कहना कि मेरे दिल मे हमेशा तुम्हारी मुहब्बत रही है और तुम्हारी मोहब्बत को ही दिल में लिये दुनिया से रुखसत हो रहा हूँ। मेरा जुर्म यह है कि मै ने ज़रो जवाहरात और हुक्मरानी की मुहब्बत भी अपने दिल में पैदा कर ली जो इसलाम के एहतराम पर ग़ालिब आ गई, आज सब नशे उतर गये हैं। वह लोग जो मेरे पावं में बैठा करते थे, वह बेगाने हो गये हैं। वह लौंडियां भी मेरे मरने की मुन्तज़िर हैं। जो मेरे इशारों पर नाचा करती थीं। मेरे दरबार में ऊरयां रक़्स करने वाली लड़कियां मुझे नफरत की निगाहों से देखती हैं। इनसान की सबसे बड़ी ग़लती यह है कि इन्सानों की बातों में आकर खुदा को भूल जाता है। और यह भूल ही जाता है कि उसे खुदा के पास जाना है। जहां कोई इंसान किसी इंसान के गुनाहों का बोझ नहीं उठा सकता । उन कम्बखतों ने मुझे खुदा बना डाला मगर आज जब हकीकी खुदा का बुलावा आया है तो मुझ पर हकीक़त रौशन हुई है।'

मैंने इसको निजात का ज़रिया समझा है कि अपने गुनाहों का एअतराफ कर लूं और सलाहुद्दीन को ऐसे खतरों से खबरदार करता जाउं जिन से वह शायद वाकिफ़ नही । उसे कहना कि मेरे मुहाफिज़ दस्ते का सलारा रजब जिन्दा है और सूडान में कहीं रूपोश है। वह मुझे बता कर गया था कि फातमी खिलाफत की बहाली के लिये वह सूडानियों और क़ाबिले एतमाद मिस्रियों की फौज तैय्यार करेगो और वह सलीबीयों से जंगी और माली मदद लेगा । सलाहुद्दीन से कहना कि अपने मुहाफिज़ दस्तों पर नज़र रखे अकेला बाहर न निकले, रात को ज़्यादा मोहतात रहे। क्योंकि रजब ने फिदाईयों के साथ अय्यूबी के क़त्ल का मंसूबा बना लिया है। उस से कहना कि मिस्र तुम्हारे लिये आग उगलने वाला पहाड़ है, तुम जिन्हें दोस्त समझते हो वह भी तुम्हारे दुश्मन हैं, और वह जो तुम्हारी आवाज़ के साथ आवाज़ मिलाकर वसीअ सलतनते इसलामिया के नारे लगाते है। उनमें भी सलीबीयों के पाले हुये सांप मौजूद हैं।

" तुम्हारे जंगी शोबे में फैजूल फातमी बड़ा हाकिम है मगर तुम नही जानते कि वह तुम्हारे मुखालिफीन में से है। वह रजब का दस्ते रास्त है । तुम्हारी फौज में तुर्क शामी और दूसरे अरबी नस्ल के जो कमाण्डर और सिपाही हैं उनके सिवा किसी पर भरोसा न करना। ये सब तुम्हारे वफादार और इसलाम के मुहाफिज़ हैं मिस्री फौजियों में काबिले एतमाद भी हैं। और बे वफा भी। तुम नही जानते कि तुम ने जब सूडानी लशरकर पर फैसला कुन हमला किया था तो हमलावर दस्तों में दो दस्तों के कमाण्डर तुम्हारी चाल को नाकाम करने के लिये तुम्हारी हिदायत और एहकाम पर ग़लत अमल करना चाहते थे लेकिन तुम्हारे तुर्क और अरब सिपाहियों में जोश और जज़बा ऐसा था कि अपने कमाण्डरों के हुक्म का इन्तिज़ार किये बग़ैर वह सूडानीयों पर कहर बनकर टूटे , वरना यह दो कमाण्डर जंग का पांसा पलट कर तुम्हें नाकाम कर देते ।"

अलआज़िद मरी मरी आवाज़ में रूक रूक कर बोलता रहा। तबीब ने उसे एक दो मरतबा बोलने से रोका उसने हाथ के इशारे से उसे चुप करा दिया । उसके चेहरे पर पसीना इस तरह आ गया था जैसे किसी ने पानी छिड़क दिया हो। दोनों औरतों ने उसका पसीना पोंछा लेकिन पसीना चशमे की तरह फूटता आ रहा था। उस ने चन्द एक और इन्तिज़ामिया और फौज के हुक्काम के नाम बताये जो सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ साज़िशों में मसरूफ थे। उन में सब से ज़्याद खतरनाक फिदाई थे जिन का पेशा पुर इसरार क़त्ल था। वह इस फन के माहिर थे। अलआज़िद ने मिस्र में सलीबीयों के असर व रसूख की भी तफसील सुनाई और कहा–" उन्हें मुसलमान न समझना, यह ईमान फरोख़्त कर चुके है। सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहना कि अल्लाह तुम्हें कामयाब करे और सुर्खुरू करें लेकिन यह याद रखना कि एक तो वह लोग हैं जो चोरी छुपे तुम्हें धोखा दे रहे हैं और दूसरे वह लोग हैं जो खुशामद से तुम्हें खुदा के बाद का दर्जा दे देंगे। यह उन लोगों से ज़्यादा खतरनाक हैं जो चोरी छिपे तुम्हें धोखा देते हैं। उससे कहना कि दुश्मनों को ज़ेर करके जब तुम इतमिनान से हुकुमत की गद्दी पर बैठना तो मेरी तरह दोनों जहां का बादशाह न बन जाना, सदा बादशाी अल्लाह की है। इसी मिस्र में फिरऔनों के खण्डर देख लो, मेरा अंजाम देख लो, अपने आप को इस अंजाम से बचाना।"

उसकी ज़बान लड़खड़ाने लगी । उसके चेहरे पर जहां करब का तास्सुर था वहां सुकून सा भी नज़र आने लगा। उस ने बोलने की कोशिश की मगर हलक़ से खर्राटे से निकले। उस का सर एक तरफ लुढ़क गया और वह हमेशा के लिये खामोश हो गया । यह वाकिया सितम्बर 1171 का है।

तबीब ने सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबीको इत्तिला भेजवाई । महल में अलआज़िद की मौत की ख़बर फैल गई, महल के किसी गोशें से रोना तो दूर की बात है हल्की सी सिसकी भी न सुनाई दी। सिर्फ उन दो औरतों के आसू बह रहे थे जो आखरी वक्त उसके पास थी। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी चन्द एक ऐहकाम के साथ फौरन महल में आ गया उसने देखाा कि बरामदों और गुलाम गरदिशों में कुछ सरगर्मी सी थी। उसे शक हुआ उसने मुहाफिज़

दस्ते के कमाण्डर को बुलाकर हुक्म दिया कि महल के तमाम कमरों में घूम जाओ। तमाम मर्दो औरतों और लड़कियों को कमरों से निकाल कर बाहर सेहन में बिठा दो और किसी को बाहर न जाने दो। किसी को कैसी ही ज़रूरत क्यों न हो। असतबल से कोई घोड़ा न खोले। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबीने महल पर कब्ज़ा करने का हुक्म दे दिया। उस ने अजीब चीज़ यह देखी कि अलआज़िद जो अपने आप को बादशाह बनाये बैठा था और जिसने औरत और शराब को ही जिन्दगी जाना था। उसकी मय्यत पर रोने वाला कोई न था। महल मर्दो और औरतों से भरा पड़ा था मगर किसी के चेहरे पर उदासी का तासुर भी नही था।

तबीब सलाहुद्दीन अय्यूबी को अलग ले गया और उसे अलआज़िद की आख़री बातें सुनाई। उसने अपनी राये इन अल्फाज़ में दी कि आप को आख़री वक़्त उसके बुलावे पर आ जाना चाहिये था। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे बताया कि वह इस खदशे के पेशे नज़र नही आया कि उस शख्स का कुछ भरोसा न था और दूसरी वजह यह थी कि उसे ईमान फरोशों से नफरत थी मगर अब तबीब की ज़बानी अलआज़िद का आख़री पैग़ाम सुन कर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को सख्त पछतावा होने लगा। वह बहुत बेचैन हो गया और उसने कहा–" अगर मैं आता तो उसके मुंह से कुछ और राज़ की बातें निकलवा लेता, वह कोई राज़ सीने में न ले गया हो।"

मुसतन्द मोअर्रिखो ने अपनी तहरीरों मे लिखा हैकि अलआज़िद बे–शक अय्याश और गुमराह था, उसने सुलतान अय्यूबी के खिलाफ साज़िशों की पुश्त पनाही भी की लेकिन उसके दिल में सुलतान अय्यूबी की मुहब्बत बहुत थी। दो मोअर्रिखों ने यह भी लिखा है कि अगर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी अलआज़िद के बुलावे पर चला जात तो अलआज़िद उसे और भी बहुत सी बातें बताता। बहरहाल तारीख़ साबित करती है कि अलआज़िद के बुलावे में कोई फरेब नहीं था। उसने अपनी रूह की निजात के लिये और सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मुहब्बत के लिये गुनाहों की बख़्शिश मांगने का यह तरीक़ा इखतियार किया था बहुत मुद्दत तक सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी तास्सुफ में रहा कि वह आख़री वक़्त अलआज़िद की बातें न सुन सका। बाद में उन तमाम अफराद के खिलाफ इल्ज़ामात सही साबित हुये थे जिनकी अलआज़िद ने निशान देही की थी।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन तमाम अफराद के नाम अली बिन सुफियान को देकर हुक्म दिया कि उन सबके साथ अपने जांसूसों और सुरागरसां लगा दो लेकिन किसी को मुकम्मल शहादत और सबुत के बग़ैर गिरफतार न करना। ऐसे तरीक़े इख्तियार करो कि वह ऐन मौक़े पर पकड़े जायें कहीं ऐसा न हो कि किसी के साथ बे–इन्साफी हो जाये। यह एहकाम देकर उस ने तजहीज़ व तदफीन के इन्तिज़ामात कराये। उसी शाम अलआज़िद को आम क़बरिस्तान में दफन कर दिय गया जहां थोड़े से अर्से बाद कब्र का नाम व निशान मिट गया। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने महल की तलाशी ली वहां से इस क़दर सोना, जवाहरात और बेश क़ीमत तहाएफ निकले कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी हैरान रह गया। उस ने हरम की तमाम औरतों और जवान लड़कियों को अली बिन सुफियान के हवाले कर दिया और

हुक्म दिया कि मालूम करो कि कौन कहां की रहने वाली है। उनमें से जो अपने घरों को जाना चाहती हैं उन्हें अपनी निगरानी में घरों तक पहुंचा दो और उन में जो ग़ैर मुस्लिम और फिरंगी हैं उनके मुतअल्लिक पूरी तरह छान बीन करके मालूम करो कि वह कहां से आई थीं और उनमे मुश्तबा कौन कौन सी हैं। मुशतबा को आज़ाद न किया जाये बल्कि उस से मालूमात हासिल की जायें।

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने महल से बरामद होने वाला माल व दौलत उन तालीमी इदारों और हस्पतालों में तकसीम कर दिया जो उस ने मिस्र में खोले थे।

❖

अलआज़िद ने मरने से पहले अपने मुहाफिज़ दस्ते के सालार रजब के मुतअल्लिक बताया था कि वह सूडान में रूपोश है जहां वह सलीबीयों से भी मदद ले रहा है। अली बिन सुफियान ने छे ऐसे जांबाज़ मुन्तखब किये जो लड़ाका जासूस थे उनका कमाण्डर रजब को पहचानता था। उन्हें ताजिरों के भेस में सूडान रवाना कर दिया गया। उन्हें यह हुक्म दिया गया था कि मुमकिन हो सके तो उसे ज़िन्दा पकड़ लायें वर्ना वहीं कतल कर दें।

जिस वक्त यह पार्टी सूडान के लिये रवाना हुई उस वक़्त रजब सूडान में नही बल्कि फलसतीन के एक मशहूर और मज़बूत किले शोबक में था। फलसतीन पर सलीबियों का कब्ज़ा था उन्हों ने उस खित्ते को अड्डा बना लिया था। मुसलमानों पर उन्होने अरसाए हयात तंग कर रखा था। मुसलमान वहां से कुन्बा दर कुन्बा भाग रहे थे। वहां किसी मुसलमान की इज़्ज़त महफूज़ नही थी। सलीबी डाकुओं की सूरत भी इख्तियार करते जा रहे थे वह मुसलमानों के काफ़िलों को लूट कर फ़लस्तीन में आ जाते थे। लड़कियों को भी अग़वा कर लाते थे। यही वजह थी कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी फलस्तीन को तहे तेग़ करना चाहता था ताकि मुसलमानों के जान व माल और आबरू को महफूज़ किया जा सके। उस से भी बड़ी वजह यह थी कि किब्ला अव्वल पर भी सलीबी काबिज़ थे मगर मुसलमान उमरा का यह आलम था कि वह सलीबीयों के साथ दोसती करते फिरते थे। रजब भी एक मुसलमान फौजी सरबराह था?, वह सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ मदद हासिल करने के लिये सलीबीयों के पास पहुंच गया था।

उसके ऐजाज़ में किले मे रक़्स की महफिल गर्म की गई थी। रजब ने यह देखने की ज़रूरत ही महसूस न की कि बरहना नाचने वालियों में ज़्यादा तर तादाद मुसलमान लड़कियों की थी जिन्हें सलीबीयों ने कमसिनी में अग़वा कर लिया और रक़्स की तरबियत दी थी अपनी कौम की बेटियों को वह काफिरों के कब्ज़े मे नाचता देखता रहा और उनके हाथों शराब पीता रहा था उसके साथ दो मसुंलमान कमाण्डर भी थे। रात भर वह शराब और रक़्स में बदमस्त रहे और सुबह सलीबीयों के साथ बात चीत के लिये बैठे। उस इजलास में सलीबीयों का मशहूर बादशाह गाईलो ज़ीनान कोनारड मौजूद था उनके अलावा चन्द एक सलीबी फौज के कमाण्डर भी थे रात को रजब उन्हे बता चुका था कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सूडानीयों के हब्शी कबीले के माबूद को मिसमार करके उनके पुरोहित को हलाक करवा दिया है। उस

पर सुडानियों ने हमला किया जिसे सुलान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पस्पा कर दिया और उस ने खलीफा अलआज़िद की खिलाफत ख़त्म करके खिलाफते अब्बासिया का एलान कर दिया है मगर मिस्र में कोई खलीफा नही रहेगा। रजब ने उन्हे बताया कि इसका मतलब यह है कि सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र का खुद मुखतार हुकमरान बनना चाहता है। रजब ने सलीबीयो को इस इजलास मे बताया कि वह उनसे जंगी और माली मदद लेने आया है और वह सूडान जाकर फौज तैय्यार करेगा। मिस्र में बद नज़मी और अबतरी फैलाने के लिये भी उस ने सलीबियों से मदद मांगी।

" फौरी तौर पर दो पहलू सामने आते हैं जिन पर हमें तवज्जो मरकूज़ करनी चाहिये"– कोनारड ने कहा–" जिस हब्शी कबीले के मज़हब मे सलाहुद्दीन अय्यूबी ने ज़ालिमाना दखल अंदाजी की है उसे इन्तिकाम के लिये भड़काया जाये। उसके साथ सारे सूडान में जितने भी अकीदे और मज़हब हैं उनके पैरोकारों को सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ यह कह कर मुसल्लह किया जाये कि यह मुसलमान बादशाह लोगों की इबादत गाहें और उनके देवताओं के बुत तौड़ता फिर रहा है। पेशतर इसके कि वह किसी और कबीले पर हमला आवर हो उसे मिस्र में ही खत्म कर दिया जाये। इस तरह लोगों के मज़हबी जज़्बात भड़काकर उन्हें मिस्र पर हमले के लिये आसानी से तैय्यार किया जा सकता है।"

"हम मिस्र के मुसलमानों तक को सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ खड़ा कर सकते हैं।"– एक सलीबी कमाण्डर ने कहा–" अगर मोहतरम रजब बूरा न मानें तो मैं उन्ही के फाइदे की बात कर दूं। मुसलमानों में मज़हबी जुनून पैदा करके मुसलमानो को मुसलमान के हाथों मरवा देना कोई मुश्किल नहीं। जिस तरह हमारे मजहब में बाज़ पादर्यों ने अपने आप को गिरजों का हाकिम बानाकर अपना वजूद इंसान और खुदा के दरमियान खड़ा कर दिया है। बिलकुल इसी तरह इसलाम में भी बाज़ ईमामों ने मस्जिदों पर कब्ज़ा करके अपने आप को खुदा का ऐजेन्ट बना लिया है। हमारे पास दौलत है जिस के ज़ौर पर हम मुसलमान मोलवी तैय्यार करके मिस्र की मस्जिदों में बिठा सकते हैं। हमारे पास ईसाई भी मौजूद है जो इसलाम और कुरआन से बड़ी अच्छी तरह वाकिफ है। उन्हें हम मुसलमान इमामों के रूप में इस्तेमाल करेंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ किसी मस्जिद में कोई बात कहने की जरूरत नहीं। उन मोलवियों की ज़बान से हम मुसलमानों में एसी तोहम परस्ती पैदा करेंगे कि उन्के दिलों में सलाहुद्दीन अय्यूबी की वह अज़मत मिट जायगी। जो उसने पैदा कर रखी है।"

"यह मुहिम फौरन शुरू कर दी जाए।" रजब ने कहा– "सुल्तान अय्यूबी ने मिस्र में मदरसे खोल दिये हैं जहां बच्चों और नौजवानों को मज़हब के सही रुख़ से रोशनास किया जा रहा है। उससे पहले वहां कोई ऐसा मदरसा नहीं था। लोग मस्जिदों में खुत्बे सुनते थे जिनमें ख़लीफ़ा की तारीफ़ ज़्यादा होती थी। सलाहुद्दीन ने खुत्बों से ख़लीफाओं का ज़िक्र खत्म करा दिया है अगर लोगों में इल्म की रौशनी और ज़ेहनी बेदारी पैदा हो गई तो हमारा काम मुश्किल हो जाएगा। आप जानते हैं कि हुकूमत के इस्तेहकाम के लिए लोगों को ज़ेहनी

तौर पर पसमान्दह और जिस्मानी तौर पर मोहताज रखना लाज़मी है।"

"मोहतरम रजब!" एक सलीबी कमाण्डर मुस्कुरा कर बोला– "आप को अपने मुल्क के मुतअल्लिक भी इल्म नहीं कि वहां दर परदा क्या हो रहा है। हमने यह मुहिम उसी रोज शुरू कर दी थी जिस दिन सलाहुद्दीन ने हमें बहरे रोम में शिकस्त दी थी। हम खुली तख़रीब कारी के काइल नहीं। हम ज़ेहनों में तख़रीब कारी किया करते हैं, ज़रा गौर करें मोहतरम! दो साल पहले काहिरा में कितने कहवा ख़ाने थे और अब कितने हैं? क्या उन्में बे पनाह इज़ाफा नहीं हो गया? क्या दौलत मन्द मुसलमान घरानों में लड़कों और लड़कियों में काबिले ऐतराज़ इश्क शुरू नही हो गए? हमने वहां जो इसाई लड़कियां भेजी थीं वह मुसलमान लड़कियों के रूप में मुसलमान मर्दों के दरमियान रकाबत पैदा करके खून ख़राबे करा चुकी है। काहिरा में हमने निहायत दिलकश जुआबाज़ी राएज कर दी है। दो मस्जिदों में हमारे भेजे हुए आदमी इमाम हैं। वह निहायत खूबी से इस्लाम की शक्ल व सूरत बिगाड़ रहे हैं, वह जिहाद के माने बिगाड़ रहे हैं। हमने वहां आलिमों और फ़ाज़िलों के भेस में भी कुछ आदमी भेज रखे हैं जो मुसलमानों को जंग व जदल के खिलाफ़ तैय्यार कर रहे हैं। वह दोस्त और दुशमन का तसव्वुर भी बदल रहे हैं! मुझे ज़ाती तौर पर यह तवक्को है कि मुसलमान चन्द बरसों तक एसी ज़ेहनी कैफ़ियत में दाखिल हो जाऐंगे जहां वह अपने आप को बड़े फख़ से मुसलमान कहेंगे मगर उनके ज़ेहनों पर उनकी तहज़ीब व तमद्दुन पर सलीब का असर होगा।"

"सलाहुद्दीन का जासूसी का निज़ाम बहुत होशियार है।" रजब ने कहा– "अगर उसके शोबऐ जासूसी और सुरागरसानी के सरबराह अली बिन सुफियान को कत्ल कर दिया जाए तो सलाहुद्दीन अन्धा और बहरा हो जाए।"

"इसका मतलब यह है कि आप खुद कुछ भी नहीं कर सकते।" कोनारड ने कहा– "आप एक हाकिम को कत्ल भी नहीं करा सकते। अगर आप अकल के लिहाज़ से इतने कमज़ोर हैं तो आप हमारे आदमियों को भी पकड़वा कर मरवाऐंगे और हमारी दौलत भी बरबाद करेंगे।"

"यह काम मैं खुद करा लूंगा।" रजब ने कहा– "मैंने फिदाईयों से बात कर ली हैं वह तो सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल के लिये भी तैय्यार हैं।"

❖

"आप सूडान की तरफ़ से मिस्र की सरहद पर बदअमनी पैदा करते रहें।" कोनारड ने कहा– "मुल्क के अन्दर हम ज़ेहनी और दीगर अकसाम की तख़रीब कारी करते रहेंगे। इधर अरब में कई एक मुसलमान उमरा हमारे कब्ज़े में आगए हैं उनमें से बाज़ को हमने इस कदर बेबस कर दिया है कि उनसे हम जिज़्या वसूल करते हैं। हम छोटे छोटे हमले करके उनकी थोड़ी थोड़ी ज़मीन पर कब्ज़ा करते चले जा रहे हैं। आप सूडान की तरफ़ से यही चाल चलें। मुसलमानों में सिर्फ़ दो शख़्स रह गये हैं, नूरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी, उनके ख़त्म होते ही इस्लामी दुनिया का सूरज गुरूब हो जाएगा बशर्ते कि आप लोग साबित कदम रहें। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मिस्र आप का होगा।"

इस किस्म की बुन्यादी बातों के बाद बहुत देर तक उनमें तरीके कार और लाहे अमल पर

बहस होती रही। आखिरकार रजब को तीन बड़ी ही दिलकश और बेहद चालाक लड़कियां और सोने के हज़ारों सिक्के दिये गये। उसे काहिरा के दो आदमियों के पते भी दिये गए। उनमें से किसी एक तक उन लड़कियों को खुफिया तरीक़े से पहुंचाना था। उन दो आदमियों में से एक सुल्तान अय्यूबी के जंगी शोबे का एक हाकिम फ़ैजुल फातमी था। रजब को यह नहीं बताया गया कि लड़कियों को किस तरह इस्तेमाल किया जाएगा। उसे इतना ही बताया गया कि फैजुल फातमी के साथ उन का राब्ता है। वह लड़कियों का इस्तेमाल जानता है और लड़कियों को भी मालूम है कि उन्हें क्या करना है। यह तीनों अरब और मिस्र की ज़बान रवानी से बोल सकती थीं।

उसी रोज़ तीनों लड़कियां और दस मुहाफिज़ रजब के साथ करके उसे रवाना कर दिया गया। उसे सबसे पहले सूडान के उसी पहाड़ी खित्ते में जाना था जहां लड़की की कुर्बानी दी जाती थी और जहां सुल्तान अय्यूबी के जांबाज़ों ने उम्मे अरारह को हब्शियों से छुड़ा कर पुरोहित को हेलाक किया और फिरऔनों के वक्तों की इमारतें तबाह की थीं। रजब ने सूडानियों की शिकस्त और अलआज़िद की खिलाफत से माजूली के साथ भाग कर उसी जगह पनाह ली और उसी जगह को अपना अड्डा बना लिया था। उसने अपने गिर्द हब्शियों का वह कबीला जमा कर लिया था जिसके पुरोहित को सुल्तान अय्यूबी ने हलाक कराया था। यह लोग अभी तक उस जगह को देवताओं का मसकन कहते थे और पहाड़ियों के अन्दर नहीं जाते थे अन्दर सिर्फ चार बूढ़े हबशी जाते थे। उनमें एक उस कबीले का मज़हबी पेशवा था। उसने अपने आप को मरे हुए पुरोहित का जांनशीन बना लिया था। उस ने तीन आदमी अपने मुहाफिज़ों के तौर पर मुन्तख़ब कर लिये थे जो उसके साथ पहाड़ियों के अन्दर जाते थे। रजब ने उसी छोटे से खित्ते के एक और ढके छुपे गोशे को अपना घर बना लिया था। फरार हो कर वह वहां गया और फिर मिस्र में मुक़ीम किसी सलीबी ऐजेन्ट के साथ फिलिस्तीन चला गया था।

❖

हब्शियों का यह क़बीला जो अंगोक कहलाता था, खौफज़दह था, एक तो उनके देवता की कुरबानी पूरी न हुई, दूसरे उनका पुरोहित मारा गया, तीसरे उनके देवता का बुत और मस्कन ही तबाह कर दिया गया और चौथी मुसीबत यह नाज़िल हुई कि क़बीले के सैकड़ों जवान देवताओं की तौहीन का इन्तक़ाम लेने गये तो उन्हें शिकस्त हुई और ज़्यादा तर मारे गये। उस कबीले के घर घर में मातम हो रहा था। उनमें से बाज़ लोग यह भी सोचने लगे थे कि जिसने उनके देवता का बुत तोड़ा है वह कोई बहुत बड़ा देवता होगा। मरे हुए पुरोहित के जांनशीन ने जब अपने क़बीले का यह हाल देखा तो उसने पहले तो यह कहा कि देवता के मगरमच्छ भूखे हैं, उनके पेट भरो। हब्शियों ने कई एक बकरियां मगरमच्छों के लिये भेज दीं। एक ने तो ऊंट पुरोहित के हवाले कर दिया। यह जानवर कई दिनों तक मगरमच्छों की झील में फेंके जाते रहे मगर क़बीले से खौफ़ कम न हुआ।

एक रात नए पुरोहित ने क़बीले को पहाड़ी जगह से बाहर जमा किया और बताया कि

उसने देवताओं तक रसाई हासिल की है, देवताओं ने यह इशारा दिया है कि चूंकि वक़्त पर लड़की की कुर्बानी नहीं हुई इस लिये क़बीले पर यह मुसीबत नाज़िल हुई है। देवताओं ने कहा है कि अब बयक वक़्त दो लड़कियों की कुर्बानी दी जाए तो मुसीबत टल सकती है वरना देवता सारे क़बीले को चैन नहीं लेने देंगे। पुरोहित ने यह भी कहा कि लड़कियां अंगोक न हों और सूडान की भी न हों। उनको सफेद फाम होना ज़रूरी है। इतना सुन्ना था कि क़बीले के बहुत से दिलेर और निडर आदमी उठ खड़े हुए। उन्हों ने कहा कि वह मिस्र से दो फिरंगी या मुसलमान लड़कियां उठा लाएंगे।

उधर से रजब फलस्तीन से तीन सलीबी लड़कियां दस मुहाफिज़ों के साथ ला रहा था। उसका सफर बहुत लम्बा था और यह सफर ख़तरनाक भी था। वह सुल्तान अय्यूबी की फौज का भगोड़ा और बाग़ी सालार था। उसे मालूम था कि सरहद के साथ साथ सुल्तान अय्यूबी ने गश्ती पहरे का इन्तेज़ाम कर रखा है इसलिए वह अपने क़ाफिले को दूर का चक्कर काट कर ला रहा था। उसके क़ाफिले में तीन ऊंट थे जिन पर पानी, ख़ुराक और सलीबियों का दिया हुआ बहुत सारा सामान लदा हुआ था। बाक़ी सब घोड़ों पर सवार थे। कई दिनो की मुसाफत के बाद वह देवताओं के पहाड़ी मसकन में पहुंच गये। उससे एक ही रोज़ पहले क़बीले के पुरोहित ने कहा था कि वह सफेद फाम और सूडान के बाहर की लड़कियों का इन्तिज़ाम करें। रजब सबसे पहले पुरोहित से मिला। परोहित ने उसके साथ तीन सफेद फाम और बहुत ही हसीन लड़कियां देखीं तो उसकी आंखें चमक उठीं। यह लड़कियां कुर्बानी के लिये मौज़ूं थीं। उसने रजब से लड़कियों के मुताअल्लिक पूछा तो रजब ने उसे बताया कि उन्हें वह खास मकसद के लिये अपने साथ लाया है।

रजब लड़कियों को पहाड़ियों के अन्दर एक ऐसी जगह ले गया जो सर सब्ज़ और खुशनुमा थी और तीन तरफ से पहाड़ियों में घिरी हुई थी। वहां रजब ने खेमें गाड़ दिये थे। लड़कियों को चोरी छुपे मौका महल देखकर काहिरा में उन दो आदमियों के हवाले करना था जिनके अते पते उसे सलीबियों ने दिये थे। लड़कियों के आराम और आसाइश का पूरा इन्तेज़ाम था। रजब ने वहां शराब का भी इन्तिज़ाम कर रखा था। रात उसने सफर से कामयाब लौटने की खुशी में जश्न मनाया था। सलीबी मुहाफिज़ों को भी शराब पिलाई। लड़कियों ने भी पी।

आधी रात के बाद जब मुहाफिज़ और उसके अपने चन्द एक साथी जो पहले ही वहां मौजूद थे सो गए तो रजब एक लड़की को बाजू से पकड़ कर अपने खेमे में ले जाने लगा। लड़की उसकी नीयत भांप गई, उसने उससे कहा-- "मैं तवाइफ नहीं हूं। मैं यहां सलीब का फर्ज़ पूरा करने आई हूं। मैं आपके साथ शराब पी सकती हूं मगर बदी कुबूल नहीं करूंगी।"

रजब ने उसे हंसते हुए अपने खेमें की तरफ घसीटा तो लड़की ने अपना बाजू छुड़ा लिया। रजब ने दस्तदराज़ी की तो लड़की दौड़ कर अपनी साथी लड़कियों के पास चली गई। वह दोनो भी बाहर आगईं। उन्होंने रजब को समझाने की कोशिश की कि वह उन्हें गलत न समझे।

रजब को गुस्सा आगया। उसने कहा– "मैं जानता हूं कि तुम कितनी पाक बाज़ हो। बेहायाई तुम्हारा पेशा है।"

"उस पेशे का इस्तेमाल हम वहां करती हैं जहां अपने फर्ज़ के लिये ज़रूरी होता है" लड़की ने कहा "हम अय्याशी की खातिर अय्याशी नहीं किया करतीं।"

रजब उनकी कोई बात समझना नहीं चाहता था। आख़िर लड़कियों ने उससे कहा– "हमारे साथ दस मुहाफिज़ हैं। वह हमारी हिफ़ाज़त के लिए साथ आए हैं। उन्हें कल वापस चले जाना है अगर हमने उनकी ज़रूरत महसूस की तो हम उन्हें यहां रोक सकती हैं या खुद यहां से जासकती हैं।"

रजब चुप हो गया मगर उसके तेवर बता रहे थे कि वह लड़कियों को बखशेगा नहीं। वह रात गुज़र गई। दूसरे दिन रजब ने फिलिस्तीन से साथ लाए हुए मुहाफ़िजों को रुखसत कर दिया। दिन गुज़र गया। शाम के वक्त रजब लड़कियों के साथ बैठा इधर उधर की बातें कर रहा था कि पुरोहित अपने चार हब्शियों के साथ आगया। उसने सूडानी ज़बान में रजब से कहा– "हमारे देवता हमसे नाराज़ हैं। उन्हों ने दो फिरंगी या मुसलमान लड़कियों की कुर्बानी मांगी है। यह लड़कियां कुर्बानी के लिए मौज़ूं हैं। इनमें से दो लड़कियां हमारे हवाले कर दो।"

रजब चकरा गया। उसने जवाब दिया– "यह लड़कियां कुर्बानी के लिए नहीं हैं, इनसे हमें बहुत काम लेना है और इन्हीं के हाथों हमें तुम्हारे देवता के दुश्मन को मरवाना है।"

"तुम झूठ बोलते हो।" पुरोहित ने कहा– "तुम इन लड़कियों को यहां तफरीह के लिए लाए हो। हम इनमें से दो लड़कियों को कुर्बान करेंगे।"

रजब ने बहुत दलीलें दीं मगर पुरोहित ने किसी एक दलील को भी कुबूल न किया। उसके दिमाग़ पर देवता सवार थे। उस ने उठकर दो लड़कियों के सरों पर बारी बारी हाथ रखे और कहा– " यह दोनों देवता के लिए हैं, अंगोक की निजात इन दो लड़कियों के हाथ में है।" यह कह कर वह चला गया, रुक कर रजब से कहा– "लड़कियों को साथ लेकर भागने की कोशिश न करना, तुम जानते हो कि हम तुम्हें फौरन ढूंढ लेंगे।

लड़कियां सूडान की ज़बान नहीं समझतीं थीं। हब्शी पुरोहित ने उनके सरों पर हाथ रखा। रजब को परेशान देखा तो उन्होंने रजब से पूछा कि यह हब्शी क्या कह रहा था। रजब ने उन्हें साफ साफ बता दिया कि वह उन्हें कुर्बानी के लिए मांगता है। लड़कियों के पूछने पर उसने बताया कि वह तुम्हारे सर काट कर खुश्क होने के लिए रख देंगे और जिस्म उस झील में फेंक देंगे जहां मगरमच्छ जिस्मों को खा जाएंगे। लड़कियों का रंग फ़क़ हो गया। उन्हों ने रजब से पूछा कि उसने उन्हें बचाने के लिए क्या सोंचा है। रज़ब ने जवाब दिया– "मैंने उसे समझाने के लिए सारी दलीलें दे डाली हैं मगर उसने एक भी नहीं सुनी। मैं उन लोगों के रहमो करम पर हूं। मैं तो उन्हें अपने साथ मिलाना चाहता हूं। यह मेरी फौज में शामिल होने के लिए तैय्यार हैं लेकिन अपने अक़ीदे के इतने पक्के हैं कि पहले देवताओं को खुश करेंगे फिर मेरी बात सुनेगे।"

रजब की बातों और अंदाज़ से लड़कियों को शक हो गया कि वह उन्हें बचा नहीं सकेगा या उन्हें खुश करने के लिए बचाने की कोशिश नहीं करेगा। उन्हों ने गुज़िश्ता रात रजब की नियत की एक झलक देख भी ली थी। इससे वह उससे मायूस हो गई थीं। रजब ने उन्हें रस्मी तौर पर भी तसल्ली न दी कि वह उन्हें बचा लेगा। लड़कियां खेमे में चली गई। उन्होंने सूरते हाल पर गौर किया और इस नतीजे पर पहुंचीं कि वह यहां रजब की अय्याशी का ज़जिया बनने या हब्शियों के देवता की भेंट चढ़ने के लिए नहीं आई। वह बेमकसद मौत नहीं मरना चाहती थीं। उन्होंने वहां से फरार होने का इरादा किया। फरार होकर फिलिस्तन तक खैरियत से पहुंचना आसान काम न थ मगर कोई चाराकार भी न था। यह लड़कियां सिर्फ खूबसूरत और दिलकश ही नहीं थीं। घुड़ सवारी और सिपाहगरी की भी इन्हें तरबियत दी गई थी ताकि ज़रूरत पड़े तो अपना बचाव खुद कर सकें। उन्हों ने फैसला कर लिया कि वह यहां से भाग कर फिलिस्तीन चली जायेंगी।

वह रात खैरियत से गुज़र गई। दूसरे दिन लड़कियों ने अच्छी तरह देखा कि रात को घोड़े कहां बंधे होते हैं और वहां से निकलने का रास्ता कौन सा है। हब्शी पुरोहित दिन के वक़्त भी अया और रजब के साथ बातें करके चला गया। लड़कियों ने उससे पूछा कि वह क्या कह गया है? रजब ने उन्हें बताया कि वह कल रात तुम्हें यहां से ले जाऐंगे। वह मुझे धमकी दे गया है कि मैं ने उन्हें रोकने की कोशिश की तो वह मुझे क़त्ल करके मगरमच्छों की झील में फेंक देंगे। लड़कियों ने उसे यह नहीं बताया कि वह फरार होने का फैसला कर चुकी हैं। क्योंकि उन्हें रजब की नियत पर शक हो गया था। वह गैर मामूली तौर पर ज़हीन लड़कियां थीं। उन्हों ने रजब के साथ ऐसी बातें कीं और ऐसी बातें उसके मुंह से कहलवाई जिनसे पता चलता था कि जैसे वह उन्हें बचाने की बजाए हब्शियों को खुश करना चाहता है ताकि वह उसे वहीं छुपाए रखें और उसे सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ फौज तैय्यार करने में मदद दें। लड़कियों को यह शक भी हुआ कि रजब उन्हें ऐसी कीमत के एवज़ बचाने की कोशिश करेगा जो वह उसे नहीं देना चाहती थीं।

सारा दिन इसी शशो पंज में गुज़र गया। रजब को शक न हुआ कि लड़कियां भाग जाऐंगी। उसे उस वक़्त भी शक न हुआ जब लड़कियों ने उससे कहा कि ऐसे जहन्नम नुमा सेहरा में ऐसा सर सब्ज़ खित्ता कुदरत का अजूबा है। आओ ज़रा इसकी सैर करा दो। रजब उन्हें घुमाने फिराने लगा। आगे वह भयानक झील आ गई जिसके किनारे पर पांच छः मगरमच्छ बैठे थे। झील का पानी ग़लीज़ और बदबूदार था। एक लड़की ने कहा कि यूं मालूम होता है कि जैसे पहाड़ी के अन्दर चश्मा है। सबने जब पहाड़ी के अंदर देखा तो एक लड़की की चीख निकल गई। पानी पहाड़ी के अंदर एक वसी ग़ार बना कर चला गया था। रजब ने कहा– "यह हैं वह मगरमच्छ जो यहां के मुजरिमों को और कुर्बान की हुई लड़कियों के जिस्मों को खाते हैं।" ऐसा हौलनाक मंज़र देख कर लड़कियों के दिलों में फरार का इरादा और ज़्यादा पुख़्ता होगया। उन्हों ने सैर के बहाने फरार का रास्ता अच्छी तरह देख लिया और ऐसी नरम ज़मीन देख ली जिस पर घोड़ों के कदमों की आवाज़ पैदा ना हो। उनकी सैर की ख़्वाहिश के पीछे

यही मकसद था।

उधर हब्शी पुरोहित क़रीबी बस्ती में बैठा क़बीले को यह खुशखबरी सुना रहा था कि कुर्बानी के लिए लड़कियां मिल गई हैं और कुर्बानी आज से चौथी रात दी जाएगी जो पूरे चांद की रात होगी। उसने कहा कि कुर्बानी देवताओं के मसकन और माबद के खण्डरों पर दी जाऐगी। उसके बाद हम यह माबद हम खुद तामीर करेंगे और जब यह माबद तामीर हो जाएगा तो हम उस कौम से इन्तकाम लेंगे जिन्हों ने हमारे देवता की तौहीन की है।

❖

निस्फ शब का अमल था। रजब और उसके साथियों को लड़कियों ने अपने खुसूसी फन का मुज़ाहेरा करते हुए इतनी शराब पिला दी थी कि उनकी बेदारी का खतरा ही खत्म होगया था, वह बेहोश पड़े थे। लड़कियों ने सफर के लिए सामान बांध लिया। तीन घोड़ों पर ज़ीनें कसीं, सवार हुई और उस नरम ज़मीन पर घोड़ों को डाल दिये जो उन्हों ने दिन के वक़्त देखीं थीं। उस खित्ते के एक हिस्से में चार हब्शी मौजूद थे लेकिन वह सोए हुए थे और दूर थे। उन्हें मालूम था कि यहां से कोई भागने की जुर्रत नहीं कर सकता अगर भागे गा तो सेहरा उसे रासते में ही खत्म करदेगा मगर लड़कियां इस सर सब्ज़ खुशनुमा और हौलनाक कैद खाने से निकल गईं। वह उसी रास्ते से फिलिस्तीन जाना चाहती थीं जिस रास्ते से रजब उन्हें लाया था। वह थीं तो गैर मामूली तौर पर ज़हीन और उन्हें अस्करी तर्बियत भी दी गई थी मगर उन्हें यह इल्म नहीं था कि सेहरा में इस क़दर फरेब छुपे हुए हैं जो दानिशमनदों को भी अकल का अंधा कर दिया करते हैं। इतने तवील सेहराई सफर पर लोग काफ़िलों की सूरत में निकला करते थे और उनके पास सेहरा की हर आफत का मुक़ाबला करने का एहतमाम होता था।

रात के वक़्त तो सेहरा सर्द था। तीनों लड़कियों ने उस जगह से कुछ दूर तक घोड़ों को आहिस्ता आहिस्ता चलाया, फिर ऐड़ लगा दी। घोड़े सरपट दौड़ने लगे। बहुत दूर जाकर उन्हों ने घोड़ों की रफ्तार कम कर दी। बाक़ी रात घोड़े इसी रफतार से चलते रहे। सुबह तुलू हुई और जब सूरज ऊपर आया तो लड़कियों के इर्द गिर्द रेत के गोल गोल ढीले थे और इनसे आगे रेतीली मिट्टी की ऊंची ऊंची पहाड़ियां खड़ी थीं। कोई रास्ता न था, उन्हों ने सूरज से अपनी सिम्त का अंदाज़ा किया और टीलों की भूल भुलय्यों में दाखि़ल हो गईं। घोड़े प्यासे थे। हर घोड़े पर पानी का एक एक छोटा सा मश्कीज़ा था जो एक दिन के लिए भी काफी नहीं था। घोड़ों को कहां से पानी पिलाया जाता। लड़कियां किसी नख्लिसतान की तलाश में चलती चली गईं। सूरज ऊपर उठता गया और सेहरा को दोज़ख बनाता गया। नख्लिस्तान का कहीं निशान और तसव्वुर भी नज़र नहीं आता था।

रजब और उसके साथी सूरज तुलू होने के बाद भी न जागे। वह तो बेहोशी की नींद सोए हुए थे। पुरोहित अपने तीन हब्शियों के साथ आया। उसने सबसे पहले लड़कियों के खेमे में देखा, खेमा ख़ाली था। उसने रजब को जगाया और कहा– "दोनो लड़कियां मेरे हवाले कर दो।" रजब हड़बड़ा कर उठा और पुरोहित को काइल करने की कोशिश करने लगा कि वह

उन लड़कियों को ज़ाए न करे। उसने उसे तफ़सील से बताया कि उन लड़कियों से क्या काम लेना है मगर पुरोहित ने उसकी एक भी बात न मानी। रजब ने अपने साथियों को जगाना चाहा तो हब्शियों ने उसे पकड़ लिया। पुरोहित ने पूछा– "लड़कियां कहां हैं?"

रजब ने वहीं से लड़कियों को पुकारा तो उसे कोई जवाब न मिला। खेमें में जाकर देखा, उन्हें इधर उधर देखा। वह कहीं नज़र न आईं। अचानक नज़र ज़ीनों पर पड़ी तीन ज़ीने ग़ायब थीं। घोड़े देखे तो तीन घोड़े ग़ायब थे। रजब ने पुरोहित से कहा– "वह तुम्हारे डर से भाग गई हैं। तुम ने बड़े काम की लड़कियों को भगा दिया है।"

"उन्हें तुम ने भगाया है।" पुरोहित ने कहा और अपने तीन हब्शियों से रजब के मुतअल्लिक कहा– "इसे लेजाकर बांध दो। इसने अंगोक के देवता को फिर नाराज़ कर दिया है। अच्छे सवारों को बुलाओ और लड़कियों का पीछा करो, वह दूर नहीं जा सकतीं।"

रजब के एहतजाज और मिन्नत को नज़र अंदाज़ करते हुए हब्शी उसे अपने साथ ले गये और एक दरख़्त के साथ उसे इस तरह बांध दिया कि उसके हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए थे। उसके सोए हुए साथियों के हथियार उठा लिए गये फिर उन्हें जगा कर धमकी दी गई कि वह यहां से हिले तो क़त्ल हो जाऐंगे। थोड़ी देर बाद छः घोड़सवार और शुतुर सवार आ गए। उन्हें लड़कियों के तआक़ुब में रवाना कर दिया गया। रेत पर तीन घोड़ों के क़दमों के निशान साफ़ थे। उसी सिम्त को यह हब्शी सवार इन्तिहाई रफ़्तार के साथ रवाना हो गये। लड़कियों को पकड़ना आसान नहीं था क्यों कि फरार और तआक़ुब में आठ दस घंटों का फर्क था। हब्शी सवारों को यह सहूलत हासिल थी कि वह सेहरा के भेदी थे और मर्द थे। सख़्तियां झेल सकते थे। आगे जाकर उन्हें यह मुश्किल पेश आई कि हवा चल रही थी जिस ने रेत उड़ा उड़ा कर घोड़ों के खुरे ग़ायब कर दिए थे। फिर भी अंदाज़े पर चलते गये।

तीन चार घंटों के तआक़ुब के बाद उन्हें एक तरफ़ से आसमान पर उफक के कुछ ऊपर तक मटियाली सुरखी दिखाई दी जो ऊपर उठती और आगे बढ़ती आ रही थी। सवारों ने घबरा कर एक दूसरे की तरफ़ देखा। घोड़ों और ऊंटों को पीछे की तरफ़ मोड़ कर सरपट दौड़ा दिया। यह सेहरा की वह आंधी आ रही थी जो बड़े बड़े टीलों को रेत के ज़र्रों में बदल कर उड़ा ले जाती है। कोई इंसान या जानवर कहीं रुक कर खड़ा रहे या बैठ जाए तो रेत उसके जिस्म के साथ रुक रुक कर उसे ज़िन्दा दफ़न कर देती है। और उस पर टीला खड़ा हो जाता है। वहां आंधी से बचने के लिए कोई मज़बूत टीला नहीं था, वह भाग कर अपने पहाड़ी खित्ते तक पहुंचना चाहते थे जो बहुत ही दूर था। वहां तक आंधी पहुंच गई थी। उस खित्ते के दरख़्त दोहरे हो हो कर चीख रहे थे। झील के मगरमछ पहाड़ी के आबी ग़ार में जा छुपे थे। पुरोहित एक जगह ज़मीन पर घुटने टेके हुए हाथ हवा में बुलंद करता और ज़ोर ज़ोर से ज़मीन पर मारता था। हर बार बुलन्द आवाज़ में कहता था– "अंगोक के देवता! अपने कहर को समेट ले। हम दो बहुत ही खूबसूरत लड़कियां तेरे कदमों में पेश कर रहे हैं" वह इस आंधी को देवता का क़हर समझ रहा था। सेहरा और आंधी का चोली दामन का साथ था लेकिन सुर्ख और ऐसी तेज़ व तुन्द आंधी कभी कभी चला करती थी। लड़कियों को भी आंधी

ने लपेट लिया था। उनके लिए कोई आड़ और ओट नहीं थी। वह हब्शियों के खतरे से तो बहुत दूर निकल गई थीं मगर सेहरा के ऐसे खतरे में आगई जो उनके लिए जान लेवा साबित हो सकता था। उनके लिए दूसरी मुसीबत यह आई कि रेत की बौछाड़ों और आंधी के जन्नाटे से घबराकर तीनों घोड़े मुंहज़ोर और बे लगाम हो कर दौड़ पड़े। वह चूंकि इकटठे बिदके थे इसलिए इकटठे ही दौड़ते जा रहे थे। इससे यह फायदा तो हुआ कि रेत में दब जाने का ख़तरा न रहा मगर यह मालूम न था कि बे लगाम घोड़े कहां जा रुकेंगे और वह जगह असल रास्ते के कितनी दूर होगी। लड़कियों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि घोड़ों को काबू कर लेती और घोड़ों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि ज़्यादा दौड़ सकें। वह प्यासे थे और आधी रात से मुसतकिल चल रहे थे।

थकन और प्यास घोड़ों को बे हाल करने लगी। एक घोड़ा मुंह के बल गिरा, उसकी सवार लड़की ऐसी गिरी कि घोड़ा उठा और गिरा तो लड़की उसके नीचे आगई। उसे मरना ही था। कुछ और आगे गये तो एक घोड़े का तंग ढीला हो गया, ज़ीन एक तरफ़ लुढ़क गई। उसकी सवार उसी पहलू पर गिरी मगर बायां पांव रकाब में फंस गया। लड़की ज़ीन पर घसीटी जाने लगी। तीसरी लड़की उसकी कोई मदद नहीं कर सकती थी। उसका अपना घोड़ा बे काबू था। वह अपनी साथी की चीखें सुनती रही फिर चीखें खामोश हो गई और वह लड़की की लाश को घोड़े के साथ ज़मीन पर जाता देखती रही। उस पर दहशत तारी हो गई। वह कितनी ही दिलेर क्यों न थी, आखिर लड़की थी ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। ढीली ज़ीन वाला घोड़ा यकायक रुक गया। तीसरी लड़की अपना घोड़ा रोक न सकी। उसने पीछे देखा आंधी में उसे कुछ नज़र न आया कि उस घोड़े का क्या हशर हुआ। लड़की तो यकीनन मर चुकी थी।

तीसरी लड़की अकेली रह गई उसने रकाबों से पैर ज़रा पीछे कर लिए। उसकी दहशत ज़दगी का यह आलम था कि उसने घोड़े की लगाम छोड़कर हाथ आसमान की जानिब उठा कर जोड़ दिये और गला फाड़ कर खुदा को पुकारने लगी। "मेरे अज़ीम खुदा! आसमान के खुदा, मेरे गुनाह माफ कर दे मैं गुनहगार हूं। मेरा बाल बाल गुनहगार है। मैं गुनाह करने आई थी। मैं ने गुनाहों में परवरिश पाई है। मेरे खुदा मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी जब मुझे बड़ों ने गुनाहों के रास्ते पर डाला था। उन्हों ने मुझे गुनाहों के सबक दिए। जवान किया और कहा कि जाओ मर्दों को अपने हुस्न और अपने जिस्म से गुमराह करो। इनके हाथों इन्सान को कत्ल कराओ। झूठ बोलो, फरेब दो और बदकार बन जाओ। उन्हों ने बताया था कि यह सलीब का फर्ज है तुम पूरा करोगी तो जन्नत में जाओगी।" वह पागलों की तरह चिल्ला रही थी और उसके घोड़े की रफतार घटती जा रही थी। ज़ारो कतार रोते हुए उसने खुदा से कहा– "तेरा जो मज़हब सच्चा है, मुझे उसका मोजज़ा दिखा।"

उसके अकीदे मुतज़लज़ल हो गये थे। गुनाहों के एहसास ने उसके दिमाग़ पर क़ाबू पा लिया था मौत के खौफ ने उसे फरामोश कर दिया था कि उसका मज़हब क्या है? उसे अपना माज़ी गुनाहों में डूबा हुआ नज़र आ रहा था और उसके दिल में यह एहसास बेदार होता जा

रहा था कि वह मर्दों के इस्तेमाल की चीज़ है और इसे धोखे और फरेब के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है और अब सजा सिर्फइस अकेली को मिल रही है।

उसे ग़शी की लहर आई और गुज़र गई। उसने दहाड़ मारी और सर को झटककर बुलन्द आवाज़ सेकहा–" मेरी मदद कर मेरे खुदा। मैं अभी मरना नही चाहती।" और इसके साथ ही उसे याद आ गया कि वह यतीम बच्ची है मौत के सामने इन्सान माज़ी की तरफ भागता है जो इन्सानी फितरत का कुदरती रद्दे अमल है। इस जवान लड़की ने भी माज़ी में पनाह लेने की कोशिश की मगर वहां कुछ भी न था। मां नहीं थी, बाप नही था, कोई भाई बहन नही था। उसे यही कुछ याद आया कि सलीबीयों ने उसे पाला और इस राह पर डाला है जहां वह एक बड़ा हसीन धोखा बन गई थी। उसे अपने आप से नफरत होने लगी वह अब बख़्शिश चाहती थी, निजात चाहती थी, उसे ग़शी आने लगी घोड़े की रफतार भी इतनी सुस्त हो गई थी कि वह ब मुशकिल चल रहा था और उसके साथ साथ लड़की भी अपने होश खो बैठी थी।

❖

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सरहद केसाथ साथ गशती पहरे का इन्तेज़ाम कर रखा था। इनमें से तीन दस्तों का हेड क्वार्टर सूडान और मिस्र की सरहद से चार पांच मील अन्दर की तरफ था। हेड क्वांटर के खेमे ऐसी जगह नस्ब किये गये थे कि जहां आधियों से बचने की ओट थी मगर उस आंधी ने उनके खेमें उखाड़ फैंके थे। घोड़ों और ऊंटों को संभालना मुश्किल हो गया था। आंधी रुकी तो सिपाही खेमें वगै़रह संभालने में मसरूफ हो गये। इन तीन दस्तों का कमाण्डर एक तुर्क अहमद कमाल था। वह एक खूबरू और गोरे रंग का तंदरुस्त आदमी था वह भी आंधी रूकते ही बाहर आ गया और साजो सामान और जानवरों का जायज़ा ले रहा था। फिज़ा गर्द से साफ हो गई थी एक सिपाही ने एक तरफ इशारा करके उसे कहा–' कमाण्डर वह घोड़ा और सवार हमारा तो नहीं?" हमने अभी लड़कियों को फौज में शामिल नही किया " अहमद कमाल ने जवाब दिया –" वह लड़की मालूम होती है बाल बिखरे साफ नज़र आ रही है।"

वह उसी सिपाही को साथ ले कर दौड़ पड़ा। एक घोड़ा सर नीचे किये निहायत ही आहिस्ता आहिस्ता आ रहा था, उसे चारो की बू आई तो हेड क्वांटर के घोड़ों की तरफ चल पड़ा घोड़े पर एक लड़की इस तरह सवार थी कि उसके बाजू घोड़े के गर्दन के इधर उधर थे और लड़की आगे को इस तरह झुकी हुई थी कि इसका सर घोड़े की गर्दन से ज़रा पीछे था। लड़की के बाल बिखर कर आगे आ गये थे। अहमद कमाल के पहुंचने तक घोड़ा वहा बंधें हुये घोड़ों के पास जाकर उनका चारा खाने लगा था। अहमद कमाल ने लड़की के पांव रकाबों से निकाले और उसे घोड़े से उतार कर बाजूओं पर उठा लिया। सिपाही से कहा–" ज़िन्दा है फिरंगी मालूम होती है उसके घोड़े को पानी पिलाओ।" वह लड़की को अपने खेमें में ले गया लड़की के बाल रेत से अटे हुये थे। अहमद कमाल ने उसके मुंह पर पानी के छींटे मारे फिर मुंह में पानी टपकाने लगा।

लड़की ने आँखें खोल दीं दो चार लम्हें अहमद कमाल को हैरत से देखती रही और

अचानक उठ कर बैठ गई। अहमद कमाल का रंग गोरा देख कर उस ने अंग्रेज़ी में पूछा–" मैं फलस्तीन में हूँ? अहमद कमाल ने सर हिला कर उसे समझाना चाहा कि मैं यह ज़बान नही समझता । लड़की ने अरबी ज़बान में पूछा–" तुम कौन हो?" मैं इसलामी फौज का मामूली सा कमाण्डर हूँ– अहमद कमाल ने ज़वाब दिया–" और तुम मिस्र में हो।"

लड़की की आँखें उबल पड़ीं और वह इस कदर घबराई कि जैसे फिर बे होश हो जायेगी। अहमद कमाल ने कहा–" डरो नहीं संभालो अपने आप को "– उसने उसके सर पर शफकत से हाथ फेरा और कहा–" मैं जान गया हूँ कि तुम फिरंगी हो और मेरी मेहमान हो, डरने की कोइ वजह नहीं"– उसने एक सिपाही को बुलाया और लड़की के लिये पानी और खाना मंगवाया।

लड़की ने लपक्कर पानी का प्याला उठा लिया और मुहं से लगा कर बे सब्री से पीने लगी। अहमद कमाल ने प्याला उसके होंटों से हटा कर कहा–" आहिस्ता , पहले खाना खा लो, पानी बाद में पीना"– लड़की ने गोश्त का एक टुकड़ा उठा लिया और फिर वह खाना खाती रही और पानी पीती रही, इसके चेहरे पर रौनक वापस आ गई ।

अहमद कमाल ने एक खेमा अलग लगवा रखा था जो उसका गुस्ल खाना था, वहां पानी की कमी नही थी। खेमा गाह एक नख़लिस्तान के करीब थी, अहमद कमाल ने खाने के बाद लड़की को गुस्ल वाले खेमें में दाखिल कर के परदे बांध दिये। लड़की ने गुस्ल तो कर लिया लेकिन वह बहुत ही खौफ ज़दा थी क्योंकि वह अपने दुशमन की पनाह में आ गई थी जहां उसे अच्छे सूलूक की तवक्को नही थी। उसके ज़ेहन में बचपन से यह डाला जा रहा था कि मुसलमान वहशी होते हैं और औरतों के लिये तो वह दरिन्दे हैं । इस खौफ के साथ उस पर हब्शियों का, मगर मच्छों का और सेहराई आंधी का खौफ तारी था। अपने साथ की दोनों लड़कियों की मौत और वह भी ऐसी भयानक मौत, उसके रोंगटे खड़े कर रही थी। उस ने गुस्ल करते हुये बड़ी शिद्दत से महसूस किया था कि वह अपने वजूद को धोने की कोशिश कर रही है जिसे दुनिया का पानी पाक नही कर सकता । उस ने कस्म –ओ–पुर्सी की हालत में तंग आकर अपने आप को सूरते हाल के हवाले कर दिया ।

अहमद कमाल ने यह देख लिया था कि ऐसे हुस्न और ऐसे दिल गुदाज़ जिस्म वाली लड़की मामूली लड़की नही । मिस्र के ऐसे हिस्से में ऐसी फिरंगी लड़की कैसे आ सकती है? उसने लड़की से पूछा तो लड़की ने जवाब दिया कि वह काफिले से बिछड़ गई है। आंधी में घोड़ा बे लगाम हो गया था। अहमद कमाल ऐसे जवाब से मुतमईन नही हो सकता था। उसने तीन चार और सवाल किये तो लड़की के होंठ कापंने लगे। अहमद कमाल ने कहा–" अगर तुम यह कहती कि तुम अग़वा की हुई लड़की हो और आंधी ने तुम्हें छुड़ा दिया है तो शायद मैं मान जाता , तुम्हें झूट बोलना नही आता।"

इतने में उस सिपाही ने जो अहमद कमाल के साथ था, खेमे का परदा उठाया और एक थैला और एक मशकीज़ा अहमद कमाल को दे कर कहा कि यह इस लड़की के घोड़े के ज़ीन के साथ बंधे हुये थे। अहमद कमाल थैला खोलने लगा तो लड़की ने घबरा कर थैले पर हाथ

रख लिया। उसके चेहरे का रंग बदल गया था। अहमद कमाल ने थैला उसे दे कर कहा–" लो ख़ुद खोल कर दिखा दो।"

लड़की की ज़बान जैसे बन्द हो गई थी उसने बच्चो के अन्दाज़ से थैला पीठ पीछे कर लिया। अहमद कमाल ने कहा–" यह तो हो नही सकता कि मैं तुम्हें कह दूं कि जाओ चली जाओ, मुझे कोई हक नहीं पहुचता कि मैं तुम को रोकूं लेकिन ऐसी लड़की को जो आबादी से दूर अकेली घोड़े पर बेहोशी की हालत में भटकती हुई पाई गई हैं उसे मैं अकेला नही छोड़ सकता। यह मेरा इन्सानी फर्ज़ है, मुझे अपना ठिकाना बता दो, मैं तुम्हें अपने सिपाहियों के साथ हिफाज़त से पहुंचा दुंगा। अगर नहीं बताओगी तो तुम्हें मुशतबा लड़की समझ कर काहिरा अपनी हुकूमत के पास भेज दुंगा। तुम मिस्री नही हो सूडानी नही हो।"

लड़की के आंसू बहने लगे, वह जिस मुसीबत से गुज़र कर आई थी उसकी दहशत और होलनाकी उस पर पहले ही ग़ालिब थी। उस ने थैला अहमद कमाल के आगे फैंक दिय। अहमद कमाल ने थैला खोला तो इस में से कुछ खजूर दो चार छोटी मोटी आम सी चीज़ें निकलीं और एक थैली निकलीं, यह खोली तो उस में से सोने के बहुत से सिक्के और इन में सोने की बारीक सी ज़ंजीर के साथ छोटी सी लड़की की सलीब निकली। अहमद कमाल इस से यही समझ सका कि लड़की ईसाई है। उसे ग़ालिबन मालूम नहीं था कि जो ईसाई मुसलमानों के खिलाफ लड़ने के लिये सलीबी लशकरों में शामिल होता है वह एक सलीब पर हल्फ उठाता है और छोटी सी एक सलीब हर वक्त अपने पास रखता है। अहमद कमाल ने उस से कहा कि इस थैले में मेरे सवाल का जवाब नही है।

"अगर मैं यह सारा सोना तुम्हें दे दूं तो मेरी मदद करोगे?" लड़की ने पूछा।

"कैसी मदद?"

" मुझे फलस्तीन पहुंचा दो" लड़की ने जवाब दिया –" और मुझ से कोई सवाल न पूछो।"

"मैं फलसतीन तक भी पहुंचा दुंगा लेकिन सवाल ज़रूर पुंछूगा।"

अगर मुझ से कुछ भी न पूछो तो इसका अलग इनाम दुंगी।"

"वह क्या होगा"

"घोड़े तुम्हें दे दुंगी"लड़की ने जवाब दिया। और तीन दिनो के लिये मुझे अपनी लोंडी समझ लो।"

अहमद कमाल इस से पहले हाथ में कभी इतना सोना नही उठाया था और उसने ऐसा हैरानकुन हुस्न और जिस्म भी नही देखा था। उसनेअपने सामने पड़े हुये सोने के चमकते हुये टुकड़ों को देखा फिर लड़की के रेशम जैसे बालों को देखा जो सोने के तारों की तरह चमक रहे थे फिर उसकी आँखों को देखा जिन में वह तिलसमाती चमक थी जो बादशाहों को एक दूसरे का दुशमन बना दिया करती है। वह ताकत वर मर्द था, कमाण्डर था, तीन दस्तों का हाकिम था जो सरहद पर पहरे दे रहे थे। इसे रोकने, पूछने और पकड़ने वाला कोई नही था। मगर इस ने सिक्के थैली में डाले, सलीब भी थेली में रखी, और थैली लड़की के गोद में

रख दी।

"क्यों ? लड़की ने पूछा–" यह कीमत थोड़ी है।"

"बहुत थोड़ी" अहमद कमाल ने कहा–" ईमान की क़ीमत ख़ुदा के सिवा कोई नहीं दे सकता।— लड़की ने कुछ कहना चाहा लेकिन अहमद कमाल ने उसे बोलने न दिया और कहा, मैं अपना फर्ज़ और ईमान फरोख्त नही कर सकता। सारा मिस्र मेरे ऐतमाद पर आराम की नींद सोता है, तीन महीनें गुज़रे सूडानीयों ने काहिरा पर हमला करने की कोशिश की थी। अगर मैं यहां न होता और अगर मैं उनके हाथ अपने ईमान फरोख्त कर देता तो यह लशकर काहिरा में दाख़िल होकर तबाही बरपा कर देता। तुम मुझे उस लशकर से ज़्यादा ख़तरनाक नज़र आती हो, क्या तुम जासूस नही हो ?"

"नही"

तुम यही बता दो कि तुम्हें आंधी ने किस ज़ालिम के पंजे से बचाया है या तुम आंधी से बच कर निकली हो?" लड़कीने बे माने से जवाब दिया तो अहमद कमाल ने कहा–" मुझे तुम्हारे मुतअल्लिक यह जानने की ज़रूरत नही कि कौन हो और कहां से आई हो। मैं कल तुम्हें काहिरा के लिये रवाना कर दुंगा। वहां हमारा जसूसी और सुराग़रसानी का एक मुहकमा है वह जाने और तुम जानो, मेरा फर्ज़ पूरा हो जायेगा।"

" अगर इजाज़त दो तो मैं इस वक़्त आराम कर लूं।"लड़की ने कहा–" कल जब काहिरा के लिये मुझे रवाना करोगे तो शायद तुम्हारे सवालों का जवाब दे दूं।"

लड़की रात भर की जागी हुई और दिन के ऐसे खौफनाक सफर की थकी हुई थी लेटी और सो गई। अहमद कमाल ने देखा कि वह नीन्द में बड़बडाती थी, बेचैनी से सर इधर उधर मारती थी और ऐसे पता चलता जैसे ख्वाब में रो रही हो। अहमद कमाल ने अपने साथियों को बता दिया कि एक मशकूक फिरंगी लड़की पकड़ी गई है जिसे कल काहिरा भेजा जायेगा। इसके साथी अहमद कमाल के किरदार से वाकिफ थे, कोई भी ऐसा शक नही कर सकता था कि उसने लड़की को बदनियती से अपने खेमें में रखा है। उस ने लड़की का घौड़ा देखा तो वह हैरान हुआ क्यों कि घोड़ा आला नस्ल का था और जब इस ने ज़ीन देखी तो इसके शकुक रफा हो गये, ज़ीन के नीचे मिस्र की फौज का निशान था। यह घोड़ा अहमद कमाल की अपनी फौज का था।

हब्शियों ने आंधी की वजह से तआकुब तर्क कर दिया था, वह वापस जिन्दा पहुंच गये थे। पुरोहित ने फैसला दे दिया था कि लड़कियां आंधी में मारी गई होंगीं। रजब पर आफत नाज़िल हो रही थी। उस से हबशी बार बार यही एक सवाल पूछते थे–" लड़कियां कहां हैं?" और वह कसमें खा खा कर कहता कि मुझे मालूम नहीं। हब्शियों नेउसे अज़ियतें देनी शुरू कर दीं तलवार की नोक से उसके जिस्म में ज़खम करते और अपना सवाल दोहराते थे। हब्शियों ने उसके साथियों को भी दरख्त के साथ बांध दिया और उनके साथ भी यही ज़ालिमाना सुलूक करने लगे। रजब को खुदा अपनी कौम और मुल्क से गद्दारी की सज़ा दे रहा था। रात को भी इसे न खोला गया। इसका जिस्म छलनी हो गया था।

अहमद कमाल के खेमे में लड़की सोई हुई थीवह सूरज गुरूब होने से पहले जागी थी, अहमद कमाल ने उसे खाना खिलाया था इसके बाद वह फिर सोगई थी। इस से दो तीन कदम दूर अहमद कमाल सोया हुआ था। रात गुज़रती जा रही थी। खेमें में दिया जल रहा था। अचानक लड़की की चीख निकल गई। अहमद कमाल की आँख खुल गई। लड़की बैठ गई थी। उसका जिस्म कांप रहा था चेहरे पर घबराहट थी। अहमद कमाल उसके करीब हो गया। लड़की तेज़ी से सरक कर उसके साथ लग गई और रोते हुये बोली–" उनसे बचाओ, वह मुझे मगरमच्छों के आगे फेंक रहे हैं।, वह मेरा सर काटने लगे हैं।"

"कौन?"

" वह भद्दे हब्शी' लड़की ने डरे हुये लहजे में कहा–" वह यहां आये थे अहमद कमाल को हब्शियों की कुर्बानी का इल्म था। उसे शक हुआ कि इसे शायद कुर्बानी करने के लिये ले लाया जा रहा था। उस ने लड़की से पूछा तो लड़की ने बाजू अहमद कमाल के गर्दन में डाल दिये कहने लगी–"मत पूछो, मैं ख्वाब देख रही थी" अहमद कमाल देख रहा था कि वह तो बहुत ही डरी हुई है उसने उसे तसलिल्यां दीं और यकीन दिलाया कि यहां उसे उठाने के लिये कोई नही आयेगा। लड़की ने कहा–" मैं सो नही सकुंगी, तुम मेरे साथ बातें नही कर सकते? मैं अकेली जाग नही सकुंगी, मैं पागल हो जाऊंगी।"

अहमद कमाल ने कहा–" मैं तुम्हारे साथ जागता रहुंगा।" उसने लड़की के सिर पर हाथ फेर कर कहा–"जब तक मेरे पास हो तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं" उसने इस पर अमल भी करके दिखा दिया। लड़की के साथ उसने हब्शियों के मुतअल्लिक या उसके मुतअल्लिक कोई बात न की, न पूछी उसे तुर्की और मिस्र की बातें सुनाता रहा। लड़की इसके साथ लगी बैठी थी। अहमद कमाल का लबो लहजा शगुफता था। इसने लड़की का खौफ दूर कर दिया और लड़की सो गई।

लड़की की आँख खुली तो सुबह तुलू हो रही थी। उसने देखा कि अहमद कमाल नमाज़ पढ़ रहा है। वह उसे देखती रही, अहमद कमाल ने दुआ के लिये हाथ उठाये और आँखें बन्द करलीं लड़की उसके चेहरे पर नज़रें जमाऐ बैठी रहीं अहमद कमाल फारिग़ हुआ तो लड़की ने पूछा–" तुम ने खुदा से क्या मांगा था?"

"बदी के मुकाबले की हिम्मत" अहमद कमाल ने जवाब दिया।

"तुम ने खुदा से कभी सोना और खूबसूरत बीवी नही मांगी?" यह दोनों चीज़ें खुदा ने मुझे बग़ैर मांगे दे दी थी।" अहमद कमाल ने कहा।

"लेकिन इन पर मेरा कोई हक नही, यह शायद खुदा ने मेरा इम्तिहान लेना चाहा था।"

" तुम्हें यकीन है कि खुदा ने तुम्हें बदी का मुकाबला करने की हिम्मत दी है?"

"तुम ने देखा नहीं?" अहमद कमाल ने जवाब दिया –" तुम्हारा सोना और तुम्हारा हुस्न मुझे अपनी राह से हटा नही सके, यह मेरी कोशिश और अल्लाह की देन है।"

"क्या खुदा गुनाह माफ कर दिया करता है।" लड़की ने पूछा।

"हां हमारा खुदा गुनाह माफ कर दिया करता है।" अहमद कमाल ने जवाब दिया। "शर्त

यह है कि गुनाह बार बार न किया जाये।"

लड़की ने सर छुपा लिया, अहदम कमाल ने जब उसकी सिसकियां सुनी तो उसका चेहरा ऊपर उठाया वह रो रही थी।; लड़की ने अहमद कमाल का हाथ पकड़ लिया और उसे कई बार चूमा, अहमद कमाल ने अपना हाथ खींच लिया, लड़की ने कहा—" आज हम जुदा हो जाएँगे, तुम मुझे काहिरा भेज दोगे, मैं अब आज़ाद नही हो सकुंगी मेरा दिल मजबूर कर रहा हे कि तुम्हें बता दूं कि मैं कौन हूं और कहां से आई हूं फिर तुम्हें बता दुगी कि मैं अब क्या हूं।"

"हमारी रवानगी का वक्त हो गया है" अहमद कमाल ने कहा—"मैं खुद तुम्हारे साथ चलुंगा, मैं इतनी नाजुक और इतनी खतरनाक ज़िम्मेदारी किसी को नहीं सौंप सकता।"

"यह नहीं सुनोगे कि मैं कौन हूं और कहां से आई हो?"

"उठो" अहमद कमाल ने कहा—" यह सुन्ना मेरा काम नही।" वह खेमें से बाहर निकल गया।

❖

कुछ देर बाद काहिरा के सिम्त छे घोड़े जा रहे थे। एक पर अहमद कमाल था, उसके पीछे दूसरे घोड़े पर लड़की थी, उसके पहलू ब पहलू चार घोड़े मुहाफिज़ के थे और उनके पीछे ऊंट जिस पर सफर का सामान, पानी और खुराक वगैरह थी जा रहा था। काहिरा तक कमो बेश छत्तीस घंटों का सफर था। लड़की ने दो मरतबा अपना घोड़ा उसके पहलू में कर लिया और दोनों मरतबा अहमद कमाल ने उसे कहा कि वह अपना घोड़ा इसके और मुहाफिज़ के दर्मियान रखे। इसके सिवा उसने लड़की से कोई बात न की। सुरज गूरूब होने के बाद अहमद कमाल ने काफिले को रोक लिया। और पड़ाव का हुक्म दे दिया। रात को लड़की को अहमद कमाल ने अपने खेमें में सुलाया उसने दिया जलता रखा और गहरी नीन्द में सो गया। उसकी आँख खुल गई जब किसी ने उसके माथे पर हाथ फेरा था। उसने लड़की को अपने पास बैठा देखा, लड़की का हाथ उसके माथे पर था। अहमद कमाल तेज़ी से उठ कर बैठ गया उसने देखा कि लड़की के आंसू बह रहे थे उसने अहमद कमाल का हाथ अपने दोनों हाथों में लिया और उसे चूम कर बच्चों की तरह बिलक बिलक कर रोने लगी। अहमद कमाल उसे देखता रहा लड़की ने आंसू पोंछ कर कहा—" मैं तुम्हारी दुशमन हूँ तुम्हारे मुल्क में जासूसी के लिये और तुम्हारे बड़े बड़े हाकिमों को आपस में टकराने के लिये और सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल का इन्तेज़ाम करनें के लिये फलस्तीन से आई हूँ। लेकिन अब मेरे दिल से दुशमनी निकल गई है।"

"क्यों ?"अहमद कमाल ने कहा—" तुम बुज़दिल लड़की हो अपनी कौम से गद्दारी कर रही हो, सूली पर खड़े होकर भी कहो कि मैं सलीब पर कुर्बान हो रही हूँ।"

"इसकी वजह सुन लो"—उसने कहा—" तुम पहले मर्द हो जिस्ने मेरे हुस्न और मेरी जवानी को काबिले नफरत चीज़ समझकर ठुकराया है। वरना क्या अपने क्या बेगाने, मुझे खिलौना समझते रहे, मैं ने भी इसको ज़िन्दगी का मकसद समझा कि मर्दों के साथ खेलो, धोके दो और ऐश करो। मेरी तरबियत भी इसी मकसद के तेहत हुई थी। जिसे तुम लोग बे हयाई

कहते हो। वह मेरे लिये एक फन है एक हथियार है। मुझे नही मालूम था कि मज़हब क्या है और खुदा के अहकाम क्या हैं। सिर्फ सलीब है जिसके मुतअल्लिक मुझे बचपन में ज़ेहन नशीन कराया गया था कि यह खुदा की दी हुई निशानी है और यह ईसाईयत की अज़मत की अलामत है और यह कि सारी दुनिया पर हुक्मरानी का हक सिर्फ सलीब के पुजारियों को हासिल है और यह कि मुसलमान सलीब के दुशमन हैं इन्हें अगर ज़िन्दा रहना है तो सलीबीयों के कदमों मे रहकर जिन्दा रहें। मैं इन्हीं चन्द एक बातों को मज़हब के बुनियादी उसूल समझती रही हूँ मुझे मुसलमानों की जड़ें काटने की तरबियत दी गई तो इसे भी मज़हबी फरीज़ा कहा गया ।,

" क्या तुम अपने एक सालार रजब को जानते हो?" लड़की ने पूछा।

" वह खलीफा के मुहाफिज़ दस्तों का सलार है;; अहमद कमाल ने कहा–" वह भी सूडानीयों के हमले वाली साज़िश में शामिल था।"

अब कहां है"

"मालूम नहीं" अहमद कमाल ने कहा–" मुझे सिर्फ यह हुक्म मिला है कि रजब फौज से भगौड़ा हो गया है जहां कहीं नज़र आये उसे पकड़ लो और भागे तो तीर मार दो औरउसे खत्म कर दो।"

" मैं बताऊं वह कहां है?" लड़की ने कहा–" वह सूडान में हब्शियों के पास है वहां एक खुशनुमा जगह है वहां हब्शी लड़कियों को देवता के आगे कुर्बान करते है। रजब वहां हैं मैं जानती हूँ वह फौज का भगौड़ा है। हम तीन लड़कियां इसके साथ फलसतीन से आई थीं।"

" बाकी दो कहां हैं ?"

लड़की ने आह भर कर कहा–"वह मर गई हैं उन्ही की मौत ने मुझे बदल डाला है" लड़की ने अहमद कमाल को एक लम्बी कहानी की तरह सुनाया कि वह किस तरह फलिसतीन से रजब के साथ आई थी किस तरह हब्शियों ने इन्में से दो लड़कियों को देवता के नाम पर ज़िबह करना चाहा, रजब उन्हें बचा न सका। इसी तरह वह वहां से भागी और रास्ते में दो लड़कियां आंधी में मारी गई। उसने कहा–" मैं अपने आप को शहज़ादी समझती थी मैं ने बादशाहों के दिलों पर हुक्मरानी की हैं मै ने कभी सोचा भी न था कि खुदा भी है और मौत भी है मुझे गुनाहों में डुबोया गया और मै डुबती चली गई, अजिब लज़्ज़त थी इस डूबने में, मगर मुझे वह मगरमच्छ दिखाये गये जिनके आगे ज़बह की हुई लड़कियों के जिस्म फैंके जाते हैं मगरमच्छ पानी के किनारे सोये हुये थे। उनके भद्दे और मकरूह जिस्म देख कर मैं कांप गई वह मेरे इस जिस्म को जिस ने बादशाहों के सिर झुकाये थे। इन मगरमच्छों की खुराक बनाना चाहते थे। मैंने वह बद सूरत सियाह काले हब्शी देखे जो मेरा सर मेरे जिस्म से अलग करने के लिये आ गये थे मौत के परों की आवाज़ मुझे सुनाई देने लगी थी मेरी रग रग बेदार हो गई मेरे अन्दर से मुझे आवाज़ सुनाई दी, अपने हुस्न और इतने दिल नशीन जिस्म का अंजाम देख, हम जान की बाज़ी लगा कर अपने घर से निकले थे हमें यह कहकर रजब के साथ फिलिस्तीन से भेजागया था कि यह शख़्स हमारी हिफाज़त करेगा लेकिन इस शख़्स ने मेरे

साथ दस्त दराज़ी की ।

"हम वहां से भागे आंधी में घोड़े बे क़ाबू हो कर भाग उठे हमारे लिये सेहरा में कोई पनाह नही थी हम आंधी और घोड़े के रहमो करम पर थे। पहले एक लड़की गिरी मैं ने उसे घोड़े के नीचे आते देखा फिर दूसरी लड़की घोड़े से गिरी तो पावं रकाब में फंस जाने की वजह से घोड़े ने उसे दो मील से ज़्यादा फासले तक घसीटा, इसकी चीखें मेरा जिगर चाक कर रही थीं मैं अब भी उसकी चीख़ सुनती रहुंगी। फिर वह लड़की लाश बन गई, मेरा घोड़ा साथ साथ दौड़ा आ रहा था। मगर मेरे क़ाबू में नही था। वह लड़की भी अपने घोड़े के साथ पीछे रह गई। मैं अब अकेली थी मुझे खुदा ने दो लड़कियों को मार कर बता दिया था कि मेरा अंजाम किया होगा। वह मुझ से भी ज़्यादा खूबसूरत और शोख़ थीं। उनमे हुस्न का गुरूर भी था, उन्हें ने बादशाहों को उंगलियों पर नचाया था मगर ऐसी भायानक मौत मरी कि किसी को खबर तक न हुई अब वह रेत के गुमनाम कबरों में दफन हो गई हैं मैं अकेली रह गई, आंधीं के ज़न्नाटे मौत के कहकहे बन गये, मुझे अपने सर के ऊपर आगे पीछे दायें और बायें चुड़ेल, बदरूहें भूत और मौत के कहकहे सुनाई दे रहे थे मैं बेवकूफ लड़की नही हूँ दिमाग़ रखती हूँ। मैंने जान लिया कि खुदा मुझे गुनाहों की सज़ा दे रहा है। ऐसी हेबतनाक मौत और ऐसी होलनाक आंधी वह तुम ने भी देखि है मुझे खुदा याद आ गया। मै ने खुदा को बुलन्द आवाज़ से पुकारा रो रो कर गुनाहों से तौबा की और माफी मांगी फिर मैं बे होश हो गई।"

और जब होश में अई तो मैं तुम्हारे कब्ज़े में थी। तुम्हारी गोरी रंगत देख कर मैं खुश हुई कि तुम यूरोपी हो और फिलिसतीन में हूं इसी धोखे में मैं ने अपनी ज़बान में पूछा था कि क्या मैं फिलिसतीन में हूं जब मुझे पता चला कि मैं मुसलमानों के कब्ज़े में हूँ तो मेरा दिल बैठ गया मैं आंधी से बचकर अपने दुशमन के कब्ज़ें में आ गई थी। मुसलमानों के मुतअल्लिक़ मुझे बताया गया था कि औरतों के साथ दरिंदो जैसा सुलूक करते हैं लेकिन तुम ने मेरे साथ वह सुलूक किया जिसकी मुझे तवक्को नही थी। तुम ने सोना ठुकरा दिया और तुम ने मुझे भी ठुकरा दिया। मैं इस क़दर खौफज़दह थी कि मैं कहती थी कि खवाह कोई मिल जाये। मुझे पनाह दे दे और मुझे सीने से लगा ले। तुम्हारे मुतअल्लिक़ मुझे अभी यकीन नही आया था कि तुम्हरा किरदार पाक है। मुझे यह तवक्को थी कि रात तुम परेशान करोगे। मैं ख्वाब में भी मगरमच्छो को हब्शियों और आंधी की दहशत देखती रही थी। मैं डर कर उठी तो तुम ने मुझे सीने से लगा लिया और बच्चों की तरह मुझे कहानियां सुनाकर मेरा खौफ दुर कर दिया और जब रात गुज़र गई तो मैं ने जागते ही तुम्हें खुदा के आगे सजदे में देखा। तुम ने जब दुआ के लिये हाथ उठाये और आखें बन्द कर लीं थीं उस वक़्त तुम्हारे चेहरे पर मुसर्रत, सुकून और नूर था। मैं इस शक में पड़ गई कि तुम इन्सान नही फरिशता हो, कोई इन्सान सोने और मुझ जैसी लड़की से मुंह नहीं मोड़ सकता।

"मैंने तुम्हारे चेहरे पर जो सुकून और मुसर्रत देखी थी उस ने मेरे आंसू निकाल दिये। मैं तुम से पुछना चाहती थी कि यह सुकून तुम्हें किस ने दिया है मैं तुम्हारे वजूद से इतनी मुतअस्सिर हुई कि मै ने तुम्हें धोखे में रखना बहुत बड़ा गुनाह समझा। मैं तुम्हें यह कहना

चाहती थी कि मैं तुम्हें अपने मुतअल्लिक हर एक बात बता दूंगी। इस के एवज़ मुझे यह किरदार और यह सूकून दे दो और मेरे दिल से वह वहशत उतार दो जो मुझे बड़ी ही तल्ख़ अज़ियत दे रही है। मगर तुम ने मेरी बात न सुनीं तुम्हें फर्ज़ अजीज़था" उस ने अहमद कमाल के दोनों हाथ पकड़ लिये और कहा तुम शायद इसे भी धोखा समझो, लेकिन मेरे दिल की बात सुन लो मैं तुम से जुदा नही हो सकुंगी। मै ने कल तुम्हें गुनाह की दावत देते हुये कहा था कि मुझे अपनी लोंडी समझ लो। मगर अब मैं सारी उमर के लिये तुम्हारी कदमों में बैठी रहुंगी। मुझे अपनी लोंडी बना लो और इस के एवज़ मुझे वह सुकून दे दो जो मै ने नमाज़ के वक्त तुम्हारे चेहरे पर देखा था।"

"मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं कहूंगा कि तुम मुझे धोखा दे रही हो।" अहमद कमाल ने कहा– "मेरी मजबूरी यह है कि मैं अपनी कौम को और अपनी फौज को धोखा नहीं दे सकता। तुम मेरे पास अमानत हो, मैं ख़यानत नहीं कर सकता। मैं ने तुम्हारे साथ जो सलूक किया वह मेरा फर्ज़ था। यह फर्ज़ उस वक़्त ख़त्म होगा जब मैं तुम्हें मुतअल्लिका मोहकमे के हवाले कर दूंगा और वह मुझे हुक्म देगा कि अहमद कमाल तुम वापस चले जाओ" वह उसे धोखा नहीं दे रही थी उसने रोते हुए कहा तुम्हारे हाकिम जब मुझे सजाए मौत देंगे तो तुम मेरा हाथ पकड़े रखना अब य ही एक ख्वाहिश है। मैं तुम्हें ऐसी बात नहीं कहूंगी कि मुझे फिलिस्तीन पहुंचा दो। मैं तुम्हारे फर्ज़ के रासते में रुकावट नहीं बनूंगी। मुझे सिर्फ इतना कह दो कि मैंने तुम्हारा प्यार कुबुल कर लिया है। मैं तुम्हें यह भी नहीं कहूं गी कि मुझे अपनी बीवी बना लो क्योंकि मैं एक नापाक लड़की हूं। मुझे तरबियत देने वालों ने पत्थर बना दिया था। मैं यह भी समझती थी कि मेरे अंदर इंसानी जज़्बात नहीं रहे लेकिन खुदा ने मुझे बड़े ही पुर हौल तरीके से समझा दिया कि इंसान पत्थर नहीं बन सकता और वह एक न एक दिन मजबूर होकर किसी से पूछता है कि सीधा रास्ता कौन सा है।"

रात गुज़रती जा रही थी और वह दोनों बातें कर रहे थे। अहमद कमाल ने उससे पूछा "तुम जैसी लड़कियों को हमारे मुल्क में भेज कर उनसे क्या काम लिया जाता है?"

"बहुत से काम कराए जाते हैं।" लड़की ने जवाब दिया। बाज़ को मुसलमान उमरा के हरमों में मुसलमानों के रूप में दाख़िल कर दिया जाता है, जहां वह तरबियत के मुताबिक उमरा और वुजरा पर ग़ालिब आ जाती हैं। उनसे सलीबियों की पसंद के अफराद को ओहदे दिलाती हैं जो हाकिम सलीबियों के ख़िलाफ हों उसके ख़िलाफ़ कार्रवाईयां कराती हैं। मुसलमान लड़कियां इतनी चालाक नहीं होतीं उन्हें अपनी ख़ूबसूरती पर नाज़ होता है। वह हरमों के लिए मुंतखब तो हो जाती हैं लेकिन एक इसाई लड़की इन्हें बेकार करके अपना गुलाम बना लेती है इस वक़्त तक इसलामी हुकूमत के अमीरों और वज़ीरों और किलादारों की आधी तादाद के फैसले मेरी कौम के हक में होते हैं। लड़कियों का एक गिरोह और भी है। यह लड़कियां इस्लामी नाम से मुसलमानों की बीवियां बन जाती हैं जिनका काम यह है कि अच्छे घरों के मुसलमान घरानों की लड़कियों के दिमाग़ और किरदार ख़राब करती हैं उनके लड़कों को बदी के रास्ते पर डालती हैं और शरीफ़ घरानों की लड़कियों और लड़कों में इश्क

कराती हैं। मुझ जैसी सलीबी लड़कियां चोरी छुपे ऐसे हाकिमों के पास आती हैं जो हमारे हाथ में खेल रहे होते हैं उन हाकिमों को सोने के सिक्कों की सूरत में मुआवज़ा मिलता रहता है, वह मुझ जैसी लड़कियों को हिफ़ाज़त में ऐसे तरीके से रखतें हैं जिन से उन पर ज़रा शक भी नहीं होता यह लड़कियां आला दर्जे के हाकिमों के दरमियान रकाबत और ग़लतफहमियां पैदा करती हैं और सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी के खिलाफ़ ना पसन्दीदगी पैदा करती हैं। मुझे दो लड़कियों के साथ इसी काम के लिए रजब के हवाले किया गया था।"

वह उसे सलीबियों की दरपरदा कार्रवाईयों और मुसलमानों की ईमान फ़रोशी की तफ़सील सुनाती रही, अहमद कमाल सुनता रहा।

❖

दूसरे दिन सूरज ग़रूब होने से बहुत पहले यह काफ़िला काहिरा पहुंच गया। अहमद कमाल अली बिन सुफियान के पास गया और उसे लड़की के मुतअल्लिक़ तमाम तर रिपोर्ट देकर लड़की उसके हवाले कर दी। उसने यह भी बताया कि रजब हब्शियों के पास है और उसने उस जगह को अड्डा बना रखा है जहां हब्शी लड़की की कुर्बानी दिया करते थे। अहमद कमाल ने यह भी कहा कि अगर उसे हुक्म दिया जाए तो वह रजब को जिन्दा या मुर्दा वहां से ला सकता है। अली बिन सुफियान ने उसे ऐसा हुक्म न दिया क्योंकि इस मक्सद के लिए उसके पास तरबियत याफ़ता फ़ौजी थे। अहमद कमाल ने वह तरीका बताया जिस से रजब तक पहुंचा जा सकता था। उसने यह तरीका लड़की की सुनाई हुई बातों के मुताबिक सोंचा था। अली बिन सुफियान पहले ही एक पार्टी सूडान भेज चुका था। उसने लड़की से तफ़तीश करने से पहले चार निहायत ज़हीन कमाण्डर बुलाए और उन्हें अहमद कमाल के हवाले कर के हुक्म दिया कि उसके मुताबिक वह सूडान फौरन चले जाएं और रजब को लाने की कोशिक करें। उसने अहमद कमाल को वापसी से पहले आराम के लिए भेज दिया और लड़की को अपने पास बुलाया।

लड़की से उसने पहला सवाल किया तो लड़की ने जवाब दिया– "अहमद कमाल मेरे सामने बैठा रहेगा तो जो पूछोगे बता दूंगी वर्ना ज़बान नहीं खोलूंगी, ख्वाह जल्लाद के हवाले करदो।"

अली बिन सुफियान ने अहमद कमाल को बुला कर उसके सामने बैठा दिया। लड़की ने मुस्कुराकर बोलना शुरू कर दिया। उसने कुछ भी नहीं छुपाया और अखीर में कहा– "मुझे सज़ा देनी है तो मेरी एक आखरी ख्वाहिश पूरी कर दो। मैं अहमद कमाल के हाथ से मरना चाहती हूं।" उसने तफसील से सुना दिया कि वह अहमद कमाल की मुरीद क्यों बन गई है।

अली बिन सुफियान ने लड़की को कैद में डालने के बजाए अहमद कमाल की तहवील में रहने दिया और सुल्तान अय्यूबी के पास चला गया। उसे लड़की का सारा बयान सुनाया। उसने कहा– "आप का मोतमिद फैजुल फातमी हमारा दुश्मन है, लड़कियों को उसके पास आना था।" सुल्तान अय्यूबी का फौरी रद्देअमल रहा था– "वह झूट बकती है, तुम्हें गुम्राह कर रही है। फैजुल फातमी ऐसा हाकिम नहीं है।"

"अमीरे मोहतरम! आप भूल गये हैं कि वह फातमी है?" अली बिन सुफियान ने कहा– "आप शायद यह भी भूल गए हैं कि फातमी और फिदाईयों का गहरा रिश्ता है, यह लोग आप के वफादार हो ही नहीं सकते।"

सुल्तान अय्यूबी गहरी सोंच में खोगया। वह ग़ालिबन सोंच रहा था कि किस पर भरोसा करे, कुछ देर बाद उसने कहा– "अली! मैं तुम्हें इजाज़त नहीं दूंगा कि फैज़ुल फातमी को गिरफ्तार कर लो। कोई ऐसी तरकीब करो कि वह जुर्म करता पकड़ा जाऐ। मैं उसे मौके पर पकड़ना चाहता हूं और यह मौका पैदा करना तुम्हारा काम है। वह जंग जैसा अहम शोबा का हाकिम है कि जंगी राज़ उसके पास हैं, मुझे बहुत जल्दी यह सबूत चाहिए कि वह ऐसे घिनावने जुर्म का मुजरिम है या नहीं।"

अली बिन सुफियान सुरागरसानी का माहिर था। खुदा ने उसे दिमाग ही ऐसा दिया था। उसने एक तरकीब सोंच ली और सुल्तान अय्यूबी से कहा– "लड़की जिन मराहिल से गुज़र कर आई है उनकी दहशत ने उसका दिमाग माऊफ़ कर दिया है और वह अहमद कमाल के लिए जज़्बाती हो गई है क्योंकि उस शख़्स ने उसे दहशत से बचाया और ऐसा सलूक किया है कि लड़की उसके बग़ैर बात ही नहीं करती। मुझे उम्मीद है कि मैं उस लड़की को इस्तेमाल कर सकूंगा।"

"कोशिश कर के देखो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन याद रखो, मैं वाज़ेह सबूत और शहादत के बगैर तुम्हें इजाज़त नहीं दूंगा कि फैजुल फातमी को गिरिफतार कर लो। मुझे अभी तक यकीन नहीं आ रहा कि वह भी दुश्मन के हाथों में खेल रहा है।"

अली बिन सुफियान लड़की के पास गया और उसे अपना मुद्दआ बताया। लड़की ने कहा– "अहमद कमाल कहे तो मैं आग में भी कूद जाऊंगी।" अहमद कमाल ने उस से कहा "जैसे यह कहते हैं वैसे करो, उनकी बात समझ लो।"

"इसका मुझे क्या इनाम मिलेगा?" लड़की ने पूछा।

"तुम्हें पूरी हिफ़ाज़त से फिलिस्तीन के किले शूबक में पहुंचा दिया जाएगा।" अली बिन सुफियान ने कहा– "और तुम्हें यहां पूरी इज्ज़त से रखा जाएगा।"

"नहीं!" लड़की ने कहा– "यह इनाम बहुत थोड़ा है, मुझे मुह मांगा इनाम दो। मैं इस्लाम कुबूल कर लूंगी और अहमद कमाल के साथ शादी कर लूंगी।"

अहमद कमाल ने साफ इंकार कर दिया। अली बिन सुफियान उसे बाहर ले गया। अहमद कमाल ने कहा कि यह बेशक इस्लाम कुबूल कर ले लेकिन मैं फिर भी इसे इस्लाम का दुश्मन समझूंगा। अली बिन सुफियान ने उस से कहा– "मुल्क और कौम की सलामती की ख़ातिर तुम्हें यह कुर्बानी देनी होगी।" अहमद कमाल मान गया, उसने अंदर जाकर लड़की से कहा– "मैं चूंकि अभी तक बे–एतबार लड़की समझ रहा हूं इसलिए शादी से इंकार किया है अगर तुम साबित कर दो कि तुम्हारे दिल में मेरे मज़हब के लिए कुर्बानी का जज़्बा है तो मैं तमाम उम्र तुम्हारा गुलाम रहूंगा।"

लड़की ने अली बिन सुफियान से कहा– "कहो मुझे क्या करना है। मैं भी देख लूंगी कि

मुसलमान अपने वादे के कितने पक्के होते हैं। मेरी एक शर्त यह भी है कि अहमद कमाल मेरे साथ रहेगा।"

अली बिन सुफियान ने उसकी यह शर्त भी मान ली। और अपने एक अहल कार को बुला कर अहमद कमाल और लड़की के लिए रेहाईश के इन्तिज़ाम का हुक्म देदिया। उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया और लड़की को अहमद कमाल की मौजूदगी में बताने लगा कि उसे क्या करना है।

❖

तीसरे दिन अली बिन सुफियान के भेजे हुए आदमी हब्शियों की उस मुकद्दस जगह पहुंच गए जहां से लड़कियां भागीं थीं और जहां रजब हब्शियों का कैदी था। यह छः आदमी थे और सब ऊंटों पर सवार थे। उन्होंने भेस नहीं बदला था, वह मिस्री फौज के लिबास में थे। उनके पास बरछियां, तीर व कमान और तलवारें थीं। उन्हें अहमद कमाल ने लड़कियों की रूदाद सुना दी थी। उसके मुताबिक अली बिन सुफियान ने उन्हें तरीका–ए–कार समझा दिया था। एक बर्छी न जाने कहां से आई और उन के सामने ज़मीन पर गड़ गई। इसका मतलब यह था कि रुक जाओ, तुम घेरे में हो। वह रुक गये। हब्शी पुरोहित सामने आया। उसके साथ तीन हब्शी थे जिनके पास बरछियां थीं। हब्शी ने उन्हें ख़बरदार किया कि वह उसके छुपे हुए तीर अंदाज़ों के ज़द में हैं। अगर उन्हों ने कोई ग़लत हरकत की तो उनमें से कोई भी ज़िन्दा नहीं बचेगा।

सबने अपने हथियार हब्शियों के आगे फैंक दिये और ऊंटों से उतर आऐ। उनके काइद ने हब्शी पुरोहित से हाथ मिला कर कहा– "हम तुम्हारे दोस्त हैं, मोहब्बत लेकर आए हैं। तुम्हारी मोहब्बत ले के जाऐंगे, क्या तुमने तीनों लड़कियों की कुर्बानी दे दी है?"

"हमने किसी लड़की की कुर्बानी नही दी।" पुरोहित ने गुस्से से जवाब दिया। तुम क्यो पूछते हो?"

"हम मिस्री फ़ौज के बाग़ी हैं।" जमाअत के काइद ने जवाब दिया– "हम तुम्हारी इस फ़ौज के सिपाही हैं जो मुसलमानों से तुम्हारे देवता की तौहीन का इन्तेक़ाम लेगी। हमें तुम्हारे आदमियों ने बताया था कि उन्हें शिकस्त इस लिए हुई है कि लड़की की कुर्बानी नहीं दी जासकी। हम रजब के साथ थे, हम ने उससे कहा कि हम तीन फिरंगी लड़कियां अगवा कर के ले आऐंगे और एक के बजाए तीन लड़कियां कुर्बान करेंगे और देवता के मगरमच्छों को खिलाऐंगे। हम बड़ी दूर से तीन लड़कियां वरग़ला कर और बहुत से लालच देकर ले आए और रजब के हवाले करदी थीं। वह उन्हें यहां ले आया था। हम यह देखने आए हैं कि लड़कियों की कुर्बानी दी जा चुकी है या नहीं।"

हब्शी पुरोहित धोखे में आगया, उसने कहा– "रजब ने हमारे साथ कमीनापन किया है, वह लड़कियां ले आया था मगर उसकी नीयत ख़राब हो गई थी। उसने लड़कियों को यहां से भगा दिया लेकिन हमने उसे नहीं भागने दिया, उसे पूरी सज़ा दी है। लड़कियां हमारे हाथ से निकल गई हैं, क्या तुम दो लड़कियों का बन्दो बस्त कर सकते हो? देवताओं का क़हर सख़्त

होता जा रहा है।"

"हम ज़रूर बन्दो बस्त करेंगे।" काईद ने कहा– "थोड़े दिनो तक हम दो लड़कियां ले आऐंगे, हमें रजब के पास ले चलो। हम उससे पूछेंगे कि लड़कियां कहां हैं?"

हब्शी पुरोहित सबको अपने साथ ले गया, एक जगह मिट्टी का एक चौड़ा और गोल बर्तन रखा था जो ऐसे ही एक बर्तन से ढका हुआ था। पुरोहित ने ऊपर वाला बर्तन उठा कर नीचे वाले बर्तन में हाथ डाला। जब उसने हाथ बाहर निकाला तो उसके हाथ में रजब का सर था। चेहरे का हर एक नक़्श बिलकुल सही और सलामत था, आंखें आधी खुली हुई थीं, मुंह बन्द था। यह सर और चेहरा गर्दन से काट कर जिस्म से अलग किया हुआ था। उससे पानी टपक रहा था। यह कोई दवाई थी जिसमें हब्शियों ने सर डाला हुआ था ताकि खराब न हो। पुरोहित ने कहा– "इसका जिस्म मगरमच्छों को खिला दिया है। इसके साथियों को हमने ज़िन्दा झील में फेंक दिया था। मगरमच्छ भूखे थे।"

"अगर हमें यह दे दो तो हम अपने साथियों को दिखऐंगे।" एक ने हा– "और उन्हें बताऐंगे कि जो अंगोक के देवता की तौहीन करेगा उसका यह अंजाम होगा।"

"तुम इस शर्त पर ले जा सकते हो कि कल सूरज गुरूब होने से पहले वापस ले आओगे।" पुरोहित ने हा– "यह अंगोक के देवता की मिलकियत है, अगर वापस नहीं लाओ गे तो तुम्हारा सर जिस्म से जुदा हो जाऐगा।"

❖

"तीसरे रोज़ रजब का सर सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़दमों में पड़ा था और सुल्तान अय्युबी गहरी सोच में खोया हुआ था।

उसी रात का वाक़या है– अहमद कमाल और लड़की उस मकान के बरामदे में सोए हुए थे जो उन्हें रिहायश के लिए दिया गया था। उस मकान में रहते हुए उन्हें छः रोज़ गुज़र गए थे। इस दौरान लड़की अहमद कमाल से कहती रही थी कि वह फौरन मुसलमान होने को तैय्यार है और अहमद कमाल उसके साथ शादी कर ले। लेकिन अहमद कमाल यही एक जवाब देता था– "पहले फ़र्ज़ पूरा करेंगे।" लड़की ने दो तीन बार इस ख़दशे का भी इज़्हार किया था कि उसके साथ धोखा होगा। अहमद कमाल अभी उसे एक हाथ दूर ही रखने की कोशिश कर रहा था। इस दौरान लड़की के दिल से दहशत उतर गई थी और अब होशमंदी से सोचने के क़ाबिल हो गई थी।

उस रात वह और अहमद कमाल बरामदे में सोए हुए था। बाहर एक सिपाही पहरे पर खड़ा था आधी रात से कुछ देर पहले पहरेदार कमाल के इर्द गिर्द घूमने के लिए आहिस्ता आहिस्ता चला तो किसी ने पीछे से उसकी गर्दन बाज़ू में जकड़ ली। फौरन बाद उसके मुंह पर कपड़ा बांध दिय गया। हाथ और पांव भी रस्सियों में जकड़े गए। वह चार आदमी थे। मकान का दरवाज़ा अंदर से बंद था। एक आदमी दीवार से पीठ लगा कर खड़ा था। दूसरा उसके कंधे पर चढ़ कर दीवार फलांग गया। अंदर से उसने दरवाज़ा खोल दिया, बाक़ी तीन आदमी भी अंदर चले गये। एक जो सबसे ज़्यादा क़वी हैकल था, उसने लड़की के मुंह पर

कपड़ा बांध दिया। लड़की के जागने तक उसने लड़की को दबोच लिया और उठा कर कंधे पर डाल लिया। तीन आदमियों ने अहमद कमाल को रस्सीयों से जकड़ कर और मुंह पर कपड़ा बांध कर पलंग पर ही पड़े रहने दिया। उसे मज़ाहमत की मोहलत ही न मिली। बाहर जाकर उन्हों ने लड़की पर कम्बल डाल दिया ताकि कोई देख ले तो उसे पता न चल सके कि उस आदमी के कंधे पर लड़की है।

शहर से चार पांच मील दूर फिरऔनों के वक़्तों की एक बहुत ही वसीअ व अरीज़ और भूल भुलैया जैसी इमारत के खण्डर थे। उन के मुतअल्लिक़ लोग बहुत सी डरावनी बातें किया करते थे कि इमारत के अंदर एक बुलन्द चट्टान है। उस चट्टान को काट कर बहुत से कमरे और उन कमरों के नीचे भी कमरे बने हुए थे। उनके अंदर जाकर वही वापस आ सकता था जो उनसे वाकिफ़ था। बहुत मुद्दत से किसी ने उन खण्डरों के अंदर जाने की जुरअत नहीं की थी। मशहूर हो गया था कि अन्दर जिन्नों, भूतों का बसेरा है। अन्दर सांपों का बसेरा तो ज़रूर ही था। सांपों के डर से कोई इस खण्डर के करीब से भी नहीं गुज़रता था। बड़ी ख़ौफ़नाक कहानियां सुनी सुनाई जाती थीं। इसके बावजूद यह चार आदमी जो लड़की को अग़वा करके ले गये थे उन खण्डरों में दाख़िल हो गये और दाख़िल भी इस तरह हुए जैसे यही उनका घर था।

वह ग़ार नुमा कमरों, गुलाम गरदिशों और अंधेरी गलियों में से बग़ैर रुके गुज़रते गये। आगे मशालों की रौशनी थी। उनके क़दमों की आहटों से चमगादड़ उड़ते और फड़ फड़ाते थे। छिपकलियां और रेंगने वाली कई चीज़ें इधर उधर भागती फिर रही थीं। वह चट्टान में बने हुए एक कमरे में दाख़िल हो गये। वहां एक आदमी मशाल लिए खड़ा था जो उनके आगे आगे चल पड़ा। आगे सीढ़ियां थीं जो नीचे उतरती थीं। वह सब नीचे उतर गये और एक तरफ़ मुड़ कर एक वसीअ कमरे में दाख़िल हो गये। वहां फर्श पर बिस्तर बिछा हुआ था। उसके साथ बड़ी खुशनुमा दरी थी। कमरा सजा हुआ था। लड़की को बिस्तर पर डाल कर उसके मुंह से कपड़ा खोल दिया गया। लड़की गुस्से से बोली– "मेरे साथ यह सलूक क्यों किया गया है? मैं मर जाऊंगी किसी को अपने करीब नहीं आने दूंगी।"

"अगर तुम्हें वहां से उठवा न लिया जाता तो कल सुबह तुम्हें जल्लाद के हवाले कर दिया जाता।" एक आदमी ने कहा– "मेरा नाम फैजुल फातमी है, तुम्हें मेरे पास आना था, बाकी दो कहां हैं? तुम अकेली कैसे पकड़ी गई हो? रजब कहां है?

लड़की मुतमईन हो गई और बोली– "मैं ख़ुदा का शुक्र बजा लाती हूं जिसने मुझे बड़ी बड़ी ख़ौफनाक मुसीबतों से बचा लिया। मैं मंज़िल पर पहुंच गई हूं।" उसने फैजुल फातमी को रजब, हब्शियों, आंधी और लड़कियों की मौत और अहमद कमाल के हत्थे चढ़ जाने की सारी रूदाद सुना दी। फैजुल फ़ातमी ने उसे तसल्ली दी और उन चारों आदमियों को जो लड़की को उठा लाऐ थे, सोने के छः छः टुकड़े दिये और कहा– "तुम अब अपनी ज़गह संभाल लो, मैं थोड़ी देर बाद चला जाऊंगा। यह लड़की तीन चार रोज़ यहीं रहे गी। मैं रात को आया करूंगा। बाहर जब उसकी तलाश ख़त्म हो जाएगी तो इसे ले जाऊंगा।"

चारों आदमी चले गये और खण्डर के चारों तरफ़ ऐसी जगहों पर बैठ गए जहां से बाहर नज़र रखी जा सकती थी। फ़ैजुल फ़ातमी के साथ एक ही आदमी रह गया जो मिस्री फौज का कमाण्डर था। अंदर फ़ैजुल फातमी अपनी कामयाबी पर बहुत खुश था और दो लड़कियों की मौत का उसे ग़म भी था। उसे रजब के अंजाम का भी इल्म नहीं था। उसने कहा– "रजब को वहां से निकालना ज़रूरी है उसने अली बिन सुफियान और सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल का कुछ इन्तज़ाम किया था जिसका मुझे अभी इल्म नहीं कि क्या था। उसने ग़ालेबन फिदाईयों से मामला तय किया है। यह दोनो कत्ल अब बहुत ज़रूरी हो गये हैं। अब हमें कोई नया मंसूबा बनाना है। मैं दूसरे साथियों से बात करके तुम्हें कल बताऊंगा। अभी आराम करो, मुझे वापस जाना है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी को आप पर ऐतमाद है?" लड़की ने पूछा।

"इतना ज़्यादा कि अपनी ज़ाती बातों में भी मुझ से मशवरा लेता हे।" फ़ैजुल फ़ातमी ने जवाब दिया।

"मुझे पता चला है कि आला हुक्काम मे सलाहुद्दीन अय्यूबी के वफ़ादारों की तादाद बहुत ज़्यादा है।" लड़की ने कहा– "और फ़ौज भी उसकी वफ़ादार है"

"यह सही है!" कमाण्डर जो वहां मौजूद था बोला– "उसका सुराग़रसानी का मुहकमा बहुत होशियार है, जहां कोई सर उठाता है उसकी निशांदेही हो जाती है। आला हुक्काम में दो और हैं जो सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ काम कर रहे हैं। उनके नाम आप को मोहतरम फ़ैजुल फ़ातमी बता सकेंगे।

फ़ैजुल फ़ातमी ने दोनो नाम बता दिये और मुस्कुरा कर लड़की से कहा– "तुम्हें आला सतह पर ही काम करना है। सिर्फ़ दो हुक्काम के दरमियान खलिश पैदा करनी है और दो को जहर देना है जो तुम आसानी से दे सकोगी मगर अब मुश्किल यह पैदा हो गई है कि तुम्हें किसी महफ़िल में नहीं ले जासकेंगे। तुम परदा नशीन मुसलमान लड़की के भेस में काम करोगी, वर्ना पकड़ी जाओगी। हो सकता है मैं तुम्हें वापस फिलिस्तीन भेज दूं और किसी और लड़की को बुला लूं जिसे यहां कोई पहचान न सके। मेरा गिरोह बहुत ज़हीन और सरगर्म है। यह सालारों से नीचे कमान्दारों की सतह का गिरोह है। यह चार आदमी जो तुम्हें इतनी दिलेरी से उठा लाये हैं, इसी गिरोह के अफ़राद हैं। हमने अय्यूबी की फौज में बे–इत्मिनानी फैलानी शुरू कर दी है। कौम और फ़ौज को एक दूसरे से मुतनफ्फिर करना ज़रूरी है। इस वक़्त सुरते हाल यह है कि शामी और तुर्क फौजी मिस्री अवाम में अपने अच्छे सुलूक, किरदार और लड़ने के जज़्बे के बदौलत बहुत मकबूल है और इज्ज़त की निगाह से देखे जाते हैं। सूडानियों को शिकस्त देकर उन्हों ने शहरियों के दिलों में इज्ज़त का इज़ाफ़ा कर लिया है। हमें फौज की इस इज्ज़त को मजरूह करना है। सालारों और दीगर फौज़ी हुक्काम को रुसवा करना है। उसके बग़ैर हम सलीबियों और सूडानियों की कोई मदद नहीं कर सकते। बाहर का हमला रहेगा। फौज उसे कामयाब नहीं होने दगी। कौम फौज का साथ देगी। अगर इस वक़्त एक तरफ़ से सलीबी और दूसरी तरफ़ से सूडानी हमला कर दें तो कौम और फौज

मिलकर काहिरा को ऐसा किला बना देगी जिसे फतह करना नामुमकिन होगा। काहिरा को फ़तह करने के लिए हमें ज़मीन हमवार करनी होगी। लोगों के ज़ेहनों में वहम और वसवसे और नौजवानों के किरदार में आवारगी पैदा करनी होगी।"

"मुझे बता दिया गया था कि यह काम दो साल से हो रहा है।" लड़की ने काह।

"खासी कामयाबी भी हुई है।" फैज़ुल फ़ातमी ने कहा– "बदकारी में इज़ाफा हो गया है मगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक तो नए मदरसे खोल दिए हैं, दूसरे मस्जिदों में खुत्बे से ख़लीफ़ा का नाम निकाल कर कोई और ही रंग पैदा कर दिया है और लड़कों को असकरी तालीम देनी शुरू कर दी है।"

❖

बात यहीं तक पहुंची थी कि उन चार आदमियों में से एक आया और फैज़ुल फातमी से कहा– "अभी बाहर न जाना, कुछ गड़ बड़ लगता है।"

फैज़ुल फातमी घबराया। उस आदमी के साथ बाहर चला गया, एक ऊंची जगह छुप कर देखा, आधी रात के पूरे चांद ने बाहर के माहोल को रौशन कर रखा था। उसने कहा– "तुम लोगों ने बेएहतियाती की है, यह तो फौजी मालूम होते हैं, घोड़े भी हैं, तुम चारों तरफ़ से देखो, मैं किधर से निकल सकता हूं।"

"मैं देख चुका हूं।" उस आदमी ने जवाब दिया– "यूं नज़र आता हैं जैसे हम मुकम्मल घेरे में हैं। आप वहीं चले जाएं। मशालें बुझा दें। वहां से निकलने की गलती न करें। वहां तक कोई नहीं पहुंच सकेगा।"

फैज़ुल फ़ातमी खण्डरों में ग़ायब होगया और यह आदमी जो पहरा दे रहा था बुलन्द जगह से उतर कर अंदर को जाने की बजाए दीवारों के साथ साथ छुपता बाहर निकल गया। बाहर का यह आलम था कि पचास के क़रीब प्यादह फौजी थे और बीस पचीस घोड़ों पर सवार थे। उन्हों ने सारे खण्डर को घेरे में ले लिया था। यह पहरेदार उन तक गया और एक फौजी से पूछा– "अली बिन सुफियान कहां है?" उसे बताया गया तो वह दौड़ता हुआ गया। उस दस्ते की कमान अली बिन सुफ़ियान खुद कर रहा था। उसके साथ अहमद कमाल था। पहरेदार ने उन्हें कहा– "अंदर कोई ऐसा ख़तरा नहीं, आप के साथ दो आदमी भी काफी हैं। मेरे साथ आऐं।" यह पहरे दार उन चार आदमियों में से था जिन्हों ने लड़की को इग़वा किया था।

अली बिन सुफ्यिान ने दो मशालें रौशन कराई, अहमद कमाल और चार अस्करियों को साथ लिया। चारों के हाथों में मशालें दीं। सबने तलवारें निकाल लीं और उस आदमी के साथ खण्डरों में दाख़िल हो गये। उन्हों ने देखा कि कोई आदमी किसी तरफ़ से आया और दौड़ता हुआ अंदर की तरफ़ चला गया है। अली बिन सुफ़ियान के रहनुमा ने कहा– "यह उनका आदमी है, वह अंदर वालों को खबर करने चला गया है। आप तेज़ चलें।" वह सब दौड़ पड़े। अगर यह लोग रहनुमा के बग़ैर होते तो इन भूल भुलैयों में भटक जाते या डर कर वहां से भाग आते। रहनुमा के साथ वह बड़ी अच्छी रफ़तार से जा रहे थे। किसी तरफ़ से एक और आदमी

दौड़ता आया। उस की उन्हें यह आवाज़ सुनाई दी– "मैं उधर जा रहा हूं, तेज़ चलो।" यह रहनुमा का दूसरा साथी था।

वह उस चट्टानी कमरे में पहुंच गये जिससे सीढ़ियां नीचे उतरती थीं। नीचे से उन्हें आवाजें सुनाई दीं। "हमारे साथ धोखा हुआ है, यह दोनो उनके आदमी हैं।" फिर तलवारें टकराने की आवाज़ें सुनाई दीं और यह आवाज़ भी आई– "इसे भी खत्म कर दो, यह गवाही न दे सकेगी।"

अली बिन सुफियान और अहमद कमाल मशाल बरदारों के पीछे दौड़ते फलांगते नीचे उतरे। उस कमरे में पहुंचे तो वहां खून बह रहा था। लड़की पेट पर दोनो हाथ रखे बैठी हुई थी। फैजुल फ़ातमी एक पहरेदार से लड़ रहे थे। अली बिन सुफियान ने फैजुल फातमी को ललकारा। फैजुल फातमी ने जब अपने खिलाफ़ बहुत सी तलवारें देखीं तो उसने तलवार फेंक दी। अहमद कमाल ने दौड़कर लड़की को संभाला। उसका पेट चाक हो चुका था। अहमद कमाल ने फ़र्श पर बिछे हुए बिस्तर से चादर उठाकर लड़की के पेट पर कस कर बांध दी और अली बिन सुफियान से कहा– "मुझे इजाज़त हो तो इसे बाहर ले जाऊं?" अली बिन सुफियान ने उसे इजाज़त दे दी। अहमद कमाल ने लड़की को बाजुओं पर उठा लिया, वह सख्त तकलीफ़ में थी फिर भी उसने मुस्कुरा कर अहमद कमाल से कहा– "मैं ने फ़र्ज पूरा कर दिया है, तुम्हारे मुजरिम पकड़वा दिये हैं।"

फैजुल फातमी और लड़की को इगवा करने वाले चार में से दो आदमियों को गिरफ़तार कर लिया गया बाकी दो आदमी और एक कमानदार जो फैजुल फ़ातमी के साथ थे, अली बिन सुफियान के आदमी थे। यह एक डरामा था जो फैजुल फातमी को मौके पर गिरिफ़तार करने के लिए खेला गया था। लड़की ने पूरा तआवुन किया लेकिन ज़ख्मी हो गई। यह डरामा इस तरह किया गया था कि लड़की से वह खुफ़िया अल्फ़ाज़ मालू किए गये जो उसके गिरोह को एक दूसरे को पहचानने के लिए इस्तेमाल करने थे। लड़की ने यह भी बता दिया कि उसे फैजुल फ़ातमी के पास जाना था। अली बिन सुफियान ने अपने तीन ज़हीन जासूस इस्तेमाल किये। जिन में एक कमानदार के ओहदे का था। उन्हें खुफिया अल्फ़ाज बताए और कहा कि वह फैजुल फातमी तक रसाई हासिल करें और उसे बताऐ कि तीन में से एक लड़की यहां आ गई है लेकिन वह फलां मकान में कैद है जहां से उसे निकाला जा सकता है। उन्हें यह भी बताया गया कि वह फैजुल फातमी को रजब का झूठा पैग़ाम दें कि उस लड़की को बचाओ और अपनी कार्रवाईयां तेज़ करो।

उन जासूसों ने तीन दिनों के अन्दर फ़ैजूल फातमी तक रसाई हासिल कर ली और उस पर साबित कर दिया कि वह उसके ज़मीन दोज़ गिरोह के अफराद हैं। फैजूल फात्मी को यह खतरा भी था कि लड़की चुंकी कैद में है इस लिये अज़ियत के ज़ेरे असर बता देगी कि वह भी उसके साथ है। फैजूल फात्मी के लिये अपना तहफ्फुज़ ज़रूरी था। लिहाज़ा उस ने लड़की के अग़वा का मंसूबा बनाया। उस में उसने कमान्दार को अपने साथ रखा। दो आदमी अली बिन सुफियान के भेजे हुये और दो अपने मिला कर उनके सुपुर्द यह काम किया कि वह

लड़की को उठा लायेंगे और खण्डरों में पहुंचा देंगे। उस खण्डर को उन्हों ने कुछ अर्से से अपना खुफिया अड्डा बना रखा था। मंसूबा बन गया तो अली बिन सुफियान तक पहुंच गया। पांच छः दिनों में अहमद कमाल और लड़की को बताया गया कि वह बरामदे में सोऐंगे और रात को लड़की इग़वा होगी जिस के ख़िलाफ़ वह मज़ाहमत नहीं करेंगे। मकान के बाहर हर वक़्त एक सिपाही पहरे पर रहता था। उस रात जो आदमी पहरे पर था वह सिपाही नहीं बल्कि अली बिन सुफियान के मोहकमे का जासूस था। उसे मालूम था कि रात को उस पर हमला होगा और हमला किस तरह होगा। हमला करने वाला अली बिन सुफियान का आदमी था अगर फैजुल फातमी का आदमी होता तो वह उसे ख़ंजर मार कर हलाक कर देता।

उस रात फैजुल फात्मी और कमान्दार खण्डर में चले गये। ठीक वक़्त पर हमला हुआ। दीवार फलांगी गई, उस वक़्त अहमद कमाल जाग रहा था। उसने देखा कि लड़की को उठा लिया गया है लेकिन वह आंखें बंद किये लेटा रहा। उसने तड़पना उस वक़्त शुरू किया जब वह रस्सियों में बंध चुका था। लड़की को खण्डर में पहुंचा दिया गया। वह डरामा इसलिए खेला गया था कि फैजुल फात्मी ने इग़वा का मंसूबा बनाया और उसमें अपने दो आदमी शामिल कर दिये थे। उन पर यह ज़ाहिर करना था कि यह हकीकी इग़वा है और इसमें कोई धोखा फरेब नहीं। आख़िर दम तक शक न हुआ। इग़वा के बाद अली बिन सुफियान ने पहरेदार और अहमद कमाल की रस्सियां खोलीं। प्यादह सिपाही और सवार तैय्यार थे। थोड़े से वक़्फे के बाद वह खण्डर की तरफ़ रवाना हो गये और खण्डर को घेरे में ले लिया।

उन्हें सबसे पहले अली बिन सुफियान के ही एक आदमी ने देखा जिसने फ़ैजुल फात्मी को जाकर इत्तला दी। उसे बाहर लाकर घेरा दिखाया और यह मश्वरा दिया कि वह उसी कमरे में चला जाऐ। उसे उधर भेज कर यह आदमी बाहर निकल गया और अली बिन सुफियान और अहमद कमाल को अंदर ले गया। यह उस आदमी की दानिशमंदी थी कि उसने फैजुल फात्मी को उसी कमरे में छुपे रहने पर कायल कर लिया था। अगर वह खण्डर के भूल भुलय्यों जैसे कमरों, बरामदों, गलियों और तहख़ानों में निकल जाता तो उसे पकड़ना आसान न होता। खण्डर बहुत वसी और पेचीदा थे। बाहर तो चांदनी थी लेकिन अंदर तारीकी थी जिसमें ताक्कुब किया जाता तो अपने आदमियों के मारे जाने का भी खतरा था। बिल्कुल आखरी वक़्त फैजुल फातमी को पता चला कि वह कमान्दार और आदमी उसके साथी नहीं बल्कि उसे धोखे में यहां लाए हैं। लड़की से यह ग़लती हुई कि उसके मुंह से कुछ ऐसे अलफ़ाज़ निकल गये जिससे ज़ाहिर हो गया कि यह भी उस धोखे में शरीक है। फैजुल फात्मी के दो साथी उसके पास पहुंच गये। धोखा बेनकाब हो गया और लड़ाई शुरू हो गई। फैजुल फ़ात्मी ने लड़की के पेट में नोक की तरफ से तलवार मारी और उसका पेट चाक कर दिया। उसने लड़की को ग़ालिबन इसलिए भी क़त्ल करना ज़रूरी समझा था कि वह उसके खिलाफ़ गवाही देने के लिए भी ज़िन्दा न रहे।

फैजुल फात्मी और उसके साथियों को कैद में डाल दिया गया। अली बिन सुफियान ने तीनों को अलग अलग कैद में रखा और तीनों को रजब का सर दिखा कर कहा– "अपने

दोस्त का अंजाम देख लो। अगर तुम्हें यह तवक्को है कि तुम्हें फौरन सज़ा दे दी जाऐ गी तो यह ख़्याल दिमागों से निकाल दो। जब तक अपने पूरे गिरोह को सामने नहीं लाओगे तुम्हें जकड़कर शिकंजे में बांधे रखूंगा। जीने भी नहीं दूंगा, मरने भी नहीं दूंगा।"

लड़की की हालत अच्छी नही थी, तबीब और जर्राहों ने उसे बचाने की पूरी कोशिश कर डाली मगर कटी हुई अंतड़ियों का कोई इलाज न हो सका। वह फिर भी मुतमइन थी कि जैसे उसे पेट के मुहलिक ज़ख़्म की परवाह ही नहीं थी। उस का एक ही मुतालबा था कि अहमद कमाल को मेरे पास बैठा रहने दो। सुल्तान अय्यूबी भी उसकी अयादत के लिये आया। अहमद कमाल अमीरे मिस्र और अपनी फौज के सालार आला को देख कर ताज़ीम के लिए उठा तो लड़की ने उसे हाथ से पकड़कर अपने पास बैठा लिया। अहमद कमाल सुल्तान अय्यूबी की मौजूदगी में बैठ नहीं सकता था। आख़िर सुल्तान ने उसे लड़की के पास बैठने की इजाज़त दे दी। सुल्तान अय्यूबी ने लड़की के सर पर हाथ फेरा और शफ़कत से सेहतयाबी की दुआ की।

तीसरी रात अहमद कमाल लड़की के सरहाने में बैठा हुआ था। लड़की ने अनोखे से लहजे में पूछा—"अहदम! तुम ने मेरे साथ शादी कर ली है न? मैंने अपना वादा पूरा किया, तुमने अपना वादा पूरा कर दिया है, खुदा ने मेरे गुनाह बख़्श दिये हैं।" उसकी ज़ुबान लड़खड़ाने लगी। उसने अहदम कमाल का हाथ अपने दोनों हाथों में मज़बूती से पकड़ लिया मगर गिरिफ्त फौरन ढीली पड़ गई अहमद कमाल ने कलमा शरीफ़ पढ़ा और लड़की को खुदा के सुपुर्द कर दिया। दूसरे दिन सुल्तान अय्यूबी के हुक्म के मुताबिक़ लड़की को मुसलमानों के क़ब्रस्तान में दफ़न कर दिया गया।

फैजुल फात्मी ने और उसके साथियों ने सिर्फ़ दो दिन अज़ियतें सहीं और अपने गिरोह की निशानदेही कर दी। उन लोगों को भी पकड़ा गया। मराकशी मोअर्रिख़ असद अल असदी ने सुल्तान अय्यूबी के वक़्त के एक कातिब के हवाले से लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी ने जब फैजुल फात्मी की सज़ाए मौत पर दसतख़त किये तो सुल्तान ज़ारो कतार रोने लगा था।

जब ज़हर को ज़हर ने काटा

यह वाकिया 1171 ई0 का है।

काहिरा में एक मस्जिद थी जो इतनी बड़ी नहीं थी कि लोग वहां जुमा की नमाज़ पढ़ते और इतनी छोटी भी नहीं थी कि नमाज़ियों की कमी होती। यह काहिरा के उस इलाके में थी जो शहर का करीबी मज़ाफ़ात या शहर के बाहर का इलाक़ा था जहां दरमियाना और उससे कम दर्जे के लोग रहते थे। मज़हब का एहतराम उन्हीं लोगों के दिलों में रह गया था मगर उनकी बदनसीबी यह थी कि तालीम से बे बहरा थे। जज़्बाती इस्तदलाल और दिलकश अलफ़ाज़ से फौरन मुतअस्सिर होते और उन्हें कुबूल कर लेते थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मिस्र में आकर जो नई फौज तैय्यार की थी उसमें उन कुम्बों के अफराद ज़्यादा भरती हुए थे जिसकी दो वजूहात थीं। एक तो यह ज़रियाए माश था। सुल्तान अय्यूबी ने फौज की तन्ख्वाह में कशिश पैदा की थी और मुताअदद सहूलतें भी थीं। दूसरी वजह यह कि यह लोग जिहाद को फर्ज़ समझते थे। वह इस्लाम के नाम पर जान और माल कुर्बान करने को तैय्यार रहते थे। उस दौर में इस जज़्बे की शदीद ज़रूरत थी। सरकारी तौर पर उन्हें बताया गया था कि सलीबी दुनिया आलमें इस्लाम का नाम व निशान मिटाने के लिए अपने तमाम तर ज़राए और हर तरह के हथकण्डे इस्तेमाल कर रही है।

छः सात महीनों से यह गुमनाम सी मस्जिद मशहूर हो गई थी। यह शोहरत नए पेश इमाम की बदौलत थी जो इशा कि नमाज़ के बाद दर्स दिया करता था। पहला पेश इमाम सिर्फ तीन रोज़ में ऐसी बीमारी से बीमार हो कर मर गया था जिसे कोई हकीम और सयाना समझ ही न सका। वह पेट के दर्द और आंतों की सोज़िश की शिकायत करता था। इसी रोग से मर गया। वह आम सा एक मोलवी था जो सिर्फ नमाज़ बा जमाअत पढ़ाता था। उसकी वफ़ात के अगले ही रोज़ एक आदमी ने इमामत की पेशकश की। लोगों ने उसे कुबूल कर लिया। वह कहीं झोंपड़े में रहता था उसकी दो बीवियां थीं। उसने लोगों को बताया कि वह इल्म का शैदाई और मज़हब के समुंद्र का गोता खोर है। वह ख़ातिर व मदारात का और लोगों से नज़राने वसूल करने का क़ाइल नहीं था। उसकी ज़रूरत सिर्फ़ यह थी कि उसे कुशादह और अच्छा मकान मिल जाए जहां वह दो बीवियों के साथ इज़्ज़त से और परदे में रह सके।

लोगों ने मस्जिद के क़रीब ही उसे एक मकान ख़ाली करा दिया जिसके कई एक कमरे थे। लोगों ने देखा कि वह दोनो बीवियों के साथ इस मकान में आया। बीवियां सियाह बुर्के में मसतूर थीं। उनके हाथ भी नज़र नहीं आते थे। पापोश तक छुपे हुए थे। उसे लोगों ने ज़रूरी सामान वग़ैरा देकर आबाद कर दिया। लोग एक तो उसकी ज़ाहिरी शख़्सियत से मुतअस्सिर

हुए लेकिन जिस जादू ने उन्हें उसका गरवीदा किया वह उसकी आवाज़ का जादू था। उस मस्जिद में उसने पहली अज़ान दी तो जहां जहां तक उसकी आवाज़ पहुंची सन्नाटा सा तारी होगया। एक मुकद्दस तरन्नुम ज़मीन व आसमान पर वज्द तारी कर रहा था। यह एक तिलिस्म था जो उन लोगों को भी मस्जिद में ले गया जो घरों में नमाज़ पढ़ते या पढ़ते ही नहीं थे। उसी रात उसने इशा की नमाज़ के बाद नमाज़ियों को पहला दर्स दिया और उन्हें कहा कि वह हर रात दर्स दिया करेगा। छः सात महीनों में उसने लोगों को अपना गरवीदा बना लिया। बाज़ लोग उसके मुरीद बन गये। उस मस्जिद में जुमा की नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी, उस पेश इमाम ने जो दरअस्ल आलिम था वहां जुमा की नमाज़ भी शुरू कर दी।

छः सात महीनों बाद उस मस्जिद और उस आलिम पेश इमाम की शोहरत दूर दूर तक पहुंच गई। शहर के भी कुछ लोग उसके दर्स में जाने लगे। वह इस्लाम के जिन बुनियादी उसूलों पर ज़्यादा ज़ोर देता था। वह थे इबादत और मोहब्बत। वह लड़ाई झगड़े और जंग व जदल के खिलाफ सबक देता था। उसने लोगों के ज़ेहनों में यह अक़ीदा पुख़्ता कर दिया था कि इंसान अपनी तक़दीर खुद नहीं बना सकता। जो कुछ है वह खुदा के हाथ में है। इंसान कमज़ोर सा एक कीड़ा है। उस आलिम का अंदाज़े बयान बड़ा ही पूर असर होता था। वह कुरआन हाथ में लेकर हर बात कुरआन की किसी न किसी बात से वाज़ेह करता और अक्सर कहा करता था कि यह मिस्र की खुश बख़्ती है कि इस मुल्क की इमारत इस्लाम के ऐसे शैदाई के हाथ में है। उसने जिहाद का फ़लसफ़ा और मफ़हूम भी पेश किया था जो लोगों के लिए नया था लेकिन उन्हों ने बिला हील व हुज्जत उसे तसलीम कर लिया।

एक रात इशा की नमाज़ के बाद वह अपना दर्स शुरू करने लगा तो एक आदमी ने उठकर अर्ज़ किया— "आलिमे आली मुकाम! खुदा आप के इल्म की रौशनी जिन्नात तक और उस मख़लूक़ तक भी पहुंचाए जो हमें नज़र नहीं आती। मैं अपने आठ दोस्तों के साथ बहुत दूर से आया हूं। हम आप के इल्म की शोहरत सुन कर आए हैं अगर गुस्ताख़ी न हो और आलिमे आली मुक़ाम की खफ़गी का बाइस न बने तो हमें जिहाद के मुतअल्लिक कुछ बताऐं। हम शक में हैं, लोगों ने बताया है कि हमें जिहाद का मतलब ग़लत बताया जाता रहा है।"

सात आठ आवाज़ें सुनाई दीं— "हम ने यह दर्स नहीं सुना था।"

एक ने कहा— "यह वक़्त की आवाज़ है जो हमारे कानों में बिगाड़ कर डाली गई है, हम सही बात सुनना चाहते हैं।"

आलिम ने कहा— "यह कुरआन की आवाज़ है जिसे कोई नहीं बिगाड़ सकता। मेरा फ़र्ज है कि सही आवाज़ को एक हज़ार बार दोहराऊं ताकि यह हर एक कान में पहुंच जाए। जिहाद का मतलब यह नहीं कि दूसरों की ज़मीन पर कब्ज़ा करने के लिए उनकी गर्दने काटो। जिहाद का मतलब कत्ल व ग़ारत नहीं, खून ख़राबा नहीं।" उसने कुरआन से एक आयत पढ़ी और उसकी तफसीर यूं बयान की— "यह इल्म मेरा नहीं, यह फ़रमाने खुदा वंदी है कि तुम बदी और गुनाह के खिलाफ़ लड़ते हो तो उसे जिहाद कहते हैं जो हम सब पर फ़र्ज़ कर दिया गया है। क्या तुमने नहीं सुना कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से नहीं प्यार के ज़ोर से फैला है?

जिहाद की शक्ल बाद में आकर बिगड़ी है और यह उन्हों ने बिगाड़ी है जो बादशाही के दिलदादह हैं। इसाई भी दूसरों के मुल्कों को अपनी सल्तनत बनाने के लिए जंग व जदल को मुक़द्दस जंग कहते हैं और मुसलमान भी इसी इरादे से क़त्ल व ग़ारत को जिहाद कहते हैं। यह सिर्फ़ हुकूमतें और बादशाहियां क़ायम करने के ढंग हैं। लोगों को मज़हब के नाम पर भड़का कर लड़ाया जाता है और इस तरह बादशाहियों की बुन्यादें मज़बूत की जाती हैं।"

"तो क्या अमीरे मिस्र सलाहुद्दीन अय्यूबी हमें गुमराह करके लड़ा रहा है?" उस आदमी ने पूछा जिस ने जिहाद का सही मतलब समझना चाहा था।

"नहीं" आलिम ने जवाब दिया। "सलाहुद्दीन अय्यूबी पर अल्लाह की रहमत हो, उसे बड़ों ने जो बताया है वह सच्चे मुसलमान की हैसियत से पूरी नेक नियती से उस पर अमल कर रहा है। उसके दिल में इसाईयों की नफ़रत डाली गई है। वह उसके मुताबिक अमल कर रहा है। ज़रा गौर करो कि ईसाई और मुसलमान में क्या फ़र्क है? दोनो का नबी मुश्तरक है। आगे आकर ज़रा इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया है। हज़रत ईसा मोहब्बत और अमन का पैग़ाम लाए थे, हमारे रसूल सल्ल0 भी मोहब्बत का पैग़ाम दे गये है। फिर तलवार और ज़िरह बक्तर कहां से आगई? यह उन लोगों की लाई हुई चीजें हैं जो ख़ुदा की इतनी प्यारी ज़मीन पर जिस पर सिर्फ उसी की ज़ाते गिरामी की हुक्मरानी है, वह अपनी हुकूमत क़ायम करते और ख़ुदा के बंदों को अपना गुलाम बनाते हैं। मैं अमीरे मिस्र के दरबार में हाज़िरी दूंगा और उसकी ख़िदमते अक़्दस में जिहाद का सही नुक़्तए नज़र वाज़ेह करूंगा। अमीरे मिस्र सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सही जिहाद शुरू कर रखा है जो जिहालत और बे अमली के ख़िलाफ़ है। उसने ख़ुत्बे से ख़लीफ़ा का नाम निकाल कर बहुत बड़ा जिहाद किया है। उसने मदरसे खोल कर भी जिहाद किया है लेकिन मदरसों में यह ख़राबी है जहां मज़हब और मुआशरत की तालीम दी जाती है, वहां अस्करी तरबियत भी दी जाती है। बच्चों को ख़ुदा के नाम पर ग़ारत गरी के सबक दिये जाते हैं। उन्हें तेग़ ज़नी और तीर अंदाज़ी भी सिखाई जाती है। जब तुम अपने बच्चों के हाथों में तलवार और तीर कमान दोगे तो उन्हें यह भी बताओगे कि उनसे वह किसे हलाक करें। ज़ाहिर है कि तुम उन्हें कुछ इंसान दिखाओगे और कहोगे कि वह तुम्हारे दुश्मन हैं, उन्हें हलाक करो।"

आलिम की आवाज़ में ऐसा तअस्सुर था और उसके दलाएल में ऐसी कशिश थी कि सूनने वाले मसहूर होते जा रहे थे। उसने कहा– "बच्चों को दोज़ख़ की आग से बचाओ। उनके साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओगे क्योंकि अपने बच्चों को ग़लत रास्ते पर डालने वाले तुम थे, तुम्हें जन्नत में अपने बादशाह और फौजों के सालार नहीं ले जाऐंगे, पेश इमाम और वह आलिम दीन लें जाऐंगे जिनके हाथ में मज़हब और इल्म की क़न्दील थी। तुम दुन्यिा में उनके पीछे चलोगे तो रोज़े क़यामत भी तुम्हें अपने पीछे जन्नत में ले जाऐंगे। रोज़े क़याम जिसके हाथ इंसान के ख़ून से लाल होंगे उसे सारी उम्र के अच्छे आमाल और सारी उम्र की नमाज़ो के बावजूद दोज़ख़ में डाल दिया जाए गा। एक नुक़्ता और समझ लो तुम ज़कात बैतुलमाल को देते हो, बैतुलमाल हाकिमे वक़्त का होता है। ज़कात ग़रीबों और नादारों को

हक है। हाकिमे वक़्त ग़रीब और नादार नहीं होता। तुम्हारी ज़कात जो बैतुलमाल में जाती है उस से घोड़े और हथियार ख़रीदे जाते हैं जो इंसानों को हलाक करने के काम आते हैं। लिहाज़ा जो फ़र्ज़ अदा करके तुम जन्नत में जा सकते हो वह फ़र्ज अदा करके भी तुम दोज़ख में ठिकाना बनाते हो। लिहाज़ा ज़कात बैतुल माल में न दो।"

आलिम ने मौज़ू बदला और कहा– "बहुत सी बातें आम ज़ेहन के इंसान की समझ में नहीं आतीं, उन्हें बताता भी कोई नहीं। क्या तुम नहीं देखते कि तुम्हारे अंदर एक हैवानी जज़्बा है? क्या तुम औरत की ज़रूरत महसूस नहीं करते? क्या यही जज़्बा नहीं जो तुम्हें बदकारी के अड्डों पर ले जाता है? यह जज़्बा खुदा ने खुद पैदा किया है। यह किसी इंसान का पैदा करदा नहीं। तुम इसकी तस्कीन कर सकते हो। इसीलिए खुदा ने तुम्हें हुक्म दिया है कि बैक वक़्त घर में चार बीवियां रखो। अगर तुम ग़रीब हो और एक बीवी भी नही लासकते तो किसी औरत को उजरत देकर उस हैवानी जज़्बे की तस्कीन कर सकते हो जो तुम में खुदा ने पैदा किया है और इंसान इसी जज़्बे की पैदावार है, मगर बदी से बचो। एक एक, दो दो, तीन तीन, चार चार बीवियां घर में रखो। उन बीवियों और अपनी बेटियों को घर में छुपा कर रखो। मैं देख रहा हूं कि जवान लड़कियों को भी अस्करी तरबियत दी जा रही है और उन्हें भी घुड़सवारी और शुत्र सवारी सिखाई जा रही है। जनाना मदरसों में उन्हें ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी और उन्हें संभालनें के तरीके सिखाए जा रहे हैं ताकि वह मैदाने जंग के ज़ख़्मियों को संभाल लें और अगर ज़रूरत पड़े तो लड़ें भी। यह एक बिदअत है। अपनी लड़कियों को इस बिदअत से बचाओ। यह बातें अपने उन दोस्तों और पड़ोसियों को भी सुनाओ जो मस्जिद में नहीं आते। खुदा के एहकाम और कारनामों में मत दख़ल दो, यह बहुत बड़ा गुनाह है।"

❖

आलिम ने दर्स ख़त्म किया तो सामईन जिन की तादाद इतनी हो गई थी कि बहुत से लोग पीछे खड़े थे। मस्जिद में बैठने को जगह न थी, उठकर आलिम से हाथ मिलाने और जाने लगे। बाज़ ने उसके हाथ चूमे, झुक कर मुसाफ़ह तो हर किसी ने किया। एक एक कर के सब लोग चले गऐ सिर्फ दो आदमी आलिम के सामने बैठे रहे। उनमें से एक वह आदमी था जिस ने कहा था कि मुझे जिहाद के मुतअल्लिक बताइए। उस आदमी ने लम्बा चौग़ा पहन रखा था। सर पर छोटी सी पगड़ी और उस पर थोड़ा फूलदार रूमाल पड़ा हुआ था। उसकी दाढ़ी लमबी और सियाह और मूंछें घनी थीं। लिबास से वह दरमियाना दर्जे का आदमी मालूम होता था। उसकी एक आंख पर हरे रंग का पट्टी नुमा कपड़ा था जो दो धागों से उसके सर के साथ बंधा था। उस कपड़े ने उसकी एक आंख ढांप रखी थी। आलिम के पूछने पर उसने बताया था कि उसकी यह आंख ख़राब है। दूसरे आदमी का लिबास भी मामूली था। उसकी भी दाढ़ी लम्बी और घनी थी। मस्जिद में आलिम के पास यही दो आदमी रह गये थे। उनके साथ छः और आदमी थे जो जिहाद का दर्स लेने आऐ थे। वह मस्जिद के दरवाज़े के बाहर खड़े थे। शायद अपने साथियों के इन्तेज़ार में थे।

"क्या तुम्हारा शक अभी रफ़ा नहीं हुआ।?" आलिम ने मुस्कुरा कर उन दोनो से पूछा।

"मेरा खयाल है कि शक रफ़ा हो गया है।" आंख की हरी पट्टी वाले ने जवाब दिया। "हम शायद आप ही की तलाश में हैं। हमने आधा मिस्र छान मारा है। हमें मस्जिद का महल्ले वकू और निशानियां गलत बताई गई थीं।"

"क्या आधे मिस्र में तुम्हें मुझ से बेहतर कोई आलिम नहीं मिला?"

"तलाश तो सिर्फ आप की थी।" उस आदमी ने जवाब दिया– "क्या हम सही जगह आ गये हैं? आप का दरस बताता है कि हम आप ही की तलाश में थे।"

आलिम ने बाहर की तरफ देखा और बेतवज्जही के अंदाज़ से बोला– "मालूम नहीं मौसम कैसा रहेगा।"

"बारिश आएगी।" हरी पट्टी वाले ने कहा।

"आसमान बिलकुल साफ़ है।" आलिम ने जवाब दिया।

"हम घटाऐं लाऐंगे।" हरी पट्टी वाले ने कहा और कहकहा लगाया।

आलिम मुसकुराया और राज़दारी से पूछा– "कहां से आऐ हो?"

"एक महीने से हम स्कंदरिया में थे।" उस आदमी ने जवाब दिया "उस से पहले शूबक में थे।"

"मुसलमान हो?"

"फिदाई।" हरी पट्टी वाले ने कहा– "अभी मुसलमान ही समझो।" और वह अपने साथी के साथ बड़ी ज़ोर से हंसा।

"मैं आप को इस फ़न का उस्ताद मानता हूं।" दूसरे ने आलिम से कहा– "मुझे बिलकुल यकीन नहीं आरहा था कि यह आप हैं, आप नाकाम नहीं हो सकते।"

"और कामयाबी आसान भी नहीं।" आलिम ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी को शायद तुम नहीं जानते। बेशक मैंने उन तमाम लोगों के दिलों में जिहाद के मुतअल्लिक इस्लामी नज़रियात के ख़िलाफ़ शकूक पैदा कर दिये हैं लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जो मदरसे खोले हैं वह शायद हमारी कोशिशों को आसानी से कामयाब न होने दें।" उसने पूछा– "तुमने मुझे यह क्यों कहा था कि मैं जिहाद पर दर्स दूं?"

"शूबक में हमें बताया गया था कि आप की सबसे बड़ी निशानी यही है।" हरी पट्टी वाले ने जवाब दिया– "तमाम अल्फ़ाज़ जो आपने दर्स में बोले हैं हमें वहां बताये गये थे। हमें यह भी बताया गया था कि आप जिहाद के बाद जिन्सी जज़्बे का ज़िक्र ज़रूर करेंगे। आप ने अपना सबक बड़ी मेहनत से याद किया है।"

"मेरा नाम क्या है?" आलिम ने पूछा।

"क्या आप हमारा इम्तिहान लेना चाहते हैं?" उस आदमी ने जवाब दिया– "क्या आप को हम पर शक है? हमें एक दूसरे के नाम नहीं सिर्फ निशानियां बताई जाती हैं।"

"तुम किस काम से आए हो?" आलिम ने पूछा।

"फिदाई किस काम से आया करते हैं?" हरी पट्टी वाले ने पूछा।

"तुम्हें मेरे पास क्यों भेजा गया?" आलिम ने पूछा।

"एक ऊंटनी के लिए।" उस आदमी ने जवाब दिया– "आप के पास दो हैं। हमें आप के पास न भेजा जाता मगर आपको इत्तला मिल गई होगी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक नाएब सालार रजब सूडानी के साथ शूबक से तीन ऊंटनियां रवाना की गई थीं। उनमें से एक हमारे मक्सद के लिए थी मगर मालूम नहीं क्या हुआ कि तीनों मारी गई हैं। रजब की खोपड़ी और एक सब से ज़्यादा खूबसूरत ऊंटनी सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास पहुंच गई थी। वह भी ख़त्म हो गई।"

"हां।" आलिम ने आह भर कर कहा– "हमें बहुत बड़ा नुक्सान हुआ, सलाहुद्दीन का एक बड़ा ही कारामद सालार जो हमारे कब्ज़े में था, जल्लाद की नज़र हो गया। अंदर चलो, यह जगह महफ़ूज़ नहीं।"

वह दोनो आलिम के साथ उठे और बाहर निकल गये। बाहर जो छः आदमी खड़े थे वह अंधेरे में बिखर गए।

❖

वह अब आलिम के घर में दाख़िल हुए। साफ सुथरा घर था, कई कमरे थे। दो तीन कमरों में से गुज़र कर वह ऐसे कमरे में चले गये जो ज़मीन पर ही था लेकिन ज़ेरे ज़मीन मालूम होता था। उसके सामने कूड़ा कबाड़ बिखरा हुआ था। दरवाज़े के बाहर ताला लगा हुआ था। साफ़ पता चलता था कि यह दरवाज़ा बरसों से नहीं खोला गया और खोला भी नहीं जाएगा। एक पहलू में खिड़की थी, उसे हाथ लगाया तो खुल गई। आलिम अंदर गया, उसके पीछे यह दो आदमी अंदर चले गये। अंदर से कमरा खूब सजा हुआ था। दीवार के साथ सुनहरी सलीब लटक रही थी। उसके एक तरफ़ हज़रत ईसा की दस्ती रस्वीर और दूसरी तरफ़ मरयम की तस्वीर थी। आलिम ने कहा– "यह मेरा गिरजा है और पनाह गाह भी।"

"ख़तरे की सूरत में आप के पास क्या इन्तेज़ाम है?" आंख की हरी पट्टी वाले ने पूछा और मशवरा दिया– "आप को सलीब और यह तस्वीरें इस तरह सामने नहीं रखनी चाहिए।"

"यहां तक किसी के आने का ख़तरा नहीं।" आलिम ने जवाब दिया और हंस कर कहा "मुसलमान बड़ी जज़्बाती और सीधी कौम है। यह कौम जज़्बाती अल्फ़ाज़ और सनसनी खेज़ दलाएल पर मरती है। जिन्स इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। मैं उन लोगों में यह कमज़ोरी उभार रहा हूं। उन्हें यह सबक दे रहा हूं कि चार शादियां फर्ज़ हैं। आहिस्ता आहिस्ता उन्हें बदकारी की तरफ़ राग़िब कर रहा हूं। मज़बह के नाम पर तुम मुसलमान से बदी भी करा सकते हो नेकी भी। हाथ में कुरआन रख कर बातें करो तो यह लोग अहमकाना बातों के भी कायल हो जाते हैं और झूठ को भी सच मान लेते हैं। मेरा तजुर्बा कामयाब है। मैं यहां अपने जैसा एक गिरोह पैदा कर लूंगा जो मस्जिद में बैठ कर और कुरआन मजीद हाथ में लेकर उन लोगों के जज़्बा–ए–जिहाद को और किरदार को क़त्ल कर देगा। औरत के मुतअल्लिक मैं उनके नज़रियात बदल रहा हूं। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने औरतों को भी अस्करी तरबियत देनी शुरू कर दी है। मैं उन्हें बता रहा हूं कि औरत को घर में कैद रखो। मैं इस कौम की निस्फ़ आबादी को बेकार कर दूंगा।"

"फौज के खिलाफ नफरत पैदा करना ज़रूरी है।" हरी पट्टी वाले के साथी ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यही कमाल कर दिखाया है कि कौम और फौज को एक कर दिया है। वह इस वक़्त ऐलान कर दे कि युरोशलम फतेह करना है तो मिस्र की सारी आबादी उसके साथ चल पड़ेगी।"

"लेकिन वह ऐसा ऐलान करेगा नहीं।" आलिम ने कहा– "वह दानिशमंद है, वह जज़्बाती लोगों को पसंद नही करता। वह सिर्फ तरबियत याफ़्ता एक सिपाही को एक सौ ग़ैर तरबियती जोशीले आदमियों पर तरजीह देता है। वह खोकले नारों से कौम को भड़काता नहीं। हक़ीकत की बात करता है। यह हमारा काम है कि उसकी कौम को हक़ीकत और तरबियत से दूर रखें और जज़्बाती बना दें। उस कौम में शऊर की बजाए जोश रह जाए। वह जोश जिस में हक़ीकत पसंदी और दानिशमंदी न हो, दुश्मन के पहले तीर से ही ठण्डा पड़ जाता है ख़्वाह तीर क़रीब से गुज़र जाए। हम उनमें सिर्फ जोश रहने देंगे। तुम ने सुना है कि मैं अपने दरस में सलाहुद्दीन अय्यूबी की बहुत तारीफ़ कर रहा था।"

"यह बातें तो हम बाद में कर लेंगे।" उस आदमी ने कहा– "दोनों ऊंटनियां दिखा दें और यह बताएं कि हमें यहां किस वक़्त और किस तरह पनाह मिल सकती है और यहां अपना कोई और आदमी रहता है या नही।"

"नहीं" आलिम ने जवाब दिया– "यहां और कोई नहीं रहता।"

उनके दरमियान कोई शक व शुबहा नहीं रहा था। वह खुफिया अल्फ़ाज़ में एक दूसरे को पहचान चुके थे। आलिम कमरे से निकल गया। वापस आया तो उसके साथ दो बड़ी ही खूबसूरत लड़कियां थीं। यही वह दो लड़कियां थीं जिन के मुतअल्लिक उसने लोगों को बताया था कि उसकी बीवियां हैं। उन्हें वह सर से पांव तक बुर्के में छुपा कर लाया था। मगर उन दो आदमियों के सामने वह बे परदा आई। आलिम ने उनका तआरुफ दोनो आदमियों से कराया और अलमारी में से शराब की बोतल निकाली। एक लड़की गिलास ले आई। शराब गिलासों में डाली गई। उन दोनों आदमियों ने शराब को हाथ न लगाया।

पहले काम की बातें कर लें।" हरी पट्टी वाले ने कहा।

"हमें दो आदमियों को क़त्ल करना है।" दूसरे नें कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी को और अली बिन सुफियान को। हमारी मजबूरी यह है कि हमने दोनों को नहीं देखा। हमें दोनों आदमी दिखा दें। क्या आपने उन्हें देखा है?"

"इतना देखा है कि दोनों को अंधेरे में पहचान सकते हैं।" आलिम ने कहा– "मैं ने जो मुहिम शुरू कर रखी है उसके लिए ज़रूरी था कि दोनों को अच्छी तरह पहचान लूं। अली बिन सुफियान इतना ज़हीन और घाघ है कि अपने किसी जासूस को यहां भेजने की बजाए खुद यहां आ सकता है अगर वह भेस बदल कर मेरे सामने आए तो भी उसे पहचान लूंगा।"

"और सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक क्या ख़्याल है?" हरी पट्टी वाले ने पूछा।

"उसे भी खूब पहचानता हूं।" आलिम ने जवाब दिया।

हरी पट्ट वाले ने अपने दोनों हाथ अपनी कनपटियों पर रखे। दाढ़ी को पकड़ा और हाथों

को नीचे को झटका दिया। उसकी लम्बी दाढ़ी और घनी मूंछें उसके चेहरे से अलग हो गई। पीछे छोटी सी दाढ़ी रह गई जो निहायत ही अच्छी तरह तराशी हुई थी। मूंछें भी तराशीदा थीं। लम्बी दाढ़ी और मूंछें मसनूई थीं जो अब उसने हाथ में ले रखीं थी। उसने आंख से हरी पट्टी भी नोच कर परे फेंक दी। आलिम जहां था वहीं बुत बन गया। उसकी आंखें ठहर गई और उसका मुंह खुल गया। दोनो लड़कियां हैरान व शशदर कभी उस आदमी को देखतीं जिसने अपना हर रूप उतार दिया था, कभी आलिम को देखतीं जिसका रंग लाश की तरह होगया था। आलिम के मुंह से हैरत और घबराहट में डूबी हुई सरगोशी निकली– "सलाहुद्दीन अय्यूबी?"

"हां दोस्त!" उसे जवाब मिला– "मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी हूं। तुम्हारी शोहरत सुनकर तुम्हारा दर्स सुन्ने आया था।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने साथी की दाढ़ी मुट्ठी में ले कर झटक दिया तो उसकी दाढ़ी चेहरे से अलग हो गई। उसने आलिम से कहा– "आप इसे भी पहचानते होंगे?"

"पहचानता हूं।" आलिम ने हारे हुए लहजे में कहा– "अली बिन सुफियान।"

अली बिन सुफियान की सिर्फ ठोड़ी पर दाढ़ी थी। अचानक लड़कियां और आलिम पीछे को दौड़े और अलमारी में से छुरा नुमा तलवारें निकाल लीं मगर वह इधर को घूमे तो उनकी तलवारें झुक गई क्योंकि सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफियान चोगों के अंदर से इसी किस्म की तलवारें निकाल लीं थीं। लड़कियों को तेग़ ज़नी की मश्क तो कराई गई थी लेकिन वह पेशेवर तेग़ ज़नों के मुकाबले में न आ सकीं। उनसे तलवारें रखवा ली गई। अली बिन सुफियान बाहर निकल गया। ज़रा सी देर में छः आदमी जो बाहर खड़े थे उसी साइज़ की तलवारें सौंतं खिड़की में से कूद कर आ गये।

दूसरे दिन मस्जिद के सामने उस इलाके के लोगों का हुजूम था। वहां चन्द एक सरकारी अहल कार भी थे जो लोगों को बारी बारी आलिम के उस खुफिया कमरे में ले जारहे थे जहां सलीब, हज़रत ईसा और मरयम की तस्वीरें आवेज़ां थीं। लोगों को शराब की बोतलें भी दिखाई गई। अहलकार लोगों को आलिम की अस्लियत बता रहे थे और वह जिहाद का जो नज़रया पेश करता रहता था उसकी वज़ाहत कर रहे थे।

❖

सुल्तान अय्यूबी की हिदायत पर अली बिन सुफियान ने सारे मुल्क में जासूसों का जाल बिछा दिया था क्योंकि यह साबित हो गया था कि मुल्क में खुसूसन काहिरा में सलीबियों ने बहुत से जासूस और तखरीब कार भेज दिए थे। सलीबियों ने मुसलमानों की किरदार कुशी की जो ज़मीन दोज़ मुहिम चलाई थी वह सुल्तान अय्यूबी को ज़्यादा परेशान कर रही थी। उसे जब अली बिन सुफियान ने इत्तिला दी थी कि एक मस्जिद का पेश इमाम हर रात दर्स देता है और इस्लामी नज़रियात को बिगाड़ रहा है तो सुल्तान अय्यूबी ने फौरन ही यह हुक्म नहीं दिया था कि उस आलिम को गिरफ्तार कर लो। उसने कहा था– "अली! मज़हब में फिरका बंदी शुरू हो गई है। यह पेश इमाम किसी फिरके का होगा। यह भी हो सकता है कि

वह कुरआन की अपनी तफ़सीर पेश कर रहा हो। मैं मज़हब में दख़ल नहीं देना चाहता। मैं हाकिम हूं आलिम नहीं हूं। अगर तुम समझते हो कि वह कोई तख़रीब कार है तो गिरफ़तारी से पहले पूरी तरह छान बीन कर लो। पेश इमाम का दर्जा मुझ से बहुत ज़्यादा बुलन्द है।"

अली बिन सुफ़ियान खुद उस मस्जिद में दर्स सुन्ने नहीं गया था क्योंकि उसे शक था कि अगर यह पेश इमाम वाकई दुश्मन का भेजा हुआ तख़रीब कार है तो उसे पहचानता होगा। उसने अपने ज़हीन सुराग़रसान मस्जिद में भेजे थे जो दस बारह मर्तबा वहां गये और उन्हों ने जो दर्स सुने वह मिन व अन अली बिन सुफ़ियान को सुना दिये। आख़िर एक रात उस सलीबी आलिम ने जिहाद पर दर्स दिया और यह तावील पेश की जो सलाहुद्दीन अय्यूबी ने भी सूनी। सुराग़रसानों ने यह दर्स अली बिन सुफ़ियान को सुनाया तो कोई शक न रहा। अली ने सुल्तान अय्यूबी को बताया और यह राय दी कि अगर यह शख़्स सलीबियों का जासूस और तख़रीब कार नहीं तो भी उसे पकड़ना या रोकना ज़रूरी है क्यों कि वह जिहाद का ऐसा नज़रिया पेश कर रहा है जो सिर्फ़ वह आदमी पेश कर सकता है जो दुशमन का आदमी हो या उसका दिमाग़ चल गया हो।

सुल्तान अय्यूबी ने यह रिपोर्ट बड़ी ग़ौर से सुनी और कहा कि मामला बहरहाल मज़हब, मस्जिद और पेश इमाम का है। उसने फैसला किया कि वह अली बिन सुफ़ियान के साथ खुद बहरूप में दर्स सुनने जाएगा और खुद यकीन करेगा कि पेश इमाम की नीयत और अस्लियत क्या है। जिहाद के साथ हैवानी जज़्बे के ज़िक्र ने सुल्तान अय्यूबी के कान खड़े कर दिये थे। उसने अली बिन सुफ़ियान के साथ सलाह मश्वरा करके यह बहरूप तैय्यार कराया था जिसमें वह मस्जिद में गये थे।

अली बिन सुफ़ियान जासूसी और जासूसी के ख़िलाफ़ दिफ़ाअ के फ़न का माहिर था। उसने सुल्तान अय्यूबी को अपनी एक और कामयाबी से आगाह कर दिया था। वह यह थी कि फ़ैज़ुल फ़ात्मी को जिस लड़की ने मौके पर गिरफ़तार कराया और अहमद कमाल नाम के एक कमाण्डर की ख़ातिर इस्लाम कुबूल करने और उसके साथ शादी करने की ख्वाहिश ज़ाहिर की मगर मारी गई थी। उसने वह खुफ़िया अल्फ़ाज़ और इशारे बताए थे जो सलीबी जासूस एक दूसरे को पहचानने के लिए इस्तेमाल करते थे। उसकी निशानदेही पर चन्द एक मुसलमान भी पकड़े गये थे जो सलीबियों से ज़रो जवाहरात और खूबसूरत लड़कियां लेकर उनके लिए जासूसी करते थे। उन्हों ने भी अली बिन सुफ़ियान के तहख़ाने में तस्दीक़ की थी कि यह अल्फ़ाज़ और इशारे इस्तेमाल होते हैं। इशारे यह थे कि जासूस एक दूसरे से जो पहली बार मिलते और एक दूसरे के मुतअल्लिक यकीन करना चाहते थे उनमें से एक आसमान की तरफ़ देख कर कहता था– "मालूम नहीं मौसम कैसा रहे गा।" वह ऐसी बेपरवाही के लहजे में कहता था जैसे उसे यूं ही मौसम का ख़्याल आ गया हो।

दूसरा कहता था– "बारिश आए गी।" उसे जवाब मिलता था– "आसमान बिल्कुल साफ़ है।" दूसरा कहता था– "हम घटाएं लाएंगे।" और कहकहे लगाता था। कहकहे की ज़रूरत यह होती थी कि यह मुकालमा कोई और सुन ले या दूसरा आदमी जासूस न हो तो यह समझे

कि उस आदमी ने मज़ाक किया है। अली बिन सुफ़ियान को बताया गया था कि यह खुफ़िया मुकालमा उस वक़्त बदला जाएगा जब यह ज़ाहिर हो जाएगा। दूसरी बात जो अली ने मालूम की थी वह यह थी कि जासूस एक दूसरे को अपना नाम नहीं बताते। उनका हैडक्वार्टर फ़िलिस्तीन का एक कस्बा शूबक था जो एक किला था, यह सलीबियों का जासूसी मरकज़ था।

इन इन्कशाफ़ात के सहारे सुल्तान अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान बहरूप में मस्जिद में चले गये। उन्हों ने जिहाद के दर्स की ख्वाहिश ज़ाहिर की तो आलिम ने ख्वाहिश पूरी कर दी। फिर वह उसके पास अकेले रह गये औ उन खुफ़िया मुकालमों ने आलिम को बेनक़ाब कर दिया। उसने बाद में बयान दिया था कि वह इतना कच्चा जासूस नहीं था कि वह अजनबी आदमियों के आगे अपने आप को ज़ाहिर कर देता। उसे उन खुफ़िया अल्फ़ाज़ ने फंसाया, क्योंकि यह मुकालमा हर एक जासूस को भी मालूम नहीं होता। यह जासूसों के आला दर्जे का मुकालमा है। उस से नीचे उससे कोई जासूस वाक़िफ़ नहीं होता। इस मुकालमें के बाद कहकहा ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र था इसके बग़ैर एक दूसरे पर अपना राज़ फ़ाश नहीं किया जाता था। सुल्तान अय्यूबी ने कहकहा लगया था। वह अपने साथ छः जांबाजों को भी ले गया था ताकि बवक़्ते ज़रूरत मदद दें।

अली बिन सुफ़ियान ने उस जासूस को और दोनों लड़कियों को तहख़ाने में बंद कर दिया और सबसे पहले उस इलाके में जाकर तफ़्तीश की कि यह शख़्स उस मस्जिद पर क़ाबिज़ किस तरह हुआ और इससे पहले वह जिस झोंपड़े में रहता था वह उसे किसने दिया था। वहां के मुख़्तलिफ़ लोगों ने जो बयान दिए उन से पता चला कि यह शख़्स दो बीवियों के साथ इस आबादी में आया था। पहले एक आदमी के घर मेहमान रहा, जब लोगों ने देखा कि यह तो कोई आलिम फ़ाज़िल है तो उन्हों ने इसे यह झोंपड़ा दे दिया। वह उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाया करता था। वहां बहुत मुद्दत से एक पेश इमाम था। यह शख़्स पेश इमाम का मुरीद बन गया। पंद्रह सोलह रोज़ बाद पेश इमाम ने मस्जिद में ही पेट दर्द की शिकायत की। यह शिकायत इतनी तेज़ी से बढ़ी कि उसके बाद पेश इमाम मस्जिद में आ न सका। हकीमों ने घर जाकर देखा। दवाईयां दीं मगर वह तीसरे रोज़ मर गया। इसके बाद इस आलिम ने लोगों से बात करके मस्जिद संभाल ली। उसने ऐसा तअस्सुर पैदा किया कि लोग उसके अक़ीदत मंद हो गये और उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ उसे मकान दे दिया।

अली बिन सुफ़ियान के पूछने पर लोगों ने बताया कि उन्हों ने कई बार इस शख़्स को पेश इमाम के लिये खाना ले जाते हुए देखा था। अली बिन सुफ़ियान जान गया कि पेश इमाम को इस शख़्स ने ज़हर दिया है और इसे रास्ते से हटा कर मस्जिद पर क़ब्ज़ा किया था। इस जासूस के घर की तलाशी में बहुत से हथियार बरामद हुए थे जो मुख़्तलिफ़ जगहों में छुपाए हुए थे। वहां से ज़हर भी बरामद हुआ। वह एक कुत्ते को दिया गया तो कुत्ता तीन दिन बेचैन रहा, गिरता औ उठता रहा। तीसरे दिन शाम के वक़्त कुत्ता मर गया।

अली बिन सुफ़ियान ने अपनी तफ़्तीश सलाहुद्दीन अय्यूबी के सामने रखी तो सुल्तान ने

उससे कहा– "इन तीनों को कैद में खूब परेशान करो और इन्हें खौफज़दा किये रखो, लेकिन मैं इन्हें जल्लाद के हवाले नहीं करूंगा और इन्हें कैद में भी नहीं डालूंगा। "फिर आप क्या करेंगे?" अली बिन सुफियान ने पूछा।

"मैं इन्हें हिफाज़त और इज्ज़त से वापस भेज दूंगा।" अली बिन सुफियान ने हैरत ज़दा होकर सुल्तान अय्यूबी के मुंह की तरफ देखा। सुल्तान ने कहा– "मैं एक जुआ खेलना चाहता हूं अली! आभी मुझ से कुछ न पूछना। मैं सोंच रहा हूं कि यह बाज़ी लगाऊं या नहीं।" उसने ज़रा तवक्कुफ से कहा– "कल दोपहर के खाने के बाद नाएब सालारों, मुशीरे आला, कमाण्डरों और इन्तज़ामिया के हर शोबे के सरबराह को मेरे पास ले आना। तुम्हारी मौजूदगी भी ज़रूरी है।"

❖

अली बिन सुफियान ने उस रात पहली बार उस "आलिम" से तफतीश की लेकिन वह बड़ा सख्त आदमी निकला। उसने कहा– "गौर से मेरी बात सुन लो अली बिन सुफियान! हम दोनों एक ही मैदान के सिपाही हैं। तुम मेरे मुल्क में कभी पकड़े गए तो मुझे उम्मीद है कि तुम जान दे दोगे, अपने मुल्क और अपनी कौम को धोखा नहीं दोगे। अगर मैं तुम्हें वह सारी बातें बता दूं जो तुम मुझ से पूछना चाहते हो तो भी तुम लोग मुझे बख़्शोगे नहीं। मुझे इस तहख़ाने में मरना है ख्वाह तुम जल्लाद से मरवा दो, ख्वाह इस तहख़ाने में डाल कर मार दो। फिर मैं क्यों अपनी कौम को धोखा दूं।"

"मुझे उम्मीद है कि तुम अपना इरादा बदल दोगे।— अली बिन सुफियान ने कहा– "क्या तुम उन दो लड़कियों की इज्ज़त बचाने की ख़ातिर यह पसंद नहीं करोगे कि मैं जो पूछूं वह मुझे बता दो?"

"कैसी इज्ज़त?" उसने जवाब दिया– "उन लड़कियों के पास सिर्फ हुस्न और नाज़ नखरे हैं या वह उस्तादी है जिससे वह पत्थरों को भी मोम कर लेती हैं। उनके पास इज्ज़त नाम की कोई चीज़ नहीं। यही तो उन्हें सिखलाया जाता है कि इज्ज़त से दस्तबरदार हो जाओ। हम लोग अपनी जान और इज़्ज़त बहुत दूर फेंक आते हैं। तुम उन लड़कियों के साथ जैसा भी सलूक करना चाहो कर लो। उन्हें मेरे सामने ज़लील करलो, मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा। लड़किया भी तुम्हें कुछ नहीं बताएंगी।"

"जासूस लड़कियों को हम सज़ाए मौत दे दिया करते हैं, उन्हें ज़लील कभी नहीं किया।" अली बिन सुफियान ने कहा– "हमारा मज़हब हमें औरत को अज़ीयत में डालने की इजाज़त नहीं देता।"

"मेरे दोस्त!" जासूस ने कहा– "तुन प्यार का हरबा इस्तेमाल करो या अज़ीयत का, हम में से कोई भी अपने उन साथियों की निशान देही नहीं करेगा जो तुम्हारी सल्तनत की जड़ में बैठे हुए हैं। तुम ने लड़कियों के साथ अच्छा सुलूक करने का वादा दिया है। मैं उसके एवज़ तुम को यह बता देता हूं कि यह मेरी और तुम्हारी जंग नहीं, यह सलीब और चांद तारे की जंग है। मैं उन मामूली से जासूसों में से नहीं हूं जो इधर की खबरें उधर भेजते और तुम्हारे आइन्दा

के इरादे मालूम करते रहते हैं। इस शोबे में मेरा रुतबा बहुत ऊंचा है। मैं आलिम हूं। अपने मज़हब का मुताला इतना ही गहरा किया जितना तुम्हारे मज़हब का। इंजील और कुरआन की तह तक पहुंचा हूं। मैं एतराफ़ करता हूं कि तुम्हारा मज़हब बेहतर और सादा है। यह हर इंसान का मज़हब है जिस में कोई पेचीदगी नहीं। इस की मक़बूलियत की वजह भी यही है, मगर मैं तुम्हें यह भी बता देना चाहता हूं कि तुम्हारे दुश्मनों ने तुम्हारे मज़हब की असलियत को बिगाड़ दिया है ताकि उसकी मक़बूलियत ख़त्म हो जाए। यहूदियों ने मुसलमान उलमा के भेस में इसमें बेबुनियाद रिवायत शामिल कर दी है। इस्लाम तोहमात के ख़िलाफ़ था मगर इस वक़्त सबसे ज़्यादा तवहहुम परस्त मुसलमान हैं। मैंने चांद ग्रहण और सूरज ग्रहण के वक़्त मुसमलमानों को सजदे करते और नज़राने देते देखा है और ऐसी कई एक बिदतें तुम्हारे मज़हब में शामिल कर दी गई हैं।

"हम एक मुद्दत से तुम्हारे असल नज़रियात को बिगाड़ रहे हैं क्योंकि हम जानते हैं कि दुनिया में सिर्फ दो मज़हब रह जाऐंगे। एक ईसाईयत दूसरा इस्लाम, और यह दोनों उस वक़्त तक मारका आरा रहेंगे जब तक कि दोनों में से एक ख़त्म नहीं हो जाता। किसी भी मज़हब को तीरों और तलवारों से ख़त्म नहीं किया जा सकता। इसका यही एक तरीका है जो मैंने इख़्तियार किया था। मैं तुम्हें यह बता देता हूं कि इस मुहिम में मैं अकेला नहीं पूरा एक गिरोह तुम्हारे नज़रियात पर हमलावर हुआ है।"

अली बिन सुफ़ियान उसके सामने टहल रहा था और उसकी बातें ग़ौर से सुन रहा था, उसने आलिम जासूस के पांव में बेड़ियां और हाथों में हथकड़ियां डाल रखी थीं। उसका इरादा तो यह था कि इस जासूस को भी हर जासूस की तरह अज़ियतों के उसी मरहले से गुज़ारेगा जहां किसी भी लम्हे जासूस सारे राज़ उगल देते हैं लेकिन उसने क़ैद ख़ाने के मुहाफ़िज़ को बुलाकर इस आदमी की बेड़ियां और हथकड़ियां खुलवा दीं और उसके लिए पानी और खाना मंगवाया। उसने कहा– "मेरे इस सुलूक को उगलवाने का हरबा न समझना। हम आलिमों की क़द्र किया करते हैं। खवाह वह किसी भी मज़हब के हों। मैं तुम से कुछ नहीं पूछूंगा। जो कुछ बताना पसंद करते हो बता दो।"

"और मैं तुम्हारी क़द्र करता हूं अली!" आलिम जासूस ने कहा– "मैने तुम्हारी बहुत तारीफ़ सूनी है। तुम में फ़न का कमाल भी है और जज़्बे की हरारत भी। तुमहारे लिए इस से बड़ा एज़ाज़ और क्या हो सकता है कि सलीबी बादशाह तुम्हें क़त्ल कराना चाहते हैं। इसका मतलब यह है कि तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी के हम पल्ला हो। मैं तुम्हें बता रहा था कि मैंने इल्म से यह हासिल किया है कि किसी क़ौम के तहज़ीब व तमद्दुन और मज़हब को बिगाड़ दो तो फौजों के हमले और जंग व जदल की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। किसी क़ौम को मारना हो तो उसमें जिन्सी आग भड़का दो। यक़ीन न आए तो अपने मुसलमान हुक्मरानों की हालत देख लो। तुम्हारे रसूल सल्ल0अ.व0 ने कहा था कि नफ़्स मारो कि यही तबाही की जड़ है। तुम्हारी क़ौम ने इस पर कब तक अमल किया? रसूल की ज़िन्दगी तक। यहूदियों ने अपनी हसीन लड़कियों से तुम्हारी क़ौम को भड़काया। आज तुम्हारी क़ौम नफ़्स की ग़ुलाम

हो गई है। तुम में जिसके पास दौलत आजाती है वह सबसे पहले हरम को औरतों से भरता है। हर मुसलमान ख्वाह वह गरीब ही हो, चार बीवियां ज़रूर रखना चाहता है। यहूदियों ने मोलवियों के रूप में तुम्हारे नज़रियात में जिन्सियत डाल दी है। अगर अपने रसूल सल० अ० व० की हिदायत पर मुसलमान अमल पैरा रहते तो मैं यकीन से कहता हूं कि आज दुनिया का तीन चौथाई हिस्सा मुसलमान होता, मगर अब यह हाल है कि तीन चौथाई हिस्सा मुसलमान बराए नाम मुसलमान है और तुम्हारी सल्तनत सिकुड़ती, सिमटती चली जा रही है। तुम नहीं समझते कि यह उस हमले का नतीजा है जो मुझ जैसे आलिमों ने तुम्हारे मज़हब और तहज़ीब व तमद्दुन पर किया है।

"मेरे दोस्त! यह हमले जारी रहेंगे। मैं। पेशीनगोई कर सकता हूं कि एक रोज़ इस्लाम दुन्यिा में नहीं रहेगा। अगर होगा तो एक फरसूदा नज़रिये की शक्ल में मौजूद रहेगा और उसके पैरोकर जिन्सी लज्ज़त में मस्त होंगे। हर कोई सलाहुद्दीन और नूरुद्दीन नहीं बन सकता। उन्हें कल परसों मर जाना है। उनके बाद जो आयेंगे, उन्हें हम नफ़्स परस्ती में मुब्तला कर देंगे। मुझे कत्ल कर दो, मेरी मुहिम को कत्ल नहीं कर सकोगे। इंसानों के मर जाने से मकासिद नहीं मर जाया करते। मेरी जगह कोई और आयेगा। हम इस्लाम को ख़त्म करके या अपना गुलाम बनाकर दम लेंगे। अब चाहो तो मुझे जल्लाद के हवाले कर सकते हो। मैं और कुछ नहीं बताऊंगा।"

अली बिन सुफियान ने उससे और पूछा भी कुछ नहीं। वह ग़ालेबन सोंच रहा था कि इसका काम किस कद्र दुश्वार और कितना नाज़ुक है। इस सलीबी तख़रीबकार ने जो कुछ कहा सच था। वह देख रहा था कि कौम में अख़लाकी तबाही के जरासीम पैदा हो चुके हैं। अरब के उमरा वुज़रा तो पूरी तरह तबाह हो चुके थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी मैदाने जंग में सलीबियों को शिकस्त देकर सल्तनते इस्लामिया को वसीअ तर करने के ख्वाब देख रहा था मगर सलीबियों ने ऐसे पहलू से हमला किया था कि जिसे रोकना सुल्तान अय्यूबी के बस से बाहर नज़र आता था। अली बिन सुफियान आलिम जासूस की कोठरी बंद कराके उन कोठरियों के सामने जा खड़ा हुआ जिन्में लड़कियां कैद थीं। वह एक कोठरी खुलवाकर अंदर चला गया। लड़की फ़र्श पर बैठी थी। उसे देखकर उठ खड़ी हुई, अली उसे ख़ामोशी से देखता रहा और कुछ पूछे बग़ैर बाहर निकल गया।

❖

अगले रोज़ दोपहर के खाने के बाद फौज और इन्तज़ामिया के तमाम हाकिम और ओहदेदार उस कमरे में जमा थे, जहां सलाहुद्दीन अय्यूबी उन्हें एहकामात और हिदायात दिया करता था। उन सबको पता चल चुका था कि एक जासूस दो लड़कियों के हमराह पकड़ा गया है। वह आपस में चेमी गोईयां कर रहे थे कि सुल्तान अय्यूबी आ गया। उस ने सबको गहरी नज़र से यूं देखा जैसे उनमें से किसी को तलाश कर रहा हो।

"मेरे अज़ीज़ साथियो! आप ने सुन लिया होगा कि हमने एक मस्जिद से एक सलीबी को पकड़ा है जो वहां बाकायदा इमाम बना हुआ था।" उसने तफ़सील से बताया कि उसे किस

तरह पकड़ा गया है। फिर उन्हें वह बातें सुनाई जो जासूस ने अली बिन सुफियान के साथ क़ैद खाने में की थीं। अली बिन सुफियान यह बातें सुल्तान अय्यूबी को सुना चुका था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हा– "मैंने आप को यह वाज़ सुनाने के लिए नहीं बुलाया कि जासूसों और तख़रीबकारों से बचो। मैं आप को यह भी नहीं कहूंगा कि इस्लाम के दुश्मनों के साथ दोस्ती करने वाला जहन्नम में जायगा। मैं सिर्फ यह कहूंगा कि कुफ्फार के साथ दोस्ती करने वाले के लिए मैं यह दुन्यिा जहन्नम बना दूंगा। मैं अब किसी ग़द्दार को सज़ाए मौत नहीं दूंगा, मौत निजात का ज़रिया है। मैं ने अब ग़दार के लिए यह सज़ा मुकर्रर की है कि उसके गले में रस्सी डाल कर एक तख़्ती आगे और एक पीछे लटका कर उसे हर रोज़ बाज़ारों में घुमा फिरा कर चौक में खड़ा कर दिया जाएगा। तख़्तियों पर लिखा होगा। "मैं गद्दार हूं।" उसे हर रोज़ सुबह से शाम खड़ा रखा जायेगा ताकि वह भूख प्यास से मर जाएगा। और उसकी लाश शहर से बाहर फैंक दी जाएगी। उसके लवाहक़ीन को इजाज़त नहीं दी जायेगी कि उसका जनाज़ा पढ़ें या उसे दफ़न करें।

लेकिन मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इससे दुश्मन का कुछ नहीं बिगड़े गा। वह एक और गद्दार पैदा कर लेगा। जब तक उसके पास औरत की बे हयाई ज़रो जवाहरात की फ़रावानी और हमारे पास ईमान की कमी है, वह गद्दार पैदा करता रहेगा। क्या यह आप की गैरत के लिए चैलेन्ज नहीं कि आप का दुश्मन आप की मस्जिद में बैठ कर आप का कुरआन हाथ में लेकर आप के रसूल सल0 अल0 व0 के फ़रमान को मस्ख़ करे? इस पहलू पर भी ग़ौर करें कि सलीबी जो लड़कियां यहां जासूसी के लिए और हमारी कौम की किरदार कुशी के लिए भेज रहे हैं, उनमें बहुत सी लड़कियां मुसलमानों की बच्चियां हैं जिन्हें इन कुफ्फार ने क़ाफ़िलों से इग़वा किया और उन्हें बदकारी की शर्मनाक तरबियत देकर जासूसी के लिए तैय्यार किया है। फ़िलिस्तीन कुफ़्फार के कब्ज़े में हैं। वहां मुसलमानों पर जो ज़ुल्म और तशद्दुद हो रहा है वह मुख़तसरन यह है कि सलीबी उनके घरों को लूटते रहते हैं। वह फरियाद करते हैं तो कैद ख़ाने में डाल दिया जाता है। उनमें जो ग़ैर मामूली तौर पर खूबसूरत होती हैं उनके ज़ेहनो से मज़हब और क़ौमियत निकाल दी जाती है और उन्हें बे हयाई की तरबियत देकर मर्दों को उंगलियों पर नचाना सिखाकर उन्हें मुसलमानों के इलाकों में जासूसी और तख़रीबकारी के लिए भेज दिया जाता है।

इस गिरोह में उनकी अपनी लड़कियां भी होती हैं। उन में तो शर्म व हिजाब और इसमत की कोई कद्र ही नहीं। वह मुसलमान बच्चियों को भी बदी के लिए इस्तेमाल करते हैं।

"उन्हों ने जब फ़लस्तीन पर क़ब्ज़ा किया तो वह वहां सबसे बड़ा जो इन्क़लाब लाए वह यह था कि उन्हों ने मुसलमान के लिए जीना हराम कर दिया, उनका क़त्ले आम किया, उन्के घरों को लूट लिया, मस्जिदों को अस्तबलों और गिरजाओं में बदल दिया, मुसलमान बच्चियों को इग़वा करके उन्हें तहख़ानों में बैठा दिया गया, जो खूबसूरत निकलीं उन्हें तख़रीबकारी और बदकारी की तरबियत देकर हमारे अमीरों और वज़ीरों के हरमों में दाख़िल कर दिया और उन्हें हमारे ख़िलाफ़ भी इस्तेमाल किया। मुसलमान घरानों की बच्चियों के गलों में उन्हों

ने सलीब लटका दी। मुसलमान जो फ़लस्तीन से भागे और हमारे पास पनाह के लिए क़ाफ़िला दर क़ाफ़िला चले उन्हें रास्ते में शहीद कर दिया गया। हमारी बहनों और बेटियों की आबरू रेज़ी सरे आम हुई और मेरे कलमा गो भाईयो! यह सिलसिला रूका नहीं। अभी तक जारी है। सलीबियों का मक़सद सिर्फ़ यह है कि इस्लाम का कोई नाम लेवा ज़िन्दा न रहे और मुसलमान लड़कियां ईसाईयों को जन्म दें। हम सब पर अल्लाह की लानत बरस रही है कि हम अपने उन मुसलमान भाईयों और उनकी बच्चियों को फ़रामोश किये बैठे हैं जो वहां ज़िल्लत और मज़लूमियत की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। इससे बड़ा गुनाह और क्या हो सकता है कि हम उन शहीदों को भी फ़रामोश किए बैठे हैं जो सलीबियों की बरबरियत का शिकार हुए। मैं आप को कोई हुक्म देने से पहले आप से पूछता हूं कि इस सूरते हाल में हमें क्या करना चाहिए। आप में तर्जुबा कार फ़ौजी हैं और इन्तज़ामिया के हाकिम भी।"

पुरानी उम्र का एक कमाण्डर उठा, उसने कहा– " अमीरे मिस्र! हमें आप के हुक्म की ज़रूरत ही क्या है। यह हुक्मे खुदावंदी है कि तुम्हारे पड़ोस में मुसलमान नस्ल पर ज़ुल्म हो रहा हो और वहां के मुसलमान खुदा को मदद के लिए पुकार रहे हों तो हम पर फ़र्ज़ आयद होता है कि उस मुल्क पर फ़ौज कशी करके अपने कलमा गो भाईयों को निजात दिलायें। हमें फ़लस्तीन पर फ़ौज कशी करनी चाहिए।"

नायब सालार के रुतबे के एक और शख़्स ने उठकर जोश से कहा– "कुफ्फ़ार पर फ़ौजकशी से पहले आप उन मुसलमान हाकिमों और उमरा पर फ़ौज कशी करें जो दर परदा कुफ़्फ़ार के हाथ मज़बूत कर रहे हैं। हमारे लिए यह सूरते हाल बाइसे शर्म है कि हमारी सफ़ों में गद्दार भी हैं। फ़ैज़ुल फ़ात्मी के रुतबे का आदमी गद्दार हो सकता है तो छोटे ओहदों पर क्या भरोसा किया जा सकता है। एक मुसलमान बच्ची की आबरू ज़नी का इन्तक़ाम लेने के लिए सारी क़ौम को फ़ना हो जाना चाहिए, मगर यहां हमारी एक पूरी नस्ल की आबरू ज़नी हो रही है और हम सोंच रहे हैं कि हमें क्या करना चाहिए। सलीबियों ने हमारी बच्चियों को बदकारी के लिए तैय्यार किया और हम से उनके साथ बदकारी करा रहे हैं। मोहतरम अमीर! अगर मैं जज़्बाती नहीं हो गया तो मुझे यह तजवीज़ पेश करने की इजाज़त दें कि हमें फलस्तीन लेना है। सलीबियों ने हमारे किब्ल–ए–अव्वल को बदी का मरकज़ बना दिया है।"

एक और आदमी उठा लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने उसे हाथ के इशारे से बैठा दिया और कहा– "मैं यही सूनना चाहता था। आप में से जो मेरे क़रीब रहते हैं जानते हैं कि मेरा अव्वलीन हदफ़ फ़िलिस्तीन है। मैं मिस्र की एमारत के फ़राइज़ संभालते ही फ़िलिस्तीन पर हमला करना चाहता था मगर दो साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया है, ईमान फ़रोशों ने मुझे मिस्र में ऐसा उलझाया है जैसे मैं दलदल में फंस गया हूं। ज़रा इन दो सालों के वाक़ियात पर ग़ौर करें। आप सलीबी तख़रीबकारों और ग़द्दारों के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। सूडानियों को हमारे ख़िलाफ़ लड़ाने वाले हम में से ही हैं। सूडानी हब्शियों से मिस्र पर हमला कराने वाले हमारे अपने सालार और कमाण्डर थे। वह इस क़ौमी ख़ज़ाने से तनख़्वाह लेते थे जिसमें क़ौम का पैसा है और जिसमें खुदा के नाम दी गई ज़कात का पैसा है। मैंने इस उम्मीद पर दो साल

गुज़ार दिये हैं, मैं जासूसों, उन्हें पनाह देने वालों और ईमान फरोशों को खत्म करके फिलिस्तीन पर हमला करूंगा लेकिन मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि तखरीबकारी का यह सिलसिला कभी खत्म न होगा। क्यों न उस चश्में को जाकर बन्द किया जाए जहां इस्लाम दुश्मनी के सामान पैदा किये जाते हैं। हम सलीबियों को खुद मौका दे रहे हैं कि वह हमारी सफों में गद्दार पैदा करें.......

"मैं ने आप को आज इस लिए बुलाया है कि फिलिस्तीन पर हमले में अब ज़्यादा ताखीर नहीं होगी। फौज की जंगी मश्कें और तरबियत तेज़ कर दो। मुजाहिदीन को लम्बे अरसे का मुहासरा करने की मश्क कराओ। मुझे तुर्क और शामी दस्तों पर पूरा एतमाद है। मिस्रियों और वफादार सूडानियों में जज़्बा पैदा और पुख़्ता करने की ज़रूरत है। उन्में दुश्मन के खिलाफ कहर और गज़ब पैदा कर दो। यह इसी सूरत में मुमकिन होगा कि उनमें गैरत पैदा करो और उन्हें बताओ कि वह तुम्हारी ही बहन और बेटियां हैं जो सलीबियों की दरिंदगी का शिकार हो रही हैं। आप में इन्तज़ामिया के जो अफराद हैं उनके ज़िम्मे यह फर्ज़ है कि वह मस्जिदों के पेश इमामों से कहें कि लोगों पर जिहाद की गर्ज़ व गायत वाज़ेह करें और नौ उम्र लड़कों में अस्करी ख़्यालात पैदा करें। कोई भी पेश इमाम या खतीब इस्लामी नज़रियात को गल्ती से या दानिस्ता गलत रंग में पेश करता है उसे इमामत के फराएज़ से सुब्कदोश कर दें। अगर किरदार मज़बूत हो तो कोई कशिश और कोई अंगेख्त गुम्राह नहीं कर सकती। ज़ेहनों को फारिग न रहने दें, खुला न छोड़ें वर्ना दुश्मन इन्हें इस्तेमाल करेगा। फौजों के कूच के एहकामात आप को जल्दी मिल जाएंगे। अल्लाह आप का हामी और नासिर है।"

❖

सात रोज़ गुज़र गए।

आलिम जासूस और दोनों लड़कियों को सुल्तान अय्यूबी ने मुलाकात के लिए बुलाया। उन्हें लाया गया तो सुल्तान अय्यूबी ने कहा कि इन्हें दूसरे कमरे में बैठा दो। उनके पाओं में बेड़ियां और हाथों में ज़ंजीरें थीं। उन्हें जिस कमरे में बैठाया गया वह सुल्तान अय्यूबी के कमरे के साथ था। दोनों के दरमियान एक दरवाज़ा था, जिसका एक कोना खुला हुआ था। सुल्तान अय्यूबी कमरे में टहल रहा था। उसने टहलते टहलते कहा– "मैं फौरी तौर पर कर्क पर हमला करने का फैसला कर चुका हूं।"

कर्क फिलिस्तीन का एक किला नुमा कस्बा था। दूसरा मशहूर कस्बा शूबक था। यह भी एक मज़बूत किला था। शूबक को सलीबियों ने मरकज़ बना रखा था। सलीबी बादशाह और आला कमाण्डर शूबक में ही इकट्ठा हुआ करते थे। यहीं सलीबियों की इंटेलीजेंस का हेड क्वार्टर था और यह जासूसों का ट्रेनिंग कैम्प था। सुल्तान अय्यूबी के फौजी और शहरी इन्तज़ामिया के हल्कों में यह ख़्याल यकीन की हद तक था कि सुल्तान अय्यूबी सबसे पहले शूबक पर हमला करेगा क्योंकि इस जगह की अहमियत ही ऐसी थी। अगर इस मज़बूत अड्डे को सर कर लिया जाता तो सलीबियों की कमर तोड़ी जा सकती थी। मगर सुल्तान अय्यूबी कह रहा था कि पहले कर्क पर हमला किया जाएगा। यह तो सानवी अहमियत की जगह थी।

एक नाएब सालार ने कहा– "मोहतरम! आप का हुक्म सर आंखों पर, मेरी नाकिस राय यह है कि पहले शूबक सर कर लिया जाए। दुश्मन की मरकज़ी कमान ख़त्म करना ज़रूरी है। अगर हमने शूबक ले लिया तो कर्क लेना कोई मुश्किल न होगा और अगर हमने कर्क पर ताक़त ज़ाए कर दी तो शूबक लेना नामुमकिन हो जाएगा।"

दूसरे कमरे में जासूस बैठे थे। दरम्यानी दरवाज़े का एक कोना खुला था। सुल्तान अय्यूबी के कमरे की आवाज़ें इस कमरे में साफ़ सुनाई दे रहीं थी। आलिम जासूस के कान खड़े हुए। वह आहिस्ता आहिस्ता सरक कर दरवाज़े के साथ हो गया। इस वक़्त सुल्तान अय्यूबी कह रहा था– "मैं दर्जा ब दर्जा पेश क़दमी करना चाहता हूं। कर्क शूबक की निस्बत आसान शिकार है। मैं इस पर क़ब्ज़ा करके इसे अड्डा बना लूंगा। कमक मंगवाकर और फ़ौज को कुछ अर्से आराम देकर पूरी तैय्यारी के बाद शूबक पर हमला करूंगा। इस क़स्बे का दिफ़ा हमारे जासूसों के कहने के मुताबिक़ इतना मज़बूत है कि हमें लम्बे अर्से तक इसे मुहासरे में रखना पड़ेगा। मेरा ख़्याल है कि कर्क पर हमारी ज़्यादा ताक़त ज़ाय नहीं होगी। हमें पहले एक अड्डा चाहिए और एसी रसद गाह जहां से हमें फ़ौरी तौर पर रसद मिलती रहे।"

आलिम जासूस दरवाज़े के साथ बैठा सुन रहा था। दोनों लड़कियां भी उसके पास आ बैठीं। अली बिन सुफ़ियान ने भी ध्यान न दिया कि ऐसी राज़ की बातें जासूसों के कान में पहुंच रही हैं। हो सकता है सुल्तान अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान ने इसलिए ऐहतियात न की हो कि इन जासूसों को शूबक वापस थोड़े ही जाना था। उन्हें तो सारी उम्र क़ैद में गुज़ारनी थी या जल्लाद के हाथों मरना था। आलिम जासूस ने लड़कियों से सरगोशी में कहा– "काश हम में से कोई एक यहां से निकल सके और सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस इरादे की इत्तिला शूबक और कर्क तक पहुंचा दे। यह कितना क़ीमती राज़ है अगर पहले ही वहां पहुंचा दिया जाए तो मुसलमानों की फ़ौज को कर्क के रास्ते में ही लड़ाई में उल्झा कर उसकी ताक़त ख़त्म की जा सकती है। इनका हमला कर्क से दूर ही पसपाई में बदला जा सकता है।"

"हमें मुकम्मल राज़दारी की ज़रूरत है।" सुल्तान अय्यूबी अपने कमरे में टहलते हुए कह रहा था।– "अगर सलीबियों को हमारे हमले की ख़बर क़ब्ल अज़ वक़्त हो गई तो हम कर्क तक नहीं पहुंच सकेंगे। वह हमें रास्ते में रोक लेंगे, हमारे लिए ख़तरा यह है कि सलीबियों के मुक़ाबले में हमारी फ़ौज बहुत कम है। सलीबियों की नफ़री ज़्यादा होने के अलावा उनके घोड़े और हथियार हम से बेहतर हैं। उनके ख़ोद लोहे के हैं और वह ज़िरह बक्तर भी पहनते हैं। इससे हमारे तीर अंदाज़ बेकार साबित हुए हैं। मैं चाहता हूं कि सलीबियों को बेख़बरी में जालो ताकि उन्हें खुले मैदान में लड़ने का मौक़ा न मिले। अगर वह खुले मैदान में लड़े तो हमारे अक़्ब में आकर वह हमारी रसद का निज़ाम रोक देंगे। इस का नतीजा पस्पाई और शिकस्त के सिवा और कुछ न होगा। मैं वह रास्ता इख़्तियार करूंगा जो जारेब के टीलों में से गुज़रता है। यह बड़ा वसी और अरीज़ इलाक़ा है। मुझे ख़तरा सिर्फ़ यह नज़र आ रहा है कि सलीबी रास्ते में आकर लड़े तो हमें शिकस्त के लिए तैय्यार रहना चाहिए।"

"इस्का इलाज यह है कि फ़ौज को तीन चार हिस्सों में तक़सीम करके सिर्फ़ रात के वक़्त

कूच कराया जाए। दिन के वक़्त कोई हरकत न की जाए।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "रास्ते में कोई भी अजनबी या क़ाफ़िला नज़र आए उसे रोक लिया जाए और कर्क तक पहुंचने तक उसे अपने साथ रखा जाए। जासूसी के ख़िलाफ़ यही इक़दाम कारगर हो सकता है।"

उस वक़्त जब आलिम जासूस और दो लड़कियां सुल्तान अय्यूबी की ज़बान से इस क़द्र नाज़ुक और अहम मंसूबा सुन रही थीं, शूबक के क़िले में सलीबियों की अहम शख़्सियतों और कमाण्डरों की कॉनफ्रन्स बैठी हुई थी। वह लोग परेशान से थे। उनमें हातिमुल अकबर नाम का एक मिस्री मुसलमान भी बैठा था। वह उन्हें यह ख़बरें तफ़सील से सुना चुका था कि ख़लीफ़ा अल आज़िद की माज़ूली के बाद मर चुका है। मिस्र अब बग़दाद के ख़लीफ़ा के तेहत आ गया है। सलीबियों का वफ़ादार मुसलमान नाएब सालार रजब पुर असरार तरीक़े से मारा जा चुका है। वह जिन तीन लड़कियों को शूबक से ले गया था वह मारी जा चुकी हैं और सलीबियों का एक और वफ़ादार मुसलमान फ़ौजी हाकिन फ़ैज़ुल फ़ात्मी भी जल्लाद के हाथों मरवा दिया गया है। अब हातिमुल अकबर ने उन्हें यह ख़बरें बद सुनाईं कि जिस आलिम जासूस को दो लड़कियों के साथ क़ाहिरा भेजा गया था वह ऐन उस वक़्त लड़कियों समेत गिरिफ़्तार हो गया है जब उसका मिशन कामयाब हो रहा था।

"यह सबूत है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का सुराग़रसानी का निज़ाम बहुत होशियार है।" कोनारड ने कहा– "कोनारड सलीबियों का मशहूर हुक्मरान और फ़ौजी कमाण्डर था, उसने कहा– इन लड़कियों को वहां से आज़ाद कराना मुमकिन नहीं। निहायत अच्छी लड़कियां ज़ाए होती जा रही हैं।"

"सलीब की ख़ातिर हमें यह क़ुर्बानी देनी पड़ेगी।" सलीबियों के एक और बादशाह और फ़ौजी कमगण्डर गै आफ़ लोज़ीनान ने कहा– "हमें भी मरना है। हमारे जो आदमी पकड़े गये हैं उन्हें भूल जाओ। उनकी जगह और आदमी भेजो। यह दो लड़कियां कहां से आई थीं?" उसने पूछा। "और वह तीन लड़कियां कौन थीं जो रजब के साथ मारी गई थीं?"

"उनमें दो ईसाई थीं।" उनकी एन्टेलिजेंस के सरबराह ने जवाब दिया– "दोनों अतालवी थीं और तीन मुसलमान थीं। उन्हें बचपन में उड़ाया गया था, बहुत ख़ूबसूरत थीं। जवानी तक उन्हें याद नहीं रहा था कि वह मुसलमान थीं। हमने उन्हें बचपन में ही उन्हें उस फ़न की तरबियत देनी शुरू कर दी थी। यह शक नहीं किया जा सकता कि उन्हें चूंकि मालूम था कि वह मुसलमान हैं इस लिए उन्हों ने हमें धोखा दिया।"

"मुसलमान थीं तो क्या?" कोनारड ने कहा और हातिमुल अकबर की तरफ़ इशारा करके कहा– "हमारा प्यारा दोस्त हातिम भी तो मुसलमान है क्या उसे अपने मज़हब का पास नहीं?" उसने शराब का गिलास हातिम के हाथ में देकर कहा– "हातिम जानता है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी मिस्र को गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ना चाहता है और वह इस्लाम के नाम पर खेल रहा है। हम मिस्र को आज़ाद कराना चाहते हैं। उसका तरीक़ा यही है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिस्र में चैन से बैठने न दिया जाए।"

हातिमुल आकबर सलीबियों की शराब में बद मस्त उसकी ताईद में सर हिला रहा था। उसने कहा– "मैं अब वहां ऐसा इंतेज़ान करूंगा कि आप का कोई आदमी वहां पकड़ा नहीं जाएगा।"

"अगर हम मिस्र में यह ज़मीन दोज़ गड़बड़ी जारी न रखते तो सलाहुद्दीन अय्यूबी हम पर कभी का हमला कर चुका होता।" एक सलीबी कमाण्डर ने कहा– "यह हमारी कामयाबी है कि हम उसकी ताक़त उसके अपने आदमियों पर जाए कर रहे हैं।"

"क्या उसके और अली बिन सुफ़ियान के ख़ात्मे का अभी कोई इन्तेज़ाम नहीं हुआ?" कोनारड ने पूछा।

"कई बार हो चुका है।" एन्टलीजेंस के सरबराह ने कहा– "लेकिन कामयाबी नहीं हुई। नाकामी की वजह यह है कि दोनो पत्थर किसम के इंसान हैं। न वह शराब पीते हैं न औरत को पसंद करते हैं। इसलिए न उन्हें शराब में कुछ दिया जा सकता है न औरत के हाथों मरवाया जा सकता है। अब क़ामयाबी की तवक़्क़ो है। अय्यूबी के बॉडी गार्डज़ में चार आदमी फ़िदाई हैं। उन्हें मैंने वहां बड़ी चाबुकदस्ती से वहां तक पहुंचाया है। जब भी मौक़ा मिला वह दोनो को या एक को ख़त्म कर देंगे।"

"क्या हमारे वहां अय्यूबी के भेजे जासूस हैं?" गै ऑफ़ लोज़ीनान ने पूछा।

"यक़ीनन हैं।" एन्टलीजेंस के सरबराह ने जवाब दिया– "जब से हमने मिस्र में और इधर शाम में जासूसी और तबाह कारी का सिलसिला शुरू किया है सलाहुद्दीन अय्यूबी ने भी अपने जासूस हमारे हां भेज दिए हैं। उनमें से दो पकड़े गए हैं, वह अज़ीयतों से मर गए मगर अपने किसी तीसरे साथी की निशान देही नहीं की।"

"उनकी कामयाबी किस हद तक है?"

"बहुत हद तक।" दूसरे ने जवाब दिया– "कर्क में हमारी रसद को जो आग लगी थी जिसमें आधी रसद जल गई और ग्यारह घोड़े ज़िन्दा जल गए थे, वह अय्यूबी के तबाह कार जासूसों का काम था। मैं आप को यह भी बता सकता हूं कि हमारी जंगी कैफ़ियात और अहलियत की पूरी मालूमात सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिलती रहती है। उसके जासूसों को ख़िराजे तहसीन पेश करता हूं कि जान पर खेल जाते हैं और काम पूरी दियानत दारी से करते हैं।"

उनमें बहुत देर इस मसले पर बहस होती रही कि मिस्र और शाम में तख़रीबी कारवाइयों को किस तरह तेज़ और मज़ीद तबाह कुन किया जा सकता है। हातिमुल अकबर उन्हें सुल्तान अय्यूबी की हुकूमत की कमज़ोर रगें और मज़बूत पहलू दिखा रहा था। आख़िर फ़ैसला हुआ कि हातिमुल अकबर को कुछ आदमी और दो तीन लड़कियां दी जाऐं।

❖

उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी अपने दो नाएबीन और अली बिन सुफ़ियान को अपने उस मन्सूबे से आगाह कर रहा था कि वह कर्क पर हमला करेगा। उसने बीस रोज़ बाद का दिन बताया जब उसे फौजों को कूच करना था। यह तमाम तर मंसूबा आलिम जासूस और दो

लड़कियां साथ वाले कमरे में सून रहीं थीं। आलिम ने एक बार फिर लड़कियों के साथ अफ़सोस का इज़हार किया कि उन्हें एक राज़ मालूम हो गया है मगर वह उसे शूबक तक नहीं पहुंचा सकते। एक लड़की ने कहा– "मैं कोशिश करूंगी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी मुझे पसंद कर ले। अगर थोड़ी सी देर के लिए भी वह तंहाई में मुझे अपने साथ रख ले तो मैं उससे रिहाई पा लूंगी। मुझे उम्मीद है कि मैं उसकी अक़्ल पर कब्ज़ा कर लूंगी।"

"मालूम नहीं उसने हमें क्यों बुलाया है?" आलिम जासूस ने कहा– "तुम दोनों याद रखो अगर वह तुम्हें अकेले अकेले बुलाए तो दोनो यह कोशिश करना कि उसे हैवान बना सको, अगर वह शराब पिए तो तुम जानती हो कि उसे कितनी पिलाकर बेहोश किया जासकता है। वह बेहोश हो जाए तो फ़रार का तरीक़ा तुम जानती हो और दोनों को मालूम है कि तुम्हें किसके पास पहुंचना है। उसका घर मस्जिद के बिलमुक़ाबिल है।"

"मैं जानती हूं। एक लड़की ने कहा– "मेहदी अबादान।"

"हां!" आलिम ने कहा– "अगर तुम मेहदी तक पहुंच गई तो वह तुम्हें शूबक तक पहुंचा देगा। मेरे फ़रार का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। तुमने अय्यूबी का मंसूबा सुन लिया है, कूच की तारीख़ याद रखो। रास्ता याद कर लो, सफ़र रात के वक़्त हुआ करेगा। दिन के वक़्त उसकी फ़ौज हरकत नहीं करेगी। हमला कर्क पर होगा। मुझे उम्मीद है कि यह इत्तिला क़ब्ल अज़ वक़्त पहुंच गई तो हमारी फ़ौज अय्यूबी को रास्ते में रोक लेगी। अय्यूबी इसी सूरते हाल से डरता है। शूबक में जाकर यह ख़ास तौर पर बताना कि अय्यूबी खुले मैदान में आमने सामने नहीं लड़ना चाहता क्योंकि उसके पास फ़ौज कम है।"

सुल्तान अय्यूबी के कमरे से एसी आवाज़ें आई जैसे इज्लास ख़त्म हो गया हो और नाएबीन बाहर जा रहे हैं। आलिम और लड़कियां फ़ौरन उस जगह सरक गईं जहां उन्हें बैठाया गया था। आलिम के कहने पर उन्हों ने सर घुटनों में दे लिया जैसे उन्हों ने कुछ भी नहीं सुना और गिरदो पेश का कोई होश नहीं। उन्हें अपने कमरे में क़दमों की आवाज़ सुनाई दी तो भी उन्हों ने ऊपर न देखा। आलिम ने उस वक़्त ऊपर देखा जब किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा– "उठो, मेरे साथ आओ!" वह अली बिन सुफ़ियान था। अली ने लड़कियों को भी उठाया और उन्हें सुल्तान अय्यूबी के कमरे में ले गया।

"मैं तुम्हारे इल्म और तुम्हारी ज़िहानत की दाद देता हूं।" सुल्तान अय्यूबी ने आलिम जासूस से कहा– "इन की ज़ंजीरें खोल दो, तुम तीनों बैठ जाओ।" अली बिन सुफ़ियान बाहर निकल गया।

सुल्तान अय्यूबी ने आलिम से कहा– "लेकिन तुम इल्म को किस शैतानी काम में इस्तेमाल कर रहे हो। इसके बजाए तुम यहां आकर अपने मज़हब की तब्लीग़ करते तो मैं तुम्हारी क़द्र दिल की गहराईयों से करता कि तुम अपने मज़हब और अपने नबी की ख़िदमत कर रहे हो, क्या तुम्हारे मज़हब में यह लिखा है कि तुम दूसरे मज़हब की इबादत गाह में उसके मज़हब में झूठ शामिल करो? क्या तुम्हारे दिल में अपनी मुक़द्दस सलीब का, हज़रत ईसा का और कुंवारी मरियम का यह एहतराम है कि झूठ और इब्लीसियत जैसे कबीरा गुनाह करके तुम उन को

इबादत करते हो?"

"यह झूठ मेरे फराईज़ में शामिल है।" आलिम ने कहा– "मैने जो कुछ किया मुकद्दस सलीब के लिए किया।"

"तुम कहते हो कि तुम ने इन्जील और कुरआन का गहरा मुताला किया है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "क्या इन दोनों में से किसी एक किताब में भी इंसान को इसकी इजाज़त दी गई है कि इस किस्म की नौखेज़ लड़कियों को बदकारी की राह पर डालो और ग़ैर मर्दों के पास भेज कर अपनी मतलब बरारी करो? क्या इन्जील ने तुम्हें कहा है कि सलीब की ख़ातिर अपनी कौम की बेटियों की इसमत दूसरों के हवाले कर दो? क्या तुम ने किसी मुसलमान लड़की को कुरआन और इस्लाम के नाम पर अपनी इस्मत ग़ैर मर्दों के हवाले करते कभी देखा है?"

"इस्लाम को मैं इसाईयत का दुश्मन समझता हूं।" आलिम ने कहा– "मुझे जो ज़हर हाथ आएगा इस्लाम की रगों में डालूंगा।"

"तुम इतने मीठे ज़हर से चन्द एक मुसलमानों के किरदार को हलाक कर सकते हो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "इस्लाम का तुम कुछ नहीं बिगाड़ सकोगे।" उसने लड़कियों से कहा– "तुम किस ख़ानदान की बेटियां हो? मालूम है तुम्हें? अपनी अस्लियत जानती हो तो मुझे बताओ। दोनो ख़ामोश रहीं। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम ने अपनी पाकीज़गी ख़त्म करा ली है। अब भी तुम किसी बाइज़्ज़त घर की काबिले एहतराम बीवियां बन सकती हो?"

"मैं काबिले एहतराम बीवी बनना चाहती हूं।" एक लड़की ने कहा– "क्या आप मुझे कुबूल करेंगे? अगर नहीं तो मुझे कोई बाइज़्ज़त ख़ानदान दे दें। मैं इस्लाम कुबूल करके गुनाहों से तौबा कर लूंगी।"

सुल्तान अय्यूबी मुस्कुराया और ज़रा सोच कर कहा– "मैं नहीं चाहता कि इस आलिम का इल्म जल्लाद की तलवार से खून में डूब जाए और मैं नहीं चाहता कि तुम दोनों की जवानी और हुस्न मेरे कैद ख़ाने में गलता सड़ता रहे। सूनो लड़की, तुम अगर वाकई गुनाहों से तौबा करना चाहती हो तो मैं तुम्हें तुम्हारे मुल्क में भेज देता हूं लेकिन वह मुल्क तुम्हारा नहीं हमारा है। मैं एक न एक दिन अपना मुल्क तुम्हारे बादशाहों से ले लूंगा। तुम जाओ और किसी की बीवी बन जाओ। मैं तुम तीनों को रिहा करता हूं।"

तीनों यूं बिदके जैसे उन्हें सूईयां चुभो दी गई हों। इतने में अली बिन सुफ़ियान लोहार के साथ कमरे में आया और तीनों की ज़नजीरें खोल दी गई। सुल्तान ने कहा– "अली मैं ने इन्हें रिहा कर दिया है।" अली बिन सुफ़ियान का रद्दे अमल भी वही था, वह कितनी ही देर तक सुल्तान अय्यूबी के मुंह की तरफ़ देखता रहा। सुल्तान ने हा– "इन्हें तीन ऊंट दो और चार मुस्लह मुहाफ़िज़ साथ भेजो जो घुड़ सवार हों। निहायत ज़हीन और दिलेर मुहाफ़िज़ जो इन्हें शूबक के किले में छोड़ कर वापस आ जाएं। रास्ते के लिए सामान साथ दो और आज ही इन्हे रवाना करो।" उसने आलिम से कहा– "वहां जाकर यह ग़लत फ़हमी न फैला देना कि सलाहुद्दीन अय्यूबी जासूसों को बख़्श दिया करता है। मैं उन्हें दाने की तरह चक्की में पीस

पीस कर मारता हूं। तुम्हें सिर्फ़ इसलिए रिहा कर रहा हूं कि तुम आलिम हो, तुम्हें मौका दे रहा हूं कि इल्म का रौशन पहलू देखो, तुम्हारी निजात इसी में है।"

❖

सूरज अभी गुरूब नहीं हुआ था जब उन्हें ऊंटों पर सवार करके चार मुहाफ़िज़ों के साथ रवाना कर दिया गया। मुहाफ़िज़ ख़ास तौर पर मुन्तख़ब किए गये थे। इस इन्तिख़ाब की दो वजूहात थीं। एक यह कि रास्ते में डाकुओं का ख़तरा था। दूसरी वजह यह कि उन्हें सलीबी कमाण्डरों के सामने जाना था। ऊंट और घोड़े भी निहायत अच्छी क़िस्म के भेजे गए थे। मगर सब हैरान थे कि सुल्तान अय्यूबी ने यह फ़याज़ी क्यों कि है। दुश्मन को बख़्श देना उसका शेवा नहीं था। अली बिन सुफ़ियान ने उससे पूछा तो उसने इतना ही कहा– "अली मैनें तुम्हें कहा था कि मैं एक जुआ खेलना चाहता हूं अगर मैं बाज़ी हार गया तो सिर्फ़ इतना ही नुक़्सान होगा जो मैं पहले ही उठा चुका हूं कि दुश्मन के तीन जासूस मेरे हाथ से निकल गये हैं इससे ज़्यादा कोई नुक़सान नहीं होगा।" अली बिन सुफ़ियान ने इस जुए की वज़ाहत चाही लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने इसी पर बात ख़त्म कर दी अब वक़्त आने पर बताऊंगा।

मगर सब तो हैरान थे मगर रिहा होने वाले खुशी से बावले हुए जा रहे थे। खुशी सिर्फ़ रिहाई की नहीं थी असल खुशी उस राज़ की थी जो वह अपने साथ ले जा रहे थे। वह क़ाहिरा शहर से दूर निकल गए थे, उनके ऊंट पहलू ब पहलू जा रहे थे। दो मुहाफ़िज़ आगे थे और दो पीछे। आलिम ने उनसे पूछा था कि वह उन की ज़बान समझते हैं? चारों अपनी ज़बान के सिवा और कोई ज़बान नहीं जानते थे। आलिम और लड़कियां उनकी ज़बान बड़ी रवानी से बोलती थीं। यह उन्हें खास तौर पर सिखाई गई थी।

आलिम ने लड़कियों से अपनी ज़बान में कहा– "खुदाए यसू मसीह ने मौज्ज़ा दिखाया है। इससे ज़ाहिर होता है कि उसे हमारे साथ प्यार है और उसे हमारी फ़तह मंजूर है। यह सच्चे मज़हब की निशानी है। सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान जैसे दानाओं को खुदा ने अक्ल का ऐसा अंधा किया है कि इंतिहाई ख़तरनाक राज़ हमारे कानों में डाल कर हमें रिहा कर दिया है। हम अपनी फ़ौज को उनका सारा मंसूबा सुनाएंगे और हमारी फ़ौज अय्यूबी को सेहरा में घेर कर ख़त्म कर देगी। उसे कर्क तक पहंचने की मोहलत ही नहीं मिलेगी। मुझे उम्मीद है कि हमारे कमाण्डर जंग को हमले तक महदूद नहीं रखेंगे। वह मिस्र पर ज़रूर चढ़ाई करेंगे। मिस्र फ़ौजों से ख़ाली होगा, यह फ़तह बड़ी आसान होगी।"

"आप आलिम हैं, तजुर्बेकार हैं।" एक लड़की ने कहा– "मगर आप जिसे मौजज़ा कह रहे हैं वह मुझे एक ख़तरा दिखाई दे रहा है। ख़तरा यह चार मुहाफ़िज़ हैं, कहीं आगे जाकर यह हमें क़त्ल करके वापस चले जाएंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हमारे साथ मज़ाक किया है। जल्लाद के हवाले करने की बजाए हमें इनके हवाले कर दिया है, यह हमें जी भर कर ख़राब करेंगे और क़त्ल कर देंगे।"

"और हम निहत्ते हैं।" आलिम ने यूं कहा जैसे उसके ज़ेहन से खुशफ़हमियां निकल गई हों, उसने कहा– "तुम ने जो कहा है वह दुरुस्त हो सकता है, कोई हुक्मरान अपने दुश्मन के

जासूसों को बख़्श नहीं सकता और मुसलमान इस कदर जिन्स परस्त हैं कि तुम जैसी हसीन लड़कियों को छोड़ नहीं सकते।"

"हमें रातों को चौकन्ना रहना पड़ेगा।" दूसरी लड़की ने कहा– "अगर रात को यह सो जाएं तो उन्हें उन्हीं के हथियारों से ख़त्म कर दिया जाए। ज़रा हिम्मत की ज़रूरत है।"

"हमें यह हिम्मत करनी पड़ेगी।" आलिम ने कहा– "यह काम आज ही रात हो जाए तो अच्छा है। सुबह तक हम बहुत दूर निकल जाएंगे।"

दो मुहाफ़िज़ आगे और दो पीछे अपनी गप शप लगाते चले जा रहे थे। उनके अंदाज़ से ज़ाहिर होता था जैसे उन्हें मालूम हीं नहीं कि वह इतनी दिलकश लड़कियां उन्की तहवील में हैं। सूरज गुरूब हो रहा था। एक ने आलिम से कहा कि हम अभी रुकेंगे नहीं, रात का पहला पहर चलते गुज़ारेंगे, वह चलते गए और सेहरा की रात तारीक होती गई। आलिम और लड़कियां ऊंटों को करीब करके मुहाफ़िज़ों के कत्ल का मंसूबा बना रही थीं। बहुत देर बाद एक सर सब्ज़ सी जगह आ गई, मुहाफ़िज़ रुक गये और वहीं पड़ाव किया। उन्हों ने खाने के लिए जासूसों को सामान दिया और फिर सोने की तैय्यारी करने लगे। जासूसों ने देखा कि तीन मुहाफिज़ लेट गए थे और एक टहल रहा था। आलिम लड़कियों के साथ मुहाफ़िज़ों से कुछ दूर लेटा। उनकी तीनों की नज़र मुहाफ़िज़ पर थी। वह चौथे मुहाफ़िज़ को देखते रहे। वह पड़ाव के इर्द गिर्द टहलता रहा। एक खटका सा हुआ, वह दौड़कर उधर गया और अच्छी तरह देख भाल करके आ गया।

तकरीबन दो घंटे गुज़र गये। उसने अपने एक और साथी को जगाया और खुद उसकी जगह लेट गया। जो जागा था वह पड़ाव के इर्द गिर्द टहलने लगा। कभी जानवरों के पास जाकर उन्हें देखता और कभी सोए हुए इन्सानों को देखता। आलिम ने लड़कियों से कहा– "हम कामयाब नहीं हो सकेंगे। यह कम्बख़्त पहरा दे रहे हैं, जो होगा होकर रहेगा, सो जाओ।" और वह सो गये।

रात गुज़र गई सुबह अभी धुंदली थी जब मुहाफ़िज़ों ने उन्हें जगाया और रवाना होने के लिए कहा। थोड़ी देर बाद वह फिर उसी तरतीब में चले जा रहे थे जिसमें एक रोज़ पहले थे। तीनं ऊंट पहलू ब पहलू, दो मुहाफ़िज़ आगे और दो ऊंटों के पीछे। वह एक बार फिर लड़कियों से लाताअल्लुक हो गये। उन्हों ने कोई ऐसी बात भी नहीं की थी जिस से शक होता कि यह लोग ओबाश या बदमाश हैं। सूरज उभरता आया, फिर यह काफ़िला टीलों के इलाके में दाख़िल हो गया। मिट्टी और रेत की पहाड़ियां नाज़ुक सी दीवारों की तरह खड़ी थीं। उनमें गलियां सी थीं और उन पर पहाड़ियों का साया था। लड़कियां डरने लगीं, डर उनके चेहरों से ज़ाहिर हो रहा था, उनकी निगाह में यह जगह जुर्म और कत्ल के लिए मौज़ू थी मगर मुहाफ़िज़ उनकी तरफ़ देख भी नहीं रहे थे।

"उनसे कहो कि हमारे साथ बातें करें।" एक लड़की ने आलिम से कहा– "इनकी ख़ामोशी और लाताअल्लुकी मुझे डरा रही है। इन्हें कहो कि हमें मारना चाहते हैं तो फ़ौरन मार दें। मैं मौत का इन्तिज़ार नहीं कर सकती।"

आलिम ख़ामोश रहा। वह लड़कियों की कोई मदद नहीं कर सकता था। वह तीनों इन मुहाफ़िज़ों के रहमो करम पर थे। सूरज सर पर आ गया तो वह उन टीलों के अंदर ऐसी जगर रूक गय जहां रेत की सिलों वाले टीले थे और ऊपर जाकर आगे को झुके हुए थे। उनके साए में उन्हों ने कयाम किया। खाने के दौरान आलिम ने मुहाफ़िज़ों से पूछा– "तुम लोग हमारे साथ बातें क्यों नहीं करते?"

"जो बातें हमारे फ़र्ज़ में शामिल नहीं वह हम नहीं किया करते।" मुहाफ़िज़ों के कमाण्डर ने जवाब दिया और पूछा– "अगर तुम लोग कोई ख़ास बात करना चाहते हो तो हम सूनेंगे और जवाब देंगे।"

" क्या तुम्हें मालूम है कि हम कौन हैं?" आलिम ने पूछा।

"तुम तीनों जासूस हो।" मुहाफ़िज़ ने जवाब दिया– "यह लड़कियां बदकार हैं। यह उन आदमियों के इस्तेमाल के लिए हैं जिन्हें तुम लोग हमारे खिलाफ़ इस्तेमाल करना चाहते हो। अमीरे मिस्र सलाहुद्दीन अय्यूबी, अल्लाह उसके नेक इरादों में बरकत दे, ने तुम्हें मालूम नहीं क्यों बख़्श दिया है। हमें हुक्म मिला है कि तुम्हें क़िला शूबक में छोड़ आएं, तुम अमानत हो, तुम ने यह बात मुझ से क्यों पूछी है?"

"तुम्हारे साथ बातें करने को जी चाह रहा था।" आलिम ने जवाब दिया– "इतना लम्बा सफ़र इस लातात्लुकी और बेगानगी से बड़ा कठिन हो रहा है। हमारे साथ बातें करते चलो।"

"हम हमसफ़र हैं।" मुहाफ़िज़ ने कहा– "लेकिन हमारी मंज़िलें जुदा हैं। दो रोज़ बाद हम जुदा हो जाएंगे।"

आलिम जासूस ने जैसे मुहाफ़िज़ का जवाब सुना ही न हो। उसकी आंखें किसी दूर की चीज़ को देख रही थीं। वह सेहरा से अच्छी तरह वाक़िफ़ था। सेहरा के ख़तरों से वाक़िफ़ था। उसकी आंखें हैरत और ग़ालिबन डर से फटती जा रही थीं। मुहाफ़िज ने उस तरफ़ देखा जिस तरफ़ आलिम देख रहा था। मुहाफ़िज़ की भी आंख खूल गई, कोई दो सो गज़ दूर पर बुलन्द जगह दो ऊंट खड़े थे, उन पर दो आदमी सवार थे जिनके चेहरों और सरों पर पगड़ियां लिप्टी हुई थीं। ऊंटों की टांगें नज़र नहीं आ रही थीं। वह बुलन्दी के पीछे थीं। सवार ख़ामोशी से खड़े थे, मुहाफ़िज़ और जासूसों के क़ाफ़िले को देख रहे थे, उनका अंदाज़ और लिबास बता रहा था कि वह कौन हैं।

"जानते हो यह कौन हैं?" मुहाफ़िज़ों के कमाण्डर ने आलिम से पूछा।

"सेहराई डाकू!" आलिम ने जवाब दिया– "मालूम नहीं कितने होंगे।"

"देखा जाएगा।" मुहाफ़िज़ ने कहा– उसने उठते हुए अपने एक साथी से कहा– "मेरे साथ आओ।"

"वह दोनो घोड़ो पर सवार होकर डाकुओं की तरफ़ चले गये। उनके पास तलवारों के अलावा बर्छियां भी थीं। उन्हें अपनी तरफ़ आता देख कर शुत्र सवार बुलन्दी के पीछे ग़ायाब हो गये। दो मुहाफ़िज़ जो पीछे रह गए थे करीब के टीले पर चढ़ गये। आलिम ने लड़कियों से कहा– "मेरा ख़्याल है कि तुम्हारा ख़दशा सही साबित हो रहा है। यह डाकू नहीं। यह सलाहुद्दीन

अय्यूबी के भेजे हुए आदमी मालूम होते हैं। वर्ना यह मुहाफ़िज़ इतनी दिलेरी से उनकी तरफ़ न चले जाते। अय्यूबी तुम दोनों को बहुत ज़्यादा ज़लील कराना चाहता है। मेरे लिए तो मौत लिखी हुई है, तुम्हें बड़ी ख़ौफ़नाक सज़ा दी जाएगी।"

"इसका मतलब यह है कि हम आज़ाद नहीं।" एक लड़की ने कहा– "हम अभी तक कैदी हैं।"

"यही मालूम होता है।" दूसरी लड़की ने कहा।

दोनो मुहाफ़िज़ वापस आ गये। उनके साथी और जासूस उनके गिर्द जमा होगये। मुहाफ़िज़ों का कमाण्डर जिसका नाम हुदेद था, उन्हे बताने लगा– "वह सेहराई कज़्ज़ाक हैं। हम उनसे मिल आए हैं। उनकी तादाद मालूम नहीं हो सकी। यह दोनो जो हमें देख रहे थे कहते हैं कि सुबह से हमारा पीछा कर रहे हैं। उन्हों ने मुझे कहा है कि तुम फ़ौज के आदमी और मुसलमान मालूम होते हो लेकिन यह लड़कियां मुसलमान नहीं। यह दोनों लड़कियां हमारे हवाले कर दो, हम तुम्हें परेशान नहीं करेंगे। मैंने उन्हें कहा है कि यह लड़कियां तुम्हारे हवाले नहीं करेंगे। वह मुझे समझाने की कोशिश करते रहे कि हम अपनी जानें ज़ाया न करें। मैं उन्हें कह आया हूं कि पहले हमारी जानें ज़ाया करो फिर लड़कियों को ले जाना।" उसने लड़कियों और आलिम से पूछा– तुम कोई हथियार इस्तेमाल कर सकते हो।?"

इन लड़कियों को हर हथियार चलाने की तरबियत दी गई है।" आलिम ने कहा– "तुम्हारे पास बरछियां, तलवारें भी हैं और तीर कमान भी हैं। उनमें से एक एक हथियार हमें दे दो।"

"अभी नहीं।" हुदेद ने सोंच कर कहा– "मैं कब्ल अज़ वक़्त तुम्हें हथियार नहीं दे सकता। अगर डाकुओं से टक्कर हो गई तो उस वक़्त दे दूंगा। हमें इस इलाके से फ़ौरन निकल जाना चाहिए। उन से घोड़ों और ऊंटों पर लड़ाई होगी तो यह इलाका मौज़ूं नहीं, घोड़े घुमा फिरा कर लड़ने के लिए यह जगह ख़राब है।"

वह फ़ौरन वहां से चल पड़े, मुहाफ़िज़ ने कमानें हाथों में ले लीं और तरकश खोल लिए हुदेद आगे था उसे उसके साथी ने कहा– "इन जासूसों को हथियार देना ठीक नहीं। आख़िर हमारे दुश्मन हैं हो सकता है कि डाकुओं के साथ मिलकर हमें मार डालें।"

आलिम लड़कियों से कह रहा था– "इन लोगों की नियत ठीक नहीं, उन्हों ने हमें हथियार देने से इन्कार कर दिया है। डाकू उनके अपने आदमी हैं, यह तुम दोनों को उनके हवाले कर देंगे और मुझे मरवा देंगे।"

दोनो को एक दूसरे पर भरोसा नहीं था और दोनों पर डाकुओं का डर सवार हो गया था। हुदेद ने अपने मुहाफ़िज़ों से कह दिया था कि कोई नकाब पोश नज़र आए तो मुझे बताए बग़ैर उस पर तीर चला दो। उनके साथ टक्कर ज़रूर होगी। देखना यह है कि कब होगी। और कहां होगी। वह तेज़ रफ़्तारी से चलते गये, घोड़ों और ऊंटों को आराम, चारा और पानी मिलता रहा था इस लिए थकन का उन पर कोई असर नहीं था। टीलों का इलाका बहुत दूर चला गया था। कई जगहों पर यह काफ़िला ऊंचे टीलों के दरमियान आ जाता था। हुदेद को डर यह था कि डाकू ऊपर से तीर न बरसा दें। उसने घोड़ों को ऐड़ लगाने को कहा और

जासूसों से कहा कि वह भी ऊंटों को घोड़ों की रफ़्तार पर कर लें और ऊपर को देखते रहें।

वह उस इलाके से निकल गये कोई डाकू नज़र नहीं आया। सूरज नीचे आने लगा था। एक बार दो ऊंट उसी सिम्त पर जाते नज़र आए, जिधर यह काफ़िला जा रहा था। काफ़िला चलता रहा, रास्ते में एक जगह पानी मिल गया। उन्हों ने जानवरों को पानी पिलाया, खुद भी पिया और चल पड़े। सूरज नीचे जाता रहा और उफ़क के पीछे चला गया। शाम तारीक हुई तो हुदेद ने काफ़िले को रोक लिया। कहने लगा– "यह जगह लड़ाई के लिए अच्छी है क्योंकि इर्द गिर्द कोई रुकावट नहीं।" उसने घोड़े की ज़ीन खोली नहीं, ताकि ज़रूरत के वक़्त घोड़े तैय्यार मिलें। ऊंटों को बैठा दिया गया, खाना खाकर हुदेद ने लड़कियों को अपने दरमियान लिटा लिया और उन्हें कहा कि वह होशियार रहें। मुहाफ़िज़ों से कहा कि वह कमानें तैय्यार रखें। सोऐं नहीं, लेटे रहें। उसे यक़ीन था कि रात को हमला ज़रूर होगा।

❖

रात आधी गुज़र गई। सेहरा पुर सुकून और ख़ामोश रहा। फिर उनके गिर्द सियाह भूतों जैसे बड़े बड़े साए दौड़ने लगे। ऊंटों के क़दमों की धमक सुनाई दे रही थी और ज़मीन हिल रही थी। ऊंटों की तादाद दस से ज़्यादा मालूम होती थी। उन पर एक एक सवार था, वह मुहाफ़िज़ों वग़ैरह को दहशत ज़दा करने के लिए उनके इर्द गिर्द ऊंटों को दौड़ा रहे थे। तीन चार चक्कर पूरे करके एक ने ललकारा– "लड़कियां हमारे हवाले कर दो। तुमसे कुछ और लिए बग़ैर हम चले जाएंगे।"

उसके जवाब में हुदेद ने लेट लेटे पहला तीर चलाया जिसे तीर लगा उसकी बड़ी ज़ोर से आवाज़ सुनाई दी। दूसरे मुहाफ़िज़ ने भी लेटे लेटे एक एक तीर चलाया। दो ऊंट बिलबिला कर बोले और बेक़ाबू हो गये। हुदेद ने लड़कियों से कहा– "भागना नहीं हमारे साथ रहना।"

शुत्र सवारों में से किसी ने कहा– "टूट पड़ो, किसी को ज़िन्दा न छोड़ो, लड़कियों को उठा लो।"

सेहरा की रात इतनी साफ़ होती है कि चांदनी न हो तो भी कुछ दूर तक नज़र आ जाता है। शुत्र सवार ऊंटों से कूद आए। फिर तलवारें और बरछियां टकराने का और दोनों फ़रीक़ों की ललकार का शोर रात का जिगर चाक करने लगा। किसी को एक दूसरे का होश न रहा। हुदेद और मुहाफ़िज़ों ने लड़कियों को इस तरह अपने दरमियान कर लिया था कि मुहाफ़िज़ों की पीठें लड़कियों की तरफ़ थीं; लड़कियों ने कई बार कहा कि हमें भी कुछ दो। हुदेद ने कहा मेरी तलवार निकाल लो।" वह खुद बरछी से लड़ रहा था। एक लड़की ने उसकी नियाम से तलवार निकाल ली। और दोनों मुहाफ़िज़ों के दरमियान से निकल गई। हुदेद ने उससे कहा– "हम से जुदा न होना लड़की।" डाकुओं का ज़्यादा हल्ला लड़कियों पर था। आलिम की कोई आवाज़ न सुनाई दी।

यह मारका बहुत देर लड़ा जाता रहा, आदमी बिखरते चले गये। मुहाफ़िज़ एक दूसरे को पुकारते रहे फिर उनकी पुकार ख़त्म हो गई। मारके का शोर भी कम होता गया। हुदेद ने अपने साथियों को पुकारा लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिल रहा था। उसे एक लड़की की

आवाज़ सुनाई दी। वह उसे पुकार रही थी। उसके साथ ही एक घोड़े के सरपट दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। हुदेद समझ गया कि कोई डाकू एक लड़की को ऊंट के बजाए किसी मुहाफ़िज़ के घोड़े पर डाल कर ले गया है। वह दौड़ कर एक घोड़े तक पहुंचा। जीन कसी हुई थी। वह घोड़े पर सवार हुआ और भागने वाले घोड़े के टापों की आवाज़ पर ताक़ुब में गया। दूसरी लड़की के मुतअल्लिक उसे मालूम नहीं था कि कहां है। उसने घोड़े को ऐड़ लगाई। सेहरा में कोई रुकावट, कोई नदी नाला नहीं था। घोड़ा हवा से बातें करने लगा। अगला घोड़ा भी अच्छी नस्ल का था। फ़र्क़ यह कि उस घोड़े पर दो सवार थे।

कोई एक मील बाद हुदेद को अगले घोड़े का साया नज़र आने लगा। उसने तआक़ुब जारी रखा। फ़ासला कम हो रहा था। हुदेद ने महसूस किया कि उसके पीछे भी एक घोड़ा आ रहा है जिसका सवार मुहाफ़िज़ भी हो सकता था डाकू भी। उसने घूम का देखा पिछला घोड़ा करीब आ गया था। हुदेद ने पुकारा "कौन हो?" उसे जवाब न मिला। उसने तआक़ुब जारी रखा और घोड़े को और ज़्यादा तेज़ करने की कोशिश करने लगा। अगला घोड़ा सीधा जा रहा था। उसकी बाग शायद लड़की के हाथ में आ गई थी क्यों कि हुदेद देख रहा था कि वह घोड़ा दाएं बाएं जा रहा है और उसकी रफ़्तार भी घटती जा रही है। वह उस तक पहुंच गया, उसके पास बर्छी थी। उसने अगले सवार के पहलू पर जाकर बरछी का वार किया लेकिन वह घोड़ा एक तरफ़ हो गया। सवार तो बच गया बरछी घोड़े को लगी। हुदेद ने घोड़ा रोका और घुमाया। दूसरा सवार भी घोड़े को घुमाने की कोशिश कर रहा था लेकिन लड़की जो उसके आगे बैठी थी, बागें इधर उधर करके घोड़े का रुख़ सही नहीं होने देती थी। हुदेद ने लड़की को पुकारा तो लड़की और ज़्यादा दिलेर होगई।

सवार लड़की को साथ लिए घोड़े से कूद गया और उसने अपने घोड़े को ढाल बना लिया। हुदेद अपने घोड़े को घुमा घुमा कर लाता मगर जिधर से भी वार करने आता डाकू लड़की को साथ लिए अपने घोड़े की ओट में हो जाता। आख़िर हुदेद घोड़े से उतर आया। इतने में दूसरा सवार भी आ गया। वह मुहाफ़िज़ नहीं डाकू था। वह भी घोड़े से उतर आया। हुदेद ने उन्हें ललकारा– "लड़की को नहीं ले जासको गे।" एक डाकू ने लड़की को दबोचे रखा और दूसरा हुदेद से लड़ने लगा। लड़की के पास अब तलवार नहीं थी। दूसरे डाकू ने लड़की को छोड़ दिया और वह हुदेद पर टूट पड़ा। हुदेद ने लड़की से कहा– "तुम घोड़े पर बैठो और शूबक की तरफ़ निकल जाओ। मैं इन दोनों को तुम्हारे पीछे नहीं आने दूंगा।" मगर लड़की वहीं खड़ी रही।

हुदेद ने दोनों का खूब मुक़ाबिला किया। डाकुओं ने उसे बार बार कहा–"एक लड़की के लिए अपनी जान मत गवाओं।" हुदेद ने हर बार यही जवाब दिया– "पहले मेरी जान लो फिर लड़की को ले जाना।" और उसने कई बार लड़की से कहा– "तुम यहां क्यों खड़ी हो? भागो यहां से।"

आख़िर लड़की ने कहा– "तुम्हें छोड़ कर नहीं जाऊंगी।" हुदेद ज़ख़्मी होने लगा। उसने एक बार फिर लड़की से कहा– "मैं ज़ख़्मी हो गया हूं मेरे मरने से पहले निकल जाओ।"

एक डाकू लड़की की तरफ़ घूमा। हुदेद को मौका मिल गया, उसने बरछी उसके पहलू में उतार दी लेकिन उस वक़्त दूसरे डाकू की तलवार उसके कंधे पर लगी। लड़की ने एक डाकू को गिरते देख लिया। उसने दौड़ कर उसकी तलवार ले ली और पीछे से आकर दूसरे डाकू की पीठ में बरछी की तरह उतार दी। वह संभलने लगा तो आगे से हुदेद की बरछी उसके सीने में उतर गई। वह डाकू भी ख़त्म हो गया मगर उसके साथ ही हुदेद भी खड़ा रहने के काबिल न रहा। लड़की ने उसे सहारा दिया तो उसने कहा– "तुम ठीक हो न?" मुझे छोड़ो, घोड़े पर बैठो और फ़ौरन शूबक को रवाना हो जाओ। अल्लाह तुम्हें ख़ैरियत से पहुंचा देगा, शूबक दूर नहीं। अपने साथियों की तरफ़ न जाना। वहां शायद कोई ज़िन्दा नहीं होगा।"

"ज़ख़्म कहां कहां है?" लड़की ने उससे पूछा।

"मुझे मरने दो लड़की।" हुदेद ने कहा– "तुम निकल जाओ। खुदा के लिए मेरा फ़र्ज़ तुम खुद ही पूरा करो। कहीं ऐसा न हो कि कोई और कज़्ज़ाक इधर आ निकले।"

लड़की की ग़लत फ़हमी और शकूक रफ़ा हो चुके थे। वह समझ गई थी कि इस शख़्स ने उसकी ख़ातिर जान ख़तरे में डाली है। उसने उसे अकेला छोड़ने से साफ़ इन्कार कर दिया। दौड़ कर गई घोड़ों की ज़ीन के साथ बंधी हुई पानी की छागल खोल लाई और हुदेद के मुंह के साथ लगा दी। उसे पानी पिलाकर छागल घोड़े के साथ बांध दी और उससे पूछने लगी कि उसके ज़ख़्म कहां हैं। हुदेद ने उसे ज़ख़्म बताए तो उसने अपने कपड़े फाड़े और कुछ टुकड़े हुदेद के लिबास से फाड़े। उन्हें पानी में भिगो कर उसने हुदेद के ज़ख़्मों पर बांध दिया। उसे इस काम की ट्रेनिंग दी गई थी। उसने हुदेद को सहारा देकर उठाया और घोड़े तक ले गई, बड़ी मुश्किल से उसे घोड़े पर बैठाया। खुद दूसरे घोड़े पर बैठने लगी तो हुदेद ने कहा– "मैं अकेला घोड़े पर नहीं बैठ सकूंगा।" वहां तीन घोड़े थे। लड़की ने यह दानिशमंदी की कि घोड़े ज़ाय करना मुनासिब न समझा। दो घोड़ों की बागें एक घोड़े की ज़ीन के पीछे बांध दीं और खुद हुदेद के पीछे सवार हो गई। उसने हुदेद की पीठ अपने सीने से लगा ली और उसका सर अपने कंधे पर डाल लिया।

"शूबक की सिम्त बता सकते हो?" लड़की ने पूछा।

हुदेद ने आसमान की तरफ़ देखा, सितारे देखे और एक तरफ़ इशारा करके कहा– "इस रुख़ चलो।" फिर उसने कहा– "मैं शायद ज़िन्दा नहीं रह सकूंगा। खून निकल रहा है, जहां कहीं मेरी जान निकल जाए मुझे वहीं दफ़न कर देना और अगर तुम्हें मेरी नीयत पर कोई शूबहा था तो वह दिल से निकाल कर मुझे बख़्श देना। मैंने अमानत में ख़यानत नहीं की। खुदा तुम्हें ज़िन्दा सलामत अपने ठिकाने पर पहुंचा दे।"

घोड़ा चला जा रहा था और रात गुज़रती जा रही थी।

❖

सुबह तुलू हुई तो हुदेद बेहोशी की हालत में था और अपने आप को होश में रखने की सर तोड़ कोशिशि कर रहा था। उस का खून रुक गया था लेकिन ज़्यादा तर खून बह जाने से उसका जिस्म बे जान हो गया था। लड़की ने उसे छोटे से नख़्लिस्तान में उतारा, उसे पानी

पिलाया। घोड़ों के साथ कुछ खाने की चीज़ें बंधी हुई थीं, वह हुदेद को खिलाई। उससे उसका दिमाग़ साफ होने लगा। उसे पहला ख़्याल यह आया कि पहले वह उस लड़की का मुहाफ़िज़ था, अब उसका कैदी है। लड़की ने उसे लेटाया। वह रात भर घोड़े पर सवार रहे थे। कुछ देर के आराम से हुदेद का जिस्म ठिकाने आ गया। उसने लड़की से कहा– "शूबक दूर नहीं, शायद एक दिन की मुसाफ़त है, तुम एक घोड़ा लो और उसे भगाती लेजाओ। जलदी पहुंच जाओगी, मैं वापस चला जाऊंगा।

"तुम ज़िन्दा वापस नहीं पहुंच सकोगे।" लड़की ने कहा– "अगर यहीं से वापस जाना है तो मुझे साथ ले चलो। तुम ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, मैं तुम्हें अकेला नहीं छोडूं गी।"

"मैं मर्द हूं।" हुदेद ने कहा– "मेरा दिल नहीं मान रहा है कि एक लड़की मेरी हिफ़ाज़त करे, इससे बेहतर है कि मैं मर जाऊं।"

"मैं उन मामूली सी लड़कियों में से नहीं हूं जो घरों में पड़ी रहती हैं।" लड़की ने कहा– "और जो मर्द की हिफाज़त के बग़ैर एक कदम नहीं चल सकतीं। मुझे एक फौजी मर्द समझो।" "मैं तुम्हारे जज़्बे की कद्र करता हूं।" हुदेद ने कहा। "डाकू हम दोनों को कितना करीब ले आए हैं मगर हम एक दूसरे के दुश्मन हैं। तुम मेरे मुल्क की बुनियादें हिलाने की कोशिश कर रही हो और एक दिन मैं तुम्हारे मुल्क पर हमला करने आऊंगा।"

"लेकिन इस वक़्त मेरी दोस्ती कुबूल कर लो।" लड़की ने कहा– "दुशमनी की बातें उस वक़्त सोचेंगे जब तुम तन्दरुस्त होकर अपने मुल्क में चले जाओगे।" उसने हुदेद की गर्दन के नीचे बाजू करके उसे उठाया। हुदेद अब उठ सकता था, वह उठा और आहिस्ता आहिस्ता चलता घोड़े तक पहुंच गया। लड़की ने उसका पांव उठाकर रकाब में रखा और उसे सहारा देकर घोड़े पर सवार कर दिया। लड़की भी उस घोड़े पर सवार होने लगी तो हुदेद ने हाथ आगे करके उसे रोक दिया और कहा– "तुम अब दूसरे घोड़े पर बैठो, मैं अकेला सवारी कर सकूंगा।"

"इसके बावजूद मैं इसी घोड़े पर बैठूं गी।" लड़की ने कहा– "तुम्हें अपने साथ लगाए रखूंगी।"

हुदेद की ज़िद के बावजूद लड़की उसके पीछे सवार होगई और जब एक बाजू उसके सीने पर रख कर उसे अपने साथ लगाने लगी तो हुदेद ने मज़ाहमत करते हुए कहा– "मुझे ज़रा अपने सहारे बैठने दो।" लड़की ने उसे ज़बरदस्ती अपने साथ लगा कर उसका सर अपने कंधे पर डाल लिया। उसने हुदेद से पूछा– "मैं जानती हूं तुम मुझे बदकार लड़की समझकर मुझ से दूर रहने की कोशिश कर रहे हो।"

"नहीं।" हुदेद ने कहा– "मैं तुम्हें सिर्फ लड़की समझ कर दूर रहने की कोशिश कर रहा हूं। अगर तुम्हें अपने करीब करने की ख़्वाहिश होती तो दो रातें तुम बेबसी की हालत में तुम मेरी कैद में रही हो। मैं तुम्हें अपनी लौंडी बना सकता था। अब तो मुझे महसूस होता है जैसे मैं अमानत में ख़यानत कर रहा हूं। मेरे अन्दर गुनाह का अहसास पैदा हो रहा है।"

"तुम पत्थर तो नहीं हो।" लड़की ने उससे पूछा– "मुझे तो जिस मर्द ने देखा है भूखी

नज़रों से देखा है। मैं ने सिर्फ़ इतनी सी कीमत देकर तुम्हारी कौम के दो मोमिनों के ईमान ख़रीद लिए थे।"

"कितनी कीमत?" हुदेद ने पूछा!

"सिर्फ़ इतनी सी कि उन्हें पास बैठाया और सर अपने कंधे पर रख लिया था।"

"उनके पास ईमान था ही नहीं।" हुदेद ने कहा।

"जो कुछ भी था।" लड़की ने कहा– "वह मैं ने उन से ले लिया था, उसकी जगह उन के दिलों में अपनी कौम के ख़िलाफ़ ग़द्दारी डाल दी थी।"

"वह कौन हैं?" हुदेद ने पूछा।

"अभी नहीं बताऊंगी।" लड़की ने जवाब दिया– "जिस तरह तुम अपने फ़र्ज़ के पक्के हो इसी तरह मुझे भी अपना फ़र्ज़ अज़ीज़ है।"

हुदेद ख़ामोश हो गया। वह लड़की के जिस्म की हरारत और हल्की हल्की बू महसूस कर रहा था। लड़की के खुले हुए रेशमी से बाल हवा से लहरा कर उसके गालों पर पड़ रहे थे और गालों को सहला रहे थे। उसे ऊंघ आगई। घोड़ा चलता रहा, बहुत दूर जाकर हुदेद की आंख खुली तो सूरज सर पर आ चुका था। उसने कहा– "घोड़े को ऐड़ लगाओ। मुझे उम्मीद है कि हम सूरज गुरूब होने के बाद शूबक पहुंच जायेंगे।"

लड़की ने घोड़े को एड़ लगाई और सेहरा तेज़ी से पीछे हटने लगा।

❖

सूरज गुरूब हो चुका था, शूबक के किले के उस कमरे में जहां सलीबी हाकिमों और कमान्डरों के इजलास हुआ करते थे, वहां हाकिम और कमाण्डर बैठे थे। उन में आलिम जासूस भी बैठा था। वह कह रहा था– "मैं यह नहीं बता सकता कि उन दोनों लड़कियों का क्या हश्र हुआ या हो रहा है। मैं ने उन्हें बचाने बल्कि उन्हें देखने की भी कोशिश नहीं की क्यों कि उनसे ज़्यादा कीमती यह राज़ था जो मुझे आप तक पहुंचाना था। जैसा कि मैं आप को बता चुका हूं कि डाकुओं ने हमला किया तो मैं मौका देखकर एक तरफ़ होलिया और एक घोड़े तक पहुंच गया। एक तो मेरी रिहाई एक मोजज़ा है दूसरा मोजज़ा यह हुआ कि मैं इतने खूंरेज़ मारके में से साफ़ बचकर निकल आया। कोई भी मेरे पीछे नहीं आया। मेरा ख़याल है कि वह डाकू नहीं थे, सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के भेजे हुए आदमी थे। मैं यह नहीं बता सकता कि उसने हम तीनों को खुद सज़ाए मौत क्यों नहीं दी और लड़कियों को ख़राब कराने का यह तरीका क्यों इख़्तियार किया। यह एक ढोंग था, लड़कियां अब उन लोगों के क़बज़े में होंगी। उन्हें छुड़ाने का हम कोई तरीका नहीं सोच सकते।" एक सलीबी हाकिम ने कहा– "यह कुर्बानियां तो देनी पड़ती हैं। हमारे पास लड़कियों की कमी नहीं, हमारा यह तरीका कामयाब है। इसे जारी रखने के लिए और लड़कियां तैय्यार करो, सब आ गये हैं, अब वह राज़ बताओ, जो तुम अपने साथ लाए हो।"

आलिम जासूस उन्हें सुना चुका था कि वह काहिरा की एक मस्जिद से किस तरह गिरफ्तार हुआ था। कैद खाने में उसके साथ और लड़कियों के साथ क्या सुलूक हुआ और

सुल्तान अय्यूबी ने किस तरह उन्हें ख़िलाफ़े तवक्को रिहा किया। उसने यह भी सुनाया कि यह राज़ सुल्तान अय्यूबी ने उसे किस तरह दिया है। उसने तारीख़ बता कर कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी उस रोज़ अपनी फ़ौज को कूच कराएगा। वह कर्क पर हमला करेगा, नायब सालार कह रहे थे कि शूबक को पहले लेना चाहिए क्योंकि यह ज़्यादा मज़बूत किला है लेकिन सलाहुद्दीन शूबक पर अपनी ताक़त ज़ाए नहीं करना चाहता। वह कर्क को कमज़ोर समझ कर पहले उसे लेना चाहता है। वहां वे अपनी फ़ौज और रसद वग़ैरा का अड्डा बनाएगा। रसद जमा करके वह कमक बुलाएगा और फ़ौज को काफ़ी आराम देकर शूबक पर हमला करेगा। उसने यह ख़ास तौर पर कहा था कि वह हमें बे ख़बरी में लेना चाहता है। इसकी वजह उसने यह बताई है कि उसकी फ़ौज कम है और हमारी फ़ौज ज़्यादा भी है और हमारे पास घोड़े भी बेहतर हैं और हमारे पास ख़ोद और ज़िरह बक्तर हैं। उसने साफ़ अल्फ़ाज़ में कहा है कि अगर सलीबी फ़ौज ने उसे रास्ते में रोक लिया तो उसे शिकस्त के सिवा कुछ हासिल न होगा।" वह खुले मैदान में लड़ने से डरता है। आलिम जासूस ने वह तमाम बातें बातई जो उसने सुल्तान अय्यूबी की ज़बान से सुनी थीं।

इतने कीमती और अहम राज़ की तफ़सील सुनकर लड़कियों को सब भूल गये, और इस मसअले पर तबादलाए ख़्याल करने लगे। वह इस नतीजे पर पहुंचे कि सुल्तान अय्यूबी ग़ैर मामूली तौर पर दानिशमंद जंगजू है। उसनें कर्क पर हमले का जो पलान बनाया है, इस में उसकी जंगी फ़हम व फ़रासत का पता मिलता है। रास्ते में न लड़ने का फ़ैसला भी उसकी दानाई की दलील है। वह रास्ते में ताक़त ज़ाए नहीं करना चाहता। यह खुदाए यसुअ मसीह का ख़ास करम है कि उसके प्लान का इल्म हो गया है, वर्ना वह कर्क को लेकर शूबक जैसे मज़बूत दिफ़ा के लिए ख़तरा बन सकता था। उन्हों ने उसी वक़्त सुल्तान अय्यूबी के प्लान के मुताबिक़ अपनी फ़ौजों की नक़्लो हरकत और दिफ़ा का प्लान बनाना शुरू कर दिया। प्लान में यह इक़दामात तय पाए।

सलीबी अफ़वाज की मुत्तहिदा मरकज़ी कमाप शूबक में ही रहे गी। रसद गाह भी वहीं रखी जाए गी। जंग को शूबक से ही कंट्रोल किया जाएगा।

कर्क की किला बन्दी को और ज़्यादा मज़बूत किया जाएगा। कुछ और फ़ौज कर्क मुन्तकिल कर दी जाएगी।

अय्यूबी को कर्क से दूर उसकी अपनी सरहद के अंदर किसी दुश्वार गुज़ार इलाके में रोका जाएगा। इस मकसद के लिए ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज भेजी जाएगी। इस फ़ौज में घुड़ सवार और शुत्र सवार ज़्यादा होंगे। कोशिश की जाएगी कि अय्यूबी की फ़ौज को घेरे में ले लिया जाए। पानी के चश्मों पर पहले से कब्ज़ा कर लिया जाए।

इन इक़दामात पर फ़ौरी तौर पर अमल दरामद के अहकामात नाफ़िज़ कर दिए गये। हर कोई खुश था। यह पहला मौका था कि सुल्तान अय्यूबी का कोई राज़ क़ब्ल अज़ वक़्त मालूम हो गया था वर्ना उसने हमेशा सलीबियों को आड़े हाथों लिया था। इस पर हैरत का भी इज़हार किया गया कि सुल्तान अय्यूबी जैसे आदमी से यह लग़ज़िश सरज़द हुई कि उन जासूसों को

17/1

दूसरे कमरे में बैठाकर जिन्हें वह रिहा करने का फ़ैसला कर चुका था ऐसी नाजुक बातें बुलन्द आवाज़ से कीं जो उसे शिकस्ते फ़ाश से दोचार कर सकती थीं। उन्हों ने एक एहतमाम यह भी किया कि फ्रांस की फ़ौज जो वहां से बहुत दूर थी यह पैग़ाम भेज दिया कि फ़लां दिन से पहले पहले ऐसे मुक़ाम पर पहुंच जाए जहां नूरुद्दीन ज़ंगी की भेजी हुई कमक को रोका जा सके।

इतने में एक सलीबी अफ़सर अंदर आया और एन्टेलिजेंस के सरबराह के कान में कुछ कहा। उस सरबराह ने सबको बताया कि उन दो में से एक लड़की जो डाकुओं के घेरे में आ गई थी अभी अभी आई है। इत्तिला मिली है कि उसके साथ एक ज़ख़्मी मुसलमान मुहाफ़िज़ है। आलिम जासूस सबसे पहले कमरे से निकल गया। उसके पीछे दूसरे लोग भी बाहर चले गये। हुदेद को लड़की ने बरामदे में लिटा दिया था और खुद उसके पास बैठी थी। घोड़ों की इतनी लम्बी सवारी और तेज़ रफ़्तारी ने हुदेद के ज़ख़्म खोल दिए थे। उसका खून जो सुबह बन्द हो गया था फिर से बहने लगा था और उस पर ग़शी तारी हुई जारही थी। सलीबी कमान्डरों ने हुदेद की तरफ़ कोई तवज्जह नहीं दी क्योंकि उन्हें बताया गया था कि डाकुओं का हमला एक ढोंग था। उन्हों ने लड़की को हाथों हाथ लिया और उसे अंदर चलने को कहा। वह बड़ी क़ीमती लड़की थी लेकिन उसने उस वक़्त तक अंदर जाने का इरादा मुल्तवी कर दिया जब तक हुदेद की मरहम पट्टी नहीं हो जाती।

एन्टेलिजेंस का सरबराह हरमन नाम का जर्मन था। उसने लड़की को परे ले जाकर कहा— "किस सांप के बच्चे की तुम मरहम पट्टी कराना चाहती हो। यह तो तुम्हारी क़िस्मत अच्छी थी कि बच कर आ गई हो, वर्ना यह दरिंदे तुम्हें उन वहशियों के हवाले करना चाहते थे जो डाकू बन कर आए थे।"

"यह झूठ है।" लड़की ने झंझला कर कहा—"पहले हमें भी यही शक था लेकिन इस शख़्स ने मेरे सारे शुकूक रफ़ा कर दिए हैं। इसने दो डाकुओं को हलाक करके मुझे बचाया है।" उसने हरमन को सारा वाक़िया सुना दिया और यह भी बताया कि यह शख़्स उसे बार बार कहता था कि मुझे यहीं मरने दो और तुम चली जाओ।"

सलीबियों के दिलों में मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत इतनी गहरी उतरी हुई थी कि इतने ज़्यादा अफ़सरों में से किसी एक ने भी नहीं कहा कि इस ज़ख़्मी की मरहम पट्टी करो। आलिम जासूस तक ने इसकी तरफ़ तवज्जो नहीं दी। लड़की उनके साथ अंदर नहीं जा रही थी आख़िर किसी ने कहा कि ज़ख़्मी को कमरे में ले चलो और फ़ौरन मरहम पट्टी करो। उसे उठवा कर ले गये और लड़की अपने अफ़सरों के साथ चली गई। उसे कहा गया कि वह बयान करे कि किस तरह ज़िन्दा बची है। उसने पूरी तफ़सील से सुना दिया। इस दौरान उसके लिए वहीं खाना और शराब आ गई उसने कहा— "अगर ज़ख़्मी को खाना खिलाया जा चुका है तो मैं खाऊंगी, मैं ज़रा उसे देख आऊं।" वह जाने के लिए उठी।

"ठहरो लोज़ीना।" हरमन ने उसे बड़े रोब से कहा— "तुम दूसरी बार सलीब की फ़ौज के अहकामात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर रही हो। पहले तुम्हें अन्दर चलने को कहा गया तो तुमने यह कह कर इन्कार कर दिया कि पहले ज़ख़्मी को उठाओ। अब तुम बिना इजाज़त और बदतमीज़ी

से बाहर जा रही हो। यह सब सलीबी फ़ौज के आला हुक्काम हैं और यहां दो सलीबी हुक्मरान भी बैठे हैं। जानती हो इस हुक्म अदूली और बदतमीज़ी की सज़ा क्या है? दस साल सज़ाए कैद, और जब तुम यह हुक्म अदूली दुश्मन के मामूली से ओहदे दार की ख़ातिर कर रही हो, तो तुम्हें सज़ाए मौत भी दी जा सकती है।"

"क्या सलीबी हुक्मरान और कमाण्डर उस इंसान को उस का सिला नहीं देंगे कि उस ने उनकी तर्जुबेकार जासूसा की जान अपनी जान ख़तरे में डाल कर बचाई है? "लड़की ने कहा– "मैं जानती हूं कि वह मेरे दुश्मन की फ़ौज का ओहदेदार है लेकिन मैं उसे दुश्मन उस वक़्त कहूंगी जब वह अपनी फ़ौज में वापस चला जाएगा।"

"दुश्मन हर हाल में और हर जगह दुश्मन है।" एक सलीबी कमाण्डर ने कहा– "फ़िलिस्तीन में हमने कितने मुसलमानों को ज़िन्दा रहने दिया है? उनकी नस्ल हम क्यों ख़त्म कर रहे हैं? इसलिए कि वह हमारे दुश्मन हैं बल्कि इसलिए कि वह हमारे मज़हब के दुश्मन हैं। दुनिया पर सिर्फ़ सलीब की हुक्मरानी होगी। एक ज़ख़्मी मुसलमान हमारे लिए कोई हैसियत नहीं रखता। बैठ जाओ।"

लड़की बैठ गई। उसकी आंखों में आंसू आ गये।

❖

अगली सुबह से शूबक में एक नई सरगर्मी शुरू हो गई। यह फ़ौजी नौइय्यत की सरगर्मी थी, शूबक शहर के लोग इस सरगर्मी से बेनियाज़ अपने काम काज में मसरूफ़ होते जा रहे थे। किले से फ़ौजें निकल रहीं थीं, सामान भी इधर उधर किया जा रहा था। बाहर से आने वाली आरज़ी ख़ेमे गाह के लिए जगह ख़ाली की जा रही थी। रसद इकट्ठे करने के लिए ऊंटों की कतारें आ रही थीं। फ़ौजी हेड क्वार्टर में भी भाग दौड़ थी। यह सारी तैय्यारी सलाहुद्दीन अय्यूबी का हमला रोकने के लिए की जा रही थी और उन एहकामात पर अमल दरामद शुरू हो गया था जो गुज़िश्ता रात के प्लान के मुताबिक़ दिए गये थे। हर एक अफ़सर इस अफ़रा तफ़री में मसरूफ़ था। चन्द एक बड़े अफ़सर कर्क रवाना हो गये थे।

सिर्फ़ एक लड़की थी जो इस सरगर्मी और भाग दौड़ से लाताल्लुक़ थी। यह वही लड़की थी जो ज़ख़्मी हुदेद को लाई थी। उसके अफ़सर हरमन ने उसे लोज़ीना के नाम से पुकारा था। रात उसे कॉन्फ्रेन्स के कमरे से आधी रात के बाद फ़रागत मिली थी। वह जासूसी के ख़ुसूसी शोबे से ताल्लुक़ रखती थी इस लिए काफन्फ्रेन्स में उसकी ज़रूरत थी। उससे काहिरा के उन अफ़राद के मुताल्लिक़ रिपोर्टें लेनी थीं जिन के पास वह जाती रही थी। आधी रात के बाद नींद और घुड़ सवारी की थकन ने उसे निढाल कर दिया था। कॉन्फ्रेन्स के बाद एक अफ़सर ने उससे कहा था– "उसे डाक्टर के हवाले कर दिया गया है, तुम्हें उसकी इतनी ज़्यादा परेशानी नहीं होनी चाहिए, तुम्हारी डयूटी ऐसी है जिसमें ऐसे जज़्बात कामयाब नहीं होने दिया करते।" और उसके अपने शोबे के बड़े अफ़सर हरमन ने उससे कहा था– "अगर आज रात मैं न होता तो कोनारड और गैऑफ लोज़ीन जैसे बादशाह जो किसी को बख़्शा नहीं करते तुम्हें कैद में डाल देते। तुम्हारे मुहाफ़िज़ का इन्तेज़ाम कर दिया गया है और

तुम्हारे लिए यह हुक्म है कि उसे तुम नहीं मिलोगी।"

"क्यों?" लोज़ीना ने हैरत और मायूसी से पूछा– "क्या मैं उसका शुक्रिया भी अदा न कर सकूंगी?"

"नहीं;; हरमन ने कहा– "क्यों कि वह दुश्मन का फौजी है। तुम अपना शोबा जानती हो, क्या है। हम तुम्हें उससे मिलने की इजाज़त नहीं दे सकते। यह तो तुम्हारी फ़न और फ़र्ज़ का तकाज़ा है। मैं यह भी देख रहा हूं कि उसके साथ तुम्हारी जज़्बाती वाबस्तगी हो गई है। तुम्हें दुश्मन के साथ ऐसी वाबस्तगी की इजाज़त नहीं दी जा सकती।"

"आप मुझे सिर्फ़ इतना सा यक़ीन दिला दें कि उसकी मरहम पट्टी हो गई है।" लोज़ीना ने कहा– "और उसे सही सलामत वापस भेज दिया जाएगा।"

"लोज़ीना।" हरमन ने झुंझला कर कहा– "मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूं कि तुम्हारी यह ख़्वाहिश पूरी कर दी जाएगी और सुनो तुम बड़े मुश्किल और ख़तरनाक मिशन से वापस आई हो और तुम्हारा सफ़र ज़्यादा ख़तरनाक था। तुम्हें आराम के लिए दस दिन की छुट्टी दी जाती है। मुकम्मल आराम क़रो।"

यह बातें रात को हुई थीं। वह अपने कमरे में चली गई जासूस लड़कियों की रिहाइश हाई कमाम के हैडक्वार्टर से बहुत दूर थी। उस जैसेआला दर्जे की जासूस लड़कियां निहायत अच्छे कमरों में रहती थीं। जहां उन्हें शहज़ादियों जैसी सहूलतें और अय्याशी मयस्सर थीं। उनकी डियूटी ऐसी थी कि उन्हें मुसलमान मुल्कों में भेजा जाता था जहां पकड़े जाने की सूरत में उन्हें हर किस्म की अज़ियत और ज़िल्लत में डाला जा सकता था। मौत या सज़ाए मौत तो यक़ीनी थी। ऐसी डियूटी का तक़ाज़ा था कि उन लड़कियों को दुनिया की हर आसाइश मोहैया की जाए। लोज़ीना कमरे में जाते ही सो गई दूसरे दिन उसका जिस्म टूट रहा था, वह उठना नहीं चाहती थी लेकिन वह उठी और नाश्ता करके बाहर निकली। उसके साथ वाले कमरों की लड़कियां आ गई। वह उससे क़ाहिरा की बातें सुनना चाहती थीं। उसने बहुत ही मुख़्तसर सी बात सुना कर उन्हें टाल दिया और हस्पताल की तरफ़ चल पड़ी।

❖

वह थोड़ी दूर गई थी कि उसकी एक साथी लड़की जो उसकी हमराज़ थी पीछे से जा मिली और पूछा– "लोज़ीना कहां जा रही हो? और तुम परेशान हो यह थकन का असर है या कोई ख़ास वाक़िया हो गया है? तुम्हें छुट्टी नहीं मिली?" छुट्टी मिल गई है उसने जवाब दिया– " एक ख़ास वाक़िया हो गया है जिसने मुझे परेशान कर दिया है।" वह सहेली को साथ लिए एक दरख़्त के नीचे जा बैठी और उसे तमाम वाक़िया सुना दिया, इसे अपने अफ़सरों ने जो धमकियां दी थीं वह भी सुनाई और उसने कहा– "मैं हुदेद से मिलना चाहती हूं, मुझे डर है कि उसकी मरहम पट्टी नहीं हुई और उसे शहर से निकाल दिया गया है या उसे मरने के लिए किसी कोठरी में बन्द कर दिया गया है।"

"तुम ने बताया है कि तुम्हें उससे मिलने से मना कर दिया गया है, सहेली ने उसे मश्वरा दिया वह ख़तरा मोल न लो, तुम अगर पकड़ी गई तो जानती हो सज़ा क्या है?"

"इस शख़्स के लिए मैं सज़ाए मौत भी कबूल कर लूंगी।" लोज़ीना ने कहा– "मैं तुम्हें सुना चुकी हूं कि उसने मेरी ख़ातिर अपनी जान ख़तरे में डाली है, मेरी जान को तो कोई ख़तरा न था, डाकू मुझे ले भी जाते तो चन्द दिन मुझे ख़राब करके किसी अमीर कबीर आदमी के हाथ फ़रोख़्त कर देते। हुदेद मेरे इस अंजाम से आगाह था, उसने मेरी इज़्ज़त की ख़ातिर अपनी जान की बाज़ी लगा दी थी। डाकुओं ने कहा भी था कि लड़कियां हमें दे दो और चले जाओ, वह यह भी जानता था कि मैं पाकीज़ा लड़की नहीं मगर उसने मुझे अमानत समझा।"

"तुम उसके लिए जज़्बाती हो गई हो?"

"हां" लोज़ीना ने जवाब दिया– "मैं जज़्बात का इज़हार हरमन के आगे नहीं कर सकती थी, अपना दिल तुम्हारे आगे रख सकती हूं, तुम मेरी सहेली हो और औरत का दिल रखती हो। हमारी ज़िन्दगी क्या है? हम एक खूबसूरत ख़न्जर और मीठा ज़हर हैं हमारे जिस्म मर्द की तफ़रीह और फ़रेब के लिए इस्तेमाल होते हैं। मैंने यह बातें कभी नही सोंची थीं, अपने वजूद को जज़्बात से ख़ाली समझा था मगर उस आदमी के जिस्म को मैंने अपने जिस्म के साथ लगाया तो मेरे वजूद में वह सारे जज़्बात पैदा हो गये जो मैं समझती थी मुझ में नहीं हैं। मैं एक ही बार मां, बहन, बेटी और किसी को चाहने वाली लड़की बन गई। यह शायद इसका असर था कि मैं अपने आप को बादशाहों के दिलों पर हुक्मरानी करने वाली शहज़ादी समझती थी।

"मुझमें इतनी तख़रीब कारी डाली गई है कि जाबिर हुक्मरानों को भी उंगलियों पर नचा सकती हूं। मगर डाकुओं ने मुझे बिकने वाली चीज़ बना दिया, मुझे उस सतह पर ले आए जहां मुझ जैसी लड़कियां हर रात नए ग्राहक के हाथ फ़रोख़्त होती हैं या किसी मुसलमान अमीर या हाकिम के हाथ फ़रोख़्त होकर उसके हरम की लौंडी बन जाती हैं। उस आदमी ने जिसका नाम हुदेद है मुझे इस सतह से ऊपर उठा लिया, उससे पहले मैं उसकी कैदी थी उसने मुझे इस क़ाबिल नहीं समझा कि मुझे तफ़रीह का ज़रिया बनाता। वह ऐसा कर सकता था। उसने मुझे नज़र अंदाज़ कर दिया फिर जब उसने मेरी इज़्ज़त को बचाने के लिए अपना जिस्म कटवा लिया तो मैंने बेक़ाबू होकर उसे अपने सीने से लगा लिया और इस सतह की लड़की बन गई जिससे मुझे गिरा दिया गया है। मुझे सलाहुद्दीन अय्यूबी की बात याद आई उसने मुझे कहा था कि तुम किसी बा–इज़्ज़त आदमी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मैं ने दिल में कहा था यह मुसलमान अहमक़ हैं मैं अब महसूस कर रही हूं कि हमारे दुश्मन ने कितनी अज़ीम बात कही थी, मैं तुम्हें साफ़ बता देती हूं कि मैं अब जासूसी नहीं कर सकूंगी। मेरे दिमाग़ में बचपन से जो सबक़ डाले गए थे वह सेहरा की ख़ौफ़नाक रात ने, डाकुओं के ख़तरे ने और हुदेद के जिस्म की हरारत और उसके खून की बू ने ज़ाएल कर दिए। तुम इतनी लम्बी बात न करतीं तो भी मैं जान गई थी कि तुम क्या महसूस कर रही हो। उसकी सहेली ने कहा– "लेकिन मैं हक़ीक़त से आगाह करना ज़रूरी समझती हूं उसे चले जाना है। तुम उसके साथ नहीं जा सकोगी। वह अगर यहां फिलिस्तीन में है तो हुक्म है कि तुम उस से नहीं मिल सकती अगर पकड़ी गई तो अपने साथ उसे भी मरवाओगी।"

"तो तुम मेरी मदद करो।" लोज़ीना ने मिन्नत की, यह मालूम करो कि वह कहां है, मुझे

सिर्फ़ यह मालूम हो जाए कि वह ठीक हो गया है और तन्दरुस्ती की हालत में चला गया है तो मेरे दिल को चैन आजाए गा।"

"हां।" सहेली ने कहा– "मैं यह काम कर सकती हूं तुम कमरे में चली जाओ।"

वह कमरे में चली गई और उसकी सहेली किसी और तरफ़ निकल गई।

❖

क़ाहिरा में फ़ौजों में बहुत सरगर्मी थी, फ़ौज को जंगी मश्कें कराई जा रही थीं। चन्द एक दस्ते अलग कर लिए गये थे, उन्हें शबख़ून मारने, थोड़ी तादाद में दुश्मन की कई गुना ज़्यादा नफ़री पर हमला करने और ज़र्ब लगाओ और भागो की मश्कें इस तरह कराई जा रही थीं कि रात को भी दस्तें छावनी से बाहर रहते थे। सुल्तान अय्यूबी ज़ाती तौर पर यह मश्कें देखता था, वह तीसरे चौथे रोज़ आला कमाण्डरों और दस्तों के कमाण्डरों तक को लेकचर देता और उन्हें नक़्शों और ख़ाकों की मदद से जंगी चालें सिखाता था। उसने इस ट्रेनिंग का बुनियादी उसूल यह रखा था।

"कम तादाद से दुश्मन का ज़्यादा नुकसान करना, हथियार से ज़्यादा अक़्ल को इस्तेमाल करना, आमने सामने के मारके से गुरेज़, सामने से हमला न करना, दस बारह आदमियों के शबख़ून से इतना नुकसान करना जितना एक सौ आदमी दिन के वक़्त दू–ब–दू मारके में कर सकते हैं।"

इसके अलावा वह दुश्मन के किसी क़िले या शहर को लम्बे मुहासरे में रखने के तरीक़े बताता और क़िला की दीवारों में नक़ब लगाने के सबक़ देता था। कमज़ोर या उमर रसीदा जानवरों को उसने अलग कर दिया था। हमले की तारीख़ तय हो चुकी थी। सुल्तान अय्यूबी ने फ़िलिस्तीन के फ़तह का जो मंसूबा बनाया था उसके पहले मरहले में कामयाबी से दाख़िल होने की तैय्यारी ज़ोर शोर से कर रहा था। उधर से रास्ते में रोकने के एहतमाम हो रहे थे।

दोनों फ़ौजों की तैयारियां ऐसी थीं कि जैसे एक दूसरे को हमेशा के लिए ख़त्म कर देंगी। सलीबियों की तैयारियों का दायरा शूबक से कर्क तक और मिस्र की सरहदों तक था। वह इस वसीअ दायरे को सुल्तान अय्यूबी के लिए ऐसा फ़न्दा बना रहे थे जिसमें से उसके लिए सारी उम्र निकलने का कोई इम्कान नज़र नहीं आता था। उनकी तैयारियां सुल्तान अय्यूबी के उस मंसूबे की रौशनी में हो रही थीं जो उन तक क़ब्ल अज़ वक़्त पहुंच गया था।

इन वसीअ तैयारियों के अंदर शूबक में एक सरगर्मी और भी थी जिसका ताल्लुक़ जंग से नहीं जज़्बात से था और यह एक ख़ुफ़िया सरगर्मी थी। लोज़ीना अपने कमरे में पड़ी हुदेद के लिए बे–क़रार हो रही थी और इसकी सहेली दो रोज़ से हुदेद को ढूंड रही थी। वह अफ़सरों के हस्पताल में भी नहीं था और वह सिपाहियों के हस्पताल में भी नहीं था। वह जासूस लड़की थी बड़े बड़े अफ़सर भी इसकी इज्ज़त करते थे। लोज़ीना को और हर जासूस लड़की को वहां यही अहमियत हासिल थी। इसके बावजूद यह सहेली जिससे भी पूछती कि लोज़ीना के साथ जो ज़ख़्मी मुसलमान आया था वह कहां है तो उसे यही एक जवाब मिलता मैं ने तो उसे नहीं देखा। तीसरे दिन एक अफ़सर ने इसे राज़दारी से बताया कि उसकी मरहम पट्टी कर दी गई

थी और उसे मुसलमानों के कैम्प में भेज दिया गया है।

सहेली ने जब यह ख़बर लोज़ीना को सुनाई तो उस पर सकता तारी हो गया– "मुसलमानों का कैम्प" एक ख़ौफ़नाक जगह थी। उसमें पहली जंगों के मुसलमान कैदी भी थे और वह मुसलमान भी जिन्हें किसी जुर्म के बग़ैर सलीबियों ने अपने मक़बूज़ा इलाकों से पकड़ा था। यह मुसलमान ज़्यादा तर उन काफ़िलों में से पकड़े जाते थे जिन्हें सलीबी लूटते थे। यह कैम्प क़ैद ख़ाना नहीं था, न यह जंगी क़ैदी कैम्प कहलाता था। यह एक बेगार कैम्प था, जिस पर कोई ऐसा कड़ा पहरा न था जैसा क़ैद खानों में होता है। इन बदनसीब क़ैदियों का बाक़ायदा कोई रिकार्ड भी न था। यह लोग मवेशी बना दिए गये थे। जहां ज़रूरत होती इनमें से बहुत से आदमी हांक कर ले जाए जाते और उनसे काम लिया जाता था। उन्हें खुराक सिर्फ़ इतनी सी दी जाती जिससे वह ज़िन्दा रह सकते थे। वह ख़ेमों में रहते थे, उनमें जो बीमार पड़ जाता उसका इलाज इस सूरत में किया जाता था कि बीमारी मामूली हो अगर बीमारी फ़ौरन ज़ोर पकड़ ले तो उसे ज़हर देकर मार दिया जाता था। यह बदनसीब मुसलमानों का एक गिरोह था जो सिर्फ़ इस जुर्म की सज़ा भुगत रहे थे कि वह मुसलमान हैं। सुल्तान अय्यूबी को उसके जासूसों ने इस बेगार कैम्प के मुताल्लिक ख़बरें दे रखी थीं।

हुदेद को भी कैम्प में भेज दिया गया था। लोज़ीना के लिए हुक्म था कि उससे न मिले। हरमन को शक हो गया था कि यह एक जज़्बाती वाबस्तगी है, लेकिन लोज़ीना ने इस हुक्म को क़ुबूल नहीं किया था। उसने जब सुना कि हुदेद "मुसलमानों के कैम्प" में है तो उसने सहेली से कहा कि वह उसे आजाद कराएगी। सहेली ने उसकी जज़्बाती हालत देख कर मदद का वादा किया और दोनों ने प्लान बना लिया।

वह उसी वक़्त शहर में गई और एक प्राइवेट डाक्टर से मिली। उससे कहा कि वह एक ज़ख़्मी को ला रही है जिस का इलाज उसे इस शर्त पर करना पड़ेगा कि वह उसके मुताल्लिक किसी को कुछ न बताए। डाक्टर ने इस राज़दारी की वजह पूछी तो लोज़ीना ने कहा– "वह एक ग़रीब सा मुसलमान है जिसने मेरे ख़ानदान की बहुत ख़िदमत की है। वह कहीं लड़ाई झगड़े में ज़ख़्मी हो गया है। उसके पल्ले कुछ भी नहीं इस लिए कोई डाक्टर उसका इलाज नहीं करता। चूंकि यहां तमाम डाक्टर ईसाई हैं इस लिए वह किसी मुसलमान का इलाज बिना उजरत नहीं करते। राज़दारी की दूसरी वजह यह है कि अगर शहर के मुन्तज़िम तक यह ख़बर पहुंच गई कि इन मुसलमानों में लड़ाई झगड़ा हुआ है तो वह इसी को बहाना बनाकर उन्हें मुसलमानों के कैम्प में भेज देगा। उन्हें तो बहाना चाहिए। मैं इस आदमी को उस ख़िदमत और ईसार का सिला देना चाहती हूं जो इसने मेरे ख़ानदान के लिए किया है मैं इसे रात के वक़्त लाऊंगी। बताइए आप कितनी उजरत लेंगे, मैं राज़दारी की भी उजरत दूंगी।"

इस दौराना डाक्टर उसे सर से पांव तक देखता रहा। लोज़ीना ने उसे यह नहीं बताया था कि वह कौन है। यही बताया था कि वह एक मौज़्ज़िज़ घराने की लड़की है। लड़की का ग़ैर मामूली हुस्न देख कर डाक्टर जो उजरत लेनाचाहता था, उसे वह ज़बान पर नहीं ला रहा था। लोज़ीना इस मैदान और इस फ़न की माहिर थी, वह मर्दों की नज़रें पहचानती थी, उसने

अपने फ़न को इस्तेमाल किया तो डाक्टर मोम होगया। लोज़ीना ने सोने के चार सिक्के उसके आगे रख दिए और जब डाक्टर ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि तुम से ज़्यादा क़ीमती कोई सिक्का नहीं तो लोज़ीना ने मख़सूस मुस्कुराहट से कहा– "आप जो क़ीमत मांगेगें दूंगी। मेरा काम कर दें।"

डाक्टर यह तो समझ गया कि मामला ख़तरनाक और पुर असरार मालूम होता है लेकिन लोज़ीना को देख कर उसने ख़तरा क़ुबूल कर लिया और कहा– "ले आओ– आज रात, कल रात, जब चाहो ले आओ अगर मैं सोया हुआ मिलूं तो जगा लेना।" उसने एक हाथ में सोने के सिक्के और दूसरे हाथ में लोज़ीना का हाथ पकड़ लिया।

❖

इस मुहिम का सबसे ज़्यादा नाज़ुक और पुर ख़तर मसला तो यह था कि हुदेद को कैम्प से निकाला किस तरह जाए। रात को वहां पहरा बराए नाम होता था। इन बदनसीब क़ैदियों में भागने की सकत ही नहीं थी। सुबह सूरज निकलने से पहले उन्हें मुशक़्क़त पर लगाया जाता और सूरज ग़ुरूब होने के बाद कैम्प में लाया जाता। उनकी तादाद डेढ़ हज़ार के लग भग थी। लोज़ीना की सहेली ने कैम्प के मुताल्लिक़ कुछ मालूमात हासिल कर लीं जिन में एक यह भी थी कि ज़ख़्मी और बीमार क़ैदियों को मामूली सी एक डिस्पेंसरी में हर रोज़ भेजा जाता है। उनके साथ सिर्फ़ एक पहरेदार होता है। दूसरे दिन लोज़ीना अपनी सहेली के साथ वहां पहुंच गई जहां मरीज़ क़ैदियों को ले जाया जाता था। उसे ज़्यादा इन्तेज़ार न करना पड़ा। पच्चीस तीस मरीज़ों की एक पार्टी निहायात आहिस्ता आहिस्ता चलती आ रही थी और पहरेदार हाथ मेंलाठी लिए उन्हें मवेशियों की तरह हांकता ला रहा था। जो तेज़ नहीं चल सकते थे उन्हें वह लाठी से धकेल धकेल कर ला रहा था।

दोनों लड़कियां आगे चली गईं। उनका अंदाज़ ऐसा था जैसे तमाशा देख रही हों। जब मरीज़ों का टोला उनके क़रीब से गुज़र रहा था तो वह हर एक को देखने लगीं। अचानक लोज़ीना को धचका लगा, हुदेद उसे क़हर भरी नज़रों से देख रहा था। उससे अच्छी तरह चला नहीं जाता था। उसके चेहरे से वह रौनक और रमक़ बुझ गई थी जो लोज़ीना ने ज़ख़्मी होने से पहले देखी थी। हुदेद के कंधे झुक गये थे, उसके कपड़े ख़ून से लाल थे,ख़ून ख़ुश्क हो चुका था। लोज़ीना की आंखों में आंसू आ गये मगर हुदेद की आंखों में नफ़रत थी।उसने मुंह फेर लिया। यह मरीज़ों का टोला आगे निकल गया तो लोज़ीना और उसकी सहेली पहरेदार के साथ ऐसी बातें करने लगीं जिन में उन मुसलमान मरीज़ों के ख़िलाफ़ नफ़रत थी। उन्हों ने ज़बान के जादू से पहरेदार को अपना गरवीदा कर लिया और कहा कि वह अज़राहे मज़ाक़ इन क़ैदियों के साथ बातें करना चाहती हैं।

डिस्पेंसिरी में दूसरे मरीज़ भी थे। ख़ासा हुजूम था, क़ैदियों को एक तरफ़ बैठा दिया गया। लोज़ीना उनके क़रीब चली गई और उसकी सहेली ने पहरेदार को बातों में उलझा लिया। हुदेद दीवार के साथ बैठ गया था। उसकी हालत अच्छी नहीं थी। लोज़ीना ने आंख के इशारे से उसे परे बुलाया। वह जब उसके क़रीब गया तो लोज़ीना ने आहिस्ता से उससे

कहा– "मुझे हुक्म मिला है कि तुम से कभी न मिलूं, बैठ जाओ, हम यह ज़ाहिर नहीं होने देंगे कि हम बातें कर रहे हैं।"

"मैं लानत भेजता हूं तुम पर और तुम्हारे हुक्म देने वालों पर।" हुदेद ने नहीफ़ मगर गज़बनाक आवाज़ में कहा– "मैंने तुम्हें किसी सिले के लालच में डाकुओं से नहीं बचाया था। वह मेरा फ़र्ज़ था। क्या तुम फ़र्ज़ अदा करने वालों के साथ यह सलूक करते हो?"

"चुप रहो हुदेद।" लोज़ीना ने रुंधयाई हुई आवाज़ में कहा– "यह बातें बाद में होंगी। मुझे बताओ रात तुम किस जगह होते हो। आज रात तुम्हें वहां से निकालना है।"

हुदेद उससे बात भी नहीं करना चाहता था। लोज़ीना ने उसे आसूंओं से और बड़ी मुश्किल से यकीन दिलाया कि वह उसे धोखा नहीं दे रही। हुदेद ने बताया कि वह रात को जहां सोता है वहां से निकलना मुश्किल नहीं लेकिन निकल कर वह जाएगा कहां? उन्हों ने जल्दी जल्दी में फरार का मंसूबा बना लिया।

❖

"मुसलमानों का कैम्प" ऐसी नींद सोया हुआ था जैसे यह लाशों की बस्ती हो। पहरेदार भी सो गये थे। यहां से कभी कोई भागा नहीं था, भाग कर कोई जाता भी कहां। इसके इलावा पहरे दारों को यह भी मालूम था कि कोई एक आध भाग भी गया तो कौ . जवाब तल्बी करेगा। रात का पहला पहर ख़त्म हो रहा था कि फटे पुराने एक ख़ेमे से एक आदमी पेट के बल रेंगता हुआ ख़ेमों की ओट में वहां तक चला गया जहां उसे कोई पहरेदार नहीं देख सकता था। आगे उसे अंधेरे में भी खजूर का दरख़्त नज़र आने लगा जहां तक उसे पहुंचाना था। एक साया सर से पांव तक मोटे कपड़े में लिपटा हुआ खड़ा था। रेंगने वाला उठ खड़ा हुआ और खजूर के तने तक पहुंच गया। वह हुदेद था, लोज़ीना उसकी मुन्तज़िर थी।

"तेज़ चल सकोगे?" लोज़ीना ने पूछा।

"कोशिश करूंगा।" हुदेद ने जवाब दिया।

वह कैम्प से दूर निकल गये। आगे वसीअ इलाक़ा था। मुश्किल यह थी कि हुदेद तेज़ नहीं चल सकता था। लोज़ीना ने सहारा देकर तेज़ चलाने की कोशिश की और उसे बताती गई कि उसे कैसे हुक्म और धम्कियां मिली हैं। उसने हुदेद की ग़लत फ़हमी दूर कर दी। आगे शहर की गलियां आ गईं और फिर डाक्टर का घर आगया। तीन चार दस्तक देने से डाक्टर बाहर आया और उन्हें फ़ौरन अंदर ले गया। उसने हुदेदके ज़ख़्म खोल कर देखे तो कहा कि कम से कम बीस रोज़ मरहम पट्टी होगी। यह सुनकर लोज़ीना के सामने एक बहुत ही पेचीदा मसला आ गया। वह यह था कि इतने दिन वह हुदेद को छुपाएगी कहां? उसे बेगार कैम्प में वापस तो नहीं लेजाना था। उसकी अक़्ल जवाब दे गइ। डाक्टर मरहम पट्टी कर चुका तो उसने कहा कि इसे निहायात अच्छी और मुक़व्वी ग़िज़ा की ज़रूरत है।

लोज़ीना उसे परे ले गई और कहा– "यह जहां रहता है वहां इसे अच्छी ग़िज़ा नहीं मिल सकती। मैं घर में इसे अपने पास नहीं रख सकती। आप इसे यहीं रखें और जो चीज़ इसके लिए फ़ायदे मन्द हो वह खिलाए। मुझ से आप जितनी क़ीमत और उजरत मांगेगे दूंगी।"

डाक्टर ने जो उजरत बताई वह बहुत ही ज़्यादा थी। लोज़ीना ने कम करने को कहा तो डाक्टर ने कहा– "तुम मुझ से बहुत ही ख़तरनाक काम करा रही हो। मैं जानता हूं कि यह शख़्स मुसलमानों के कैम्प से लाया गया है और यह मिस्री फ़ौज का सिपाही है। तुम्हारा इसके साथ क्या ताल्लुक है? मुझे मुंह मांगी उजरत दोगी तो तुम्हारा यह राज़ मेरे घर से बाहर नहीं जायेगा।"

"मुझे मंजूर है।" लोज़ीना ने कहा– "और यह भी सून लो डाक्टर! अगर यह राज़ फ़ाश हो गया तो आप ज़िन्दा नहीं रहेंगे।"

डाक्टर ने हुदेद को एक कमरे में लिटा दिया और उसे बताया कि वह ठीक होने तक यहीं रहेगा। उसने अंदर से उसे फल और दूध ला दिए और लोज़ीना को एक और कमरे में ले गया। दूसरे दिन लोज़ीना और उसकी सहेली ने कैम्प की जासूसी की। डिस्पेन्सिरी में गई। मरीज़ कैदी वहां ले जाए गए। दोनो लड़कियों ने पहरेदार के साथ गपशप लगाई और अपने खुसूसी ढंग से बातें करके मालूम कर लिया कि हुदेद की गुमशुदगी से कैम्प मे कोई तब्दीली नहीं आई और वहां कोई हलचल नहीं।

दिन गुज़रते गए। डाक्टर को क्यों कि मुंह मांगी कीमत और उजरत मिल रही थी इसलिए उसने हुदेद को छुपाए भी रखा और उसका इलाज पूरी तवज्जोह से करता रहा। उसे मुक़व्वी ग़िज़ा भी देता रहा। लोज़ीना शाम के वक़्त वहां जाती,कुछ देर हुदेद के साथ बैठती और बहुत देर डाक्टर के कमरे में गुज़ारती। इस रोज़मर्रा के मामूल में बीस रोज़ गुज़र गए और हुदेद के ज़ख़्म मिल गए, उसकी सेहत भी बहाल हो गइ। लोज़ीना ने डाक्टर से कहा कि वह कल रात किसी भी वक़्त हुदेद को ले जाएगी।

दूसरे दिन उसने अपनी सहेली को इस्तेमाल किया। छोटे ओहदे का एक अफ़सर उस की सहेली के पीछे पड़ा रहता था। सहेली ने उस अफ़सर को झांसा दिया और लोज़ीना ने उसके ट्रंक से उसकी वर्दी निकाली जो उसने हुदेद को पहना दी। घोड़े का इन्तज़ाम मुश्किल न था। वह भी हो गया। यह एहतमाम इसलिए किया जा रहा था कि शहर के इर्द गिर्द मिट्टी की बहुत ऊंची दीवार थी उसके चार दरवाज़े थे जो रात को बंद रहते थे। उन दिनों दिन के वक़्त यह दरवाज़े खुले रखे जाते थे क्योंकि सुल्तान अय्यूबी के आने वाले हमले के लिए फ़ौजों और उनके सामान की आमद रफ़्त जारी रहती थी।

सूरज ग़ुरूब होने से कुछ देर पहले क़िले के बड़े दरवाज़े की तरफ़ एक सलीबी अफ़सर घोड़े पर जा रहा था। उसकी कमर से लटकी हुई तलवार मुसलमानों की तरह टेढ़ी नहीं सीधी थी और उसका दस्ता सलीब की शक्ल का था। वह हर लिहाज़ से सलीबी था। वह दरवाज़ा खुला हुआ था जिससे ऊंटों का एक कारवां रसद से लदा हुआ बाहर जा रहा था। ज़ाहिर यही हो रहा था कि जैसे यह घोड़ा सवार उस कारवां के साथ जा रहा हो। वह दरवाज़े के पास पहुंचा तो सलीबियों की एन्टलीजेन्स का सरबराह हरमन, घोड़े पर सवार दरवाज़े में दाख़िला हुआ। वह कहीं बाहर से आ रहा था। उसने उस अफ़सर को देखा और मुस्करा दिया मगर उस अफ़सर ने मुस्कुराहट का जवाब मुस्कुराहट से न दिया। हरमन चन्द क़दम अंदर को

आया तो उसने घोड़ा रोक लिया। उसे दो तीन सौ क़दम दूर लोज़ीना खड़ी नज़र आई जिसने हरमन को देखा तो वहां से तेज़ी से अपने ठिकाने की तरफ़ चली गई।

अली बिन सुफ़ियान की तरह हरमन भी माहिर जासूस और सुराग़ रसां था। उसने फ़ौरन घोड़ा दरवाज़े की तरफ़ घुमाया और एड़ लगा दी। वह अपना एक शक रफ़ा करना चाहता था। उसने घोड़े को एड़ें लगाई तो घोड़ा दौड़ पड़ा। बाहर जाकर हरमन ने देखा कि जो अफ़सर उस के पास से निकला था वह इतनी दूर निकल गया था कि उसके ताकुब में जाना बेकार था। उस घुड़ सवार ने दरवाज़े से निकलते ही घोड़े को एड़ लगा दी थी। घोड़ा बहुत तेज़ रफ़तार था। हरमन उसे देखता रहा और वह सेहरा की वुस्अत में गुम हो गया। लोज़ीना ने हुदेद को आज़ाद कराके सिला दे दिया था।

❖

हरमन ने घोड़ा मोड़ा और तेज़ी से अंदर गया। वह सबसे पहले मुसलमानों के कैम्प में गया और वहां के इंचार्ज से हुदेद की निशानियां बताकर पूछा कि वह कहां है। कुछ पता न चला जिस ख़ेमे में हुदेद को रखा गया था वहां के रहने वालों ने बताया कि एक सुबह वह यहां से ग़ायब था। वह समझे कि उसे इधर उधर कर दिया गया है। हरमन का शक यक़ीन में बदल गया। वह हुदेद ही था जिसे उसने सलीबी फ़ौज की वर्दी में दरवाज़े से निकलते देखा था। वह मज़ीद तफ़तीश से पहले लोज़ीना के कमरे में गया। वह सर हाथों में थामे रो रही थी।

"क्या उसे तुम ने भगाया है?" हरमन ने गरज कर कहा। लोज़ीना ने आहिस्ता से सर उठाया। हरमन ने कहा– "झूठ बोलोगी तो मैं तफ़तीश करके साबित करूंगा कि उसे तुम ने फ़रार में मदद दी है।"

"न आप को तफ़तीश की ज़रूरत है और न मुझे झूठ बोलने की ज़रूरत है।" लोज़ीना ने कहा– "मेरी ज़िन्दगी एक शाहाना झूठ और मेरा वजूद एक खूबसूरत धोखा है। अपनी रूह की निजात के लिए मैं सच बोल कर मर रही हूं।" उसकी आवाज़ में ग़ूनूदगी थी जो बढ़ती जा रही थी। वह उठी तो उसकी टांगें लड़खड़ाई, उसके क़रीब एक गिलास पड़ा था जिसमें चन्द क़तरे पानी था। उसने गिलास उठा कर हरमन की तरफ़ बढ़ा कर कहा– "मैंने अपने आप को सज़ाए मौत दे दी है। इस गिलास में पानी के चन्द क़तरे गवाही देंगे कि मैं ने अपने नापाक जिस्म को सज़ाए मौत इसलिए नहीं दी कि अपनी क़ौम से ग़द्दारी की और दुश्मन को क़ैद से भगा दियाहै बल्कि मेरा जुर्म यह था कि मैं उन इंसानों को धोखा देने गई थी जिनके यहां कोई धोखा व फ़रेब नहीं। उनमें से चार इंसानों ने मेरी वह इज़्ज़त बचाने के लिए जो मेरे पास थी ही नहीं, दस डाकुओं का मुक़ाबला किया। फिर एक इंसान ने अपना जिस्म कटवाकर मुझे डाकुओं से छीना। मुझे नेकी और बदी, मुहब्बत और नफ़रत का फ़र्क़ मालूम हो गया। मैं सच बोल कर मर रही हूं, यह पूर सुकून मौत है।"

वह गिरने लगी तो हरमन ने उसके हाथ से गिलास लेकर उसे थाम लिया। लोज़ीना ने अपने जिस्म को झटका दिया और हरमन के बाज़ुओं से निकल कर परे हो गई। ऊंघती हुई आवाज़ में बोली– "मेरे जिस्म को हाथ न लगाओ, यह अब तुम्हारे काम का नहीं रहा। इस

ज़हर ने इसमें सच दाख़िल कर दिया है। तुम्हें नापाक जिस्मों की ज़रूरत है। उसे मैंने भगा दिया है। उसे मैंने बीस रोज़ छुपाए रखा था। उसे मैंने फ़रनेन्डस की वर्दी चुरा कर पहनाई थी। उसे मैं ने घोड़ा दिया था, मैं उसके साथ नहीं जा सकती थी। मैं उसके बग़ैर रह भी नहीं सकती थी इसलिए मै ने ज़हर पी लिया अगर तुम मुझे पकड़ न लेते तो भी मैं ज़हर पी लेती।" वह पलंग पर लुढ़क गई, हरमन को उसकी आख़री सरगोशी सुनाई दी– "सच बोल कर मरने में कितना सुकून है।" उसने आख़री सांस इस तरह ली जैसे सुकून से आह भरी हो।

उसे जब दफ़न कर चुके तो एक अफ़सर ने पूछा– "इसका कोई ख़ानदान था तो उन्हें इसकी मौत की इत्तिला दे दो।"

"इसका ख़ानदान हम ही थे।" हरमन ने जवाब दिया– "इसे दस ग्यारह साल की उम्र में किसी क़ाफ़िले से इग़वा करके लाए थे।;;

सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज को कूच किए हुए तीसरा दिन था। सलीबियों ने उसे रास्ते में रोकने के लिए फ़ौज भेज दी थी। हमला क्यों कि कर्क पर आ रहा था इसलिए सलीबियों ने शूबक से ज़्यादा तर फ़ौज कर्क भेज दिया था ताकि नूरुद्दीन जंगी मदद के लिए आए तो उसे कर्क से कुछ दूर रोका जा सके और इस फौज का कुछ हिस्सा सुल्तान अय्यूबी को रास्ते में रोकने वाली फ़ौज को दिया गया था। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को तीन हिस्सों में तक़सीम करके कूच कराया था और तीनों को दूर दूर रखा था। जब वह उस मुक़ाम पर पहुंच गया जहां सलीबियों से टक्कर होनी चाहिए थी, उसने तीनों हिस्सों के कमाण्डरों और उनके मातेहत कमाण्डरों को अपने ख़ेमें मु बुलाया।

"हम उस मुक़ाम पर आ गये हैं जहां मुझे राज़ फ़ाश कर देना चाहिए।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा – "तुम शायद हैरान हो रहे होगे कि मैं तुम्हें यह बताता रहा हूं कि मैं कर्क पर हमला करूंगा मगर मैं तुम्हें किसी और तरफ़ ले आया हूं। मैं कर्क पर हमला नहीं कर रहा। हमारी मंज़िल शूबक है। एक सवाल तुम सबको परेशान कर रहा है कि मैंने उन तीन जासूसों को जिन में एक आलिम था और दो लड़कियां थीं, क्यों रिहा कर दिया था और उन्हें मुहाफ़िज़ क्यों दिए थे। इससवाल का जवाब सुन लो। मैं ने उन्हें अपने साथ वाले कमरें में बैठाकर दरम्यान का दरवाज़ा आधा खुला रखा और अली बिन सुफ़ियान और दो नायबीन को यह बताना शुरू कर दिया कि मैं फ़लां तारीख़ को कर्क पर हमला कर रहा हूं। मैं जानता था कि जासूस सुन रहे थे। मैं ने उनके कानों में यह भी डाला कि मैं सलीबियों से खुले मैंदान की जंग से डरता हूं।"

"इस क़िस्म की बातें उनके कानों में डाल कर उन्हें रिहा कर दिया और उन्हें मुहाफ़िज़ दिए ताकि वह सही सलामत शूबक पहुंच जाएं। मुझे इत्तिला मिली है कि रास्ते में एक हादसा हो गया है। डाकुओं ने तीन मुहाफ़िज़ों और एक लड़की को मार डाला है। चौथा मुहाफ़िज़ कल रात शूबक से वापस आ गया है। वहां हमारे जो जासूस हैं उन्हों ने इत्तिला दी है कि आलिम जासूस ज़िन्दा शूबक पहुंच गया था। जिसने मेरा धोखा क़ामयाब कर दिया है। सलीबियों ने अपनी फ़ौज मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ तक़सीम कर दी है। इस वक़्त तुम्हारी फ़ौज

का बाएं वाला हिस्सा सलीबियों की बहुत बड़ी फौज के बाएं पहलू से चार मील दूर है।"

उसने बाएं हिस्से के कमाण्डर से कहा– "आज सूरज गुरूब होने के बाद तुम अपने तमाम घुड़ सवार दस्ते सीधे आगे दो मील ले जाओगे। वहां से अपने बाएं को हो जाना। चार मील सीधा जाना फिर बाएं को जाना और दो मील पर दुश्मन तुम्हें आराम की हालत में मिले गा। हमला करना तुम जानते हो। यह तेज़ हल्ला होगा। रास्ते में जो कुछ आए उसे कुचलते हुए निकल आओ और अपनी उसी जगह पर आ जाओ जहां से चले थे। दूसरा हिस्सा शाम के बाद सीधा आगे बढ़े गा। आठ नौ मील जाकर बाएं को हो जाएगा। तुम्हें दुश्मन की रसद और काफ़िले मिलेंगे। इसके अलावा तुम दुश्मन के अक़ब में होगे। दिन के वक़्त दुश्मन बाएं वाले हिस्से के ताकुब में आएगा लेकिन तुम सामने की टक्कर नहीं लोगे। दिन को बहुत पीछे आ जाओगे। रात को फिर हमला करोगे और रुकोगे नहीं। सलीबी आगे बढ़ेंगे तो दरम्यान वाला हिस्सा अक़ब से हमला करेगा और दुश्मन के संभलने तक बिखर जाएगा। तीसरा हिस्सा जो मेरे साथ है आज रात कुच कर रहा है। हम कल दोपहर तक शूबक का मुहासरा कर चुके होंगे। बाकि दो हिस्से सलीबियों को उन तरीकों से जिनकी मैं तुम्हें मश्क कराता रहा हूं, दुशमन को सेहरा में परेशान किए रखेंगे। उस तक रसद नहीं पहुंचने देंगे। वह ज्यों ही पानी के चश्मों से हटेगा तुम चश्मों पर कब्ज़ा कर लोगे। हमला हमेशा पहलू पर करोगे और लड़ने के लिए रुकोगे नहीं। जांबाज़ दस्ते हर रात दुश्मन के मवेशियों पर आग फैंकेंगे।"

यह 1171 के आखरी दिन थे कर्क वालों को सुल्तान अय्यूबी के लिए इन्तेज़ार के बाद पता चला कि शूबक जैसा अहम किला सुल्तान अय्यूबी के मुहासरे में आगया है जब कि ज़्यादा तर फ़ौज कर्क में इकट्ठी कर ली गई है और सेहरा में भेज दी गई है। शूबक को वह कोई मदद नहीं दे सकते थे। सेहरा में जो फ़ौज गई थी, मुसलमान उस का बुरा हशर कर रहे थे। सलीबियों की परेशानी यह थी कि मुसलमान सामने आकर नहीं लड़ते थे। वह गोरीला और कमाण्डो तर्ज़ के हमलों से उनका नुकसान कर रहे थे। उन्हों ने रसद रोक ली थी। पानी पर मुसलमानों का कब्ज़ा होगया था। सलीबियों की यह फ़ौज न लड़ने के काबिल रही थी न पीछे हटकर शूबक को बचाने के लिए पहुंच सकती थी।

शूबक में सलीबियों ने किले और शहर की दीवारों से तीरों और बरछियों से बहुत मुकाबिला किया लेकिन सुल्तान अय्यूबी के नक़्ब ज़न दस्तों ने दीवारें तोड़ लीं। यह मुहासरा तक़रीबन डेढ़ महीने रहा। आख़िर सुल्तान अय्यूबी शूबक में दाख़िल हो गया। वह सबसे पहले बेगार कैम्प में गया, जहां के बदनसीब क़ैदियों ने ख़ुदा के आगे शुक्र के सजदे किए। सलीबियों की सेहरा वाली फ़ौज बे तरतीबी में पस्पा होककर कर्क के किले में चली गई जहां बहुत सी फ़ौज बेकार बैठी सलाहुद्दीन अय्यूबी का इन्तेज़ार कर रही थी।

❖❖

अयोना जब आईशा बनी

1172 ई0 का दूसरा महीना गुज़र रहा था। शूबक का किला तो सर हो चुका था लेकिन शहर में अभी बद नज़्मी और अफ़रा तफ़री थी। ईसाई अपने कुन्बों समीत वहां से भागने की कोशिश कर रहे थे, कुछ भाग भी गए थे। उन्हें डर यह महसूस हो रहा था कि जिस तरह उन्हों ने शूबक के मुसलमान बाशिंदों पर जुल्म व तशद्दुद कर रखा था उसी तरह अब मुसलमान उनका जीना हराम कर देंगे। इस मक़ामी कारररवाई से वह इतने खौफ़ज़दा हूए कि उन्हों ने जब अपनी फ़ौज को किले से भागते, सुल्तान अय्यूबी के तीरअंदाज़ों के तीरों से मरते और हथियार डालते देखा तो बाल बच्चों को लेकर घरों से निकलने लगे। मुसलमान सिपाहियों ने उन्हें जाने नहीं दिया था। सालारों और कमाण्डरों ने अपने तौर पर हुक्म दे दिया था कि शहर से किसी शहरी को कहीं जाने न दिया जाए। चुनांचे सिपाही भागने वाले ईसाईयों को रेगिस्तान के दूर दराज़ रास्तों, गोशों और टीलों के इलाक़ों से रोक रोक कर वापस भेज रहे थे।

यह लोग दरअसल अपने और अपने हुक्मरानों के गुनाहों की सज़ा से भाग रहे थे। उन्हों ने यहां के मुसलमानों को कीड़े मकोड़े बना रखा था। "मुसलमानों का कैम्प" इस का मुंह बोलता सबूत था। सुल्तान अय्यूबी को इस कैम्प का इल्म था। वह शूबक में दाख़िल होते ही कैम्प पहुंचा था। एक अंदाज़े के मुताबिक़ वहां दो हज़ार के क़रीब मुसलमान क़ैद थे। यह दो हज़ार लाशें थीं। इनसे मवेशियों की तरह काम लिया जाता था। इन से ग़िलाज़त तक उठवाई जाती थी। इनमें बहुत से ऐसे भी थे जो यहां जवानी में लाए गए थे और बूढ़े हो चले थे। वह भूल गए थे कि वह इंसान हैं। इनमें पहली लड़ाईयों के जंगी क़ैदी भी थे और इनमें उन बदनसीब की तादाद ज़्यादा थी जिन्हें सलीबियों ने क़ाफ़िलों से और शहर से पकड़ कर कैम्प में डाला था। यह अमीर कबीर ताज़िर थे या खूबसूरत लड़कियों के बाप थे। इन से दौलत, माल और लड़कियां छीन ली गई थीं। इनमें शहर के वह मुसलमान भी थे जिन के ख़िलाफ़ यह इल्ज़ाम था कि वह सल्तनते इस्लामिया के वफ़ादार और सलीब के दुश्मन हैं। शहर में जो मुसलमान रहते थे वह नमाज़ और क़ुरआन घरों में छुप छुप कर पढ़ते थे, वह भी इसतरह कि आवाज़ बाहर न जाए। वह मामूली हैसियत के ईसाईयों को भी झुक कर सलाम करते थे। अपनी जवान बेटियों को तो वह पर्दे में रखते ही थे, अपनी मासूम बच्चियों को भी वह बाहर नहीं निकलने देते थे। ईसाई खूबसूरत बच्चियों को इग़वा कर लेते थे।

सुल्तान अय्यूबी ने जब इन दो हज़ार लाशों को देखा तो उसके आंसू निकल आए थे। उसने कहा था। "इन मज़लूमों को आज़ाद कराने के लिए मैं पूरी की पूरी सल्तनते इस्लामिया को दाव पर लगा सकता हूं।" उसने उनकी गिज़ा और उनकी सेहत के लिए फ़ौरी एहकामात

जारी कर दिए थे और कहा था कि अभी इन्हें इसी जगह पर रखा जाए और इन्हें बिस्तर मुहैया किए जाएं। उसके पास अभी उनकी कहानियां सुनने के लिए वक़्त नहीं था। उसे अभी बाहर की कैफ़ियत को काबू में लाना था। बाहर का यह आलम था कि जंग अभी जारी थी जिस की नौइय्यत खुली जंग सी नहीं थी। सूरत यह थी कि सलीबी फौज जो सुल्तान अय्यूबी के धोखे में आकर कर्क और शूबक से दूर उसकी फ़ौज को रोकने के लिए चली गई थी, वह बिखर कर पस्पा हो रही थी। मुसलमान दस्ते उस पर शब खून मार मार कर और ज़्यादा बुरा हाल कर रहे थे। सुल्तान अय्यूबी को इत्तिलाएं मिल रही थीं कि बाज़ झड़पों में उसके दस्ते घेरे में आकर नुक़सान उठा रहे थे। यह ख़तरा भी था कि कर्क के किले में जो सलीबी फ़ौज है, वह सेहरा में फंसी और बिखरी हुई अपनी फ़ौज की मदद के लिए भेज दी जाएगी।

इस सूरते हाल के लिए सुल्तान अय्यूबी के लिए फ़ौज की कमी थी। मिस्र से वह कमक नहीं मंगवाना चाहता था क्योंकि वहां की साज़िशें दबी नहीं थीं। माज़ूल की हुई फ़ात्मी ख़िलाफ़त के हामी दर परदा साज़िशों में मसरूफ़ थे। सूडानी हब्शी अलग ताक़त जमा कर रहे थे। उन दोनों को सलीबी मदद देकर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुत्तहिद कर रहे थे। सबसे बड़ा ख़तरा यह था कि मुत्तअहिद मुसलमान सियासी और फ़ौजी सरबराह अभी सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ दर परदा कार्यवाईयों में मसरूफ़ थे। यह ईमान फ़रोशों का टोला था जो इक़्तेदार के हुसूल के लिए इस्लाम के दुश्मनों के साथ साज़ बाज़ कर रहा था। उन्हों ने हशीशीन के पेशेवर क़ातिलों की ख़िदमात भी हासिल कर ली थीं। जिन्हों ने सुल्तान अय्यूबी के क़त्ल का मंसूबा बना लिया था।

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कई बार कहा था कि सलीबियों की यह कितनी बड़ी कामयाबी है कि वह मेरे हाथों मुसलमानों को क़त्ल करा रहे हैं। वह बेशक ईमान फ़रोश हैं जिन्हें मैने ग़द्दारी के बदले में सज़ाए मौत दी है लेकिन वह मुसलमान थे, कलमा गो थे। काश यह लोग अपने दुश्मन को पहचान लेते।

अब जब कि शूबक का क़िला उसके क़दमों में था औरवह क़िले की दीवार पर अपने फ़ौजी मुशीरों वग़ैरा के साथ घूम रहा था, उसे शहर के मुसलान बाशिंदें गिरोह दर गिरोह नाचते और अल्लाहू अक्बर के नारे लगाते नज़र आ रहे थे। ऊंटों पर शहीदों की लाशें और ज़ख़्मी लाए जा रहे थे, सुल्तान अय्यूबी गहरी सोंच में खोया हुआ था। उसका दस्ते रास्त बहाउद्दीन शद्दाद अपनी याद दाशतों में लिखता है– "सलाहुद्दीन के चेहरे पर फ़तह व नुसरत का कोई तास्सुर नहीं था। खुशियां मनाने वाले शूबक के मुसलमानों का एक गिरोह दफ़ और शहनाई की ताल पर नाचता उस दीवार के दामन में आन रुका जहां हम खड़े थे। सलाहुद्दीन अय्यूबी उन्हें देखता रहा। लोग उसे देख कर पागलों की तरह नाचने लगें। अय्यूबी के होंटों पर मुस्कुराहट तक न आई। उसने उन लोगों के लिए हाथ तक नहीं हिलाया। बस देख रहा था। गिरोह में से किसी नेबुलन्द आवाज़ से कहा– "सलाहुद्दीन बिन नजमुद्दीन अय्यूब तुम शूबक के मुसलमानों के लिए पैग़म्बर बनके उतरे हो, वह लोग अरबी नस्ल के थे, एक दूसरे को बाप के नाम पर पहचानते और पुकारते थे। इसलिए उन में बेशतर सलाहुद्दीन अय्यूब को

बिन नजम कहते थे।

"नाचने वालों में से किसी ने नारा लगाया। कुर्द के बच्चे, हम तेरी पैग़म्बरी को सजदा करते हैं— सलाहुद्दीन अय्यूबी यक्लख़्त बेदार हो गया। तड़प कर बोला, उन्हें कहो मुझे गुनाहगार न करें। मैं पैग़म्बरों का ग़ुलाम हूं। सज्दे के लायक सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है। मैं ने सुल्तान के एक मुहाफ़िज़ से कहा, भाग कर जाओ और इन लोगों से कहो कि ऐसे नारे न लगाएं। अमीरे मिस्र नाराज़ होते हैं। मुहाफ़िज़ जाने लगा तो अय्यूबी ने उसे रोक कर कहा— आराम से कहना, उनका दिल न दुखाना। उन्हें नाचने दो, उन्हें गाने दो, उन्हों ने जहन्नुम से निजात हासिल की है। मेरी ज़िन्दगी उन लोगों की खुशियों के लिए वक़्फ़ है। वह कुछ नहीं कह सका क्योंकि उसकी आवाज़ भर्रा गई थी। यह जज़्बात का गल्बा था। उसने मुंह फेर लिया, वह हम सब से अपने आंसू छुपा रहा था। कुछ देर बाद उसने हम सब की तरफ़ देखा और कहा— "हम अभी फिलिस्तीन की दहलीज़ पर पहुंचे हैं, हमारी मंज़िल बहुत दूर है। हमें शुमाल में वहां तक जाना है जहां से बहरे रोम का साहिल घूम कर मग़रिब को जाता है। हमें सरज़मीनें अरब से आख़री सलीबी को धकेल कर बहरे रोम में डुबोना है।"

वहीं सुल्तान अय्यूबी ने अपने मुताल्लिक मुशीर को हुक्म दिया कि सारे शहर में मनादी करा दो कि कोई ग़ैर मुस्लिम इस ख़ौफ़ से शहर से न भागे कि मुसलमान उन्हें परेशान करेंगे। किसी को किसी मुसलमान फ़ौजी या शहरी से कोई तकलीफ़ पहूंचे तो वह क़िले के दरवाज़े पर शिकायत करे। उसका इज़ाला किया जाएगा, उसने ज़ोर देकर कहा कि हम किसी के लिए तकलीफ़ और मुसीबत का नहीं प्यार और मुहब्बत का पैग़ाम ले कर आए हैं। अगर किसी ने इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ़ कोई बात या हरकत की तो उसे इस्लामी कानून के तेहत सज़ा दी जायेगी जो बहुत सख़्त होगी और याद रखो कि इस्लामी क़ानून से न कोई ग़ैर मुस्लिम बच सकता है न मुसलमान। इसके साथ ही उसने हुक्म दिया कि शहर में अगर कोई सलीबी फ़ौजी या जासूस छुपा हुआ है या किसी ने उसे अपने घर में पनाह दे रखी है तो वह फ़ौरन अपने आप को मुसलमान फ़ौज के हवाले कर दे।

सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज क़िले की एक दीवार तोड़ कर अन्दर गई थी। उसने हुक्म दे रखा था कि क़िले के उस हिस्से पर फ़ौरन क़ब्ज़ा किया जाए जहां सलीबियों के मोहकम–ए–जासूसी का मरकज़ था। उसके जासूसों ने उसे उस मरकज़ के मुताल्लिक बहुत सी मालूमात दी थीं और रहनुमाई भी की थी मगर सलीबी इतने अनाड़ी नहीं थे। उन्हों नेसबसे पहले उसी हिस्से को ख़ाली किया और दस्तावेजात निकाल ले गए थे। उनकी जासूसी का सरबराह हरमन और उसके दिगर माहिरीन वहां से ग़ायाब हो चुके थे। अल्बत्ता आठ लड़कियां पकड़ी गई थीं जो अली बिन सुफ़ियान के हवाले कर दी गई थीं। वह उनसे मालूमात ले रहा था। उन लड़कियों ने बताया था कि कमो बेश बीस लड़कियां वहां से निकल गई हैं। वह सब अपने तौर पर भागी थीं। उनके साथ कोई मर्द नहीं था। मर्द जासूस भी निकल गए थे। उन आठ लड़कियों में से एक ने अपनी साथी लड़की लोज़ीना के मुताल्लिक बताया था कि उसने एक मुसलमान फ़ौजी (हुदेद) को क़िले से फरार कराकर खुदकुशी कर

ली थी।

❖

शूबक में अमन और शहरी इन्तिज़ामात बहाल करने की सरगर्मियां थीं और कर्क में शूबक पर हमले और उसे सुल्तान अय्यूबी से छुड़ाने की इस्कीमें बन रही थीं लेकिन सलीबी हमले के लिए इतनी जल्दी तैय्यार नहीं हो सकते थे जितना वह समझते थे। उनके सामने पहला सवाल तो यह था कि उनके आलिम जासूस ने बड़ी पक्की इत्तला दी थी कि सुल्तान अय्यूबी कर्क पर हमला करेगा। उसकी फ़ौजें कर्क की तरफ़ ही आ रही थीं। उनके क़ाहिरा के जासूसों ने भी नाक़ाबिले तस्दीद इत्तिलाएं दी थीं कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज कर्क पर हमला करेंगी जिसकी कमान वह खुद करेगा मगर आधे रास्ते से उसकी फ़ौजों ने रुख बदल दिया और ऐसी चालें चलीं कि सलीबी फ़ौज जो मुसलमानों के रोकने के लिए गई थी शबखूनों की ज़द में आ गई और सुल्तान अय्यूबी ने कर्क से इतनी ज़्यादा दूर शूबक पर हमला कर दिया।

यह सवाल एक कॉन्फ्रेन्स में पेश किया गया था। जिसमें सलीबी फ़ौज के आला अफ़सर और सलीबी हुक्मरान मौजूद थे। उन के मुहकम–ए–जासूसी का सरबराह हरमन और आलिम जासूस जिसे सुल्तान अय्यूबी ने क़ाहिरा से गिरिफ़्तार करके रिहा कर दिया था, मुल्ज़िमों की हैसियत से कॉन्फ्रेन्स में पेश किए गए। आलिम जासूस शूबक के क़िले से भागने में कामयाब हो गया था। उसे कॉन्फ्रेन्स में हथकड़ियों में पेश किया गया था। उस पर इल्ज़ाम यह था कि उसने ग़लत इत्तिला देकर मुसलमानों को फ़ायदा पहुंचाया और उनकी फ़तह का बाइस बना है। उसने एक बार फिर बयान दिया कि उसे यह इत्तिला किस तरह मिली थी कि सुल्तान अय्यूबी कर्क पर हमला करेगा। उसने यह भी कहा कि अगर उसकी इत्तिला में कोई शक था तो मुताल्लिक़ा मोहकमा को उसके मुताबिक़ अमल नहीं करना चाहिए था। उसके इस बयान पर हरमन से पूछा गया कि उसने जासूसी के माहिर की हैसियत से क्यों तस्लीम कर लिया था कि इस जासूस की लाई हुई इत्तिला बिल्कुल सही है।

"मुझे इस बारे में बहुत कुछ कहना है।" हरमन ने कहा– "मैं यह दावा कर सकता हूं कि मैं जासूसी और सुरागरसानी का माहिर हूं मगर कई मौक़े ऐसे आए हैं जिनमे मेरी महारत और मेरे जासूसों की मेहनत और कुर्बानी को नज़र अंदाज़ किया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि मेरी महारत फौज की मरकज़ी कमान के हुक्म या किसी बादशाह के हुक्म की नज़र हो गई। इस कॉन्फ्रेन्स में तीन हुक्मरान मौजूद हैं और उनकी मुत्तहेदा कमान के आला कमाण्डर भी मौजूद है और जब कि हम इतनी बड़ी शिकस्त से दो चार हूए हैं जिसमें शूबक जैसा क़िला हाथ से निकल गया है। इसके साथ मीलों बसी इलाक़े पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया है। साल भर की रसद और दिगर साज़ो सामान दुश्मन के हाथ लगा है और शूबक की पूरी आबादी मुसलमानों की गुलाम हो गई है। मैं आप की ख़ामियां और अहमक़ाना हरकतें आपके सामने रखना अपना फ़र्ज़ समझता हूं और मैं आप सब को बसद एहतराम याद दिलाता हूं कि हमने सलीब पर हल्फ़ उठाया है कि सलीब के वक़ार के लिए अपना आप कुर्बान कर देंगे।

अगर आप में से किसी के ज़ाती वक़ार को ठेस पहुंचे तो उसे सलीब का वक़ार पेशे नज़र रखनाचाहिए।"

हरमन की हैसियत ऐसी थी कि कोनारड गै ऑफ़ लोज़ीन्प्रन और शाह आगस्टस जैसे खुदसर बादशाह भी उसकी बात रद करने की जुर्रत नहीं करते थे। जासूसी का तमामतर निज़ाम उसके हाथ में था। उनमें सलाहकार जासूस भी थे। हरमन किसी भी हुक्मरान को खुफिया तरीके से क़त्ल कराने की हिम्मत और अहलियत रखता था। उसे इजाज़त दे दी गई कि वह अपना तजज़िया पेश करे।

"मैं यह समझने से क़ासिर हूं कि दुश्मन के राज़ मालूम करने के लिए और उसकी किरदार कुशी के लिए सिर्फ़ लड़कियों पर क्यों भरोसा किया जा रहा है।" उसने पूछा।

"इसलिए कि औरत इंसान की बहुत बड़ी कमज़ोरी है।" किसी हुक्मरान ने कहा– "किरदार कुशी का बेहतरीन ज़रिया औरत है। ख्वाह वह तहरीर में हो या गोश्त पोस्त की सूरत में हो। क्या तुम इस से इन्कारकर सकते हो कि अरब में बहुत से मुसलमान उमरा क़िलेदारों और वुज़रा को हमने औरत के हाथों अपना गुलाम बना लिया है?"

"लेकिन आप यह नहीं सोंच रहे कि इस वक़्त मुसलमानों की हुकूमत फ़ौज के हाथ में है।" हरमन ने कहा– "उनका ख़लीफ़ा अपना हुक्म नहीं मनवा सकता। फ़ौजी उमूर में उसका कोई अमल दख़ल नहीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी की मिस्र में हैसियत एक गवर्नर की है लेकिन उसने वहां के ख़लीफ़ा को माजूल कर दिया है। इधर नूरुद्दीन ज़ंगी है जिसकी हैसियत एक सालार और वज़ीर की है लेकिन जंगी उमूर में उसे बग़दाद के ख़लीफ़ा से हुक्म और इजाज़त लेने की कोई ज़रूरत नहीं। लिहाज़ा यह पेशे नज़र रखिये कि आप ने चन्द एक अमीरों, वज़ीरों और क़िलेदारों को हाथ में ले लिया है तो उनकी हैसियत ग़द्दारों की सी है। वह आप को अपने मुल्क का एक इन्च इलाक़ा भी नहीं दे सकते। इस्लामी सल्तनत के असल हुक्मरान फ़ौजी हैं। नूरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी फ़ौजों की तरबियत ऐसी की है कि आप लड़कियों से उस फ़ौज का किरदार ख़राब नहीं कर सकते और न ही कर सके हैं। इस फ़ौज के लिए शराब पीना संगीन जुर्म है। इस्लाम में हर किसी के लिए शराब हराम है। इस पाबंदी का असर यह है कि मुसलमान फौजी हो या शहरी वह अपने होश ठिकाने रखता है। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी शराब का आदी होता तो आज मिस्र हमारा होता और सलाहुद्दीन अय्यूबी शूबक के क़िले का फ़ातेह न होता बल्कि इस क़िले में हमारा क़ैदी होता।

"हरमन!" एक कमाण्डर ने उसे टोक कर कहा– "अपनी बात लड़कियों तक रखो। हमारे पास मुसलमानों के औसाफ़ सूनने के लिए वक़्त नहीं।"

"मैं यह कहना चाहता हूं।" हरमन ने कहा– "कि जासूसी के लिए लड़कियों का इस्तेमाल नाकाम हो चुका है। गुज़िश्ता दो बरसों में हम बड़ी क़ीमती लड़कियां मिस्र में भेज कर मुसलमान फ़ौजियों के हाथों मरवा चुके हैं। लड़की के मामले में यह भी याद रखिए कि औरत ज़ात जज़्बाती होती है, आप लड़कियों को कितनी ही सख़्त ट्रेनिंग क्यों न दें, वह मर्दों की तरह पत्थर नहीं बन सकतीं। हम उन्हें ख़त्रों में फेंक देते हैं, ख़तरा बहरहाल ख़तरा होता है

और दिलो दिमाग़ पर असर करता है। बाज़ औक़ात हालात बहुत ही बिगड़ जाते हैं। उन हालात में मुसलमान फ़ौजी हमारी लड़कियों को तफ़रीह का ज़रिया बनाने की बजाए उन्हें पनाह में ले लेते हैं। लड़कियां जज़्बा से मग़लूब हो कर रह जाती है। हाल ही में हमारी एक लड़की को सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक कमाण्डर ने डाकुओं से बचाया और ज़ख़्मी हो गया। लड़की उसे शूबक में ले आई। हमने उसे मुसलमानों के कैम्प में फेंक दिया। लड़की ने उसे हमारी फ़ौज के एक अफ़सर की वर्दी पहनाकर किले से निकाल दिया। उसे घोड़ा भी दिया। मैं ने लड़की को पकड़ लिया। लड़की ने ज़हर खा कर ख़ुदकुशी कर ली।उसने सज़ा के ख़ौफ़ से ख़ुदकुशी नहीं की थी। उसने महसूस कर लिया था कि वह गुनाहगार है और अपने जिस्म को धोखे के लिए इस्तेमाल कर रही है। यह एहसास इतना शदीद था कि उसने ज़हर पी लिया।

"लड़कियों के ख़िलाफ़ मैं एक दलील और भी देना चाहता हूं। हमारे पास जो जासूस लड़कियां हैं। उन में ज़्यादा तादाद उनकी है जिन्हें हमने बचपन में मुसलमानों के क़ाफ़िलों से या उनके घरों से इग़वा कराया था। उन्हें हमने अपना मज़हब दिया और अपनी अस्लियत भूल गई। उन्हें याद भी न रहा कि वह मुसलमानों की बेटियां हैं। मगर हमने उनके सिर्फ़ नाम बदले उनका मज़हब और उनका किरदार बदला, उनके ख़ून को न बदल सके। मैं इंसानी नफ़्सियात को समझता हूं लेकिन यह मेरा तजुर्बा है कि मुसलमान की नफ़्सियात दूसरे मज़ाहिब के इंसानों से मुख़्तलिफ़ है। यह लड़कियां जब किसी मुसलमान के सामने जाती हैं तो जैसे उन्हें अचानक याद आ जाता है कि उनकी रगों में भी मुसलमान बाप का ख़ून है। मुसलमान के ख़ून से उसका मज़हब निकलता नहीं।"

"तुम यह कहना चाहते हो कि किसी लड़की को जासूसी के लिए न भेजा जाए?" एक कमाण्डर ने उससे पूछा।

"किसी ऐसी लड़की को न भेजा जाए, जो किसी मुसलमान के घर पैदा हुई थी।" हरमन ने जवाब दिया– "अगर आप लड़कियों को मेरे मुहकमे से निकाल ही दें तो सलीब के लिए बेहतर रहेगा। आप मुसलमान उमरा के हरमों में लड़कियां भेजते रहें। आप उन्हें फांस सकते हैं। वह आसानी से आप के हाथ आ जाते हैं क्योंकि उन्हों ने मैदान–ए–जंग नहीं देखा। उनकी तलवार हमारी तलवार से नहीं टकराई। हमें उनकी सिर्फ़ फ़ौज पहचानती है। दुश्मन को सिर्फ़ फ़ौज जानती है इसलिए वह हमारे झांसे में नहीं आ सकती।"

सलीबियों का शाह आगस्टस इन्तिहा दर्जे का शैतान फ़ितरत हुक्मरान था जो इस्लाम की दुश्मनी को इबादत समझता था। उसने कहा– "हरमन तुम्हारी निगाह महदूद है। तुम सिर्फ़ सलाहुद्दीन और नूरुद्दीन को देख रहे हो। हम इस्लाम को देख रहे हैं। हमें इस मज़हब की बेख़कनी करनी है। इसके लिए किरदार कुशी और नज़रियात में शकूक पैदा करना लाज़मी है। मुसलमानों में ऐसी तहज़ीब राएज करो जिसमें क़शिश हो। ज़रूरी नहीं हम अपना मक़सद अपनी ज़िन्दगी में हासिल कर लें। हम यह काम अपनी अगली नस्ल के सुपुर्द कर देंगे। कुछ कामयाबी वह हासिल करेगी और यह मुहिम अगली नस्ल हाथ में ले लेगी।

फिर एक दौर ऐसा आही जाएगा जब इस्लाम का नामो निशान नहीं रहेगा। अगर इस्लाम ज़िन्दा रहा भी तो यह मज़हब किसी और सलाहुद्दीन अय्यूबी और नूरुद्दीन ज़ंगी को जन्म नहीं देगा। मैं वसूक़ से कहता हूं कि मज़हब मुसलमानों का अपना होगा लेकिन यह मज़हब हमारी तहज़ीब में रंगा हुआ होगा। आज से सौ साल बाद पर नज़र रखो। फ़तह और शिकस्त आरज़ी वाक़िआत हैं। हम शूबक पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लेंगे। तुम मिस्र में साज़िशों को मज़बूत करो। फ़ातिमियों और सूडानी हब्शियों को मदद दो। हशीशीन को इस्तेमाल करो।"

❖

कॉन्फ्रेन्स के कमरे में एक सलीबी अफ़सर दाख़िल हुआ, गर्द से अटा हुआ और थका हुआ था। वह उस फ़ौज के कमाण्डरों में से था जो बाहर रेगिस्तान में चली गई थी और आहिस्ता आहिस्ता कर्क की तरफ़ पस्पा हो रही थी। वह बहुत परेशान था। उसने कहा— "फ़ौज की हालत अच्छी नहीं, मैं यह तज्वीज़ लेकर आया हूं कि कर्क की तमाम तर फ़ौज के साथ काफ़ी कमक मिला कर शूबक पर हमला कर दिया जाए और मुसलमानों को मजबूर किया जाए कि वह आमने सामने की जंग लड़ें। इस वक़्त जंग की कैफ़ियत यह है कि हमारे दस्ते मरकज़ी कमान के हुक्म के मुताबिक़ कर्क की तरफ़ पीछे हट रहे हैं। मुसलमानों के शब ख़ून मारने वाले दस्ते थोड़ी सी नफ़री से रात को अक़बी हिस्से पर शब ख़ून मारते और ग़ाएब हो जाते हैं। दिन के वक़्त उनके तीरंदाज़ चन्द एक तीर बरसा कर नुक़सान करते और ग़ाएब हो जाते हैं। वह निशाना घोड़े या ऊंट को बनाते हैं। जिस जानवर को तीर लगता है वह भगदड़ मचा देता है। उसे देखकर दूसरे घोड़े और ऊंट भी डरते और बेक़ाबू हो जाते हैं। हमने रुक कर इधर उधर को दस्ते इकट्ठे किए और जवाबी हमला करने की कोशिश की लेकिन मुसलमान आमने सामने नहीं आते। हमारे कुछ दस्तों को उन्हों ने सिर्फ़ इसलिए मारा है कि मुसलमान उन्हें अपनी मर्ज़ी के मैदान में ले जाकर लड़ाते हैं। जज़्बे को बेदार करने के लिए ज़रूरी है कि एक शदीद जवाबी हमला किया जाए।"

इस मसले पर बहस शुरू हो गई। सलीबियों के लिए मुश्किल यह पैदा हो गई थी कि उन की फ़ौज का बड़ा हिस्सा जिसे बेहतरीन लड़ाका समझा जाता था, कर्क से दूर रेगज़ार में बिखर गया था। सुल्तान अय्यूबी की चाल कामयाब थी। उसके कमाण्डर और दस्तों के ओहदेदार उसकी चाल को खुश उस्लूबी से अम्ली रंग दे रहे थे। वह पानी पर क़ब्ज़ा कर लेते थे। बुलन्दियों पर पहुंच जाते थे, टीलों के इलाक़ों में घात लगाते थे और दिन के वक़्त अगर हवा तेज़ हो तो हवा के रुख़ से हमला करते थे। इस से यह फ़ायदा होता था कि हवा और घोड़ों की उड़ाई हुई रेत सलीबियों की आंखों में पड़ती और उन्हें अंधा करती थी। सुल्तान अय्यूबी की नफ़री काफ़ी नही थी। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सलीबी हमला कर देते तो सुल्तान अय्यूबी के पास इतनी नफ़री नहीं थी कि वह शूबक को बचा सकता। उसने जंगी फ़हमो फ़िरासत से काम लिया और सलीबियों पर अपना रोब क़ायम कर दिया था। शूबक के शुमाल मशरिक़ में सलीबियों की ख़ासी फ़ौज बेकार बैठी थी। उसे इस डर से वापस नहीं बुलाया जा रहा था कि नूरुद्दीन ज़ंगी सुल्तान अय्यूबी को कमक भेज देगा।

सलीबी हुक्मरान और कमाण्डर कर्क के किले में बैठे हुए पेचोताब खा रहे थे। शूबक में अय्यूबी को यह मसला परेशान कर रहा था कि सलीबियों ने हमला कर दिया तो वह किस तरह रोकेगा।

उसने इसाईयों के भेस में अपने जासूस कर्क भिजवा दिए थे ताकि सलीबियों के अज़ायम और मंसूबों से आगाह करते रहें। उसने ऐसा इन्तेज़ाम कर रखा था कि उसे मुहाज़ की खबरें तेज़ी से मिल रही थीं। उसने शूबक से और गिर्दो नवाह के इलाके से फौज के लिए भरती शुरू कर दी और हुक्म दिया कि किले में फौरी तौर पर उनकी ट्रेनिंग शुरू कर दी जाए। सलीबियों के बहुत से घोड़े और ऊंट किले में रह गये थे।

बाहर के दस्तों को उसने हुक्म भेज दिया था कि दुश्मन के जानवरों को मारने की बजाए पकड़ें और किले में भेजते रहें। नई भर्ती की ट्रेनिंग के सिलसिले में उसने यह हुक्म जारी किया कि उन्हें शबखून मारने की और मुताहर्रिक जंग लड़ने की ट्रेनिंग दी जाए।

कर्क में जो कॉन्फ्रेन्स हो रही थी उसमें हरमन की उस तज्वीज़ को रद्द कर दिया गया था कि जासूसी के लिए लड़कियों को इस्तेमाल न किया जाए। अल्बत्ता आलिम जासूस को छोड़ दिया गया और उसे यह हुक्म दिया गया कि वह मुसलमानों पर नज़रयाती हमला करने के लिए आदमी तैय्यार करे। उसके बाद यह पूछा गया कि शूबक में कितनी जासूस लड़कियां और मर्द रह गये हैं और क्या लड़कियों को वहां से निकाला जा सकता है? हरमन ने उन्हें बताया कि चन्द एक लड़कियां मुसलमानों की कैद में हैं और कुछ ला पता हैं। मर्द जासूसों के मुताल्लिक उसने बताया कि चन्द एक कैद हो गय हैं और बहुत से वहीं हैं। उन्हें इत्तिला भेज दी गई है कि वहीं रहें और अब मुसलमान बनकर अपना काम करें। एक सलीबी हुक्मरान ने कहा कि जो लड़कियां वहां कैद में हैं उन्हें निकालना शायद आसान न हो लेकिन हो सकता है कि कुछ लड़कियां वहां ईसाईयों के घरों में रूपोश हो गई हों। उन्हें वहां से निकालना लाज़मी है।

थोड़ी देर के बहस मुबाहसे के बाद तय हुआ कि एक ऐसा गिरोह तैय्यार किया जाए जो सुल्तान अय्यूबी के शब खून मारने वाले आदमियों की तरह जान पर खेलना जानता हो। उस गिरोह काहर एक आदमी ज़हीन और फुर्तीला हो। अरबी या मिस्री जबान बोल सकता हो। उस गिरोह को ऐसे मुसलमानों के भेस में शूबक भेजा जाए जिससे पता चले कि कर्क के ईसाईयों के जुल्म व तशद्दुद से भाग कर आए हैं। उन्हें यह काम दिया जाए कि शूबक में रह कर लड़कियों का सूराग लगाएं और उन्हें वहां से निकालें। इस काम के लिए जराएम पेशा आदमी मौजूं रहेंगे जिन्हें उनकी ख्वाहिश के मुताबिक जेलों से निकाल कर फौज में लिया गया है। फौज में पेशेवर मुजरिम को तलाश करो और उन्हें चन्द दिन ट्रेनिंग देकर शूबक भेज दो लेकिन यह ख्याल रखो कि उन्वें वही सिपाही हों जो शूबक में रह चुके हैं और वहां के गली कूचों और लोगों से वाकिफ़ हैं। यहां यह मसला पैदा हुआ कि यह जराएम पेशा आदमी उस खित्ते की ज़बान नहीं जानते। इसका यह हल पेश किया गया कि ज़्यादा तर ऐसे आदमी भेजे जाएं जो वहां की ज़बान जानते हों।

मुताद्दिद मोअर्रख़ीन ने शूबक की फ़तह को कई एक रंग दिए हैं। उनमें साफ़ गो किस्म के मोअर्रख़ीन ने जो विलियम ऑफ डाएर की तरह ईसाई हैं। सलीबियों पर कड़ी नुक्ता चीनी की है। वह लिखते हैं कि उनके हुक्मरान ख़ूबसूरत लड़कियों के ज़रिए मुसलमान इलाक़ों में जासूसी, तख़रीबकारी और किरदार कुशी पर ज़्यादा तवज्जों देते थे। इससे उनके अपने किरदार का पता मिलता है कि क्या था। यह दुरुस्त है कि उन्हों ने मुसलमानों के चन्द एक ग़ैर फ़ौजी सरबराहों को अपने ज़ेरे असर ले लिया था लेकिन उनके दिमाग़ में यह न आई कि मुसलमानों की एक क़ौम भी है और एक फ़ौज भी है। किसी क़ौम और उसकी फ़ौज के क़ौमी जज़्बे को मारना आसान काम नहीं होता और उस सूरत में जबकि सलीबियों ने मुसलमानों के निहत्ते क़ाफ़िले लूटे थे, उनकी बच्चियां इग़वा की थीं, मफतूहा इलाक़ों में वसीअ पैमाने पर आबरू रेज़ी की, क़त्ले आम किया और मुसलमानों को बेगार कैम्पों में ठूंस कर जानवर बना दिया। मुसलमान क़ौम और फ़ौज के जज़्बे को मजरूह करना मुम्किन ही नहीं था। उन्हों ने मुसलमानों के दिलों में इन्तिक़ाम का जज़्बा पैदा कर दिया था। इस्लाम की सफ़ों में चन्द एक ग़द्दार पैदा कर लेने से इस मज़हब की अज़मत को मजरूह नहीं किया जा सकता था।

मोअर्रख़ीन ने लिखा है कि उस वक़्त शूबक पर हमले की ज़रूरत थी और जब सलाहुद्दीन अय्यूबी जंगी लिहाज़ से कमज़ोर था, सलीबियों ने शूबक से चन्द एक लड़कियों को निकाल लाने पर तवज्जो मरकूज़ कर ली और इस मुहिम के लिए जांबाजों का गिरोह तैय्यार होने लगा। वह लिखते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की जंगी फ़हमो फ़िरासत की दाद देनी पड़ती है कि उसने सलीबियों पर यह रोब तारी कर दिया था कि उसने उनकी फ़ौज को बिखेर दिया था। सलीबियों ने उस तास्सुर को क़ुबूल कर लिया था। उन्हों ने उस तरफ़ तवज्जे ही न दी कि अय्यूबी की अपनी फ़ौज का दस्ता टोला टोला हो के बिखर गई है और यह भी कहा जा सकता है कि सुल्तान अय्यूबी इस सूरते हाल से कुछ परेशान भी था। उसके मुशीरे ख़ास शद्दाद ने उसकी जिस परेशानी का ज़िक्र किया है वह यही हो सकती है कि उसके दस्ते सलीबियों के ताआक़ुब में बिखर गये थे। इससे मरकज़ियत ख़त्म हो गई थी। यह भी सही है कि उसके दस्ते ज़ाती और क़ौमी जज़्बे के तेहत लड़ रहे थे। ऐसी मिसालें भी मिली हैं कि बाज़ मुसलमान दस्ते सेहराई भूल भुलय्यों में भटक गये और ख़ुराक और पानी से महरूम रहे लेकिन हर हाल और हर कैफ़ियत में लड़ते रहे।

यह जज़्बे की जंग थी जिस से सलीबी सिपाही आरी थे। उन्हों ने अपने कमाण्डरों को पस्पा होते देखा तो उनमें लड़ने का जज़्बा ख़त्म हो गया। अगर सलीबी उधर तवज्जो देते तो अय्यूबी की बिखरी हुई फ़ौज पर क़ाबू पा सकते थे मगर वह ज़रा ज़रा सी बातों पर इतनी ज़्यादा तवज्जो देते थे जितनी अहम जंगी उमूर पर दी जाती है।

यहां एक और वज़ाहत ज़रूरी है। उस दौर के सलीबी वक़ाए निगारों के हवाले से दो तीन ग़ैर मुस्लिम मोअर्रख़ीन ने इस क़िस्म की ग़लत बयानी की है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुसलसल दो साल शूबक को मुहासरे में रखा और नाकाम लौट गया। उन्हों ने इसकी वजह यह बयान की है कि नूरुद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी के दरम्यान ग़लत फ़हमी पैदा हो

गई थी। ज़ंगी को उसके मुशीरों ने ख़बरदार किया था कि अय्यूबी मिस्र को अपने ज़ाती तसल्लुत में रख कर फ़िलिस्तीन का भी खुद मुख़्तार हुक्मरां बनना चाहता है। वह फ़िलिस्तीन पर कब्ज़ा करके ज़ंगी को माजूल कर देगा। यह मोवर्रेख़ीन लिखते है। कि नूरुद्दीन ज़ंगी ने इस बहाने शूबक को अपनी फ़ौज रवाना कर दी कि यह सुल्तान अय्यूबी के लिए कमक है लेकिन उसने अपने कमाण्डरों को यह खुफ़िया हिदायत दी थी कि वह शूबक के जंगी उमूर अपने कब्ज़े में ले लें। चुनांचे यह फ़ौज आई। सुल्तान अय्यूबी से किसी ने कहा कि नूरुद्दीन ज़ंगी ने यह फौज उसकी मदद के लिए नहीं भेजी बल्कि उसकी मरकज़ी कमान पर कब्ज़ा करने के लिए भेजी है। यह सुनकर सुल्तान अय्यूबी दिल बरदाश्ता हो गया और वह शूबक का मुहासरा उठा कर मिस्र को कूच कर गया।

ईसाई मोअर्रेख़ीन ने ज़ंगी और अय्यूबी की उस मफरुज़ा चपकलिश को बहुत उछाला है लेकिन उन मोअर्रेख़ीन की तादाद ज़्यादा है जिन्हों ने यह साबित किया है कि सुल्तान अय्यूबी ने डेढ़ माह के मुहासरे के बाद शूबक का किला ले लिया था। अल्बत्ता यह पता भी मिलता है कि सलीबी तख़रीबकारों ने नूरुद्दीन ज़ंगी को सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ भड़काने की कोशिश की थी जो कामयाब नहीं हो सकी। इस का सबूत यह है कि सुल्तान अय्यूबी के वालिद नजमुद्दीन अय्यूब लम्बी मुसाफ़त तय करके शूबक पहुंचे। उन्हें शक हो गया था कि उनका बेटा ऐसी हिमाकत पर उतर ही न आया हो और कहीं ऐसा न हो कि तख़रीबकार उसके कान ज़ंगी के ख़िलाफ़ भर दें।

बहाउद्दीन शद्दाद अपनी याद दाश्तों में रकमतराज़ है। "अपने वालिद बुज़ुर्गवार को देख कर अय्यूबी बहुत हैरान हुआ। उनसे मुसाफ़ाह किया और समझा कि मोहतरम वालिद इस फ़तह की मुबारक बाद देने आए हैं। मगर उन्हों ने बेटे को पहले अल्फ़ाज़ यह कहे— "क्या नूरुद्दीन ज़ंगी जाहिल है जिसने मुझ जैसे गुलाम और ग़रीब आदमी के बेटे को मिस्र का हुक्मरान बना डाला है? क्या मुझे यह सुनना पड़ेगा कि तेरा बेटा ज़ाती इक़्तेदार की ख़ातिर सल्तनते इस्लामिया के मुहाफ़िज़ नूरुद्दीन ज़ंगी का दुशमन हो गया है? जाओ और ज़ंगी से माफ़ी मांगो।"

बात खुली तो मालूम हुआ कि सुल्तान अय्यूबी का ज़ेहन साफ़ है और वह नूरुद्दीन ज़ंगी से कमक मांगने वाला है। नजमुद्दीन अय्यूब मुत्मइन हो गये और वाज़ेह हो गया कि यह सलीबियों की तख़रीबकारी और अय्यारी है। सुल्तान अय्यूबी ने अपने खुसूसी कासिद मोतमिद फ़कीह ईसा अलहिकारी को अपने वालिदे मोहतरम के साथ रुख़सत किया और अलहिकारी को नूरुद्दीन ज़ंगी के नाम एक तहरीरी पैग़ाम दिया। उसके साथ शूबक के कुछ तोहफ़े भी भेजे, उसने लिखा "बेश कीमत तोहफ़ा शूबक का किला है जो मैं आप के क़दमों में पेश करता हूं। उसके बाद खुदाए अज़्ज़ व जल की मदद से कर्क का किला पेश करूंगा।"

इस पैग़ाम में सुल्तान अय्यूबी ने वाज़ेह किया था कि सलीबियों की तख़रीबकारी से ख़बर दार रहें और यह न भूलें कि कुछ मुसलमान उमरा भी इस तख़रीब कारी और साज़िशों में सलीबियों का हाथ बटा रहे हैं। उन कीसर कोबी की जाए। इस पैग़ाम में सुल्तान अय्यूबी ने

शूबक की उस वक़्त की सूरते हाल और अपनी फ़ौज की कैफ़ियत तफ़सील से लिखी है और कुछ इन्क़लाबी तज्वीज़ पेश की। उसने ज़ंगी को लिखा कि इन हालात में जब दुश्मन हमारी ज़मीन पर क़िला बन्द है और वह मैदाने जंग में हमारे दरमियान ग़द्दार पैदा कर रहा है। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हमारी ग़ैर फ़ौजी क़्यादत न सिर्फ़ नाकाम हो गई है बल्कि सल्तनते इस्लामिया के लिए ख़तरा बन गई है। हम घर से दूर बे रहम सेहराओं में दुश्मन से बरसरे पैकार हैं। हमारे मुजाहिद लड़ते और मरते हैं। वह भूखे और प्यासे भी लड़ते हैं उन्हें कफ़न नसीब नहीं होते। उनकी लाशें घोड़ों के तले रौंदी जाती और सेहराई लोमड़ियों और गिधों की खूराक बनती हैं। इस्लाम की अज़मत और कौम के वक़ार को जितना वह समझते हैं उतना और कोई नहीं समझ सकता। हमारे ग़ैर फ़ौजी हुक्काम और सरबराहों के खून का एक क़तरा नहीं गिरता। वह मैदाने जंग से बहुत दूर महफ़ूज़ बैठे हैं। यही वजह है कि वह ऐशो इश्रत के आदी हो गये हैं। दुश्मन उन्हें निहायत हसीन और चुलबुली लड़कियों और यूरोप की शराब से अपना मुरीद बना लेता है। हम दीन व ईमान की सरबुलन्दी के लिए मरते हैं और वह ईमान को दुशमन के हाथ बेच कर ऐश करते और उसके हाथ मज़बूत करते हैं।

सुल्तान अय्यूबी ने लिखा कि अब जबकि मैं फ़िलिस्तीन की दहलीज़ पर आ गया हूं और मैं ने फ़िलिस्तीन लिए बग़ैर वापस न जाने का अपना पक्का इरादा कर लिया है। मैं ज़रूरी समझता हूं कि आप (नूरुद्दीन ज़ंगी) ग़ैर फ़ौजी क़्यादत पर कड़ी नज़र रखें। अमीरुल उलमा से कहे कि वह मसाजिद में और हर जगह ऐलान कर दे कि सल्तनते इस्लामिया का सिर्फ़ एक ख़लीफ़ा है और यह बग़दाद की ख़िलाफ़त है। हर मुसलमान पर इस वाहिद ख़लीफ़ा की इताअत फ़र्ज़ है लेकिन खुत्बे में और किसी मस्जिद में ख़लीफ़ा का नाम नहीं लिया जाएगा। अज़ीम नाम सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल सल्लम का है। यह हुक्म भी जारी किया जाए कि आइन्दा जब ख़लीफ़ा या कोई हाकिम किसी दौरे या मोआयने के लिए बाहर निकलेगा तो उसके मुहाफ़िज़ दस्ते के सिवा कोई जलूस उसके साथ नहीं होगा और लोग रास्ते में रुक रुक कर और झुक झुक कर उसे सलाम नहीं करेंगे। सुल्तान अय्यूबी ने सबसे ज़्यादा अहम बात यह लिखी कि शिया सुन्नी तफ़र्क़ा बढ़ता जा रहा है। फ़ात्मी ख़िलाफ़त की मॉज़ूली ने उस तफ़र्क़े में इज़ाफ़ा कर दिया है। यह तफ़रीक़ ख़त्म होनी चाहिए। बेशक ख़िलाफ़त और हुकूमत सुन्नी है लेकिन किसी सुन्नी हाकिम या अहलकार को यह हक़ हासिल नहीं कि वह शियाओं को अपना गुलाम समझे। हुकूमत और फ़ौज में शियाओं को पूरी नुमाइन्दगी दी जाए।

इस किस्म की कुछ और भी इन्क़लाबी तजावीज़ थीं जो सुल्तान अय्यूबी ने नूरुद्दीन ज़ंगी को भेजीं। मोअर्रेख़ीन इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ज़ंगी ने इन पर फ़ौरी तौर पर अमल किया। अपने यहां भी सुल्तान अय्यूबी ने शिया सुन्नी तफ़र्क़ा प्यार व मोहब्बत और अक़्ल व दानिश से मिटाना शुरू कर दिया।

❖

कर्क में सलीबी सुल्तान अय्यूबी पर जवाबी वार करने पर ग़ौर कर रहे थे। उनकी मरकज़ी

कमाम ने कासिदों के ज़रिए अपनी बिखरी हुई फ़ौज को एहकाम भेज दिए कि मुसलमानों से लड़ने की कोशिश न करें बल्कि निकलने की तरकीब करें ताकि जवाबी हमले के लिए ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज बच जाए। उन एहकाम के साथ ही उन्हों ने चालीस जांबाज़ों का एक गिरोह तैय्यार कर लिया जिसे मज़लूम मुसलमानों के बहरूप में शूबक में दाखिल होनाऔर लड़कियों को वहां से निकालना था। सलीबी हुक्मरानों ने इस ख़्याल से कि सुल्तान अय्यूबी मिस्र से ग़ैर हाज़िर है वहां अपने तख़रीबकारों में इज़ाफ़ा करने का भी फ़ैसला कर लिया। वह सूडानियों और फ़ात्मियों को जल्दी मुत्तहिद करके काहिरा पर क़ब्ज़ा करना चाहते थे।

शूबक और कर्क के दरमियानी इलाक़े में बहुत खून बह रहा था। वह सारा इलाक़ा हमवार रेगिस्तान नहीं था। कई जगहों पर मिट्टी और रेतीली सिल्लों के टीले थे और कहीं रेत की गोल टीकरियां थीं जिन में कोई दाख़िल हो जाए तो बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिलता था। ऐसे इलाकों में सलीबी भी मर रहे थे और सुल्तान अय्यूबी के मुजाहीदीन भी। और वहां शूबक के वह ईसाई भी मर रहे थे जो मुसलमानों के डर से शहर से कर्क की सिम्त भाग उठे थे। फ़िज़ा में गिधों के ग़ोल उड़ रहे थे। उनके पेट इंसानी गोश्त से भरे हुए थे। सेहराई दरिंदे लाशों को चीर फाड़ रहे थे और मारके आराई का यह आलम था जैसे उफ़क़ से उफ़क़ तक इंसान एक दूसरे का कुश्त और खून कर रहे हों। इस वसीअ रेगज़ार में कहीं कहीं नख़्लिस्तान भी थे जहां पानी मिल जाता था। थके हारे इंसान, ज़ख़्मी इंसान और प्यास के मारे हुए इंसान वहां जा जाकर गिरते थे।

उम्माद शामी सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की एक छोटे से दस्ते का कमाण्डर था। वह शामी बाशिन्दा था। इसी लिए वह अपना नाम उम्मादा शामी बताया करता था। सलीबियों के ख़िलाफ़ जो जज़्बा हर मुसलमान सिपाही के दिल में था, वह उम्माद शामी में भी था लेकिन उसके जज़्बे में इन्तिक़ाम का क़हर और गज़ब ज़्यादा था। उसके मुताल्लिक़ सब जानते थे कि वह यतीम है और उसका सगा अज़ीज़ रिश्तेदार कोई नहीं लेकिन उसे यह यक़ीन नहीं था कि वह यतीम है या नहीं क्यों कि उसका बाप उसकी आंखों के सामने मरा नहीं था। वह तेरह चौदह साल की उम्र में घर से भागा था। उस वक़्त उसका घर शूबक में था। उसे अच्छी तरह याद था कि उसके बचपन में शूबक पर सलीबियों का क़ब्ज़ा हुआ था और उन्हों ने मुसलमानों का कुश्त व खून शुरू कर दिया था। उसका बचपन सलीबियों की दहशत में गुज़रा था। उसने मुसलमान जंगी क़ैदी भी देखे जिन्हें मार मार कर लाया जा रहा था और उसके सामने दो क़ैदियों के सर काट दिए गये थे क्यों कि वह ज़ख़्मों की वजह से चल नहीं सकते थे। उसने मुसलमान घरों से लड़कियां इग़वा होती देखी थीं और उसने मुसलमानों को बेगार में जाते भी देखा था। शूबक के मुसलमान कहा करते थे कि जब शहर में ईसाई मुसलमानों को बिला वजह पकड़ पकड़ कर कैम्प में ले जाना शुरू कर दें और उनके घरों पर हमले करने लगें तो समझ लें कि उन्हें मुसलमानों के हाथों कहीं शिकस्त हुई है।

उम्माद शामी का घर भी महफ़ूज़ न रहा। उस की एक बहन भी जिसकी उम्र सात आठ साल थी, उसे वह बहन याद थी। बहुत खूबसूरत और गुड़िया सी बच्ची थी, घर में उसका बाप

था, मां थी और एक बड़ा भाई था। एक रोज़ उम्माद की गुड़िया सी बहन बाहर निकल गई और ला पता हो गई। बाप ने तलाश की मगर कहीं न मिली। एक मुसलमान पड़ोसी ने उसे बताया कि उसे ईसाई उठा ले गये हैं। बाप शहर के हाकिम के पास फ़रियाद लेकर गया। ज्यों ही उसने बताया कि वह मुसलमान है, हाकिम उस पर बरस पड़ा और उस पर इल्ज़ाम आएद किया कि वह हुक्मरान क़ौम पर इतना घटिया इल्ज़ाम थोप रहा है। घर आकर बाप ने और उम्माद के बड़े भाई ने ईसाईयों के खिलाफ़ शोर शराबा किया। उसका नतीजा यह हुआ कि रात को उनके घर हमला हुआ। उम्माद ने अपनी मां और बड़े भाई को कत्ल होते देखा। वह बाहर भाग गया और एक मुसलमान के घर जा छुपा। उसके बाद वह अपने घर नहीं गया क्योंकि उस मुसलमान ने उसे इस डर से उसे बाहर न निकलने दिया कि ईसाई उसे भी क़त्ल कर देंगे।

थोड़े दिनों बाद उस मुसलमान ने उसे एक और आदमी के हवाले कर दिया जो उसे चोरी छुपे शहर से बाहर ले गया। सुबह के वक़्त वह एक क़ाफ़िले के साथ जा रहा था। बहुत दिनों की मुसाफ़त के बाद वह शाम पहुंचा। वहां उसे एक अमीर कबीर ताजिर के घर नौकरी मिल गई। अब उसकी यही ज़िन्दगी थी कि नौकरी करे और ज़िन्दा रहे। वह ज़ेहनी तौर पर बालिग़ और बेदार हो गया। यह इन्तिक़ाम का जज़्बा था, उसी जज़्बे के ज़ेरे असर उसे फ़ौजी अच्छे लगते थे। उसने ताजिर की नौकरी छोड़कर किसी फ़ौजी हाकिम के घर में नौकरी कर ली। उम्माद ने उसे बताया कि उस पर क्या बीती है और यह भी बताया कि वह फ़ौज में भरती होना चाहता है।

उस हाकिम ने उसकी परवरिश की और सोलह साल की उम्र में उसे शाम की फ़ौज में भरती करा दिया। वह इन्तिक़ाम के लिए बेताब था। उसे तीन चार मारकों में शरीक होने का मौक़ा मिला जिनमें उसके जौहर सामने आ गये। ग्यारह बारह साल बाद उसे उस फ़ौज के साथ उसे मिस्र रवाना कर दिया गया जो नूरुद्दीन ज़ंगी ने सुल्तान अय्यूबी की मदद के लिए भेजी थी। दो साल मिस्र में गुज़र गये फिर खुदा ने उसकी यह मुराद भी पूरी की कि वह शूब्क पर हमला करने वाली फ़ौज के साथ गया लेकिन उसे उस फ़ौज में रखा गया जिसे रेगज़ार में सलीबियों की फ़ौज पर हमले करने थे। वहां वह सलीबियों के लिए क़हर बना हुआ था। उसका छापा मार सवार दस्ता मशहूर हो गया था। उम्माद शामी अपने सवारों को साथ लिए सेहरा में सलीबियों की मुश्क लेता फिरता और भेड़ियों और चीतों की तरह उन पर झपटता था मगर उसके सीने में जो आग लगी हुई थी वह सर्द नहीं होती थी। एक माह बाद उसके दस्ते में कुल चार सवार रह गये थे, बाक़ी सब शहीद हो गये। एक रात उसने उन चार सवारों से सलीबियों के कमो बेश पचास अफ़राद के दस्ते पर हमला कर दिया। वह सारा दिन छुप छुप कर उनका पीछा करता रहा था। दिन के वक़्त वह चार सिपाहियों से पचास सिपाहियों पर हमला नहीं कर सकता था। उनके तआक़ुब में वह बहुत दूर निकल गया। रात को सलीबी रुक गये और उन्हों ने पड़ाव किया लेकिन बहुत से संतरी बेदार रखे। उम्माद ने आधी रात के वक़्त घोड़ों को ऐड़ लगाई और सोए हुए सलीबियों के दरम्यान से इस तरह गुज़रा कि बरछी

से दाएं बाएं वार करता गया। उसके चारों जांबाज़ों का भी यही अंदाज़ था।

उन्हें जो हिल्ती चीज़ नज़र आई उस पर बरछियों या तलवारों के वार करते अंधेरे में ग़ाएब हो गये। कई सोए हुए सलीबी उनके घोड़ों तले रौंदे गये। संतरियों ने तारीकी में तीर चलाए जो ख़ता गए। आगे जाकर उम्माद ने अपने जांबाज़ सवारों को रोका और उन्हें वहां से आहिस्ता आहिस्ता पीछे लाया। उसने यह भी न सोचा कि दुश्मन बेदार हो चुका है। वह घुड़ सवारों को फिर करीब ले गया और एड़ लगाने का हुक्म दे दिया। अंधेरे में उसे साए से घूमते फिरते नज़र आ रहे थे। पांचों घोड़े सरपट दौड़ते उनके दरमियान से गुज़रे मगर अब वह दुश्मन पर वार करके आगे गये तो वहां पांच के बजाए तीन थे। दो को सलीबी तीरंदाज़ों ने गिरा लिया था।

उम्माद का खून और ज़्यादा जोश में आगया। उसने अपने मुजाहिदों से कहा– "अभी इन्तिकाम लेंगे।" यह उसकी हिमाकत थी। उसने अपने दोनों मुजाहिदों को मोड़ा और सलीबियों के करीब आहिस्ता आहिस्ता आकर हमले का हुक्म दे दिया। अब तो घोड़े भी थक गये थे और दुश्मन पूरी तरह बेदार हो गया था। इस हमले का नतीजा यह हुआ कि उम्माद अकेला रह गया। अब के वह दुश्मन में से निकला तो उसके साथ अप . दो साथियों के बजाए दो सलीबी थे जो उसका तआकुब कर रहे थे। अंधेरे में उसने उन्हें उनकी ललकार से पहचाना वर्ना वह उन्हें अपने साथी समझ रहा था।

वह उसके सर पर पहुंच गये। उन्हों ने उस पर तलवारों से हमला किया। उसके पास लम्बी बरछी थी। दौड़ते घोड़े से उसने दोनों का मुकाबला किया। घोड़ा घुमा घुमा कर आमने सामने आकर मारका लड़ा। लड़ाई ख़ासी लम्बी हो गई और वह दूर हटते चले गये। आख़िर उम्माद ने दोनों सलीबियों को मार लिया और दोनों के घोड़े शूबक भेजने के लिए पकड़ लिए। उनकी तलवारें भी ले लीं मगर उसे यह ख़्याल न रहा कि कहां तक जा पहुंचा है। उसने घोड़े को और अपने आप को आराम देने के लिए एक जगह क़याम किया लेकिन वह सोने से डरता था क्योंकि किसी भी वक़्त और कहीं भी वह दुश्मन के नर्गे में आ सकता था। उसने रात जागते गुज़ार दी। सितारे देखकर उसने यह मालूम कर लिया कि शूबक किस तरफ़ और कर्क किस तरफ़ है और उसे सेहरा में कौन सी जगह जाना है जहां उसे अपना कोई दस्ता मिल जाएगा।

सुबह होते ही वह चल पड़ा। वह सेहराओं में जना पला था। भटकने का कोई ख़तरा नहीं था। वह तजुतर्बाकार छापा मार था, खत्रे को दूर से सूंघने की अहलियत रखता था। उसे दूर दूर सलीबी चार पांच की टोलियों में जाते नज़र आए। अगर उसके पास दो फ़ालतू घोड़े न होते तो किसी टोली पर हमला कर देता। वह बचता बचाता अपनी राह चलता गया। रास्ते में उसे कई जगह घोड़ों और ऊंटों के मुरदार और सलीबी सिपाहियों की लाशें पड़ी हुई नज़र आई जिन्हें गिद्ध और लोमड़ियां खा रही थीं। उनमें उसके अपने साथियों की लाशें भी होंगी। वह चलता गया और सूरज उफ़क पर चला गया। आगे टीलों का इलाक़ा आ गया जिस में से रास्ते चन्द क़दम पर घूमते थे। यहां डर था कि सलीबियों की कोई टोली रात के लिए क़याम

करेंगी। वह सूरज गुरूब होने से पहले वहां से निकल जाना चाहता था। यह डर भी था कि किसी टीले पर कोई तीरंदाज़ न बैठा हो। वह हर तरफ़ और ऊपर देखता चलता गया।

❖

आगे रास्ता दो टीलों के दरम्यान से मुड़ता था। वहां से वह मुड़ा तो अचानक उसे किसी के दौड़ते कदमों की आहट सुनाई दी। कोई आदमी साथ वाले टीले के पीछे छुप गया था। उसने घोड़े की बाग को झटका दिया और एड़ लगाई तेज़ रफ़तार से वह टीले के पीछे गया तो आगे रास्ता एक और टीले ने बन्द कर रखा था। यह जगह एक वसीअ खड्ड बनी हुई थी। उम्माद से कोई बीस क़दम दूर मैले कुचैले से चूगे वाला एक आदमी हाथों और घुटनों के बल टीले पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। उम्माद की तरफ़ उसकी पीठ थी। उस आदमी का सर ढका हुआ था। वह आदमी निहत्ता मालूम होता था। उम्माद ने उसे ललकारा मगर वह टीले पर चढ़ने की कोशिश करता रहा। टीला मुश्किल क़िस्म का था। उम्माद आगे चला गया। उस आदमी ने एक कोशिश और की मगर कहीं हाथ पांव न जमा सका। वह निढाल हो चुका था। टीले से उसकी गिरिफ़्त ढीली हो गई और वह लुढ़कता हुआ उम्माद के घोड़े के क़दमों में आन पड़ा। उसके सर से चूगे की ओढ़नी वाला हिस्सा उतर गया। उम्माद यह देख कर हैरान रह गया कि वह एक जवान लड़की थी और ख़ूबसूरत इतनी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी।

उम्माद घोड़े से उतरा। लड़की ख़ौफ़ ज़दा थी, उसकी रही सही कूव्वत भी ख़ौफ़ ने ख़त्म कर दी थी। वह उठी मगर बैठ गई। उम्माद ने उससे पूछा कि वह कौन है। उसने जवाब दिया– "पानी पिलाओ।" उम्माद ने एक घोड़े से पानी की छागल खोल कर उसे दे दी। उसने बेताबी से पानी पिया और उसकी आंखें बंद होने लगीं। उम्माद ने उसे खाने के लिए कुछ दिया जो उसके पेट में गया तो उसके चेहरे पर ज़िन्दगी के आसार नज़र आने लगे। उम्माद ने उससे कहा– "मुझ से डरो नहीं, बताओ कौन हो?"

"शूबक से अपने ख़ानदान के साथ चली थी।" उसने थकी हारी ज़बान में कहा– "सब मारे गये हैं अकेली रह गई हूं। मुसलमानों ने बीच में हमला कर दिया था।"

"मुझे सच क्यों नहीं बता देती कि तुम कौन हो?" उम्माद ने कहा– "तुम ने जो कुछ कहा है झूठ कहा है।"

"झूठ ही सही।" उसने ख़ौफ़ ज़दा लहजे में कहा– "मुझ पर रहम करो और मुझे कर्क तक पहुंचा दो।"

"शूबक तक।" उम्माद ने कहा– "मैं तुम्हें शूबक ले जा सकता हूं, कर्क नहीं। तुम देख रही हो कि मैं मुसलमान हूं। मैं रास्ते में ईसाई फ़ौज के हाथों मरना नहीं चाहता।"

"फिर मुझे एक घोड़ा दे दो।" लड़की ने कहा– "मैं लड़की हूं अगर रास्ते में किसी के क़ब्ज़े में आ गई तो जानते हो कि मेरा अंजाम क्या होगा।"

"मैं तुम्हें घोड़ा भी नहीं दे सकता, तुम्हें यहां से अकेले रवाना भी नहीं कर सकता।" उम्माद ने कहा– "यह मेरा फ़र्ज़ है कि तुम्हें अपने साथ शूबक ले जाऊं।"

"वहां मुझे किसके हवाले करोगे?"

"अपने हाकिमों के हवाले करूंगा।" उम्माद ने कहा और उसे तसल्ली दी। "तुम्हारे साथ वह सुलूक नहीं होगा जिसका तुम को डर है।"

लड़की कर्क जाने की ज़िद कर रही थी। उम्माद ने उसे बताया कि उन्हें हुक्म मिला है कि शूबक के किसी ईसाई बाशिन्दे को वहां से भागने न दिया जाए। इसके अलावा उसने लड़की को ख़बरदार किया कि वह कर्क तक नहीं पहुंच सकेगी। वह क्यों कि गोरी रंगत की खूबसूरत लड़की थी इस लिए लड़की को यह डर था कि यह मुसलमान फ़ौजी उसे बे आबरू करेगा। उसने सोंचा कि क्यों न उसके साथ आबरू का सौदा करके उससे कहा जाए कि वह उसे घोड़े दे दे। लड़की ने अपना रवय्या बदल लिया और उम्माद से कहा– "मैं बहुत थकी हुई हूं, आज रात यहीं क़याम किया जाए। सुबह शूबक को रवाना हो जाएंगे।" उम्माद भी थका हुआ था, घोड़ों का भी यही हाल था। वह लड़की की भी हालत देख रहा था। उसने वहीं रुकने का फ़ैसला कर लिया। इससे पहले लड़की ने उसे ग़ौर से नहीं देखा था। उसने यही देखा था कि यह बढ़ी हुई दाढ़ी वाला मुसलमान फ़ौजी है जो जिस्म की साख़्त और गर्द से अटे हुए चेहरे से वहशी लगता है। इससे उसे रहम की उम्मीद नहीं थी। अब जबकि उसने कुछ और ही सोंच लिया था, उसने उम्माद को गहरी नज़रों से देखा।

उस वक़्त उम्माद भी उसे गहरी नज़रों से देख रहा था और सोंच रहा था कि इस क़द्र हसीन लड़की का इस सेहरा में अकेले रह जाना, जहां सलीबी और इस्लामी सिपाही लम्बे अर्से से भूखे भेड़ियों की तरह भागते दौड़ते फिर रहे हैं। इसके लिए कितना ख़तरनाक है और यह भी हो सकता है कि इस लड़की पर सिपाही या कमाण्डर आपस में ही लड़ मरें। वह खुद भी फ़रिश्ता नहीं था। उसने लड़की की आंखों में झांका, उस वक़्त लड़की उसे देख रही थी। उम्माद ने कोशिश कि कि वह लड़की से नज़रें फेर ले मगर लड़की की आंखों ने उसकी आंखो को गिरिफ़्तार कर लिया था। उसने अपने जिस्म के अंदर कोई ऐसा जज़्बा महसूस किया जो उसके लिए अजनबी था। उसने एक बार नज़रें झुका लीं मगर आंखें अपने आप फिर ऊपर उठ गईं और वह बेचैन सा हाने लगा। लड़की के होंठों पर हलकी सी मुस्कुराहट आ गई, उम्माद ने आहिस्ता से कहा– "तुम शायद कुंवारी हो?"

"हां।" लड़की ने जवाब दिया और ज़रा सा भी सोंचे बग़ैर कह दिया। "मेरा दुनिया में कोई नहीं रहा। अगर मेरे साथ कर्क चले चलो तो मैं तुम्हारे साथ शादी कर लूंगी।"

उम्माद बेदार सा होगया, उसने कहा– "फिर तुम मुझे कहोगी कि अपना मज़हब तबदील कर लो जो मैं नहीं कर सकूंगा। तुम शूबक चल कर मेरे साथ शादी करो और मुसलमान हो जाओ।"

"मुझे बहर हाल कर्क जाना है।" लड़की ने कहा– "अगर मेरे साथ वहां तक चलोगे तो तुम्हारी दुन्यिा बदल जाएगी।"

लड़की ने सौदा बाज़ी शुरू कर दी थी लेकिन उम्माद कुछ और ही सोंच रहा था। यह सोंच ऐसी थी जिसे वह समझ भी नहीं सकता था। वह बार बार लड़की के चेहरे, उसके रेशमी

बालों और आंखों को देखता और सर झुका कर सोंच में खो जाता था। लड़की की जैसे वह कोई बात सुन ही नहीं रहा था। थोड़ी देर बाद लड़की का चेहरा गहरी शाम की तारीकी में छुप गया। उसने घोड़े के साथ बंधे हुए थैले में से खाने की दो तीन चीज़ें निकालीं, लड़की को दीं और खुद भी खाई। उसका जिस्म इस क़दर निढाल था कि ज्यों ही लेटा उसकी आंख लग गई।

❖

आधी रात के बहुत देर बाद लड़की ने करवट बदली और उसकी आंख खुल गई, उसने उम्माद को देखा। वह खर्राटे ले रहा था। उन से चन्द क़दम दूर घोड़े खड़े थे। रात के पिछले पहर का चांद टीलों के ऊपर आ गया था। सेहराई चांदनी आईने की तरह शफ़्फ़ाफ़ थी। लड़की ने घोड़ों को देखा। उम्माद को इतना होश भी न था कि सोने से पहले घोड़ों की ज़ीने उतार देता। लड़की ने घोड़े तैय्यार देखे, उम्माद को गहरी नींद सोए देखा और यह भी महसूस किया कि पेट में खुराक औरपानी जाने से उसका जिस्म तरो ताज़ा हो गया है तो उसने अपने चोगे के अंदर हाथ डाला, जब उसका हाथ बाहर आया तो उसकी इतनी दिलकश उंगलियों ने एक खंजर को मज़बूती से पकड़ रखा था। चांदनी में उसे उम्माद का चेहरा नज़र आ रहा था। वह तो बेहोशी की नींद सोया हुआ था। लड़की ने चांदनी में चमकते हुए खंजर को देखा और एक बार फिर उम्माद के चेहरे पर नज़र डाली। उम्माद आहिस्ता से कुछ बड़ बड़ाया। वह नींद में बोल रहा था। लड़की यही समझ सकी कि वह घर वालों को याद कर रहा है।

लड़की ने उम्माद के सीने को ग़ौर से देखा और अंदाज़ा किया कि उसका दिल कहां है। वह एक से दूसरा वार नहीं करना चाहती थी। यह वार दिल पर होना चाहिए था ताकि उम्माद फ़ौरन मर जाए वर्ना वह मरते मरते भी उसे मार डाले गा। लड़की ने खंजर को और ज़्यादा मज़बूती से पकड़ लिया और घोड़ों को देखा। उसने दिल ही दिल में पूरा अमल दोहराया। वह खंजर दिल में उतार देगी और भाग कर एक घोड़े पर सवार हो जाएगी और घोड़े को ऐड़ लगादेगी। वह सिपाही नहीं थी वर्ना वह बिला सोंचे समझे खंजर मार कर उम्माद को ख़त्म कर देती। यही वजह काफ़ी थी कि उम्माद मुसलमान है और उसका दुश्मन है मगर वह बार बार उम्माद के चेहरे पर नज़रें गाड़ लेती थी और जब उसे क़त्ल करने के लिए खंजर को मज़बूती से पकड़ती थी तो उसका दिल धड़कने लगता था। उम्माद एक बार फिर बड़ बड़ाया। अब के उसके अल्फ़ाज़ ज़रा साफ़ थे। वह ख़्वाब में अपने घर पहुंचा हुआ था। उसने मां का नाम लिया, बहन को भी याद किया और कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ कहे जैसे उन्हें क़त्ल कर दिया गया हो और उम्माद क़ातिलों को ढूंड रहा था।

कोई एहसास या जज़्बा लड़की को रोक रहा था। ख़ौफ़ भी हो सकता था। यह क़त्ल न करने का जज़्बा भी हो सकता था। लड़की बेचैन हो गई, उसने यह इरादा किया कि क़त्ल न करे। आहिस्ता से उठे, घोड़े पर बैठे और आहिस्ता आहिस्ता इस खड्ड से निकल जाए। वह उठी और खंजर हाथ में लिए घोड़े की तरफ़ चल पड़ी मगर रेत ने उसके पांव जकड़ लिए।

उसने रुक कर उम्माद को देखा तो अचानक उसके ज़ेहन में यह ख़्याल आया कि इस मर्द ने इतनी परवाह नहीं की कि उसे एक जवान लड़की तन्हाई में मिल गई है और उसने यह भी नहीं सोंचा कि यह लड़की ईसाई है जो उसे सोते में क़त्ल कर सकती है और उसने घोड़े की ज़ीने भी नहीं उतारीं और उसने अपनी बरछी और तलवार भी एहतियात से नही रखी। क्यों? क्या उसे मुझ पर भरोसा था? क्या यह इतना ही बेहिस है कि मेरी जवानी उसके अंदर कोई जज़्बा बेदार न कर सकी? उसे ऐसे महसूस होने लगा जैसे इस आदमी ने उसे घोड़े से ज़ियादा कीमती नहीं सम्झा। अब आहिस्त आहिस्ता घोड़े तक पहुंची। घोड़ा हिनहिनाया। लड़की ने घबराकर उम्माद को देखा। घोड़े की आवाज़ पर भी उसकी आंख न खुली।

वह तीन घोड़े की ओट में खड़ी एक घोड़े पर सवार होने का इरादा कर रही थी कि उसे अपने अक़्ब से अवाज़ सुनाई दी– "कौन हो तुम?" लड़की ने चौंक कर पीछे देखा। एक आदमी ने मुंह से विसिल बजाई और कहा– "हमारी यह किस्मत?" वे दो थे। दूसरा हंसा। लड़की ज़बान से पहचान गई कि यह सलीबी हैं। एक ने लड़की को बाजू से पकड़ा और अपनी तरफ़ खींचा। लड़की ने कहा– "मैं सलीबी हूं।" दोनों आदमी हंस पड़े और एक ने कहा–"फिर तुम सालिम हमारी हो, आओ।"

"ज़रा ठहरो और मेरी बात सुना।" उसने कहा–"मैं शूबक से फ़रार हो कर आई हूं। मेरा नाम आयोना है। मैं जासूसी के शोबे की हूं। कर्क जा रही हूं। वह देखो एक मुसलमान सिपाही सोया हुआ है। उसने मुझे पकड़ लिया था। मैं उसे सोता छोड़ कर भाग रही हूं, मेरी मदद करो। यह घोड़े संभालो और मुझे कर्क पहुंचाओ।" उसने उन्हें अच्छी तरह समझाया कि वह सलीबी फ़ौज के लिए कितनी क़ीमती और कारामद लड़की है।

एक वहशी ने उसे वहशियों की तरह बाज़ुओं में जकड़ लिया और कहा– "जहां कहोगी पहुंचा देंगे। दूसरे ने एक बेहूदा बात कह दी और दोनो उसे एक तरफ़ को धकेलने लगे। वह सलीबी फ़ौज के प्यादा सिपाही थे जो मुसलमान छापा मारों से भागते फिर रहे थे। रात वह छुप कर ज़रा आराम करना चाहते थे। ऐसी ख़ूबसूरत लड़की ने उन्हें हैवान बना दिया। लड़की ने जब देखा कि उन्हें सलीब का भी कोई ख़्याल नहीं तो उसने इस उम्मीद पर बुलन्द आवाज़ से बोलना शुरू कर दिया कि उम्माद जाग उठेगा। उसे सिपाहियों ने घसीटना शुरू कर दिया।

अचानक एक ने घबराई हुई आवाज़ में अपने साथी का नाम लेकर कहा– "बचो।" मगर उसके बचने से पहले ही उम्माद की बरछी उसकी पीठ में उतर चुकी थी। दूसरे ने तलवार सौंत ली। उस वक़्त लड़की ने देखा कि उस के हाथ में ख़ंजर है। उसने ख़ंजर सलीबी सिपाही के पहलू में घोंप दिया। यके बाद दीगरे दो और वार किये और चिल्ला चिल्ला कर कहा– "तुम्हें ज़िन्दा रहने का कोई हक़ नहीं, तुम सलीब के नाम पर ग़लत दाग़ हो।"

जब दोनो सलीबी ठंडे हो गये तो लड़की बेक़ाबू हो कर रोने लगी। उम्माद ने उसे बहलाया और कहा– "अब यहां रुकना ठीक नहीं। हो सकता है कि ज़्यादा सिपाही इधर आ निकलें। हम अभी शूबक को रवाना हो जाते हैं।" उसने लड़की से पूछा–"उन्हों ने तुम्हें

जगाया था।?"

"नहीं।" लड़की ने जवाब दिया– "मैं जाग रही थी और घोड़ों के पास खड़ी थी।"

"वहां क्यो?"

"घोड़े पर सवार होकर भागने के लिए।" लड़की ने ऐतराफ़ करते हुए कहा– "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाना चाहती थी।"

"तुम ने ख़ंजर कहां से लिया है?"

"मेरे पास था।" लड़की ने जवाब दिया– "मैं ने पहले ही हाथ में ले रखा था।"

"पहले ही हाथ में क्यों ले रखा था?" उम्माद ने पूछा– "शायद इसलिए कि मैं जाग उठूं तो तुम मुझे कत्ल कर दो।"

लड़की ने जवाब न दिया। उम्माद को देखती रही। कुछ देर बाद बोली– "मैं तुम्हें कत्ल करके भागना चाहती थी। पेश्तर इसके कि तुम मुझे कत्ल करो। मैं तुम्हें बता देना चाहती हूं कि मैं ने यह खन्जर तुम्हें कत्ल करनेके लिए खोला था लेकिन हाथ उठा नहीं। मैं यह नहीं बता सकती कि मैं ने यह ख़ंजर तुम्हारे दिल में क्यों नहीं उतारा। तुम्हारी ज़िंदगी मेरे हाथ में थी। मैं बुज़दिल नहीं। फिर भी मैं तुम्हें कत्ल न कर सकी। मैं कोई वजह बयान नहीं कर सकती। शायद तुम कुछ बता सको।"

"ज़िंदगी और मौत अल्लाह के हाथ में है।" उम्माद ने कहा– "तुम्हारा हाथ मेरे खुदा ने रोका था और तुम्हारी इज्ज़त खुदा ने बचाई है। मेरा वजूद तो एक बहाना और एक सबब था। किसी घोड़े पर सवार हो जाओ और चलो।"

लड़की ने खन्जर उम्माद की तरफ़ बढ़ा कर कहा–"मेरा खन्जर अपने पास रख लो, वर्ना मैं तुम्हें कत्ल कर दूंगी।"

"तुम मेरी तलवार भी अपने पास रख लो।" उम्माद ने कहा– "तुम मुझे कत्ल नहीं कर सकोगी।"

यह मज़ाक नहीं था। दोनो पर संजीदगी तारी थी। वह घोड़ों पर सवार हुए और तीसरा घोड़ा साथ लेकर चल पड़े।

❖

सूरज निकलने तक वह उस इलाक़े में पहुंच चुके थे जहां कोई सलीबी सिपाही नज़र नहीं आता था। उम्माद की अपनी फौज के चंद सिपाही उसे नज़र आए, जिन के साथ उसने कुछ बातें कीं और चलते गये। अप्रेल का सूरज बहुत ही गर्म था। वह मुहं और सर लपेटे हुए चलते गये। दूर से रेत पानी के समुन्द्र की तरह चमकती हुई नज़र आती थी और बाएं सिम्त रेतीली सिल्लों की पहाड़ियां नज़र आ रही थीं। सफ़र के दौरान वह आपस में कोई बात न कर सके। गर्मी के अलावा उन लाशों ने भी उन पर ख़ामोशी तारी कर रखी थी जो उन्हें इधर उधर बिखरी हुई नज़र आ रही थीं। कोई एक भी लाश सालिम नहीं थी। गिद्धों और दरिंदों ने उनके आज़ा अलग कर दिए थे। बाज़ लाशों की सिर्फ़ हड्डियां और खोपड़ियां रह गई थीं। उम्माद ने लड़की से कहा– "यह तुम्हारी कौम के सिपाही हैं। यह उन बादशाहों की ख़्वाहिशों का शिकर

हो गये हैं जो इस्लामी सल्तनत को ख़त्म करके बरतानिया, फ्रांस, जर्मनी, इटली और न जाने कहा कहां से आए हैं।"

लड़की ख़ामोश रही। वह बार बार उम्माद को देखती थी और आह भर कर सर झुका लेती थी। उम्माद ने सिल्लों की पहाड़ियों का रुख़ कर लिया, उसे मालूम था कि वहां पानी ज़रूर होगा और साया भी। सूरज उनके पीछे जाने लगा तो वह पहाड़ियों में पहुंच गये, तलाश के बाद उन्हें हरी झाड़ियां और घास नज़र आ गई। एक जगह से पहाड़ी का दामन फटा हुआ था। वहां पानी था। वहां घोड़ों से उतरे, पहले खुद पानी पिया और फिर घोड़ों को पानी पीने के लिए छोड़ दिया और साए में बैठ गये।

"तुम कौन हो?" लड़की ने उससे पूछा– "तुम्हारा नाम क्या है? कहां के रहने वाले हो?"

"मैं मुसलमान हूं" उम्माद ने जवाब दिया–"मेरा नाम उम्माद है और मैं शामी हूं।"

"रात ख़्वाब में तुम किसे याद कर रहे थे?"

"याद नहीं रहा।" उम्माद ने कहा– "मैं शायद ख़्वाब में बोल रहा हूंगा, मेरे साथी मुझे बताया करते हैं कि मैं ख़्वाब में बोला करता हूं।"

"तुम्हारी मां है?– बहन है? " लड़की ने पूछा और कहा– "तुम शायद उन्हें याद कर रहे थे।"

"थीं कभी।" उम्माद ने आह भर कर कहा–"अब उन्हें ख़्वाब में देखा करता हूं।"

लड़की ने उससे सारी बात पूछने की बहुत कोशिश की लेकिन उम्माद ने और कुछ नहीं बताया। उसने लड़की से कहा– "तुमने अपने मुताल्लिक झूठ बोला था, मुझे पूछने की कोई ज़रूरत नहीं कि तुम कौन हो। मैं तुम्हें मुताअल्लिका हाकिम के हवाले करके वापस आ जाऊंगा। अगर सच बोल सको तो अपने मुताअल्लिक कुछ बता दो लेकिन यह न कहना कि तुम उन सलीबी लड़कियों में से नहीं हो जो हमारे मुल्क में जासूसी के लिए आती हैं।"

"तुम ठीक कहते हो।" लड़की ने कहा–"मैं जासूस लड़की हूं, मेरा नाम अयोना है।"

"तुम्हारे मां बाप को मालूम है कि तुम्हारा काम किस किस्म का है?" उम्माद ने पूछा।

"मेरे मां बाप नहीं है।" अयोना ने जवाब दिया–"मैं ने उनकी सूरत भी नहीं देखी। मेरा मुहकमा मेरी मां और उस मुहकमे का हाकिम हरमन मेरा बाप है।" उसने यह बात यहीं पर ख़त्म कर दी और कहा–"मेरी एक साथी लड़की ने एक मुसलमान सिपाही लड़के को बचाने के लिए ज़हर पी लिया था। मैं उस वक़्त बहुत हैरान हुई थी कि कोई सलीबी लड़की एक मुसलमान के लिए इतनी बड़ी कुर्बानी कर सकती है? मैं आज महसूस कर रही हूं कि ऐसा हो सकता है। पता चला था कि उस मुसलमान सिपाही ने भी तुम्हारी तरह उस लड़की को डाकुओं से लड़कर बचाया, खुद ज़ख़्मी हुआ और लड़की को शूबक तक पहुंचा दिया था। तुम्हारी तरह उसने भी ध्यान नहीं दिया था कि वह लड़की कितनी खूबसूरत है। लोज़ीना बहुत खूबसतरत लड़की थी। मैं यह कह सकती हूं कि मैं तुम्हारी ख़ातिर अपनी जान कुर्बान कर दूंगी।"

"मैं ने अपना फ़र्ज़ अदा किया है।" उम्माद ने कहा– "हम लोग हुक्म के पाबन्द होते हैं।"

"शायद यह जज़्बात का असर है कि मैं ऐसा महसूस करती हूं जैसे मैं ने पहले भी तुम्हें देखा है।"

"देखा होगा।" उम्माद ने कहा– "तुम मिस्र गई होगी। वहां देखा होगा।"

"मैं मिस्र ज़रूर गई हूं।" लड़की ने कहा– "तुम्हें नहीं देखा था।" उसने मुस्कुरा कर पूछा– "मेरे मुताल्लिक तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या मैं खूबसूरत नहीं हूं।"

"तुम्हारी खूबसूरती से मैं ने इंकार नहीं किया।" उम्माद ने संजीदगी से कहा– "मैं समझ गया हूं तुमने यह सवाल क्यों किया है। तुम ज़रूर हैरान होगी कि मैं ने तुम्हारे साथ वह सुलूक क्यों नहीं किया है जो तुम्हारी सलीब के दो सिपाहियों ने तुम्हारे साथ करना चाहा था। हो सकता है कि तुम्हारे दिल में यह ख़ौफ़ अभी तक मौजूद हो कि मैं तुम्हें धोखा दे रहा हूं और तुम्हें शूबक ले जाकर ख़राब करूंगा या तुम्हारे साथ तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ शादी कर लूंगा या तुम्हें बेच डालूंगा। मैं तुम्हारा यह ख़ौफ़ दूर करना ज़रूरी समझता हूं। लड़की मेरे मज़हब की हो या किसी दूसरे मज़हब की, मैं किसी लड़की को बुरी नज़र से देख ही नहीं सकता। उसकी वजह यह है कि मैं जब तेरह चौदह साल का था तो मेरी एक छोटी सी बहन इग़वा हो गई थी। उसकी उमर छः सात साल थी। सोलह साल गुज़र गये हैं । उसे शूबक के ईसाई उठा ले गये थे। मैं नहीं जातना कि वह ज़िन्दा है या मर गईहै। अगर ज़िन्दा है तो किसी अमीर के हरम में होगी या तुम्हारी तरह जासूसी करती फिर रही होगी। मैं जिस लड़की को देखता हूं उसे अपनी बहन समझ लेता हूं। उसे बुरी नज़र से इस लिए नहीं देखता कि वह मेरी गुमशुदा बहन न हो। मैं तुम्हें सिर्फ़ इसलिए शूबक ले जा रहा हूं कि महफ़ूज़ रहो। मैं जानता था कि सेहरा में अकेले जाने और पैदल चलने से तुम्हारा क्या हशर होता और तुम किसी के हाथ चढ़ जातीं तो तुम्हारा हाल वही होता जो तुम्हारे अपने सलीबी भाई करने लगे थे। मुझे अपनी खूबसूरती का एहसास न दिलाओ। मैं इस एहसास के लिहाज़ से मुर्दा हूं। मुझे लज़्ज़त इन सेहराओं में सलीबियों के तआक़ुब में घोड़ा दौड़ाते और उनका खून बहाते मिलती है।"

लड़की उसे अजीब सी नज़रों से देख रही थी। उसकी आंखों में प्यास का तास्सुर था। उसके साथ ऐसी बातें किसी ने नहीं की थीं। उसे बे हयाई और अय्यारी के सबक़ दिए गये थे और उसकी बातों और चाल ढाल में बड़ी मेहनत से जिन्सी कशिश पैदा की गई थी। उसे एक बड़ा ही खूबसूरत फ़रेब बनाया गया था। उस पर हुस्न और शराब का नशा तारी किया गया था। उसे इस्मत के मोती से महरूम रखा गया था और वह इस ट्रेनिंग के बाद अपनी साथी लड़कियों की तरह अपने आप को मर्दों के दिलों पर राज करने वाली शहज़ादी समझने लगी थी। उसे यह भी याद नहीं रहा था कि उसका घर कहां है और उसके मां बाप कैसे थे। उम्माद की जज़्बाती बातों ने उसकीज़ात में एक औरत के जज़्बात पैदा कर दिए। वह गहरी सोंच के आलम में खो गई। उम्माद से जैसे वह बे ताल्लुक हो गई हो।

उसने गहरी सोंच के आलम में कहा– " एक डरावने ख़्वाब की तरह याद आता है कि मुझे एक घर से उठाया गया था। मुझे याद नहीं आ रहा उस वक़्त मेरी उम्र क्या थी।" उसने अपने बालों में दोनों हाथ फेरे और बालों को दोनों मुट्ठियों में लेकर झिंजोड़ा जैसे पूरानी यादों को

बेदार करने की कोशिश कर रही हो। उसने उकता कर काह– "कुछ याद नहीं आता, मेरा माज़ी शराब और ऐशो इश्रत और हसीन अय्यारियों में गुम हो गया है। मैं ने कभी भी नहीं सोंचा कि मेरे वालदेन कौन थे और कैसे थे। मुझे कभी मां बाप की ज़रूरत महसूस हुई ही नहीं। मेरे अंदर जज़्बात थे ही नहीं। मुझे मालूम हीनहीं कि मर्द बाप और भाई भी हो सकता है। मर्द मुझे अपनी तफ़रीह के इस्तेमाल की चीज़ समझते हैं लेकिन मैं मर्दों को इस्तेमाल किया करती हूं। जिस पर मेरी खूबसूरती और मेरी जवानी का नशा तारी न हो उसे मैं हशीश और शराब से अपना गुलाम बना लिया करती हूं। मगर अब तुम ने जो बातें की हैं उन्हों ने मुझ में हिस बेदार कर दी है जो मां, बाप, बहन और भाई का प्यार मांगती है।"

उसकी बेचैनी बढ़ती गई। वह रुक रुक कर बोलती रही फिर बिल्कुल ही चुप हो गइ। कभी उम्माद को टिक टिकी बांध कर देखने लगती और कभी अपने सर पर हाथ रख कर अपने बाल मुट्ठी में लेकर झिंजोड़ने लगती। वह दर असल गुमशुदा माज़ी और हाल के दरम्यान भटक गई थी। उम्माद ने जब उससे कहा कि उठो चलें तो वह भोले भाले मासूम से बच्चे की तरह उसके साथ चल पड़ी। उनके घोड़े उन्हें पहाड़ी इलाके से बहुत दूर ले गये तो भी वह उम्माद को देख रही थी। सिर्फ़ एक बार उसने हंस कर कहा– "मर्द की बातों और वादों पर मैं ने कभी ऐतबार नहीं किया। मैं समझ नही सकती कि मैं क्यों महसूस कर रही हूं कि मुझे तुम्हारे साथ जाना चाहिए।" उम्माद ने उसकी तरफ़ देखा और मुस्कुरा दिया।

❖

वह जब शूबक के दरवाज़े पर पहुंचे तो अगले रोज़ का सूरज तुलू हो रहा था। वह सेहरा में एक और रात गुज़ार आए थे। उम्माद लड़की को जहां ले जाना चाहता था उस जगह के मुताअल्लिक़ पूछ कर वह चल पड़ा। घोड़े शहर में से गुज़र रहे थे। लोग अयोना को रुक रुक कर देखते थे। चलते चलते उम्माद ने एक मकान के सामने घोड़ा रोक लिया और बंद दरवाज़े को देखने लगा। अयोना ने उस से पूछा– "यहां क्यों रुक गये?" उसने जैसे कुछ सुना ही न हो। दरवाज़े के क़रीब जाकर घोड़े पर बैठ बैठे उसने दरवाज़े पर आहिस्ता आहिस्ता दो तीन ठोकरें मारीं। एक बुज़ुर्ग सूरत इंसान ने दरवाज़ा खोला।

"यहां कौन रहता है?" उम्माद ने अरबी ज़बान में पूछा।

"कोई नहीं।" बूढ़े ने जवाब दिया– "ईसाईयों का एक ख़ानदान रहता था। हमारी फ़ौज आ गई तो पूरा ख़ानदान भाग गया है।"

"अब आप ने इस पर कब्ज़ा कर लिया है?"

बूढ़ा डर गया। उसने देखा कि यह सवार फ़ौजी है और उससे बाज़ पुर्स कर रहा है कि ईसाई के मकान पर उसने क्यों कब्ज़ा कर लिया है जब कि सुल्तान अय्यूबी ने मुनादी के ज़रिए हुक्म जारी किया है कि किसी मुसलमान की तरफ़ से किसी ईसाई को कोई तकलीफ़ न पहुंचे वर्ना सख़्त सज़ा दी जाएगी। बूढ़े ने कहा– "मैं ने कब्ज़ा नहीं किया, इसकी हिफ़ाज़त के लिए यहां आ गया हूं। मैं इसे बिल्कुल बंद कर दूंगा। इसका मालिक ज़िन्दा है। वह मुसलमान है और पन्द्रह सोलह साल से बेगार कैम्प में पड़ा है।"

"क्या अमीरे मिस्र ने उन्हें कैम्प से रिहा नहीं किया?" उम्माद ने पूछा।

"वहां के मुसलमान अब आज़ाद हैं लेकिन अभी कैम्प में ही हैं।" बूढ़े ने जवाब दिया– "उन सब की हालत इतनी बुरी है कि काबिले एहतराम सालारे आज़म अय्यूबी ने उनके लिए दूध, गोश्त, दवाईयों और निहायत अच्छे रहन सहन का इन्तेज़ाम वहीं कर दिया है। बहुत से तबीब उनकी देख भाल कर रहे हैं। उनमें जिसकी सेहत बहाल हो जाती है उसे घर भेज दिया जाता है। वहां जो रहते हैं उन्हें उनके रिश्तेदार वहीं मिलने जाते हैं। इस मकान का मालिक भी वहीं है। एक तो उसका बुढ़ापा है और दूसरे कैम्प की पन्द्रह सोलह सालों की अज़ियतें। बेचारा सिर्फ़ ज़िन्दा है। मैं उसे देखने जाया करता हूं। उम्मीद है सेहतयाब हो जाएगा। मैं ने उसे बता दिया था कि उसका मकान ख़ाली हो गया है।"

"उसके रिश्तेदार कहां हैं?" उम्माद ने पूछा।

"कोई भी ज़िन्दा नहीं।" बूढ़े ने जवाब दिया और चार घर छोड़ कर एक मकान की तरफ़ इशारा करके कहा– "यह मेरा ज़ाती मकान है। मैं उन लोगों का सिर्फ़ पड़ोसी था। आप मुझे उनका रिश्तेदार कह सकते हैं।"

उम्माद यह पूछ कर कि अंदर औरतें नहीं हैं घोड़े से उतर कर अन्दर चला गया। कमरों में गया, दीवारों पर हाथ फेरा। अयोना भी अंदर चली गई। उसने उम्माद को देखा। वह आंसू पोंछ रहा था। अयोना ने आंसू की वजह पूछी तो उसने जवाब दिया– "अपने बचपन को ढूंढ रहा हूं। मैं इस घर से भागा था। यह मेरा घर है।" उसके आंसू बहने लगे। उसने बूढ़े से पूछा–"इनके रिश्तेदार मर गये हैं? इनकी कोई औलाद भी थी।"

"सिर्फ़ एक लड़का बचा था जो ईसाई डाकुओं से बचकर मेरे घर आ गया था।" बूढ़े ने जवाब दिया– "उसे मैं ने शाम रवाना कर दिया था। अगर यहां रहता तो मारा जाता।"

उम्माद को वह रात याद आ गई। जब वह इसघर से भाग कर पड़ोसी के घर जाकर छुपा था। वह यही पड़ोसी था मगर उसने बूढ़े को बताया नहीं कि वह लड़का जिसे उसने शूबक से शाम को रवाना कर दिया था वह यही जवान है जिसे वह यह कहानी सुना रहा है। उम्माद के लिए जज़्बात पर क़ाबू पाना मुहाल हो गया लेकिन वह सख़्त जान फ़ौजी था। उसने बूढ़े से कहा–"मैं इस मकान के मालिक से मिलना चाहता हूं। मुझे उनका नाम बता दो।" बूढ़े ने उसे उसके बाप का नाम बता दिया। उम्माद को अपने बाप का नाम अच्छी तरह याद था।

"उस लड़के की एक बहन थी।" बूढ़े ने कहा– "बहुत छोटी थी, उसे ईसाईयों ने इग़वा कर लिया था। उसी ज़िम्न में इस घर के सारे अफ़राद ईसाईयों के हाथों क़त्ल हो गये।"

"अयोना!" उम्माद ने लड़की से कहा–"अपनी मुकद्दस सलीब के परिस्तारों के करतूत सुन रही हो?"

अयोना ने कोई जवाब न दिया। वह छत को देखने लगी। उसने कमरे के दरवाज़े के एक किवाड़ को बंद किया और उसकी उल्टी तरफ़ देखने लगी। किवाड़ पर तीन चार छोटी छोटी और गहरी लकीरें खुदी हुई थीं। वह बैठ कर उन लकीरों को बड़े ग़ौर से देखने लगी। उम्माद उसे देख रहा था। अयोना लकीरों पर हाथ फेरने लगी। वह उठी और दूसरे कमरे में चली

गई। वहां भी किवाड़ों पर हाथ फेर कर कुछ ढूंडने लगी। उम्माद ने जाकर उससे पूछा– "क्या देख रही हो?"

लड़की मुस्कुराई और बोली– "तुम्हारी तरह मैं भी अपना बचपन ढूंढ रही हूं।" उसने उम्माद से पूछा– "यह तुम्हारा घर था? तुम यहीं से भागे थे?"

"यहीं से।" उम्माद ने जवाब दिया और उसे सुना दिया कि किस तरह उनके घर पर ईसाईयों ने हमला किया और उसकी मां और बड़े भाई को क़त्ल कर दिया था। उम्माद भाग गया और वह आज तक यह समझता रहा कि उसका बाप भी क़त्ल हो गया है लेकिन यह बूढ़ा बताता है कि बाप कैम्प में ज़िन्दा है।"

"तुम ने उस बूढ़े को बता दिया है कि वह लड़के तुम ही हो जिसे उसने पनाह दी थी?"

"मैं बताना नहीं चाहता।" उसने तज़बज़ुब के आलम में कहा।

आयोना उसे बड़ी ग़ौर से देखने लगी और बूढ़ा उन दोनों को देख देख कर हैरान हो रहा था कि यह दोनों यहां क्या देख रहे हैं। उम्माद बचपन की यादों में गुम हो गया था। बूढ़े ने पूछा– "मेरे लिए क्या हुक्म है?"

उम्माद चौंका और हुक्म देने के लहज़े में बोला–"इस मकान को अपनी निगरानी में रखें। यह आप की तहवील में है। उसने आयोना से कहा– "आओ चलें।"

"क्या तुम अपने बाप से नहीं मिलोगे?" आयोना ने उससे पूछा।

"पहले अपना फ़र्ज़ अदा कर लूं।" उम्माद ने जवाब दिया– "मुझे रेगिस्तान में मेरा कमाण्डर ढूंड रहा होगा। वह मुझे मुर्दा क़रार दे चुके होंगे। वहां मेरी ज़रूरत है। आओ मेरे साथ आओ। मैं यह अमानत किसी के हवाले कर दूं।"

❖

"लड़कियां लड़कियां लड़कियां।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने शगुफ़्ता लहज़े में अली बिन सुफ़ियान से कहा– "क्या यह कम्बख़्त सलीबी मेरे रास्ते में लड़कियों की दीवार खड़ी करना चाहते हैं? क्या वह लड़कियों को मेरे सामने नचा कर मुझ से शूबक का क़िला ले लेंगे?"

"अमीरे मोहतरम!" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "आप अपनी ही बातों की तरदीद कर रहे हैं। यह लड़कियां दीवार नहीं बन सकतीं। दीमक बन चुकी हैं और दीमक का काम कर रही हैं। आप के और मोहतरम नूरुद्दीन ज़ंगी के दरम्यान ग़लतफ़हमी पैदा करने की कोशिश लड़कियों के हाथ कराई गई है और उन लड़कियों ने हशीश और शराब के ज़रिए हमारे मुसलमान हुक्काम और उमरा को इस्तेमाल किया है।"

"यह वही मौज़ू है जिस पर हम सौ बार बात कर चुके हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मुझे उन लड़कियों के मुताल्लिक़ बताओ। यह तो मालूम हो चुका है कि यह आठों जासूस हैं। उन्हों ने अब तक कोई नया इन्क़शाफ़ किया है या नहीं।"

"उन्हों ने बताया है कि शूबक में सलीबी जासूस और तख़रीबकार मौजूद हैं।" अली बिन सुफ़ियान ने जवाब दिया– "लेकिन उनमें से किसी की भी निशान देही नहीं हो सकती, क्यों

कि उन के घरों और ठिकानो का इल्म नहीं। इनमें से तीन मिस्र में कुछ वक़्त गुज़ार आई हैं। वहां उन्हों ने जो काम किया है वह आप को बताया जा चुका है।"

"क्या वह कैद ख़ाने में हैं?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"नहीं।" अली बिन सफियान ने जवाब दिया। उसने कहा– "वह अपनी पुरानी जगह रखी गई हैं। उन पर पहरा है।"

इतने में दरबान अन्दर आया। उसने कहा– "उम्माद शामी नाम का एक ओहदे दार एक सलीबी लड़की को साथ लाया है। कहता है कि उसे उसने कर्क के रास्ते से पकड़ा है और यह लड़की जासूस है।"

"दोनों को अन्दर भेज दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

दरबान के जाते ही उम्माद और आयोना अन्दर आए। सुल्तान अय्यूबी ने उम्माद से कहा– "मालूम होता है कि बहुत लम्बी मुसाफ़त से आए हो। तुम किस के साथ हो?"

"मैं शामी फ़ौज में हूं।" उम्माद ने जवाब दिया– "मेरे कमाण्डर का नाम एहतशाम इब्ने मुहम्मद है और मैं अल्बर्क़ दस्ते का ओहदे दार हूं।"

"अल्बर्क़ किस हाल में है?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा और अली बिन सुफियान से कहा– "अल्बर्क़ फ़िल वाके बर्क़ है। हम ने जब सूडानियों पर शबखून मारे थे तो अल्बर्क़ क़यादत कर रहा था। सेहराई छापों में उसकी नज़ीर नहीं मिलती।"

"सालारे आज़म!" उम्माद ने कहा– "आधा दस्ता अल्लाह के नाम पर कुर्बान हो चुका है। मेरे गिरोह में से सिर्फ़ मैं। रह गया हूं।"

"तुम ने इतनी जाने ज़ाय तो नहीं की?" सुल्तान अय्यूबी ने संजीदगी से पूछा– "मर जाने और कुर्बान होने में बहुत फ़र्क़ है।"

"नहीं सालारे आज़म।" उम्माद ने जवाब दिया– "खुदाए जल्ले जलाल गवाह है कि हम ने एक एक जान के बदले बीस बीस जानें ली हैं। अगर सलीबियों की फ़ौज अपने ठिकाने पर पहुंच गई तो वह चंद एक ज़ख्मी होंगे। फ़िलिस्तीन की रेत को हमने सलीबियों के खून से लाल कर दिया है। हमारे दूसरे दस्तों ने भी दुश्मन पर पूरा कहर बरसाया है। दुश्मन में अब इतना दम नहीं रहा कि वह थोड़े से अरसे में अगली जंग के लिए तैय्यार हो जाए।"

"और तुम?" सुल्तान अय्यूबी ने लड़की से पूछा– "क्या तुम पसंद करोगी कि अपने मुताल्लिक हमें सब कुछ बताओ?"

"सब कुछ बताऊंगी।" आयोना ने कहा और उसके आंसू बहने लगे।

"उम्माद शामी!" सुल्तान अय्यूबी ने उम्माद से कहा– "फ़ौजी आराम गाह में चले जाओ, नहाओ धोओ। आज के दिन और आज की रात आराम करो। कल सुबह अपने जैश में चले जाना।"

"मैं दुश्मन के दो घोड़े भी लाया हूं।" उम्माद ने कहा– "उन की तलवारें भी हैं।"

"घोड़े अस्तबल में और तलवारें अस्लाहा ख़ाने में दे दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा और ज़रा सोच कर कहा– "अगर उन घोड़ों में कोई तुम्हारे घोड़े से बेहतर हो तो बदल लो। बाहर

के मुहाज़ पर घोड़ों की क्या हालत है,"

"कोई परेशानी नहीं।" उम्माद ने बताया– "अचानक एक घोड़ा ज़ाए होता है तो हमें सलीबियों के दो घोड़े मिल जाते हैं।"

उम्माद सलाम करके बाहर निकल गया। उसने अमानत सही जगह पहुंचा दी थी। इधर से तो वह फ़ारिग़ हो गया लेकिन उसके दिल पर बोझ था। यह जज़्बात का बोझ था। यह बचपन की यादों का बोझ था और यह उस बाप की मुहब्बत का बोझ था जो कैम्प में पड़ा था। वह तज़बज़ुब में मुबत्ला था। जंग ख़त्म होने तक वह बाप से मिलना नहीं चाहता था। डरता था कि बाप की मुहब्बत और दिल के पुराने ज़ख़्म फ़र्ज़ के रास्ते में हाइल हो जाएंगे। वह अपने घोड़े के पीछे दो घोड़े बांधे अस्तबल की तरफ़ जा रहा था। उसे माहोल का कोई होश नहीं था। घोड़ा उसे एक घाटी पर ले गया। उसने सामने देखा, शूबक का क़स्बा उसे नज़र आ रहा था। वह रुक गया और उस क़स्बे को देखने लगा जहां वह पैदा हुआ था और जहां से जिला वतन हुआ था। उस पर जज़्बात ने रिक़्क़त तारी कर दी।

"रास्ते से हट कर रुको सवार!" उसे किसी की आवाज़ ने चौंका दिया। उसने घूम कर देखा पीछे एक घुड़सवार दस्ता आ रहा था। उसने घोड़े एक तरफ़ कर लिए। जब दस्ते का अगला सवार उसके क़रीब से गुज़रा तो उम्माद से पूछा– "बाहर से आए हो? वहां की क्या ख़बर है?"

"अल्लाह का करम है दोस्तो।" उसने जवाब दिया– "दुश्मन ख़त्म हो रहा है। शूबक को कोई ख़तरा नहीं।"

दस्ता आगे चला गया तो उम्माद दाएं तरफ़ चल पड़ा।

❖

"मैंने आप से कुछ भी नहीं छुपाया।" आयोना सुल्तान अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान के सामने बैठी कह रही थी। वह बता चुकी थी कि वह जासूस है। उसने यह भी बताया था कि वह क़ाहिरा में एक महीने रह चुकी ह। उसने वहां के चंद एक सरकरदा मुसलमानों के नाम भी बताए थे जो सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ सरगर्म थे और उसने यह भी बताया था कि सलीबियों की तरफ़ से सूडानियों को बहुत मदद मिल रही है और सलीबी फ़ौज के तुजुर्बेकार कमाण्डो सूडानियों को शबख़ून मारने की ट्रेनिंग दे रहे हैं। अयोना ने किसी इस्तफ़सार के बग़ैर ही इतनी ज़्यादा बातें बता दीं जो जासूस अज़ियतों के बावजूद नहीं बताया करते क्यों कि उनमें उनकी ज़ात भी मुलव्विस होती है। इससे अली बिन सुफ़ियान शक में पड़ गया।

"आयोना!" अली बिन सुफ़ियान ने उससे कहा– "मैं भी तुम्हारे फ़न का फ़न्कार हूं। मैं तुम्हें ख़िराजे तहसीन पेश करता हूं कि तुम ऊंचे दर्जे की फ़न्कार हो। हमारे तशद्दुद और क़ैद ख़ाने से बचने और हमें गुमराह करने का तुम्हारा तरीक़ा क़ाबिले तारीफ़ है मगर मैं इस धोखे में नहीं आ सकता।"

"आप का नाम?" आयोना ने पूछा।

"अली बिन सुफ़ियान।" अली ने जवाब दिया– "तुम ने शायद हरमन से मेरा नाम सुना

होगा।"

अयोना उठी और आहिस्ता आहिस्ता अली बिन सुफ़ियान के क़रीब जाकर दोज़ानो बैठ गई। उसने अली बिन सुफ़ियान का दायां हाथ अपने हाथ में लिया और हाथ चूम कर बोली– "आप को ज़िन्दा देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई है। आपके मुताल्लिक़ मुझे बहुत कुछ बताया गया था। हरमन कहा करता था कि अली बिन सुफ़ियान मर जाए तो हम मुसलमानों की जड़ों में बैठ कर नहीं जंग के बग़ैर ख़त्म कर सकते हैं।" लड़की उठ कर अपनी जगह बैठ गई– "मैं ने क़ाहेरा में आप को देखने की बहुत कोशिश की थी मगर देख न सकी। मेरी मौजूदगी में आप की मौत का मंसूबा तैय्यार हुआ था। फिर मुझे नहीं बताया गया कि यह मंसूबा कामयाब हुआ था या नही। मुझे शूबक बुला लिया गया था।"

"हम किस तरह यक़ीन कर लें कि तुमने जो कुछ कहा है सच कहा है?" अली बिन सुफ़ियान ने पूछा।

"आप मुझ पर ऐतबार क्यों नहीं करते? लड़की ने झुंजला कर कहा।

"इस लिए कि तुम सलीबी हो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

"अगर मैं आप को यह बताऊं कि सलीबी नहीं मुसलमान हूं तो आप कहेंगे कि यह भी झूठ है।" लड़की ने कहा– "मेरे पास कोई सबूत नहीं। सोलह सत्तरह साल गुज़रे मैं इसी क़स्बे से इग़वा हुई थी। यहां आकर मुझे पता चला है कि मेरा बाप कैम्प में है। "उसने अपने बाप का नाम बताया और यह भी बताया कि उसे अपने बाप का नाम अब मालूम हुआ है। उसने बताया कि उम्माद ने उसे किस तरह सेहरा से बचाया था और वह उसे रात को क़त्ल करने लगी मगर उसका खंजर वाला हाथ उठता ही नहीं था। उसने कहा– "मैं ने दिन के वक़्त उसके चेहरे पर और उसकी आंखों में नज़र डाली तो मेरे दिल में कोई ऐसा एहसास बेदार हो गया जिसने मुझे शक में डाल दिया कि मैं उम्माद को पहले से जानती हूं या उसे कहीं देखा ज़रूर है। मुझे याद नहीं आ रहा था। मैं ने उससे पूछा तो उसने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। रात दो सलीबी सिपाहियों ने मुझ पर हमला किया तो उम्माद जाग उठा। उसने एक को बरछी से मार दिया। मैं उस वक़्त तक अपने आप को सलीबी समझती थी। मेरी हमदर्दियां सलीबियों के साथ थीं और मुझे खुशी इस पर नहीं हुई कि मैं ने उनसे अपनी इज्ज़त बचा ली है बल्कि इस पर हुई कि मैं ने उम्माद की जान बचाई है।

"और जब रास्ते में उम्माद ने मेरे साथ अपने मुताअल्लिक़ जज़्बाती बातें कीं तो ज़िन्दगी में पहली बार मेरे सीने में भी जज़्बात बेदार हो गये। मैं तमाम सफ़र में उम्माद को देखती ही रही। मुझे सिर्फ़ इतना याद आया कि मुझे बचपन में इग़वा किया गया था मगर यह याद भी ज़ेहन में धुंदली हो गई। आप को मालूम है कि मुझ जैसी लड़कियों को किस तरह तैय्यार किया जाता है। बचपन की यादें और असलियत ज़ेहन से उतर जाती है। यही हाल मेरा हुआ लेकिन मुझे यक़ीन होने लगा कि उम्माद को मैं जानती हूं। यह ख़ून की कशिश थी। आंखों ने आखों को और दिल ने दिल को पहचान लिया था। शायद उम्माद ने भी यही कुछ महसूस किय हो शायद इसी एहसास का असर था कि उसने मुझ जैसी दिलकश लड़की को इस तरह

नज़र अंदाज़ किये रखा जैसे मैं उसके साथ थी-ही नहीं। उसने मुझे गहरी नज़रों से बहुत दफ़ा देखा ज़रूर था।

आयोना ने तफ़सील से सुनाया कि शूबक में दाख़िल हो कर उम्माद एक मकान के आगे रुक गया और हम दोनो अन्दर चले गये। उसने कहा– " यह अन्दर से देख कर मेरी यादें बेदार होने लगीं। मुझे ज़ेहन पर दबाव डालने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। ज़ेहन अपने आप ही मुझे उस घर में घुमाने फ़िराने लगा। मैं ने एक किवाड़ की उलटी तरफ़ देखा, वहां मुझे खंजर की नोक से खुदी हुई लकीरें नज़र आईं। यह मैने बचपन में बड़े भाई के खंजर से खोदी थीं। मेरा ज़ेहन मुझे एक और किवाड़ के पीछे ले गया। वहां भी ऐसी ही लकीरें थीं। फिर मैं ने उम्माद को और ज़्यादा ग़ौर से देखा। दाढ़ी के बावजूद उसकी सोहल सत्तरा साल पुरानी सूरत याद आ गई। मैं ने अपने आप को बड़ी मुश्किल से काबू में रखा। मैं ने उम्माद को बताया नहीं कि मैं उसकी बहन हूं। वह इतना पाक फ़ितरत इंसान और मैं इतनी नापाक लड़की। वह इतना ग़ैरतमंद और मैं इतनी बेग़ैरत। अगर मैं उसे बता देती तो मालूम नहीं वह क्या कर गुज़रता।

इस दौरान अली बिन सुफ़ियान ने कई बार सुल्तान अय्यूबी की तरफ़ देखा। वह लड़की को अभी तक शक की निगाहों से देख रहे थे लेकिन लड़की की जज़्बाती कैफ़ियत, उसके आंसू और बाज़ अल्फ़ाज़ के साथ उसकी सिस्कियां दोनो पर ऐसा असर कर रही थीं कि जैसे लड़की की बातें सच हैं। लड़की ने आख़िर उन्हें इस पर कायल कर लिया कि उसके मुताल्लिक वह छान बीन करें। उसने कहा– "आप मुझ पर ऐतबार करें न करें, मुझे कैद ख़ाने में डाल दें, जो सुलूक करना चाहते हैं करें, मुझे और कुछ नहीं चाहिए, मैं अब ज़िन्दा नहीं रहना चाहती। अगर आप इजाज़त दें तो मैं अपने गुनाहों की बख़्शिश के लिए कुछ करके मरना चाहती हूं।"

"क्या कर सकती हो?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"अगर आप मुझे कर्क तक पहुंचा दें तो मैं सलीब के तीन चार बादशाहों और अपने मुहकमे के सरबराह हरमन को क़त्ल कर सकती हूं।"

"हम तुम्हें कर्क तक पहुंचा सकते हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन इस काम से नहीं कि तुम किसी को क़त्ल करो। मैं तारीख़ में अपने मुताल्लिक यह तोहमत छोड़ कर नहीं मरना चाहता कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपने दुश्मनों को एक औरत के हाथों मरवाया था और शूबक में फ़ौज के लिए बैठा रहा। अगर मुझे पता चलेगा कि सलीबियों का कोई बादशाह किसी लाइलाज मर्ज़ में मुब्तला है तो मैं उसके इलाज के लिए अपने तबीब भेजूं गा और फिर हम तुम पर ऐसा भरोसा कर भी नहीं सकते। अल्बता तुम्हारी इस ख़्वाहिश पर ग़ौर कर सकते हैं कि तुम्हें माफ़ करके कर्क भेज दें।"

"नहीं।" आयोना ने कहा– "मेरे दिल में ऐसी कोई ख़्वाहिश नहीं। मैं यहीं मरुंगी। मेरी इस ख़्वाहिश का ज़रूर ख़्याल रखें कि उम्माद को यह न बताएं कि मैं उसकी बहन हूं। मैं कैम्प में अपने बाप को ज़रूर देखने जाऊंगी लेकिन उसे भी नहीं बताऊंगी कि मैं उसकी बेटी हूं।" वह ज़ारो क़तार रोने लगी।

अली बिन सुफ़ियान ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक उस से बहुत सी बातें पूछीं फिर सुल्तान अय्यूबी से पूछा कि इसे कहां भेजा जाए। सुल्तान अय्यूबी ने सोंच कर कहा कि इसे आराम और एहतराम से रखो। फ़ैसला सोंच कर करेंगे।

अली बिन सुफ़ियान उसे अपने साथ ले गया और उन कमरों में से एक उसे दे दिया जहां जासूस लड़कियां रहा करती थीं। लड़की ने वहां रहने से इंकार कर दिया और कहा– इन कमरों से मुझे नफ़रत है, क्या यह मुमकिन नहीं कि मुझे उस घर में रखा जाए जहां से मैं इग़वा हुई थी?"

नहीं। अली बिन सुफ़ियान ने जवाब दिया– किसी के जज़्बात की ख़ातिर हम अपने कवाईदो ज़वाबित नहीं बदल सकते।

वहां के पहरेदारों और मुलाज़िमों को कुछ हिदायत दे कर अली बिन सुफ़ियान लड़की को वहां छोड़ गया।

उम्माद फ़ौजी आराम गाह में गया और नहा कर सो गया मगर इतनी ज़्यादा थकन के बावजूद वह सो न सका। उसके ज़ेहन में यही एक सवाल कुलबुला रहा था कि बाप से मिले या न मिले। थक हार कर वह उठा और उस जगह की तरफ़ चल पड़ा जो शूबक में मुसलमानों के कैम्प के नाम से मशहूर थी। वहां पहुंच कर उसने अपने बाप का नाम लिया और पूछता पूछता बाप तक पहुंच गया। उसके सामने एक बूढ़ा लेटा हुआ था। उम्माद ने उससे हाथ मिलाया और अपने आप को काबू में रखा। उसका बाप हड्डियों का पंजर बन चुका था। उसे अच्छी खुराक और दवाईयां दी जा रही थीं। उम्माद ने अपना तआरुफ़ कराए बग़ैर उससे हाल पूछा तो उसने बताया कि सोलह बरसों की अज़ियत नाक मुशक्कत, कैद और बच्चों के ग़म ने उसका यह हाल कर दिया है कि इतनी अच्छी ग़िज़ा और इतनी अच्छी दवाईयां उस पर कोई असर नहीं कर रहीं।

बाप धीमी आवाज़ में उम्माद को अपना हाल सुना रहा था लेकिन उम्माद सोलह सत्तरा साल पीछे चला गया था। उसे बाप की सूरत अच्छी तरह याद थी। अब उसके सामने जो बाप लेटा हुआ था उसके चेहरे की हड्डियां बाहर निकल आई थीं। फिर भी उसे पहचानने में उम्माद को ज़र्रा भर भी दिक्कत न हुई। उसने कई बार सोंचा कि उसे बता दे कि यह उसका बेटा है। उसने अकलमंदी की कि न बताया। उसने दो ख़तरे महसूस किए थे। एक यह कि बाप यह खुशगवार धचका बर्दाश्त नहीं कर सकेगा। दूसरायह कि अगर उसने बर्दाश्त कर लिया तो उसके लिए रुकावट बन जाएगा। और यह भी हो सकता है कि वह मुहाज़ पर जाने लगे तो यह सदमा उसे ले बैठे। वह बाप से हाथ मिला कर चला गया।

वह आराम गाह में वापस गया तो उसे हुक्म मिला कि मरकज़ उसे अभी यहीं रखना चाहता है। इस लिए वह हर वक़्त आराम गाह में हाज़िर रहे। वह बहुत हैरान हुआ कि मरकज़ी कमान को उसके साथ क्या काम हो सकता है? यह हुक्म अली बिन सुफ़ियान ने आयोना के मुताल्लिक छान बीन करने के सिलसिले में भेजा था। वह देखना चाहता था कि आयोना की कहानी कहां तक सच है। वह कैम्प में गया। आयोना ने उसे अपने बाप का नाम बता दिया था

जो उसे उम्माद से मालूम हुआ था। अली बिन सुफ़ियान ने बाप से तस्दीक़ करा ली कि उसकी बच्ची इग़वा हुई थी। बड़ा बेटा और बीवी मारे गये और छोटा बेटा उसके पड़ोसी के यहां चला गया था जिसके मुताल्लिक़ उसे कैम्प में इत्तिला मिली थी कि शूबक से निकलवा दिया गया है।

आधी रात का अमल होगा। आयोना बिस्तर से उठी, उस वक़्त तक उसे नींद नहीं आई थी। उसने अली बिन सुफ़ियान के रवैये से महसूस कर लिया था कि उस पर ऐतबार नहीं किया गया और अब न जाने उसका अंजाम क्या होगा। वह सोंच रही थी कि वह किस तरह यक़ीन दिलाए कि उसने जो आप बीती सुनाई है वह झूठ नहीं। इसके साथ ही उसका ख़ून इन्तिक़ाम के जोश से खौल रहा था। उम्माद के साथ अपने घर में जाकर उसके ज़ेहन में बचपन की यादें अज़ खुद जाग उठी थीं और ख़्वाब की तरह उसे बहुत सी बातें याद आ गई थीं। उसे यह भी याद आ गया कि उसे इग़वा के बाद बेतहाशा प्यार, खिलोनो और निहायत अच्छी खुराक से यह रूप दिया गया था। फिर उसे वह गुनाह याद आ गए जो उससे कराए गये थे और वह सरापा गुनाह बन गई थी। वह इन्तिक़ाम लेने को बेताब हुई जा रही थी। उस जज़्बाती हालत ने उसे सोने नहीं दिया था। उस ज़ेहनी कैफ़ियत में बाप से मिलने की ख़्वाहिश भी शिद्दत इख़्तियार करती जा रही थी। वह बाहर नहीं निकल सकती थी। बाहर दो पहरेदार हर वक़्त टहलते रहते थे। उसका दिमाग़ अब सोंचने के क़ाबिल नहीं रहा था। वह अब जज़्बात के ज़ेरे असर थी।

उसने दरवाज़ा ज़रा सा खोल कर देखा। उसे बातों की आवाज़ें सुनाई दीं। दाईं तरफ़ कोई बीस गज़ दूर उसे दोनों पहरेदार बातें करते साए की तरह नज़र आए। लड़की दरवाज़े में से सर निकाले उन्हें देखती रही। पहरेदार वहां से ज़रा परे हट गये। लड़की दबे पांव बाहर निकली और उस इमारत की ओट में हो गई। आगे घाटी उतरती थी। वह बैठ गई और पावहं पर सरकती घाटी उतर गई। अब उसे पहरेदार नहीं देख सकते थे। उसे मालूम था कि मुसलमानों का कैम्प कहां है और उसे यह भी मालुम हो चुका था कि अब यह कैम्प क़ैद ख़ाने से मेहमान ख़ाना बन गया है। इसलिए उसे यह खतरा नहीं था कि वहां कोई संतरी उसे रोक लेगा। वह बाप को मिलने जा रही थी। जिसका उसे सिर्फ़ नाम मालूम था। वह तेज़ तेज़ जा रही थी कि उसे पीछे किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी। उसने पीछे देखा मगर कोई नज़र न आया। उस आहट को वह अपने क़दमों की आहट समझ कर चल पड़ी लेकिन यह किसी और की आहट थी। एक तनू मंद आदमी वहीं से उसके पीछे चल पड़ा था, जहां से वह घाटी उतरी थी।

आयोना को यह आहट एक बार फिर सुनाई दी। वह रुकी ही थी कि उसके सर और मुंह पर कपड़ा आन पड़ा। पलक झपकते कपड़ा बंध गया और दो मज़बूत बाज़ुओं ने उसे जकड़ कर उठा लिया। वह तड़पी मगर बे बस थी। रात तारीक थी और यह इलाक़ा ग़ैर आबाद था। ज़रा आगे जाकर उसे एक कम्बल में लपेट कर गट्ठर की तरह उठा लिया गया। वह एक नहीं दो आदमी थे। निस्फ़ घंटे के बाद उसे उतार कर खोला गया। वह एक कमरे में थी जिस में

दो दिए जल रहे थे। वहां चार आदमी थे उसने सबको बारी बारी हैरत से देखा और कहा– "तुम लोग अभी यहां हो? और आप गेराल्ड आप भी यहीं हैं?"

"हम जाकर आए हैं।" गेराल्ड ने जवाब दिया– "तुम सबको यहां से लेने के लिए, अच्छा हुआ कि तुम यहां मिल गई।"

यह वह चार सलीबी थे जिन्हें कर्क से इस काम के लिए भेजा गया था कि जासूस लड़कियां जो मुसलमानों के क़ब्ज़े में रह गई हैं वहां से निकालें और शूबक में अपने जो जासूस रह गए हैं उन्हें वहां मुनज़्ज़म करें और अगर मुमकिन हो तो वहां तख़रीबकारी भी करें। तख़रीबकारी में एक काम यह भी था कि अस्तबल में दाख़िल हो कर जानवरों के चारे में ज़हर मिलाएं, रसद को आग लगाएं और फ़ौजियों के लंगर खानें में भी ज़हर मिला सकें तो कोशिश करें। इस गिरोह का कमाण्डर गेराल्ड नाम का एक बरतानवी था जो तबाहकार जासूसी का माहिर समझा जाता था। आयोना उसे बहुत अच्छी तरह जानती थी बल्कि उसकी शागिर्द रह चुकी थी और उसके साथ उसकी दोस्ताना बे तकल्लुफ़ी भी थी। उसे देख कर आयोना का खुन नफ़रत और इन्तिक़ाम के जोश से खौल उठा लेकिन वह फ़ौरन संभल गई। यह मौका नफ़रत के इज़हार का नहीं था। गेराल्ड तो ऐसा गुमान भी नही कर सकता था कि आयोना बिल्कुल बदल गई है। उसनें आयोना से पूछा कि वह काहं जा रही थी? आयोना ने कहा कि उसे फ़रार का मौक़ा मिल गया था। इसलिए वह फ़रार हो रही थी।

गेराल्ड ने उसे बताया कि वह छापा मार जासूसों का एक गिरोह कर्क के मजलूम मुसलमानों के बहरूप में यहां लाया है। उन दिनो शूबक के हालात ऐसे थे कि यह गिरोह आसानी से एक ही गिरोह की सूरत में शहर में आ गया था। जंग की वजह से लोग आ जा रहे थे। इर्द गिर्द के देहात के मुसलमान भी शहर में आरहे थे। इसी धोखे में यह गिरोह भी आ गया। शहर में पहले से जासूस मौजूद थे। उन्हों ने पूरे गिरोह को पसे परदा कर लिया। गेराल्ड ने आयोना को बताया कि वह दो रातों से इस मकान को देख रहा है जिसमें लड़कियां हैं। इस जगह से वह अच्छी तरह वाक़िफ़ था। यह उन्हीं की बनाई हुई थी। रात को वह देखने जाता था कि पहरेदारों की हरकात और मामूल क्या हैं। यह बड़ा अच्छा इत्तिफ़ाक था कि उसे आयोना मिल गई। आयोना ने उसे बताया कि लड़कियों का निकलना आसान नहीं, ताहम निकाला जा सकता है।

❖

रात को ही स्कीम तैय्यार हो गई। आयोना ने गेराल्ड को बताया कि लड़कियां खुले कमरों में हैं। जो क़ैद ख़ाना नहीं। पहरेदार सिर्फ़ दो हैं। इस क़िस्म की और भी बहुत सी तफ़सीलात थीं जो आयोना ने उन्हें बातई। यह भी तय हो गया कि लड़कियों को निकालने के लिए कितने आदमी जाऐंगे और बाक़ी आदमी कौन से मकान में जमा होंगे। इस स्कीम के बाद आयोना ने यह तजवीज़ पेश की कि उसे वापस चले जाना चाहिए क्योंकि उसकी गुम्शुदगी से लड़कियों पर पहरा सख़्त कर दिया जाए गा जिससे यह मुहिम नामुमकिन हो जाएगी। गेराल्ड ने आयोनाकी यह तज्वीज़ पसंद की और उसे अपने साथ ले जाकर उसकी रिहाइश गाह के

करीब छोड़ गया। आयोना को बाहर से आते देख कर पहरेदारों ने उस से बाज़पुर्स की। उसने यह कह कर टाल दिया कि वह दूर नहीं गई थी। पहरेदार इस लिए चुप हो रहे कि यह उनकी लापरवाई थी कि लड़की निकल गई।

दूसरे दिन अली बिन सुफ़ियान किसी और काम में मसरूफ़ था। आयोना ने पहरेदार से कहा कि वह उसे अली बिन सुफ़ियान के पास ले चलें। उन्हों ने यह कह कर इंकार कर दिया यहां उसके बुलाने पर कोई नहीं आएगा बल्कि उसकी जब ज़रूरत होगी तो उसे बुला लिया जाएगा। आयोना ने बड़ी मुश्किल से पहरेदारों को क़ायल किया कि वह किसी और को बताए बग़ैर मरकज़ी कमान के किसी फ़र्द तक यह पैग़ाम पहुंचा दें कि निहायत अहम और नाज़ुक बात करनी है। उसने पहरेदारों से कहा कि अगर उन्हों ने पैग़ाम न पहुंचाया तो इतना ज़्यादा नुक़सान होगा कि पहरे दार इस कोताही की सज़ा से बच नहीं सकें गे। पहरेदारों ने पैग़ाम भेजवाने का बंदो बस्त कर दिया। अली बिन सुफ़ियान ने पैग़ाम मिलते ही लड़की को बुला लिया। उसके बाद लड़की कमरे में वापस नहीं आई।

रात को जब शूबक की सरगर्मियां सो गइ और शहर पर ख़ामोशी तारी हो गई उस इमारत के इर्द गिर्द आठ दस साए से हरकत करते नज़र आए जहां लड़कियों को रखा गया था। अजीब बात यह है कि दोनों पहरेदार ग़ायब थे। आठ दस छापा मार खुश होने के बजाए हैरान हुए होंगे कि पहरेदार नहीं हैं। वह आठों पेट के बल रेंग कर आगे आए। आयोना ने उन्हें बता दिया था कि लड़कियां कौन कौन से कमरों में हैं। कमरों के दरवाज़ों और खिड़कियों से यह लोग वाक़िफ़ थे। दो छापा मार एक कमरे में दाख़िल हो गये, बक़िया ने परवाह न की कि वहां पहरेदार हैं या नहीं। उन्हें यह बता दिया गया था कि पहरेदार सिर्फ़ दो होते हैं। दो पर दस का क़ाबू पाना मुश्किल नहीं था। वह सब लड़कियों के कमरों में घुस गये मगर उनमें से बाहर कोई भी न निकला।

❖

गेराल्ड उसी मकान में था जहां वह गुज़िश्ता रात आयोना को ले गया था। उस मकान में स्कीम के मुताबिक़ बीस आदमी थे। बाक़ी किसी और ईसाई के घर में छुपे हुए थे। गेराल्ड बेसब्री से लड़कियों का इन्तेज़ार कर रहा था। अब तक उन्हें उसके आदमियों के साथ पहुंच जाना चाहिए था। आख़िर दरवाज़े पर दस्तक हुई। दस्तक का यह तय शुदा ख़ास निशान था। गेराल्ड ने खुद जाकर दरवाज़ा खोला। यह मकान पुराने दौर की क़िला नुमा हवेली थी जिस में एक अमीर कबीर ईसाई रहता था। गेराल्ड ने ज्यों ही दरवाज़ा खोला उसे किसी ने बाहर घसीट लिया। फ़ौजियों का एक हुजूम दरवाज़े में दाख़िल हुआ। उनके हाथों में लम्बी बरछियां थीं। एक वसी कमरे में बैठे हुए बीस सलीबी छापा मार जासूसों को संभलने का मौक़ा न मिला। उनसे हथियार ले लिये गये और उनको घर के मालिक और उसके कुंबे समेत बाहर ले गये।

ऐसी ही हल्ला उस मकान पर भी बोला गया जहां बाक़ी सलीबी छापा मार तैय्यार बैठे थे। यह दोनो छापे बयक वक़्त मारे गये। उसी रात दस ग्यारह मकानों पर छापे मारे गये। यह

सरगर्मी रात भर जारी रही। मकानों की तलाशी ली गई और सुबह के वक़्त अली बिन सुफ़ियान ने सुल्तान अय्यूबी के सामने जो लोग खड़े किये उनमें एक तो गेराल्ड और उसके चालिस छापा मार थे और तक़रीबन इतनी ही तादाद उन जासूसों और तख़रीब कारों की थी जिन्हें दूसरे मकानों से गिरिफ्तार किया गया था। उन मकानों से जो सामान बरामद हुआ उसमें बेशुमार हथ्यार, ज़हर की बहुत सी मिक्दार, तीरों का ज़ख़ीरा, आतिश गीर मादह और बहुत सी नक़दी बरामद हुई। यह कारनामा आयोना का था। उसने गेराल्ड के साथ स्कीम बनाई थी और उससे उन तमाम जासूसों के ठिकाने मालूम कर लिए थे जो शूबक में छुपे हुए थे। गेराल्ड को उस पर पक्का ऐतमाद था। आयोना रात ही को वापस आ गई थी और सुबह उसने तमाम तर स्कीम अली बिन सुफ़ियान को बता दी और जासूसों के ठिकानों की भी निशांदेही कर दी। अली बिन सुफ़ियान के जासूस दिन को सारे ठिकाने देख आए थे। शाम के वक़्त सुल्तान अय्यूबी के खुसूसी छापा मार दस्तों को उन ठिकानों पर छापा मारने के लिए बुलाया गया था। लड़कियों को कमरों से निकाल कर कहीं और छुपा दिया गया था। उनकी जगर हर कमरें में तीन तीन छापा मार भेज दिए गये थे। ज्यों ही सलीबी छापा मार लड़कियों को अपने साथ लाने के लिए कमरों में दाख़िल हुए, मुसलमान छापा मारों ने उन्हें पकड़ लिया। इस तरह शूबक में सलीबियों के तक़रीबन तमाम जासूस और छापा मार पकड़े गये। उनमें सबसे ज़्यादा क़ीमती गेराल्ड था। तमाम को तफ़्तीश और उसके बाद सज़ा के लिए क़ैद ख़ाने में डाल दिया गया।

आयोना ने उन तमाम मुसलमान सरकरदा शख़्सियतों की भी निशांदेही कर दी जो क़ाहिरा में सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ सरगर्म थे। हशीशीन के हाथों सुल्तान अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान को क़त्ल करने का जो मंसूबा तैय्यार किया गया था, वह भी अयोना ने बेनक़ाब किया। और सुल्तान अय्यूबी से कहा– "अब तो आप को मुझ पर ऐतबार आ जाना चाहिए।"

वह मन्ज़र बड़ी ही जज़्बाती और रिक़्क़त अंगेज़ था जब उम्माद को बताया गया कि अयोना उसकी बहन है और जब बहन भाई को उनके बाप के सामने खड़ा किया गया तो जज़्बात की शिद्दत से बूढ़ा बाप बेहोश हो गया। होश में आने के बाद उसने बताया कि उसकी बेटी का नाम आयशा है। सुल्तान अय्यूबी ने इस ख़ानदान के लिए ख़ास वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया और अली बिन सुफ़ियान के मुहकमे के लिए हुक्म जारी किया कि तमाम जासूस लड़कियों के मुताल्लिक़ छान बीन की जाए। सलीबियों ने दूसरी लड़कियों को भी मुसलमान घरानों से इग़वा किया होगा। सुल्तान ने हुक्म में कहा कि उनमें जो मुसलमान है उनके ख़ानदान ढूंडे जाएं और लड़कियों को उनके हवाले किया जाए।

सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज बहुत बड़े ख़तरे से महफ़ूज हो गई। शूबक से दूर के मुहाज़ की ख़बरें उम्मीद अफ़ज़ा थीं। लेकिन फ़ौरी ज़रूरत यह थी कि बिखरे हुए दस्तों को यकजा किया जाए। इस मक़सद के लिए सुल्तान अय्यूबी ने शूबक का फ़ौजी निज़ाम अपने मुआविनों के हवाले कर के अपना हैडक्वार्टर शूबक से दूर सेहरा में मुन्तक़िल कर लिया। उसने बर्क़

रफ्तार कासिदों की एक फौज अपने साथ रख ली। इसके ज़रिए उसने एक माह में बिखरे हुए दस्ते एक दूसरे के करीब कर लिए। उसके बाद उन्हें तीन हिस्सों में तक़सीम करके शूबक का दिफ़ा इसी तरह मुनज़्ज़म कर दिया जिस तरह काहिरा का किया था। सब से दूर सरहदी दस्ते थे जिसके सवार गश्त करते थे। उनसे पांच छ: मील पीछे फ़ौज का दूसरा हिस्सा ख़ेमा ज़न कर दिया और तीसरे हिस्से को मुतहर्रिक रखा।

कर्क में इकट्ठी होने वाली फौज की कैफ़ियत ऐसी थी कि फ़ौरी हमले के क़ाबिल नहीं थी। इधर सुल्तान अय्यूबी ने भर्ती की रफ्तार तेज़ कर दी और नई भर्ती की ट्रेनिंग का इन्तेज़ाम खुले सेहरा में कर दिया। उसने अली बिन सुफ़ियान से कहा कि वह कर्क में अपने जासूस भेजे जो वहां की इत्तिलाएं लाने के अलावा यह काम भीकरें कि वहां के रहने वाले मुसलमान नौजवानों को कर्क से निकलने और यहां आकर फ़ौज में शामिल होने की तरग़ीब दें।

❖❖❖
❖❖
❖